आधुनिक हिन्दी में

बाल साहित्य

का विकास

आधुनिक हिन्दी में बाल साहित्य का विकास

डा विजयलक्ष्मी सिन्हा

साहित्यवाणी
२८ पुराना अल्लापुर इलाहाबाद

प्राक्कथन

शक्षिक अनसधान एव नवाचार समिति राष्ट्रीय शैक्षिक एव अनसधान परिषद् नई दि ली 16 के पत्र क्र 21 14/85 प्रोग्राम/1520 दिनाक 16 1 86 के द्वारा प्राप्त अनदान की सहायता से प्रकाशित ।

प्रकाशक साहित्यवाणी
28 पुराना अ लापुर
इलाहाबाद 211006

प्रथम सस्करण 1986

मू-य रु एक सौ मात्र

आवरण अशोक सिद्धार्थ

आवरण मुद्रक दत्ता लाक मेकस ए ड प्रिटर्स
219 गाँधी नगर
इलाहाबाद–211003

मुद्रक रामायण प्रस
739 पुराना कटरा (पिंक माकट)
इलाहाबाद–211002

प्राक्कथन

प्रस्तुत ग्र थ आधुनिक हि दी मे बाल साहि य का विकास के पहले भी हि दी मे बाल साहि य पर छ सात शोध प्रब ध लिखे जा चुके हैं यथा—(1) ‑यो सना द्विवेदी का हि दी किशोर साहि य (2) निरकारदेव सेवक का बाल गीत साहि‑य (3) डा हरिकृ ण देवसरे का हि दी बाल साहि य एक अध्ययन (4) डा मस्तराम कपूर उर्मिल का हि‑दी बाल साहित्य का विवेचना मक अ ययन (5) डा ‑योतिस्वरूप का हि‑दी मे बाल साहि य (6) डा कृष्णच‑द्र तिवारी रा ट्रबधु का हि दी मे बाल साहि‑य का मनोवज्ञानिक एव साहि‑यिक अनुशीलन तथा (7) डा श्रीप्रसाद का हि दी बाल साहि य ।

इन शोध प्रब धो का विशद अध्ययन करने के बाद मै इस नि कष पर पहुँची हू कि यो सना द्विवेदी के शोध प्रब ध हि दी किशोर साहि‑य (सन् 1952) की रचना बहुत कुछ बाल साहि‑य के मनोवज्ञानिक पक्ष को लेकर की गई है। निरकारदेव सेवक के बाल गीत साहि य मे बालको के लिए गीत पक्ष पर अधिक बल देकर विचार किया गया है। यह रचना पूणत शोध कार्य है यद्यपि इसे किसी विश्वविद्यालय मे किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नही किया गया। डा हरिकृ ण देवसरे द्वारा लिखित हि‑दी बाल सा‑ि‑य एक अ ययन मे भी बाल साहि य के मनोवज्ञानिक पक्ष पर ही अधिक बल दिया गया है। वैसे इसमे बाल साहि य के उदभव और विकास पर भी विचार किया गया है। फिर भी यह इतना सक्षि त है कि सम्पूण प्रब‑ध मे विषयगत समग्रता का अभाव परि‑लक्षित होता है। इस विषय का चौथा ग्रथ हि दी बाल साहि य का विवेचना मक अध्ययन ा मस्तराम कपूर उर्मिल ने ि‍खा है ि सका बहुत बडा भाग बाल साहि य के सिद्धा तो और त स ब धी भ्रातियो को दूर करने मे निकल गया है। इसी कारण इस पुस्तक मे समस्त आधुनिक बाल साहि य का विवेचन स भव नही हो सका है। डा योतिस्वरूप का शोध प्रब ध हि दी मे बाल साहि‑य मुख्य रूप से अ य भाषाओ के साथ हि‑दी बाल साहि य की तुलना अधिक बल देता है। फलत इसमे उदभव और विकास का मुख्य आधार

स्पष्ट नही हुआ है। उसी प्रकार हि दी मे बाल साहि य का मनोवज्ञानिक एव साहि यिक अनुशीलन (डा कृ णच द्र तिवारी) एक विस्तृत परिदश्य को लेकर अवश्य आगे बढता है कि तु बहुत सी आवश्यक बात इस शोध प्रब ध मे भी छट गई है। इसके लेखन का मुख्य ध्यान मनोवज्ञानिकता की ओर अधिक हा है। दूसरी ओर हि दी बाल साहि य (डा श्रीप्रसाद) को पढने से ऐसा लगता है कि इसका अधिकाश भाग प्राचीन एव मध्यकालीन बाल साहि य तक सीमित रह गया है। इसमे सन् 1970 के पश्चात प्रकाशित बाल साहि य की यापक चर्चा नही हो पायी।

उपयुक्त तथ्यो को ध्यान में रखते हुए बाल साहि य के वतमान सदर्भों उसके विविध स्रोतो की याख्या करने के लिए मैंन प्रस्तुत ग्रथ की रूपरेखा तैयार की है। इसमे मैंने भरसक प्रय न किया है कि हि दी का वर्तमान बाल साहि य अपनी सम्पूर्णता के साथ अर्थात अपनी मह वपूर्ण उपल धियो के साथ विवेचित हा तथा उसकी विभिन्न शाखाओ का स यक निरूपण हो सके। इसलिए यत्र तत्र बिखरी हुई सामग्री को एकत्र कर एक समग्र इकाई के रूप मे त स ब धी विषय को सयोि त ‍रने का प्र त ‍िया गया है।

उपयुक्त उद्दश्य को ध्यान मे रखते हुए मैंने स पूण ग्रथ को निम्न लिखित आठ अध्यायो मे विभक्त किया है —

प्रथम खण्ड— बाल साहि य की पहचान मे बाल साहि य का मह व स्पष्ट करते हुए अ य प्रकार के साहि य से उसका अ तर स्पष्ट किया गया है। यही पर पाश्चा य और भारतीय बाल साहि य की विशेषताओ का उ लेख करते हुए उसके सामाजिक मह व को रेखाकित किया गया है। इसी अध्याय मे बाल साहि य का वर्गीकरण भी किया गया है।

द्वितीय ख ड— इसके अ तर्गत सस्कृत साहि य के बान साहि य और उससे अनुप्राणित हि दी के प्राचीन और मध्यकालीन बान साहि य का सक्षिप्त परिचय दिया गया है जिससे आधुनिक बाल साहि य की पृष्ट भूमि स्पष्ट की जा सके।

तृतीय खण्ड— भारते दुकालीन बाल साहि य मे उस काल की ऐति हासिक परिस्थितियो के आधार पर बाल साहि य की विभिन्न विधाओ अर्थात् बाल उप यास बाल कहानियाँ बाल नाटक बाल गीत कविता एव बाल

जीवनी आदि के पृथक पृथक विकास का स्पष्ट करते हुए बाद मे उसके भाव पक्ष एव कलापक्ष का विवेचन किया गया है ।

चतुथ खण्ड— द्विवेदीका ीन एव पूर्व स्वात त्र्कालीन बाल साहि य मे इस बात की खोज की गई है कि उस युग के लगभग सतालीस वर्षो मे बाल साहि य के अ तर्गत किन नवीन प्रवत्तियो का समावेश हुआ । मैंने यथास्थान उसकी नवीन उद्भावनाओ का भी उ लेख किया है । इ ही प्रवत्तियो का कालगत विकास परवर्ती बाल साहि य मे लक्षित होता है ।

पंचम् खण्ड— स्वात योत्तर बाल साहि य के आधार पर यह स्पष्ट किया गया है कि इस युग मे स्वात त्र्योत्तर नई चेतना के फलस्वरूप यह साहि य किन किन बातो मे पववर्ती युग से अधिक समृद्ध और विकसित है तथा इ हे अधिक विकसित करने के लिए कौन कौन सी सस्थाए कायशील है । इस अ याय मे केवल बाल उप यासो एव बाल कहानियो पर ही विस्तार से विचार किया गया है ।

षष्ठम् ख ड—बाल नाटको बाल गीतो बाल कविताओ एव बाल जीवनियो के साथ ही बाल रगमच की विवेचना की गई है जिसे इस प्रब ध की नवीनता मान सकते हैं । इसी अध्याय मे बाल रगमच स ब धी प्रकाशित पत्रिकाओ की विवेचना की गई है ।

सप्तम् ख ड—इसमे बाल पाकेट बुक्स वज्ञानिक बाल साहि य पहेलियो एव चटकुलो का विकास स्प ट क ते हुए उनकी नवीन उपल धियो दिशाओ और सभावनाओ को रेखाकित करने का प्रय न किया गया है । इस प्रकार का समग्र विवेचन अभी तक मैंने किसी अ य पुस्तक मे नही देखा है ।

अ टम् ख —बाल साहि य को गतिशील बनाने वाली उन विभि न सस्थाओ का ऐतिहासिक मह व निरूपित किया गया है जो देश के कोने कोने मे बाल साहित्य का प्रचार और प्रसार कर रही है । इस सम्ब ध मे बाल पुस्तकालयो पत्र पत्रिकाओ आकाशवाणी दूरदशन तथा बाल फि मो की उपल धिया भी उ लेखनीय हैं । इ ही सस्थाओ के क्रियाशील होने के कारण बाल साहि य का गुणा मक विकास स भव हो सका । उपसहार मे इस विषय की समग्र उपल धियो का सकेत किया गया है ।

मैं डा त्रिलोचन पाडेय विभागाध्यक्ष हिंदी एव भाषा विज्ञान विभाग रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर की अ य त आभारी ह जिनके मार्गदशन मे प्रस्तुत ग्र थ की रूपरेखा तयार हुई। मुझ समय समय पर उनसे प्रो सा न मिलता रहा जिस कारण इस ग्र थ को पूर्ण करने मे सफलता मिली। डा शिवकुमार शर्मा मलय सहायक ।। यापक हि दी विभाग शासकीय विज्ञान महाविद्यालय बलपुर का मैं कृतज्ञ हू जि होने यथासमय पुस्तक प्रदान कर एव परामश देकर मझ अनुग्रहीत किया। ग्रथालय रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर पुस्तकालय शिक्षण महाविद्यालय जबलपुर के द्रीय ग्रथालय जबनपु जिला ग्रथालय नबनपुर पुस्तक भ डार पटना ब्रिटिश काउसिल लाइब्रेरी पटना सि हा लाइब्रेरी पटना इडिया बुक हाउस की बिहार शाखा पटना शकर्स लाइब्र री दि ली तथा रा टीय शक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण परिषद् के उन समस्त अधिकारियो एव कमचारियो को मैं ध यव द देती हूँ जि होने यथासमय पुस् क प्रदान कर इस स ब ध मे मेरी सहायता की। अपने पति डा नागेश्वरनाथ श्रीवास्तव की भी मैं आभारी हूँ जो जी न के सघषमय दिनो मे मेरा उ साहवर्धन करते रहे। इसके अतिरिक्त अपने पुत्र हिमाशु को भी मैं ध यवाद देना नही भूल सकती जिसने पुस्तक जुटाने तथा अ य कार्यों मे मेरी सहायता की। मैं उन सभी महानुभावो की आभारी हू ि ोने इस ग्र थ को पूण करने मे प्र यक्ष एव अप्र यक्ष रूप मे मेरी सहायता की है।

अन्त मे मैं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण परिषद् नई दि ली के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूँ जि होने प्रकाशन हेतु अनुदान प्रदान कर इसके प्रकाशन को सभव बनाया।

विजय दशमी 1986 —विजयलक्ष्मी सि हा

अनुक्रमणिका

मैं डा त्रिलोचन पाडेय विभागाध्यक्ष हि दी एव भाषा विज्ञान विभाग रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर की अ य त आभारी हू जिनके मार्गदशन मे प्रस्तुत ग्र थ की रूपरेखा तयार हुई । मझ समय समय पर उनसे प्रो सा न मिलता रहा जिस कारण इस ग्र थ वो पूर्ण करने मे सफलता मिली । डा शिवकुमार शर्मा मलय सहायक पा यापक हि दी विभाग शासकीय विज्ञान महाविद्यालय ाबलपुर की म कृतज्ञ हू जि होने यथासमय पुस्तक प्रदान कर एव परामर्श देकर मझ अनुग्रहीत किया । ग्रथालय रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर पुस्तकालय शिक्षण महाविद्यालय जबलपुर के द्रीय ग्रथालय जबलपुर जिला ग्रथालय ाबनपुर पुस्तक भ डार पटना ब्रिटिश काउसिल लाइब्ररी पटना सि हा लाइब्ररी पटना इडिया बुक हाउस की बिहार शाखा पटना शकस लाइब्र री दि ली तथा रा ट्रीय शक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण परिषद् के उन समस्त अधिकारियो एव कमचारियो को मैं ध यव द देती हूँ जि होने यथासमय पुस् क प्रदान कर इस स ब ध मे मेरी सहायता की । अपने पति डा नागेश्वरनाथ श्रीवास्तव की भी मै आभारी हू जो जी न के सघषमय दिनो मे मेरा उ साहवर्धन करते रहे । इसके अतिरिक्त अपन पुत्र हिमाशु को भी मैं ध यवाद देना नही भूल सकती जिसने पुस्तक जुटाने तथा अ य कार्यों मे मेरी सहायता की । मैं उन सभी महानुभावो की आभारी हूँ जि ोने इस ग्र थ को पूर्ण करने में प्र यक्ष एव अप्र यक्ष रूप मे मेरी सहायता की है ।

अन्त मे मैं राष्ट्रीय शक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण परिषद् नई दि ली के प्रति अपना आभार यक्त करती हू जि होने प्रकाशन हेतु अनुदान प्रदान कर इसके प्रकाशन को सभव बनाया ।

विजय दशमी 1986 —विजय लक्ष्मी सि हा

अनुक्रमणिका

प्रथम खण्ड

बाल साहित्य की पहचान

बाल साहित्य की पहचान

बालक देश का भावी कर्णधार है। आज का बालक कल का राष्ट्र निर्माता है। अपनी योग्यता के बल पर वह जब बुराइयो को दूर कर अपने समाज तथा देश मे नई चेतना भरता है तब वही राष्ट्र विकसित होकर उ नतशील देशो के समक्ष खडा होने योग्य हो जाता है। कि तु आरभ मे बालक का मस्ति क कोरी स्लेट की तरह होता है जिस पर कुछ भी लिखा जा सकता है। अत उसके अनिश्चित एव अनिर्धारित भविष्य की रूपरेखा देना हमारा काम है और यह कार्य साहित्य के माध्यम से किया जाता है। इसलिए बाल साहि य की मह ता अ य साहि य से अधिक बढ़ जाती है।

बाल साहित्य का महत्व

अब आवश्यकता इस बात की है कि बालक के मन और मस्तिष्क को स्वस्थ बनाने के लिये आरभ से ही उनकी शिक्षा दीक्षा का प्रबध किया जाय। विद्यालयो के सीमित पाठ्यक्रमो के सकुचित दायरे से निकाल कर उ हे देश विदेश के विस्तृत साहित्य से परिचित कराया जाय जिससे उनका बौद्धिक विकास नतिकता का उत्थान एव चरित्र निर्माण हो सके। इसका यह अर्थ नही कि विद्यालय के पाठ्यक्रमानुसार शिक्षा ब चो को दी ही न जाय। इसके साथ उनके लिए त कालीन सामाजिक वैज्ञानिक भौगोलिक खगोलीय विषयो को ध्यान मे रखकर सरल-सुस्पष्ट भाषा मे साहित्य की रचना हो जो कविता कहानी या नाटक किसी भी माध्यम से प्रस्तुत किया जाय।

हमारा देश जब अग्रजो के शासन काल मे पराधीनता का दु ख सह रहा था यक्ति की अभिव्यक्ति मूक हो गई थी तब भी गिने चुने विद्वान साधारण जनता को स्वतत्रता के लिए प्ररित करने के साथ ही बालको मे भी नवीन चेतना एव जागरण का मत्र फूंक रहे थे। उन दिनो उनके सामने देश के महापुरुष ही आदर्श थे जिनका चरित्र बालको के समक्ष प्रस्तुत कर अपने उद्देश्य की पर्ति कर रहे थे।

स्वतत्र भारत मे शिक्षा के प्रति प्राचीन मा यताओ एव सकुचित धारणाओ को दूर कर दिया गया एव युगानुरूप श्रष्ठ बाल साहि य की रचना होने लगी। देश के मूर्ध य यशस्वी लेखक (आचार्य रामलोचन शरण

सोहनलाल द्विवेदी निरकार देव सेवक श्रीधर पाठक कामता प्रसाद गुरु मनहर चौहान वि ण प्रभाकर हरिकृ ण दवसरे शाति भटनागर आदि) इस दिशा मे प्रय नशील हुए परिणामत हमारे बाल साहि य का भ डार साहि्य की विविध विधाओ से भर उठा।

प्रश्न यह उठता है कि बाल साहि य है क्या ? ब चो क लिए लिखा गया प्र येक साहि्य बाल-साहि्य कहलाने का अधिकारी है जिसकी भापा ऐसी हो कि बालक उसे पढने पर थोडा प्रय न करके समझ सके साथ ही उनका मनोरजन भी होता रहे । देश की बदलती हुई परिस्थितियो के साथ इसके मापदण्डो मे भी अ तर आया। वस्तुत प्राचीन साहि्य का सरक्षण करते हुए नये मापदण्डो को अपनाकर साहि्य सृजन करने से ही उसमे सृजना मकता आती है और यही आज के बाल साहि्य का मूल स्वर है। इसलिए जो भी बाल साहि्य हम बनाए उसमे सृजन पर अधिक जोर द ताकि बच्च अपने अनुकूल बौद्धिक जलवायु पाकर स्वाभाविक रूप से अपना यक्ति व बनाएँ और वह कर जो वे करना चाहते हैं जिसके लिए उनके पास ज मजात प्रवृत्तियाँ है प्रतिभा है तभी इस उद्देश्य को दृ टि में रखकर लिखा गया साहि्य ही प्रगतिशील समाज की सृष्टि करने मे सहायक होता है। इस प्रकार के साहि्य सृजन के लिए कुछ विशेष बात आवश्यक है—

(क) बालको को समाज की सर्वांगीण तथा स पूर्ण स भावना शक्ति तथा क्षमता मानकर उसकी धारणा करना तथा ऐसी विचित्र और मनोहारी धारणा को स्वय बालक मे जगाने तथा आ मविकास के लिए निष्ठा उ पन्न करने वाला साहि्य हो।

(ख) व्यक्ति तथा समष्टि के भूत जीवन का समग्र नवीनीकरण व भविष्य की सम्भावनाओ के लिए तैयारी करने वाला वीर बनना यथा ऐसे शौर्य को समाज की महती शक्ति मानने के लिए उ कठा उ पन्न करने वाला साहि्य हो।

(ग) बालक के श्रेष्ठ और उदात्त को क पना द्वारा बालक के लिए प्रस्तुत करना। ऐसा प्रस्तुतीकरण मनोवैज्ञानिक तथा सृष्टि के जीवन की सनातन प्रवाह की गतियो के अनुसार ही होगा । इस अवधारणा पर विचार करने से हम इस बात को मानना पडता है कि ब चों का बौद्धिक विकास वैज्ञा निक ढग से होना चाहिए। उनकी जिज्ञासाओ का समाधान

के लिए उनसे कहा जाता या परियो जादूगरो की कहानियो द्वारा उ-हें कल्पना लोक मे बिचरने को बाध्य किया जाता िससे उनकी रुचि भावना एव प्रतिभा की उपेक्षा होती। कि-तु ऐसा न करके दूसरे प्रकार के बाल साहि-य को प्रधानता दी जाय तो बालको का -यक्ति-व अधिक उभरेगा वे स्वावलम्बी बनेंगे तथा व वह करगे जैसा वे चाहते हे। यद्यपि पहले प्रकार के बाल साहि-य की उपेक्षा नही की जा सकती पर-तु इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बच्चो के मस्तिष्क मे बलपवक कोई पनी बात भरने की चेष्टा न करे और ऐसा न करे कि उ-हे बोझ जान पड। साथ ही ब-चो की आयु और विकास पर विचार कर उनके लि लिखे अपने लिए नही। यहाँ स्वा त सुखाय सूत्र को ध्यान से अ-नग रखे बच्चो को जो मीठा लगे द। पर-त ऐसा होता नहीं है। बड अपने साहि य की रचना अपने लिए स्वय करते है। वे खद ही लिखने और खुद ही सनने वाले होते हैं। पर ब-चे अपने सारे साहि य के लिए परमुखापेक्षी ओर दूसरो पर निभर होते हैं। वे स्वय लिख पढ तो क्या ठीक से बोल भी नही पाते। बड उनके लिए जैसा साहि-य रच कर दे द वसा पढने के लिए उ-हे बाध्य होना पडता है। यह बात बाल मनोविज्ञान के अनुकूल नही हे।

युग परिवर्तन के साथ ही साहि-यकारो की विचारधारा म भी परिवर्तन हुए और बाल साहि-य का स्वर बदलने लगा। भारतीय बाल साहित्य पर पाश्चा-य बाल साहि य का प्रभाव पडा। साहि य के माध्यम से बच्चो की प्रतिभा के विकास का अवसर मिला। भारत की प्रमुख भाषाओ मे सतोषजनक रूप से बालको के लिए साहि-य का सृजन होने लगा किन्तु उनमे अधिकाश विदेशी पुस्तको से उधार ली गई अनुवाद रूप मे प्रकाश मे आई। होना तो यह चाहिए था कि विशुद्ध भारतीय सस्कृति को चित्रित करने वाला साहि-य लिखा जाय जो आधुनिक स-दर्भ म बदले हुए रूप मे प्रस्तुत हो।

बालक जब तक पढने लिखने योग्य नही हो जाता पूर्णत बडो द्वारा रचित साहित्य से ही आन-द उठाता है किन्त लिखने पढने योग्य होते ही अभि-यक्ति की प्रतिभा उसमे दिखाई देती है। इस बात को ध्यान मे रखकर इन दिनो कई सस्थाए बालको को स्वय लिखने के लिए प्रेरित करती है। अनेक दनिक पत्रो के रविवारीय सस्करण मे बालको द्वारा रचित कविता कहानी चुटकुलो के लिए स्थान सुरक्षित रहते है। अनेक विद्यालय अपनी वार्षिक पत्रिका निकालते हैं जिनके माध्यम से बालको को अभिव्यक्ति का

अवसर मिलता है। छ वर्ष की आयु मे ही अपनी कविताओ को पुस्तक रूप मे प्रकाशित कराने वाली पहली बालिका महारा ट की कुमारी माधुरी पारसनीस हैं। लगातार पाँच वर्षों तक अपनी कविता पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने वाली माधुरी राजे हैं। सुमित्रान दन पत की पालिता कन्या सुमिता पत नौ वष की आयु से ही बाल कविता कहानिया तथा उप यास लिखने लगी। इसकी लगभग बीस कहानिया कुछ कविताए तथा चोर के हीरे उपन्यास प्रकाशित हो चुका है। इसकी रचनाओ मे सुमित्रान दन पत की तरह सामा जिक और नतिक चेतना की झलक मिलती है। इस प्रकार के प्रतिभा सम्पन्न अ य अनेक बालक बालिकाए हैं जिनकी प्रतिभा को प्रकाश मे लाने का दायि व हमारा है।

हि दी मे बाल साहि य का मह व इसलिए और भी बढ जाता है कि हमारा देश एक स्वतन्त्र देश है और स्वतन्त्रता की आयु और विकास भविष्य की पीढी की योग्यता और गणा मकता पर निभर करता है और हम जानते हैं कि इस योग्यता और गुणा मकता को नागरिक मे पाने के लिए हम तभी आश्वस्त हो सकते है जबकि बचपन से ही इन बातो पर ध्यान दिया जाय। प्रकारा तर से योजनाबद्ध रूप से बालको का शिक्षण और विशेष रूप से बाल साहि य की रचना करके उनकी न केवल बौद्धिक भूख को परा किया जाय वरन् अनुकूल दिशाओ मे प्रवश के लिए उनमे नई नई जिज्ञासाओ के बीज भी बोए जायें।

दूसरी बात यह है कि हमारी बहुत बडी सास्कृतिक परम्पराएँ है जितनी पुरानी शायद अन्य नही। हमे इस बात का गौरव भी है। लेकिन आज बीसवी शता दी मे वज्ञानिक विकास के कारण जो उथल-पुथल हुई है और आ तरिक रूप से जहाँ हमारी धारणाओ मे परिवर्तन हुआ है तथा सारी पृथ्वी सिकुड कर एक देश जैसी हो रही है वहाँ पर हमे अपनी सास्कृतिक परम्पराओ से ही सब कुछ हासिल नही हो सकता। आवश्यकता इस बात की है कि हमारे बच्चो के मन मे वैज्ञानिक अवधारणाएँ बोने के लिए हम सभी विषयो को के द्र मे रख कर इस प्रकार के ज्ञान साहित्य की रचना करें जा बालको मे रस रुचि और मनोरजन के साथ अनुकूल क पना मक दिशाओ की ओर ले जाकर उनमे आज के विश्व के समथ नागरिक होने के रास्ते उजागर करे। इस प्रकार भविष्य के मानव की परिक पना करते हुए तथा उत्तरादायि यो को वहन करने योग्य नागरिक बना पाने के लिए हमे सबसे पहले अनुकूल बाल साहि य के मह व पर विचार करना होगा।

इसके अतिरिक्त आज के इस औद्योगिक विकास के युग मे जहाँ विज्ञान के कारण नैतिक और धार्मिक मा्यताए भी जैसे बुझने को त पर है फिर भी टिमटिमा रही हैं वहाँ अपराध मुक्त स्वतत्र मनु य की रचना के लिए तथा विशेष रूप से आज के पूजीवादी समाज मे उ पन्न विकृतियो से बच पाने के लिए हम बचपन से ही ब्च्चे के मन और कम को अनुकल सामग्री और क्षेत्र देकर उसे वास्तविक रूप से स्चा मनुष्य वना सकते हे। इस सदर्भ मे बाल साहि्य का मह्व (किसी भी उ नतशील देश की परिकल्पनाओ तक जाने के लिए) पण रूप से उत्तरदायी यक्तियो के यान को हमारी तरफ आकर्षित करता है।

भारतीय बाल साहि्य का मह्व इस दृष्टि से और भी बढ गया है कि पौरस्य अथवा पाश्चा्य बाल साहि्य को भारतीय कथाओ ने ही सर्वाधिक प्रभावित किया है। सस्कृत कथा साहि्य पचत्त्र का ऋणी स पूर्ण विश्व बाल साहि्य है। यह जतु कथा (जिसमे पशु पक्षी मनु यो जसे कार्य करते हैं तथा बातचीत करते है) ब्चो को सदा से प्रिय रही है क्योकि अपनी कौतूहलप्रियता के स्वाभाविक गुण के कारण वे इस प्रकार की कथाओ के पात्रो से समीकरण स्थापित करते है जो उनके लिए बडा सुखद होता है। इन कथाओ के मा यम से बालको को नीति और सदाचार की शिक्षा दी जाती है जो रूसी लेखक लेव कास्सिल के मत की पूर्ति करता है कि बाल पुस्तक को शिक्षा और आन्द का कोश होना चाहिए।

बालको के बहुविध विकास की दृष्टि से बाल साहि्य का मह्व असदिग्ध है। इस प्रकार के सुरुचिपूर्ण साहि य के अध्ययन से बालको मे पठन रुचि जागृति होती है जो उ्हे जीवनपर्य त अधिकाधिक अध्ययन और ज्ञानार्जन की ओर अग्रसर करने मे सहायक होती है। इस साहि य के माध्यम से उ्हे जीवन की वाछित दिशा की ओर मोडा जा सकता है उनमे राष्ट्रीय एव अ्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास उ्प्न किया जा सकता है और उनके अ्दर की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियो को उभारा जा सकता है।

पाश्चात्य एवं भारतीय संदर्भ मे विद्वानों के दृष्टिकोण उनकी समीक्षा

बालको की रुचि यो यता प्रतिभा को ध्यान मे रखकर भारत एव विदेशो मे अनेकानेक बाल-साहि य की रचना विभिन्न विषयो पर हुई है। भारत मे बाल साहि्य का इतिहास अधिक पुराना नही है कि्तु विदेशो मे इसका प्रचुर भण्डार उपल ध है। इग्लैंड का अग्रेजी बाल साहि्य तो सबसे

पुराना है । भारतीय बाल साहि य किसी निश्चित सीमा मे बध कर नही रह सका जबकि पाश्चा य बाल साहित्य की विषय वस्तु का आधार सीमित लगता है ।

भारत मे आज भी प्राचीन कथाओ को नये नये पर्िवेश मे बदल कर प्रस्तुत किया जाता है । इसमे भावनाओ एव ्यावहारिक मू्यो का अजीब सा तालमेल रहता है जबकि अमरीकी बाल साहि्य मे जीवन के भावना ्मक पक्ष पर कम एव व्यावहारिक पक्ष पर अधिक ध्यान दिया जाता है और स य बातो का ज्ञान कराना जीवन मू्यो को सही रूप मे आँकना ही अधिक उपयोगी समझा जाता है । जमनी मे ब्चो को जीवन युद्ध मे लडने योग्य कर्मठ सिपाही बनने की प्ररणा दी जाती है । परिणामस्वरूप उन बच्चो मे चारित्रिक दृढता का अभाव आ मविश्वास की कमी स्वत त्र अभि्यक्ति का अवरो्र ही दिखाई देता है । फ्रास के ब्चो प वहा के बाल साहित्य का प्रभाव यह पडता है कि वे जीवन की परिस्थितियो से सघष कर सकते हैं । इसके विपरीत मनोरजन का कोई स्थान वहाँ नही है ।

रूसी बाल साहि्य द्वारा ब चो को वज्ञानिक बनने की प्ररणा दी जाती है तथा यह साहि्य ब्चो का आ्मिक तथा नैतिक शक्तियो मे गहरी आस्था हर चीज को समझ सकने उसका सही सही मू याकन करने की उनकी यो यता मे गहन आ था पर आधारित है । वहा मा्यता है कि पौराणिक धार्मिक कथानक ब्चो को निष्क्रिय बना देने की क्षमता रखती है । इस दृष्टि से वहाँ बाल साहित्य एक निश्चित विचारधारा के अनुरूप लिखा जाता है । सोवियत सघ विश्व मे बाल पुस्तको का सबसे बडा प्रकाशक है और पुस्तकें पढना वहाँ के ब्चो का सबसे लोकप्रिय शौक है । सोवियत बाल साहि्य एक ऐसा ससार है जिसके अपने नियम कानून है साथ ही यह सघ यह भी मानता है कि ब चो के लिए साहि य का केवल यही अथ नहीं है कि बाल साहि्य की पुस्तक काफी सख्या मे उपल ध है ब्कि करुणा अ्तर्रा ट्रीय मैत्री और स्ची मानवता की भावनाओ का ही इस दृष्टि से सर्वोपरि मह व है । फलत वहाँ का बा्ल साहि य सामा्य सस्कृति की प्रगति का भी एक अग माना जाता है और यह भी समझा ज ता है कि बाल साहि य के द्वारा बालको को बहलाने और मनोरजन प्रदान करने के अति रिक्त उ्हे वा तविक आन्द को पहुचाना भी उसका मह्वपूण उद्देश्य है । रूसी बाल साहि यकार इस उद्दश्य की पूर्ति करने म सलग्न हैं और उनके विचारो को सम्मानपूर्ण मा यता दी जाती है तथा लेखक जगत मे उ्हे समानता भी प्राप्त है ।

दूसरी ओर अग्रेजी का बाल साहित्य बच्चो मे क्रियात्मक भावना का सचार करता है और अपने राष्ट्र के प्रति पूणतया समर्पित होने की प्ररणा देता है। इग्लड मे प्राय सभी बड लेखको ने बच्चो के लिए कुछ न कुछ लिखा है।

इस प्रकार पाश्चात्य बाल साहित्य मे युग के अनुरूप साहित्यिक मान दण्डो एव जीवन के मूल्यो को भी परिवर्तित करना आवश्यक समझा जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि वहाँ के बच्चो की स्वतन्त्र प्रवृत्ति एव विचार धारा का कोई मूल्य नही रह गया है। बड अपने हाथ की कठपुतली बनाकर अपनी विचारधारा के अनुसार जसा चाहे उन्हे घुमा सकते है। और जब हम भारतीय बाल साहित्य को देखते हैं तो लगता है कि हमारे यहाँ अभी तक कोई निश्चित विचारधारा ने अपना स्वरूप नही निर्मित किया है। वही घिसी पिटी पारम्परिक मान्यताए आज भी नई बोतल मे पुरानी शराब वाली कहावत को चरिताथ करती है। वास्तव मे आज आवश्यकता है ऐसे बाल साहित्य की जो उनकी मानसिक तुष्टि-- मनोरजक और बोद्धिक दोनो ही—मनोवज्ञानिक ढग से कर सके। ऐसा साहित्य ही बाल साहित्य कहा जा सकता है जो बच्चो की रुचि के अनुकूल उन्ही की भाषा मे उनकी ज्ञान सीमा को विस्तार दे सके और उनकी ज्ञान पिपासा को शान्त कर सके। युग के अनुरूप लिखा गया साहित्य चाहे वह बाल साहित्य हो या प्रौढ साहित्य अधिक प्रभावित होता है। आज सभी देशो के बाल साहित्य रचना का एक निश्चित आधार है और उसे परम्परा से हटाकर नय परिप्रेक्ष मे प्रस्तुत किया जा रहा है। सभी देश अपने राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक चिन्तन के अनुरूप बच्चो का विकास चाहते हैं न कि परम्परा के मोह मे यथाथ के धरातल से दूर विकास को अवरुद्ध करना। फिर भी पाश्चात्य बाल साहित्य की तुलना मे भारतीय बाल साहित्य की स्थिति अभी अनिश्चित ही है।

अनेक भारतीय विद्वान् शुद्ध भारतीय परिवेश को साहित्य की रचना की कसौटी मानते हैं। साथ ही उनका यह भी कहना है कि बाल साहित्य का महत्व केवल राष्ट्रीय ही नही अन्तर्राष्ट्रीय भी है। इसके द्वारा उन बालको को दिशा प्राप्त होती है जो न केवल हमारे देश के कणधार हैं वरन् जिन्हे दूसरे देशो मे भारत के प्रतिनिधि के रूप मे काम करना है। अत बाल साहित्य ऐसा हो जो बच्चों में सहज सात्विक उत्सुकता उत्पन्न करे उनके कुतूहल का प्रवद्धन और पोषण करे तथा जिज्ञासा की तृप्ति करे। बाल साहित्य

का विषय ऐसा होना चाहिए जिससे बालक सकीर्णताओ से ऊपर उठकर सच्ची मानवता और विश्व क याण की भावना से अपना जन जीवन यतीत करने का सक प ले। साहि यकार के हाथ मे ही बालक का भाग्य है। उसे अपनी सामग्री भारतीय इतिहास के उन स्वर्ण पर्वों से लेनी चाहिए जिनसे भारत का मस्तक आज देदीप्यमान है। भूत प्रतो की कहानियाँ स्वस्थ बाल साहित्य का अग नही। इस बाल साहि य के लिए उन महान् कवियो की कृतियो से सामग्री ल जि होने कवि कुल को गरिमा दी। वर्मा जी का यह मत बाल मनोविज्ञान के अनुरूप है और इस प्रकार का साहि य ही श्रे ठ बाल साहित्य कहलाने का अधिकारा है।

पराग (मासिक पत्रिका) के भूतपूर्व स पादक श्री आन द प्रकाश जैन बाल साहि य को जादूगरो और राक्षसो की कहानियो से दूर रखना चाहते है। उनके मतानुसार जादूगरो और राक्षसो की कहानिया अब ब चो के साहि य मे स्थान पाने योग्य नही रह गई हैं। विज्ञान के मूलभूत सिद्धा तो से परिचित कराने के लिए कोर्स की पुस्तक ही पर्याप्त नही होती जीवन के साथ साथ विज्ञान के दर्शन का जो मेल आज अधिक स्पष्ट होकर उभरा है वही सस्कारगत अ धविश्वासो से उ हें मुक्त कर सकता है। ये भारतीय बाल साहि य मे उन बीजो को अकुरित करना चाहते हैं जो बडे होकर विश्व मे अ य देशो के बाल साहि य की तुलना मे खडे हो सकगे। इनका विचार अ तर्राष्ट्रीय है।

इसके विपरीत पाश्चा य विद्वान् बाल साहि य को अ तर्दृष्टि देने वाला मानते हैं। पुस्तक वे ही अ छी हैं जो ब चो को बाह्य ज्ञान ही नही अ तर्ज्ञान भी दे सके। एक ऐसा सरल सौ दर्य दे सके जिसे वे सरलता से ग्रहण कर सक और ब चो की आ मा मे ऐसी भावना का सचार करे जो उनके जीवन मे चिरस्थायी बन जाय। दूसरी ओर वर्डसवर्थ का मत है कि बालक की शिक्षा स्कलो मे नही वरन् प्रकृति के साहचर्य से ही सम्भव हो सकती है। अपनी कविताओ मे भी कवि ने यही म त्र फूंका है।

रवी द्रनाथ टगोर के मतानुसार बाल साहि य शास्वत साहि य है। यह साहि य कभी पुराना नही होता। इसमे वही रस वही माधुर्य वही आन द सदव मिलता रहता है जो उसने अपने काल के प्रारभ मे दिया होगा। वास्तव मे ठीक से देखने पर ब चे जसा पुराना कुछ नही है। देश काल शिक्षा प्रथा के अनुसार वयस्क मनुष्यो मे कितने नये प्रयोग हुए हैं लेकिन ब चा हजारो साल पहले जसा था आज भी वैसा ही है। वही अपरिवर्तनीय

पुरातन बारम्बार आदमी के घर मे बच्चे का रूप धर कर जन्म लेता है तो भी सबसे पहले दिन वह जैसा नया था जैसा सुकुमार था जैसा भोला था जैसा मीठा था आज भी ठीक वैसा ही है। इस जीवन चिन्तनता का कारण यह है कि शिशु प्रकृति की सृष्टि है जबकि वयस्क आदमी बहुत अशो मे आदमी की अपने हाथ की रचना होती है। बहुत पहले ही गुरुदेव ने इस प्रकार के बाल साहित्य की कल्पना कर ली थी।

बच्चो को प्यार करने वाले हमारे देश के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री प जवाहर लाल नेहरू भी पुस्तको के द्वारा बच्चो के ज्ञानवर्द्धन की बात करते हैं। उनका कहना है कि बचपन मे ही पढने की रुचि जागत की जा सकती है। अत यह विशेष रूप से आवश्यक है कि हम बच्चो को पढने की आदत डालने के लिए प्रोत्साहित कर और उन्हे उचित मनोरजक पुस्तक द। बच्चो का दिमाग जिज्ञासाओ और अधिक जानकारियो के लिए लालायित रहता है। यदि इस उद्देश्य को दष्टिगत रखकर बच्चो की रुचि के अनुकूल पुस्तके तयार की जायें तो निश्चय ही बच्चो की रुचि पढने की ओर बढेगी। साहित्य के द्वारा ही वे बच्चो मे चारित्रिक उन्नति स्वतन्त्र विचार धारा सस्कृति और आत्मनिर्भरता की भावना जागत कराना चाहते थे। अत बाल साहित्य की रचना करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बाल साहित्य वह है जो बच्चो के पढने योग्य हो रोचक हो उनकी जिज्ञासा की पूर्ति करने वाला हो। बच्चो के साहित्य मे अनावश्यक वर्णन न हो उनमे बुनियादी तत्वो का चित्रण हो। कथावस्तु मे अनावश्यक पेचीदगी न हो। वह सहज सरल और समझ मे आने वाला हो सामाजिक दृष्टि से स्वीकृत तथ्यो को प्रतिपादित करने वाला हो। लेखक की पकड बाल साहित्य मे गहराई तक है और इनके मत से आज के युग के सभी बाल साहित्यकार सहमत हैं।

समग्र रूप मे भारतीय बाल साहित्य को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि जहाँ हम परम्पराओ और रूढ़िवादी विचारधाराओ का मोह नही छोड पा रहे है वही उनसे अलग नये वैज्ञानिक परिवेश मे प्रवेश की छटपटाहट भी है। दूसरी ओर विदेशी बाल साहित्य की अनेक कृतियो का प्रभाव भी उन पर है जिसके फलस्वरूप भारतीय बाल साहित्य की रचना का उद्देश्य अधिक स्पष्ट हो गया है। इसके अनुसार अब इस बात को ध्यान मे रखा जा रहा है कि बच्चे आधुनिक जीवन मूल्यों के अनुरूप बन सक और उनका साहित्य उनकी आज की समस्याओ का उत्तर तो हो ही मनोरजक और ज्ञान वर्धक भी हो। इस प्रकार के साहित्य निर्माण मे जितना भी उत्साह दिखाया

जा रहा है उससे यह विश्वास दढ होता जा रहा है कि विश्व बाल साहि्य के समकक्ष निकट भविष्य मे मह्वपूण कृतियाँ प्रस्तुत हो जायगी ।

आधनिक सामाजिक निर्माण मे बाल साहि य का योगदान

वर्तमान ममाज का बालक इक्कीसवी सदी का नागरिक होगा । अत हमे इस बात का ध्यान रखना होगा कि आज हम जिस प्रकार का साहि्य बालक को दगे उसका प्रतिफल हमे बीस साल बाद मिलेगा । बालक भावी राष्ट्र के निर्माता है । उसके यक्ति व को जिस ढाँचे मे ढालगे उसका स्पष्ट प्रभाव हमारे घर तथा समाज पर परिलक्षित होगा । य युग युग की परपरा है । जब भी किसा देश ने बालक की उपेक्षा की उसे भयकर परिणाम भगतने प । रूस मे बालक अ यधिक मात्रा मे पुस्तक पढते है क्योकि वहाँ शता दियो से बालको के लिए युगानुरूप रचना होती रही और उ हे पढने के लिए प्ररित भी किया जाता रहा । दूसरी ओर भारत मे बालको के लिए साहित्य लिखने के लिए अधिक ध्यान नही दिया गया । जो कुछ लिखा गया बडो के लिए । परिणामस्वरूप भारत शता दियों से पराधीनता की बेडियो मे जकडा रहा । इस स्थिति के लिए अ य अनेक कारणो के अति रिक्त यह भी एक सशक्त कारण है इसमे कोई सदेह नही । काला तर मे भारतवासियो का ध्यान इस कमी की ओर गया और तभी से बालको के लिए साहित्य लेखन की ओर लेखकगण प्रवत्त हुए । अब आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्र का निर्माण करने वाला मह्वपूण त व साहि्य को इस रूप मे प्रस्तुत किया जाय कि अधिकाश बालक इससे लाभान्वित हो सक और उसमे भूत का स्मरण वर्तमान के लिए समझ तथा भविष्य के लिए जिज्ञासा हो । अ छे बाल साहि्य के लिए ये गण अनिवार्य है ।

समाज दो प्रकार का होता है—परम्परावादी एव वज्ञानिक । परम्परावादी समाज वह समाज है जो प्राचीन मू यो पराम्परागत रीति रिवाजो एव रूढिवादिता मे विश्वास करता है जो सदा भूत की ओर देखता है । इस प्रकार का समाज प्रगतिशील नही होता । इससे भिन्न वैज्ञानिक समाज है जो भविष्यो मुख होने के कारण प्रगतिशोल होता है । यह बालको मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा वैज्ञानिक अभिवृत्ति (स य मे निष्ठा तार्किक वत्ति ईमानदारी और जिज्ञासा तथा नवीनता मे विश्वास आदि) के विकास हेतु प्रयास करता है । विकसित देश (अमेरिका रूस ब्रिटेन जापान आदि) का समाज वज्ञानिक समाज एव विकासशील देश (भारत अफ्रीका चीन आदि) का समाज पर परावादी समाज है ।

पुरातन बारम्बार आदमी के घर मे बच्चे का रूप धर कर जन्म लेता है तो भी सबसे पहले दिन वह जसा नया था जसा सुकुमार था जैसा भोला था जसा मीठा था आज भी ठीक वसा ही है। इस जीवन चिन्तनता का कारण यह है कि शिशु प्रकृति की सृष्टि है जबकि वयस्क आदमी बहुत अशो मे आदमी की अपने हाथ की रचना होती है। बहुत पहले ही गुरुदेव ने इस प्रकार के बाल साहित्य की कल्पना कर ली थी।

बच्चो को प्यार करने वाले हमारे देश के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री प जवाहर लाल नेहरू भी पुस्तको के द्वारा बच्चो के ज्ञानवर्द्धन की बात करते है। उनका कहना है कि बचपन मे ही पढने की रुचि जागत की जा सकती है। अत यह विशेष रूप से आवश्यक है कि हम बच्चो को पढने की आदत डालने के लिए प्रोत्साहित करें और उन्हे उचित मनोरजक पुस्तक द। बच्चो का दिमाग जिज्ञासाओ और अधिक जानकारियो क लि नानाथित र ता है। यदि इस उद्देश्य को दष्टिगत रखकर बच्चो की रुचि के अनुकूल पुस्तक तैयार की जायें तो निश्चय ही बच्चो की रचि पढने की ओ बढ़गी। साहित्य के द्वारा ही वे बच्चो मे चारित्रिक उन्नति स्वतन्त्र विचा धारा सस्कृति और आत्मनिर्भरता की भावना जागत कराना चाहत थ। अत बाल साहित्य की रचना करते समय इस बात का ध्यान खना चाहिए कि बाल साहित्य वह है जो बच्चो के पढने योग्य हो रोचक हो उनकी जिज्ञासा की पूर्ति करने वाला हो। बच्चो के साहित्य मे अनावश्यक वणन न हो उनमे बुनियादी तत्वो का चित्रण हो। कथावस्तु मे अनावश्यक पेचीदगी न हो। वह सहज सरल और समझ मे आने वाला हो सामाजिक दृष्टि स स्वीकृत तथ्यो को प्रतिपादित करने वाला हो। लेखक की पकड बाल साहित्य म गहराई तक है और इनके मत से आज के युग के सभी बाल साहित्यकार सहमत हैं।

समग्र रूप मे भारतीय बाल साहित्य को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि जहाँ हम परम्पराओ और रूढिवादी विचारधाराओ का मोह नही छोड पा रहे है वही उनसे अलग नये वज्ञानिक परिवेश मे प्रवेश की छटपटाहट भी है। दूसरी ओर विदेशी बाल साहित्य की अनेक कृतियो का प्रभाव भी उन पर है जिसके फलस्वरूप भारतीय बाल साहित्य की रचना का उद्देश्य अधिक स्पष्ट हो गया है। इसके अनुसार अब इस बात को ध्यान म रखा जा रहा है कि बच्चे आधुनिक जीवन मूल्यो के अनुरूप बन सक और उनका साहित्य उनकी आज की समस्याओ का उत्तर तो हो ही मनोरजक और ज्ञान वर्धक भी हो। इस प्रकार के साहित्य निर्माण मे जितना भी उत्साह दिखाया

जा रहा है उससे यह विश्वास दढ होता जा रहा है कि विश्व बाल साहि्य के समकक्ष निकट भविष्य मे मह वपूण कृतियाँ प्रस्तुत हो जायगी।

आधनिक सामाजिक निर्माण मे बाल साहित्य का योगदान

वतमान ममाज का बालक इक्कीसवी सदी का नागरिक होगा। अत हमे इस बात का ध्यान रखना होगा कि आज हम जिस प्रकार का साहि्य बालक को दगे उसका प्रतिफल हमे बीस साल बाद मिलेगा। बालक भावी राष्ट के निर्माता हैं। उसके यक्ति्व को जिस ढाँचे मे ढालगे उसका स्प ट प्रभाव हमारे घर तथा समाज पर परिलक्षित ेगा। य युग युग की परपरा है। जब भी किसा देश ने बालक की उपेक्षा की उसे भयकर परिणाम भगतने प । रूस मे बालक अ यधिक मात्रा मे पुस्तक पढते हैं क्योकि वहाँ शता्दियो से बालको के लिए युगानुरूप रचना होती रही और उ्हे पढने के लिए प्ररित भी किया जाता रहा। दूसरी ओर भारत मे बालको के लिए साहि्य लिखने के लिए अधिक ध्यान नही दिया गया। जो कुछ लिखा गया बडो के लिए। परिणामस्वरूप भारत शता्दियो से पराधीनता की बेडियो मे जकडा रहा। इस स्थिति के लिए अन्य अनेक कारणो के अति रिक्त यह भी एक सशक्त कारण है इसमे कोई सदेह नही। काला्तर मे भारतवासियो का ध्यान इस कमी की ओर गया और तभी से बालको के लिए साहित्य लेखन की ओर लेखकगण प्रवृत्त हुए। अब आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्र का निर्माण करने वाला मह्वपूण त्व साहि्य को इस रूप मे प्रस्तुत किया जाय कि अधिकाश बालक इससे लाभा्वित हो सक और उसमे भूत का स्मरण वर्तमान के लिए समझ तथा भविष्य के लिए जिज्ञासा हो। अ्छे बाल साहि्य के लिए ये गण अनिवार्य हैं।

समाज दो प्रकार का होता है—परम्परावादी एव वैज्ञानिक। परम्परावादी समाज वह समाज है जो प्राचीन मू्यो पराम्परागत रीति रिवाजो एव रूढिवादिता मे विश्वास करता है जो सदा भूत की ओर देखता है। इस प्रकार का समाज प्रगतिशील नही होता। इससे भिन्न वैज्ञानिक समाज है जो भविष्यो्मुख होने के कारण प्रगतिशील होता है। यह बालक ो मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा वज्ञानिक अभिवृत्ति (स्य मे निष्ठा तार्किक वृत्ति ईमानदारी और जिज्ञासा तथा नवीनता मे विश्वास आदि) के विकास हेतु प्रयास करता है। विकसित देश (अमेरिका रूस ब्रिटेन जापान आदि) का समाज वज्ञानिक समाज एव विकासशी्न देश (भारत अफ्रीका चीन आदि) का समाज पर परावादी समाज है।

विकसित देश अपनी प्रगति के चरमो कर्ष पर है जिसका एक कारण यह भी है कि उनका बाल साहि्य वज्ञानिक स्वरूप ले चुका है । इसके विप रीत विकासशील देश अपनी परम्परावादी मा यताओ को न छोडने के कारण म द गति से प्रगति कर रहा है । भारत के लिए यह विडम्बना ही है कि भारतवासी रूढिवादिता के मोह को छोड नही पा रहे हैं । उनका विचार है कि प्राचीन भारतीय सस्कृति एव सभ्यता का ह्रास नही होना चाहिए क्योकि भारतीय सस्कृति एव साहि य बहुत समृद्ध है । वैज्ञानिक प्रभाव के कारण वह खतरे मे है ।

फलस्वरूप वर्तमान बाल साहि्य मे प्राचीन साहि्य से पर्याप्त सामग्री ली गई है और ऐसी अपेक्षा की जाती है कि बालक बालिकाए उनका स्मरण कर जिससे वह सुरक्षित रहे । लेकिन इससे प्राचीन साहि्य सुरक्षित रहता हो या नही पाठक की स्मरण शक्ति बढती हो या नही पर तु बाल साहि्य की ताि्वक वृद्धि नही होती उसकी परिधि नही बढती न उसम समयानुकूल मौलिकता ही आती है । इसका यह अथ नही कि प्राचीन साहि य का सरक्षण ही न हो उसका अ धानुकरण नही हाना चाहिए और न उस पर आवश्यकता से अधिक बल देना चाहिए । प्राचीन मू यो एव मा यताओ को नए परिप्रक्ष मे प्रस्तुत करने की आवश्यकता है । यह युग की माँग है ।

शता दियो पूर्व भारत की शिक्षा दीक्षा इस प्रकार से दी जाती रही कि उसका सम्ब ध वर्तमान से न होकर भविष्य से होता था । आने वाले कल के समाज की क पना कर ली जाती थी और उसी के अनुसार शिक्षा का प्रब ध किया जाता था । राजा महाराजाओ के पुत्रो को उनके शिक्षा गुरु भावी राजा बनने के लिए तैयार करते थ । काला तर मे भारत पर विभिन्न जातियो के आक्रमण समय-समय पर होते रहे फलस्वरूप भारतीय सामाजिक यवस्था छिन्न भिन्न होती गई । शिक्षा दीक्षा की कोई यवस्थित परम्परा नही रह गई । वर्षों पूव भारत जब अग्रजो का दास था महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे प्रभत विद्वानो का ध्यान बालको की दशा पर गया और ये बालक ही देश के भावी नागरिक हैं इस उक्ति को ध्यान में रखते हुए बाल साहि्य की रचना करने मे सलग्न हुए तथा अनेकानेक लेखकगण तैयार करने लगे । इस समय भारत की खोई-हुई सभ्यता तथा सस्कृति के पुनरु थान का ही प्रयास प्रमुख रूप से हुआ । बालको मे चारित्रिक नैतिक गुणो को समाहित करने के लिये महापुरुषो की जीवनियो का आदर्श उपस्थित किया गया ।

स्वतन्न भारत के स्थ प की स पना करन ही इस पकार का साहि य प्रस्तत होता रहा ।

स्वतन्न भा त मे स्थिति ब नने ल ी। विनान क प्रभाव के कारण तार्किक वृत्ति ने न म लिया औ प्राचीनता की अपेक्षा नवीनता की आ लोगो का ध्यान त र्गित ढग से ही ान लगा। साहि य का क्षेत्र भी इससे अछूता नही हा। लेखकगण स बात पर विचा क ने लग कि ब चा का बौद्धिक विकास भी नानिक ा स ोना चाहि । सके अनुसार लिखा जाने वाला साहि य उनक मन औ मस्ति क को स्वस्थ बनाने म सहायता करता है उनका मना जन क ता है उ सस्कार देता है उ हे भले बुरे का ज्ञ न क ाता है भावी जीवन ि ट क लिए बुनिया रखता है। इसके विपरीत कुछ विद्वानो का विचा है कि स ि य मे विज्ञान का प्रवेश नही होना चाहि ए क्योकि म से बालका के मस्ति क का स्वस्थ विकास नही हो पाता। भ तीय सस्कृति ा त ग म ा प ो का ीवनी ा रत की महिमा आदि की शिक्षा ही ा न साहि य क मा यम स ी जानी चाहि तभी भा तीयता त था भा रत की अव ता का ज्ञान ब न प्राप्त क सकते ।

इस प्रका के विचा ा ा क ा ा का मत है कि ज विज्ञान का बोल बाला है। यही बा ा साहि य क उत्तम विकास का आधा है। विज्ञान कभी सजनशील साहि य का स्थान नही ले ा सकता । इनके मतानुसार बौद्धिक विकास के नाम पर विज्ञान भूगोल तिहा ा की जो भी बाते सिखाई जाती है बालको के स्वस्थ मस्ति क का ि गा ती ही है। लेखक का यह सकुचित विचा पूर्वाग्र से प्र ि त प्र ि ित ोता है बाल साहि य का लेखन काय करते समय लेखका का ध्या ा ा रना चाहि कि बालको की जिज्ञासा का शमन रुचि की सतुि तथा उ ा ा तिभा का प रा ा हो।

ब चे अपन आ ा ा ि गा टेलिविजन वायुयान तथा विद्युत के अनेकानेक उपकरण देखते उ ा ग ा ा ा ा उ पन्न होती है— न उप करणो के विषय म ा ा ी स ानने की ा ा ा ा प ा ा ा स आता है कोई यक्ति टेलीफोन के मा यम से एक स्थान से दूसरे स्थान के यक्ति से कैसे बाते क लेता ा ि ा ा आवाज कहा आती है आदि अनेक बातो को जानने की ा ा ा बालको मे रहती । साहि य के मा यम से इनकी जिज्ञासाओ को शा त किया जा ा ा है। बाल साहि य के नाम पर भारत के कई प्राचीन ग्रथ (प चतन्न हितोपदेश सिंहासन बत्तीसी बेताल पचीसी जातक कथाएं आदि) उपल ध हैं। नका अपना अलग महत्व है कि तु

आधुनिक जीवन के पर्िप्रक्ष मे ये अपूर्ण है। आज ता ऐसे जाल साहि य की आवश्यकता है जो युगानुरूप हो तथा भवि य के नि जिसमे आगह हो। अत आधुनिक वैज्ञानिक समाज के लिए बालक का नवा तर्ग मे पुरातन परंपराओ के जर्जर वातावरण मे नही कि तु प्र नक्षला की विजय की कामना से उद्दीप्त बलत एव अपराजित मानव के रूप मे ही करना होगा। इस प्रकार का साहित्य ही बान मनोविज्ञाना गत होता है।

बाल साहित्य की अपेक्षित गुणवत्ताए

बाल साहि य के स बध प विचार करते हुए मा । ध्यान सारी विधाओ के लेखन के लिए अपेक्षित यो यताओ की ओर तो जाता है लकिन चूंकि बाल साहित्य एक तरह का भविष्य के लिए शुभ अभियान है और इस क्षेत्र मे हमारे अपने देश मे बहुत कम प्रय म हुए है सनि यदि अधिक लेखको का ध्यान आकर्षित करके इस ओर उ हे आमन्त्रित किया जाता है तो यह भी सही होगा कि जो भी साहि य रचा गया है या जो आग रचा जायगा उन सभी मे कुछ अपेक्षित गुणवत्ताओ की उपस्थिति य म आवश्यक होती है तथा जिनके अभाव मे उस साहित्य को और कुछ भले ही कहा जाय वह बाल साहित्य नही हो सकेगा।

यहा पर हम प्रत्येक विधा क स ब ध मे बान साहि य की विधागत निहित अपेक्षाओ पर विचार करना उचित मानते हैं। ये अपेक्षा जो बाल साहि य को समर्थ और मह वपूर्ण बनाने मे योग देती है नीच लिख अनुसार हैं —

(1) **बाल उपन्यास**—हम जानते है कि उप यास समग्र जीवन को लेकर लिखा जाता है। इसमे भल ही किसी एक नायक का स पूण जीवन या चरित्र ही व्यक्त किया गया हो लेकिन वह चरित्र जिस ग स और जिन जिन क्षेत्रो मे जाकर विकसित होता है वे क्षेत्र इतने व्यापक परि प्रय मे उपस्थित किये जाते है कि उनके अ तर्गत समूचे देश काल अर्थात् समाज की सूक्ष्म गहराइयाँ प्रतिबिम्बित होने लगती है जिनमे समस्त सामाजिक राजनतिक और सास्कृतिक चेतना एकान्वित होकर अभिव्यक्ति पाते है। जहाँ तक बाल साहित्य का प्रश्न है उसके लिए लेखक से कुछ अतिरिक्त यो यताओ और क्षमताओं की माँग की जाय तो यह उचित ही होगा। क्योंकि बच्चो के मानसिक स्तर के कारण बहुत सी बात लेखक के लिए एकदम नई तरह से विचारणीय हो जाती हैं। अर्थात् एक ओर तो उप यास के समूचे संस्कृति और सामाजिक आधारो के साथ सम्पूण घटनाक्रम को गुन पाना अपेक्षित

होता है तो दूसरी ओर इसके साथ ही यह भी अनिवाय हो जाता है कि इन मारी बालो को इम क्रम से जो ा जाय और मर न तथा सहज बनाकर म क्रम से प्रस्तुत किया जाय कि ब चो के नि आकपक और स्वाभाविक भी ो उठे। मतलब यह कि ममूची सास्कृतिक गहराई को एक ओर ब चो के वभाव म घोलना और स ो ओर उस घोल (सा ि य) से ऐसा कुछ कर पाना कि ब चो की रुचि और आच ण म सास्कृतिक धरोहर विकसित ो और दूसरी ओर वे इन साहि यिक चरित्रा क मा यम से भविष्य मे समद्ध और बुद्धिमान नागरिक बन सक। वे आने वाली चुनौतियो के लिए अपने मन की तैयारी क सक।

यि बाल उप यामकार अपने उप य म चना के माध्यम से यह सब कुछ कर पाता है और किमी भी देश मे यदि प्रारम्भिक रूप मे इम तरह के साहि य लखन प्रकाशन और ब चो का म पा नेने की सुविधा प्रदान की जाती है तो निश्चित ही यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि ऐसे देश का भवि य न केवल उम देश के नि वरन् समूची मनुष्य ज ति के लिए गौरवान्वित करने वाला हो ग ता है। अत ा उप यास एक ऐमी खाद है जिसका बा को के मन से स पश होकर उ ह नई योग्यताओ के साथ एक लहलहाते हरे जी न से शुरु होकर उन्नत फल वाले वृक्ष के रूप मे बदल लती है और इसलिए म महान् लक्ष्य को लेकर बा उप यामकार मे यदि अपेक्षित क्षमताओ और कुशलत ओ की बात की जाती है और इस काय को बहु अधिक मह व दिय जाता है तो ऐसा कु न ी है िमे अनपे ान कहा जाय।

(2) **बाल कहानी**—वैसे कहानी का ही यह गुण हाता हे कि वह पाठको के मन को आकर्षित करके उ हे अपने ससार मे विचरण करने के लिए मजबूर कर देती है। इसका कारण यह है कि हमे यह अ य त मधुर रूप मे ऐसा सदेश देती है जो स य शिव और सु दर स परिपूण होता है कि तु ऐसा सदेश हमे अ छी कहानी से ही मिलता है। य मदेश हमारी आ मा का आहार है। यह हमारे अ तमन का विकसित करता है हमारी क पना का उ तेजित करता है और प्र यक्ष ससार से हमारा सदेश जोड देता है। इसलिए जब बाल कहानी का प्रश्न सामने आता है तो यहा लेखक की और भी गहरी परीक्षा होती है और वह ब चो के मानसिक जगत् को आकर्षित कर उसमे प्रवेश कर सकने की योग्यता रखे और साथ ही शिक्षा

और सदेशो के बीच उनके मानसिक जगत् मे रोपित करके अपने को पूर्ण करने मे सक्षम बन।

अत यहा पर हम दो बात स्प ट रूप से कह सकते है जो बाल कहानी के स्वरूप बोध के आधार बि दु निश्चित करती है। पहली यह कि बालको को आकर्षित करने के लिए उनके मनोविज्ञान को समझकर उ हे अपनी ओर से प्रभावित कर अपने साथ ले चलने की क्षमता लेखक का एक विशेष गुण होता है। हमे याद रखना चाहिए कि लेखक अपने प्रौढ अनुभवो के आधार पर उन अनुभवो से कही अलग अलग और सहज तथा बाल मन के अनुसार अति सहज होकर अपने अनुभव जगत् को बालको के अनुभव जगत् के साथ जोडकर सामने आता है। दूसरी यह कि वह अपने जीवन के निचोड से मिले हु अनुभावो को या आगे की दुनिया मे जो बात बहुत मह वपूर्ण है तथा जो आने वाले मनुष्य के लिए एकदम अनिवाय है उनके बीजो को बाल मन की जमीन मे रोपित करने के लिए उद्यत होता है।

इस सदभ मे दो बात और भी स्प ट होती हैं। एक तो यह कि लेखक की अपनी दष्टि जिसके आधार पर वह आने वाले समाज को विकसित देखना चाहता है और दूसरा यह कि उस दृ टि को बीज रूप मे बाल मन म रोपने की प्रवृत्ति और उसमे सहायक वस्तुओ का उचित चुनाव लेखक की अपनी क्षमता होती है जो समस्त बाल कहानी के स्वरूप बोध को निर्धारित करती है।

बाल कहानी और कहानी मे परम्परागत रूप स कोई भेद नही किया जा सकता। कहानी श ही इस बात का प्रमाण है कि स आयु सीमा मे नही बाधा जा सकता। लेकिन यह बात सही है कि साहि य के विकास के साथ तथा आधुनिक युग मे मनुष्य के मानसिक विकास के साथ बाल कहानी मे अ तर किया जा सकता है। बाल कहानियाँ ज सीध स चे सहज ढग से मनोरजक और उमगपूर्ण वातावरण मे ब चो को आक षित करके उनकी मानसिक भूमि मे उचित ज्ञान के बीज वितरित करती है वही उनका प्रवृत्तियो को परिष्कृत और प्रो साहित भी करती है। सरी ओर ये ही कहानी आज के समाज के अ तर्विरोध उनकी विसगतियो और समूचे परिवेश को अपने मे समाहित करके उपस्थित करती हे। इस दृ टि से बाल कहानी का क्षत्र सकीण नही सीमित है और कहानी का क्षेत्र यापक मानव आधारो पर प्रस्तुत होता है।

वाल कहानी से हम नीचे लिखी अपेक्षाएँ कर सकते है—

(क) बाल कहानी बहुत ही बोल चाल और सवाद की भाषा मे लिखी जाय ।

(ख) बाल कहानी की सामग्री मे ऐसी वस्तुएँ सम्मिलित हो जो ब चो के कोमल और रग बि गे मन को क पनाशील उडान से प्रभावित करे ।

(ग) बाल कहानियो मे घटित घटना के साथ अधिक मह व दिया जाय । इसमे वस्तु का स्थापित वर्णन होने की अपेक्षा वस्तु के चरित्र की गतिशील उडान होना चाहिए ।

(घ) बाल कहानी के के द्रीय गुण के रूप मे लेखक को यह स्प ट होना चाहिए कि ब चो का मन किस स्थान पर है और वह उसकी यात्रा किस दिशा मे कहा तक ले जाना चाहता है ।

(च) बाल कहानी सोद्द्श्य होना चाहिए । यह बात अलग है कि यह उद्देश्य लेखक की चित्ता मक और रग बिरगी उमगपूण शली मे पानी की तरह भिदा हो ।

(छ) बाल कहानी की अनिवार्य आवश्यकता यह होती है कि बालको के परिचित जगत् से ही उसे आरभ किया जाय और जो कुछ भी नई बात उसमे समाहित हो वह भी उनके परिचित जगत् के बराबर ही सहज और सुपरिचित तथा मन मोहक लगे ।

(ज) बाल कहानियो मे जिज्ञासा की प्रवृत्ति परिलक्षित हो इसलिए कि बालको मे कुतूहल का स्वाभाविक गुण विद्यमान रहता है । साथ ही जिज्ञासा का शमन भी मनोरजक ढग से हो जिससे बालक के मानस पर अतिरिक्त बोझ न पड ।

(झ) बाल कहानियाँ मात्र मनोरजन के उद्देश्य से न लिखी जाय वरन् उनमे सदुपयोग यवहार शिक्षा आदि त व भी समाहित हो जिससे बालको के ज्ञान का विकास क्रमिक गति से होता रहे । इस बात का भी यान रखना है कि मात्र ज्ञान वृद्धि के लिए रचित कहानी नीरस होती है अत ज्ञान वृद्धि का उसका उद्द्श्य अप्र यक्ष हो ।

(3) **बाल नाटक**—अनुकरण की प्रवृत्ति प्राणी मे ज मजात होती है । प्राचीन एव आधुनिक भारतीय तथा पाश्चा य विद्वानो ने एकमत से

माना है कि अनुकरण की प्रवृत्ति ही अभिनय को ज म देती है। मनु य की प्रारंभिक शिक्षा का आधार अनुकरण है। य अनुकरण मनु य का भाषा उसके वेश और यवहार की शिक्षा के लिय अनिवाय साधन है। उसी अनुकरण की सामा य प्रवृत्ति कुछ परिमार्जित एव समु नत होकर समाज के असामा य यक्तियो के यापारो तक ही परिमित हो जाता है ओ उसका उद्देश्य किसी निर्दि ट आदर्श को स्थापित करना अथवा मनोरजन करना होता है। अनुकरण की यह प्रवृत्ति प्रौढो की अपेक्षा बालको मे अधिक होती है क्योकि उनके विकसित होते निर्दोष मन पर बहुत शीघ्र प्रभा पडता है। वह रेत पर खिची लकीर का तरह नही होता होता है प थर पर अकित छवि की तरह। वह छवि कुरूप और अश्लील होती है तो बालक की क पना शक्ति के दूषित होने की आशका बनी रहती है। इसलिए सामग्री का रोचक और क पना प्रधान होना अनिवाय है पर उसी सीमा तक जिस सीमा तक उसकी क पना शक्ति और यक्ति व का विकास हो सके। यह तब सम्भव है जब बाल नाटककार इस बात का ध्यान रखे कि रचना करते समय ऐसे विषय का चयन करे जिनका बालको के अनुभवो से आ मीय सम्ब ध हो उसकी सवेदना ब चो की अपनी हो तथा उसके द्वारा वे सामाजिक और सास्कृतिक श दो की पहचान कर सक। उनमे सृजना मक दृ टिकोण एव रचना मक भावना जागृत कर सक बाल मनोभावो एव भावनाओ का परिष्कार हो सके उनका मानसिक एव बौद्धिक स्तर विस्तृत हो सके औ अप्र यक्ष रूप से ज्ञान के साथ सद्गुणो को अपनाने की शिक्षा दे सके।

बाल साहि्य की विभिन्न विधाओ मे नाटक अपने आप मे ब चो के लिए साथक एव सम्प्रेषण की द टि से उपयोगी विधा है। इसके मह व को समझते हुए भी हि्दी बाल नाटककारो को इस विधा को म पन्न करने का साहस नही हो पाया जिनके कुछ कारण अवश्य थे—

(क) बाल नाटककारो म बाल मनोविज्ञान की पकड इतनी न ी थी कि वे इसके आधार पर विषयो को उन विविधि परिपाश्व म बाँट द जि हे बालक अपने आस पास देखता है और भोगता है।

(ख) हि्दी बाल नाटककारो का यह सोचना कि नाटक पढ नही खेले जाते हैं भी नाटक लेखन की उपेक्षा का कारण बना।

(ग) इस स दर्भ मे प्रकाशको एव सम्पादको का यावसायिक दृष्टि कोण भी बाधक बना। उनका यह मत कि नाटको की अपेक्षा

कविताए तथा कहानियो की बिक्री अधिक होगी उनकी समझ से अधिक तकसगत था ।

(घ) रग मच के प्रति अनभिज्ञता भी बाल नाटक लेखक की एक बडी ाधा थी ।

बाल नाटको की भी कुछ अपेक्षाए है । वस्तुत जब हमने बाल कहानी की अपेक्षाओ पर पिछले पृ ठो पर विचार किया है तो लगभग बहुत सारा बात न केवल बाल कहानी के स दभ मे जरूरी है ब कि वे समस्त बाल साहि य के लेखन क लिए उतने ही आवश्यक हैं और इसीलिए वे बाल नाटक के लिए भी कम मह वपूर्ण नही है । इसके अतिरिक्त कुछ और बात जो विशेष रूप से बाल नाटक के लिए ही अपेक्षित होती है—

(अ) इसका मुख्य उद्दश्य अवसर के अनुकूल आचरण सिखाना है ।

(आ) नाटक मानव स्वभाव और मानव चरित्र का अध्ययन करना भावो को यक्त करना सम्यक रीति से उ चारण करना बोलना और अभिनय करना भी सिखाते हैं ।

इभ उद्देश्य की पूर्ति के लिए विदेशो मे बाल रगमच तथा थिएटरो की परिक पना वर्षों पूव कर ली गई थी । रूस मे तो जूवेनाइल थिएटर ब चो के लिए ही है । ब चे जीवन के विकास की दिशा का निर्धारण सही ढग से कर सक इसका मुख्य उद्दश्य है । बडे बड मनोवज्ञानिक इसके नाटक कार है ।

(4) **बाल गीत या कविता**—बालक गीत या कविता सुनकर आन दा नुभव करता है । यह मानव स्वभाव का स्वाभाविक गुण है और बालक भी इससे अछता नही । अ य त अ पवय के बालको को भी लोरी गीतो के मा यम से आनदित किया जाता है । भले ही अ य त छोटे ब चे इसकी प्रतिक्रिया यक्त न कर सकें पर तु शा तिपूर्वक उनका सोना ही इस बात का परिचायक है कि बालक को सुख तथा आन द मिला है । बालको के लिये गीतो की रचना करने की कठिनाई बाल गीतकार के समक्ष रहती है । उसे गीत को इस रूप मे प्रस्तुत करना होता है कि बालक इसे आ मसात कर सके । बाल गीत बडो के का य जसे गुण रखने के बाद भी उनसे अलग स्वीकार किए गए हैं क्योकि उनमे बाल जीवन के छोटे से समय के अनुभव ही रचना के मूल आधार होते हैं ।

ब चो के रहन सहन रुचि स्वभाव भाषा क पनाएँ और भावनाए बडो से सवथा भिन्न होती हैं । इसलिए बाल गीत रचना मे ब चो की

रुचि प्रवृत्ति की बातो को ही स्थान मिलता है। उसमे गेयता का पहला गुण है क्योंकि ऐसे गीत बच्चा को शीघ्रता से याद हो जाते है। भाषा आधुनिक होनी चाहिए। कठिन शब्द नही होने चाहिए क्योंकि बच्चे याद नही कर पाते। विषयो का उपयुक्त चुनाव होना चाहिए। फलत बाल कवि का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह जो भी गीत रचे उसमे गेयता सरलता स्वाभाविकता के गुण पर्याप्त मात्रा मे हो। साथ ही यह भी सच है कि बाल गीत बच्चो के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने मे बहुत सहायक होते है। गीतो मे तुक और स्वरो की सतुलित व्यवस्था ही अव्यक्त रूप से बच्चो के मन को सतुलित बनाए रखने के लिए पर्याप्त प्ररणा देने वाली होती है। इस दृष्टि से बाल गीत का क्षेत्र बहुत व्यापक हो जाता है। इन व्यापक क्षत्रो को दृष्टिगत रखते हुए ही हिन्दी बाल गीत के क्षत्र का अनुमान लगाकर उसे समझ पाने के लिए हिन्दी बाल गीतो के सभी प्रकारा को सोदाहरण प्रस्तुत करना उचित प्रतीत होता है।

बाल गीत के प्रकार

मुख्य रूप से हिन्दी बाल गीत के नीचे लिखे प्रकार होते हैं—

(क) **शिशु गीत**— आरम्भिक अवस्था के बच्चो का यही एक साहित्य है। तीन से छ वर्ष की उम्र का बच्चा अबोध होता है। इस समय उसके मानसिक स्तर के अनुकूल जो कविता सुनाई जाती है वे मनोरजक होने के साथ साथ उनके आरम्भिक विकास मे भी स्वाभाविक रूप से सहायक होती हैं। अपनी प्रकृति के अनुसार इस प्रकार के सरल गीतो को सुन कर बच्चा अति आह्लादित होता है।

हिन्दी मे शिशु गीत शब्द आधुनिक युग की देन है। अग्रजी के शिशु गीतो के प्रभावस्वरूप हिन्दी में शिशु गीतो का पर्याप्त विकास हुआ। यद्यपि इसकी परम्परा काफी पुरानी है जो सन् 1933 के अगस्त अक के बाल सखा मे प्रकाशित बिल्लो बाई शीषक शिशु गीत से स्पष्ट है। आरम्भ म इस प्रकार के गीतो का अधिक प्रचलन नहीं था। स्वण सहोदर सोहनलाल द्विवेदी जसे कतिपय कवियो ने अबोध शिशु की आवश्यकता को समझा था और दो दो चार चार पक्तियो की कविताए लिखी थी। डा विद्याभूषण विभु ने सबसे पहले विशेष रूप से छोटे बच्चो के लिए कविताए लिखी। उदाहरण के लिए—

कू कू कू कू कोयल बोली
राजा जी के बाग से।

वस्तुत हिन्दी शिशु गीतो का व्यवस्थित विकास सन् 1960 के बाद आरम्भ होता है जब पराग (मासिक पत्रिका) मे नन्हे मुन्नो के लिए नये शिशु गीत स्तम्भ का प्रारम्भ हुआ और इस सम्बन्ध मे कहा गया कि ये बड दिलचश्प और चपपटे होते हैं। ये गीत ऐसे होने चाहिए कि इन्हे चार से छ साल तक के बच्चे आसानी से जबानी याद कर ल। नि सदेह पराग की प्ररणा से शिशु गीतो की रचना प्रभूत मात्रा मे हुई और अनेक बाल पत्रिकाओ ने भी इसे एक आवश्यक अग के रूप मे अपना लिया। कालान्तर मे इसके अनेक सग्रह प्रकाशित हुए। जसे दँगी तुम्ह बताशा (सम्पादक—मनोहर वर्मा) शिशु गीत (सम्पादक योगन्द्र कुमार लल्ला) गीत तुम्हारे (सूर्य कुमार पाण्डेय) आदि।

शिशु गीतो के गेयता नाटकीयता मनोरजकता सरलता तथा कल्पना प्रधानता आदि प्रमुख गुण होते है। ये विशेषताए बच्चो की प्रकृति के अनुकूल होती हैं। उदाहरणाथ—आचार्य अज्ञात की कविता—

हरी मिर्च का किला बनाया
धनिये का दरवाजा।
बगन की झट तोप लगाई
लड नकलची राजा।

बच्चो को पर्याप्त मनोरजन प्रदान करने मे सक्षम है।

(ख) **लोरी गीत**—लोरी गीतो की रचना बहुत छोटे बच्चो को सुलाने के लिए की जाती है। इसकी रचना प्राय छ माह से तीन वष की अवस्था तक के बच्चो के लिए होती है। इस समय से बच्चा ध्वनियाँ सुनने मे समथ हो जाता है और लोरी के मधुर स्वरो के मनोवज्ञानिक प्रभाव के फलस्वरूप वह सो जाता है। भारत मे लोरियो का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। विभिन्न प्रान्तो के लोकगीतो मे इसका प्रचलन है। माताए बच्चे के प्रति अपनी ममता और सद्भावनाओ की अभिव्यक्ति के लिए लोरी गाती है जिनका स्वरूप परिवर्तन समय के अनुसार होता है।

हिन्दी मे अनेक कवि तथा कवयित्रियो ने लोरियो की रचना की है। अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध राष्ट्र बन्धु विद्यावती कोकिल श्रीनाथ सिंह शकुन्तला सिरोठिया निरकारदेव सेवक आदि के नाम इस क्षेत्र मे प्रमुख रूप से लिये जा सकते है।

लोरियो की प्रमुख विशेषता इसकी गेयता है। इसमे शब्दो का अर्थ

रुचि प्रवृत्ति की बातो को ही स्थान मिलता है। उसमे गेयता का पहला गुण है क्योकि ऐसे गीत ब-चो को शीघ्रता से याद हो जाते है। भाषा आधुनिक होनी चाहिए। कठिन श-द नही होने चाहिए क्योकि ब-चे याद नही कर पाते। विषयो का उपयुक्त चुनाव होना चाहिए। फलत बाल कवि का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह जो भी गीत रचे उसमे गेयता सरलता स्वाभाविकता के गुण पर्याप्त मात्रा मे हो। साथ ही यह भी सच है कि बाल गीत ब-चो के यक्ति-व का सर्वांगीण विकास करने मे बहुत सहायक होते हे। गीतो मे तुक और स्वरो की स-तुलित यवस्था ही अ-यक्त रूप से ब चो के मन को सतुलित बनाए रखने के लिए पर्या त प्ररणा देने वाली होती है। इस दष्टि से बाल गीत का क्षेत्र बहुत -यापक हो जाता है। इन यापक क्षत्रो को दष्टिगत रखते हुए ही हि- ी बाल गीत के क्षत्र का अनुमान लगाकर उसे समझ पाने के लिए हि-दी बाल गीतो के सभी प्रकारो को सोदाहरण प्रस्तुत करना उचित प्रतीत होता है।

बाल गीत के प्रकार

मुख्य रूप से हि-दी बाल गीत के नीचे लिखे प्रकार होते है—

(क) **शिशु गीत**— आरभिक अवस्था के ब-चा का यही क साहि-य है। तीन से छ वर्ष की उम्र का ब-चा अबोध होता है। इस समय उसके मानसिक स्तर के अनुकूल -ो कविता सुनाई जाती ते वे मनोरजक होने के साथ साथ उनके आरम्भिक विकास मे भी स्वाभाविक रूप से सहायक होती है। अपनी प्रकृति के अनुसार इस प्रकार के सरल गीतो का सुन कर बच्चा अति आह्लादित होता है।

हि-दी मे शिशु गीत श द आधुनिक युग की देन है। अग्रजी के शिशु गीतो के प्रभावस्वरूप हि-दी में शिशु गीतो का पर्याप्त विकास हुआ। यद्यपि इसकी परम्परा काफी पुरानी है जो सन् 1933 के अगस्त अक के बाल सखा मे प्रकाशित बि-लो बाई शीर्षक शिशु गीत से स्प ट है। आरम्भ मे इस प्रकार के गीतो का अधिक प्रचलन नही था। स्वण सहो र सोहनला- द्विवेदी जसे कतिपय कवियो ने अबोध -िशु की आव यकता को समझा था और दो दो चार चार पक्तियो की कविताए लिखी थी। डा विद्याभूषण विभ ने सबसे पहले विशेष रूप से छोटे ब-चो के लिए कविताए -िखी। उदाहरण के लिए—

कू कू कू कू कोयल बोली
राजा जी के बाग से।

वस्तुत हिन्दी शिशु गीतो का व्यवस्थित विकास सन् 1960 के बाद आरम्भ होता है जब पराग (मासिक पत्रिका) मे नन्हे मुन्नो के लिए नये शिशु गीत स्तम्भ का प्रारम्भ हुआ और इस सम्बन्ध मे कहा गया कि ये बड दिलचस्प और चपपटे होते है। ये गीत ऐसे होने चाहिए कि इन्हे चार से छ साल तक के बच्चे आसानी से जबानी याद कर ल। निसदेह पराग की प्ररणा से शिशु गीतो की रचना प्रभूत मात्रा मे हुई और अनेक बाल पत्रिकाओ ने भी इसे एक आवश्यक अग के रूप में अपना लिया। कालान्तर मे इसके अनेक सग्रह प्रकाशित हुए। जसे दगी तुन्नी बताशा (सम्पादक—मनोहर वर्मा) शिशु गीत (सम्पादक योगन्द्र कुमार लल्ला) गीत तुम्हारे (सूय कुमार पाण्डेय) आदि।

शिशु गीतो के गेयता नाटकीयता मनोरजकता सरलता तथा कल्पना प्रधानता आदि प्रमुख गुण होते है। ये विशेषताएँ बच्चो की प्रकृति के अनुकूल होती है। उदाहरणार्थ—आचार्य अज्ञात की कविता—

हरी मिर्च का किला बनाया
धनिये का दरवाजा।
बगन की झट तोप लगाई
लडे नकलची राजा।

बच्चो को पर्याप्त मनोरजन प्रदान करने मे सक्षम है।

(ख) **लोरी गीत**—लोरी गीतो की रचना बहुत छोटे बच्चो को सुलाने के लिए की जाती है। इसकी रचना प्राय छ माह से तीन वष की अवस्था तक के बच्चो के लिए होती है। इस समय से बच्चा ध्वनियाँ सुनने मे समथ हो जाता है और लोरी के मधुर स्वरो के मनोवज्ञानिक प्रभाव के फलस्वरूप वह सो जाता है। भारत मे लोरियो का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। विभिन्न प्रान्तो के लोकगीतो मे इसका प्रचलन है। माताए बच्चे के प्रति अपनी ममता और सद्भावनाओ की अभिव्यक्ति के लिए लोरी गाती हैं जिनका स्वरूप परिवर्तन समय के अनुसार होता है।

हिन्दी मे अनेक कवि तथा कवायित्रियो ने लोरियो की रचना की है। अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध राष्ट्र बन्धु विद्यावती कोकिल श्रीनाथ सिंह शकुन्तला सिरोठिया निरकारदेव सेवक आदि के नाम इस क्षत्र मे प्रमुख रूप से लिये जा सकते हैं।

लोरियो की प्रमुख विशेषता इसकी गेयता है। इसमे शब्दो का अर्थ

गौण रहता है परन्तु स्वर की प्रधानता रहती है जिसका बच्चे पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पडता है। उदाहरण के लिए निरकारदेव सेवक का यह लोरी गीत—

मुन्ना झूले पालना
धीरे धीरे धीरे डोला

कालान्तर मे हिन्दी की लोरियो के स्वर बदले। पहले जहा नारी का उद्देश्य बच्चो को सुलाना मात्र था तथा उनमे माँ का वात्सल्य व्यक्त होता था वहाँ अब लोरियो के माध्यम से बच्चो को सदेश भी प्रदान किया जाने लगा। उदाहरणार्थ सेवक जी का रचित गीत है—

मेरा मुन्ना बडा सयाना
शाम हुए सो जाता है
ऊधम नही मचाता है।

(ग) **खेल गीत**—बच्चे किसी भी प्रकार का खेल खेलते समय गीत गाते तब खेलने मे उनकी रुचि और लगन अधिक बढ जाती है। इसके महत्त्व को समझते हुए लेखकगण खेलो के पीछे बाल अन्तमन की अनुभूतियो को समझकर उसके अनुकूल खेल गीत की रचना करते हैं जैसे—श्री प्रसा का यह खेल-गीत—

अक्कड बक्कड बम्बे बो
अस्सी नब्बे पूरे सौ
सौ मे लगा ताला
चोर निकल कर भागा।

(घ) **वन्दना गीत**—विद्यालयो मे कक्षा लगने के पहले ईश वदना से सम्बन्धित गीतो की रचना प्राचीन काल से होती आ रही है। इस प्रका के वन्दना गीत बालको मे धार्मिक प्रवृत्ति को जन्म देता है विनय तथा विनम्रता के बीज बोता है गुरुजनो का आदर करना तथा अनुशासित रहना सिखाता है। इस सम्बन्ध मे प्रतापनारायण मिश्र का वदना गीत पिछले कई सालो से उल्लेखनीय है—

पितु मातु सहायक स्वामी सखा
तुम ही एक नाथ हमारे हो।

(ङ) **राष्ट्रीय गीत**—इस प्रकार के गीतो के माध्यम से बालको मे देश प्रेम एकता स्वाभिमान आदि की भावना के बीज अकुरित किए जाते हैं। यद्यपि यह निर्विवाद सत्य है कि राष्ट्रीयता की भावना बच्चो की

सहानुभूति स नि सत उनकी स्वाभाविक भावना नही होती। अपने समाज की देखा देखी वह अनक भावनाओ की तरह इस भावना को भी अपना भले ही ल पर यह उनक बडो की दी हुई भावना ही ोती है। इसलिए हि दी मे राष्टीय बा गीतो मे अधिकाश वे हैं जो ब ो के लिए िखे गए पर तु अपनी सरलता के कारण वे ब चो द्वारा अपना लिए गए। हि दी के प्राय सभी कवियो ने रा ट्र प्रम से स बधित बाल गीत लिख पर ब चो के मानसिक स्तर पर उतर कर उनकी मनोभावनाओ के अनुरूप विशष रूप से ब चा के लिए इस प्रकार के गीत कम ही लिखे ग । हि दी मे बाल गीत की परम्परा का जब प्रारम्भ हुआ तब हमारा देश पराधीन था और अग्रजी शासन को छि न भिन्न करने का प्रयास लेखक तथा कविगण भी अपने साहि य के मा यम से कर रहे थ।

त कालीन परिस्थितिया रा ट्र प्रम की कविताए लिखने के अनुकूल थी फ स्वरूप प साहन ा द्विवे ी मैथिलीशरण गु न रामनरेश त्रिपाठी माखनला चतुव । सुभद्रा कुमारी चौ ान जसे प्रमत कविगण तथा कवयित्री इस दिशा मे मह वपूण योग देती रही। माखनलाल चतुवदी का गीत—

मुझे तोड लना वनमाली
उस पथ पर देना तुम फक
मातृभूमि पर शीश चढाने
जिस पथ जाव वीर अनेक।

बहुत लोकप्रिय हुआ।

(च) प्रयाण गीत—प्रयाण गीत बालकों मे अनुशासन की भावना भरता है उ हे सयत रूप से गतिवान बनाने मे सहायक हाता है तथा जीवन मे म वपूण काय करने की भी प्ररणा देता है। हि दी मे प्रयाण गीतो की सख्या अधिक नही है। जो गीत लिखे भा गए वे भाव तथा भाषा की ष्टि से ब चो की अपेक्षा बडा के लिए अ िक उपयुक्त हैं। फिर भी द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी ने कुछ सु र प्रयाण गीत ब चो के लिए लिखा। उदा हरणाथ—

वीर तुम बढ चलो
धीर तुम ब चनो
आज प्रात है नया
आज साथ है नया

(छ) समूह गान—य ऐसे गीत है जि हे कई ब चे एक साथ मिल कर गाते है और इस रूप मे उ हे अपने मनोभावो को य क्त करने का आन द प्राप्त होता है। साथ ही एकता ओर सहकारिता को भावनाओ का विकास भी उनके मन मे होता है। हमारे देश मे लोकगीतो को समूह मे गाने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। पर तु ब चो के लिए इस प्रकार के गीतो का अभाव ही हि दी साहि य मे रहा। छिटपुट रूप मे कुछ कविताएँ अवश्य लिखी गइ। निरकारदेव सेवक रचित गीत बाल दिवस ऐसा ही गीत है जिसे बच्चे सामूहिक रूप से गाते है—

आज हमारे घर आगन मे मस्ती और बहार है।
बाल दिवस यह दुनिया भर के ब चो का यौहार हे।।

(ज) गिनती के गीत—गिनती के गीत ऐसे गीत होते हैं जिनमे ब चे अको को तर नुम मे बाँधकर बोलते हे और उनके साथ कुछ ऐसे विचार भी अभि यक्त होते है जो ब चो को सीख देने वाले होते है। अर्थात गिनती याद होना और उसके साथ सीख मिलना और समझ का विकास होना ही इन गीतो का उद्दश्य माना जा सकता है—

एक दो तीन चार
अपने मन मे करो विचार।
पाँच छ सात आठ
याद करो गिनती का पाठ।
नौ दस यारह बारह
शक्कर मीठी नमक खारा।
तेरह चौदह प द्रह सोलह
ताप का गोना द न से बोला।
सत्रह अठारह उन्नीस बीस
सभी नवाओ गुरुजी को शीश।

(झ) नये गीत—आधुनिक युग मे कविता तथा गीतो की प्रवृत्तियाँ बदली। गीत अब परम्परागत त यो का दामन छोडकर आधुनिक सम याओ पर आधारित होने लगे। बाल मनोविज्ञान की बढती आवश्यकता ने भी इसे प्रभावित किया। गीत तथा कविता के विषय मे प वर्तन हुए। नदी चाँद सितारो बि ली कुत्ता आदि विषय पर तो अनेकानेक गीत लिख जा चुके थे। अब इस विपय को प्रस्तुत करने का ढग अलग हो गया। पशु पक्षी के माध्यम से उपदेशा मक प्रवृत्ति को प्रस्तुत करने का जो तरीका था वह

बदल गया। उन्हे अब आधुनिक युग के अनुरूप प्रस्तुत किया जाने लगा जसे हरीश निगम का यह गीत—

घम मे रजाई
जा के फलाई
चुहिया ने
चूहे से
ऊन है मँगाई।

अब बाल मन की अनुभूतियो के आधार पर भी गीत लिखे जाने लगे। उदाहरण के लिए सवश्वरदयाल सक्सेना की इस नई प्राथना पर विचार कर—

वह शक्ति हमे दो परमपिता
लिख सक एक अ छी कविता
ऐसी कविता जिसको सुनकर
माँ अपना गुस्सा भूल जाय
ऐसी कविता जिसको सुनकर
पापा का मन भी फल जाय।

(ट) **हास्य गीत**—ब चो की जिज्ञासा को समझना और उसके अनुसार उसे शा त करना इस तरह की अभि यक्ति तो साहि य मे होती ही है। लेकिन जसे कि खे न गीत या अ य गीतो की बात कही गई है उसके आधार पर भी कुछ ऐसी बाते बनती हैं जो बच्चो के मानसिक विकास को आधार देती है। कुछ ऐसे यावहारिक रूप मे सचेत होकर ढढने मे ब चो के बीच कुछ इस तरह के अलिखित प्रचलित गीत बनते बिगडते रहते हैं जो सीधा अथ भले ही न ी देते लेकिन जिनके टुकड टुकड अथ या तो य य भावना का बहुत प्रारम्भिक रूप या हास्य भावना की कुछ रेखाए लेकर चलते है और यह न भी हो तो उन गीतो की पक्तियो से और विशेष रूप से बाँधे ग श ो के तुका से वे निश्चित रूप स ब चो के श द भ डार को विकसित करते है और भाषा के अछते क्षेत्रो तक उन्हे ले जाते हैं जसे—

मामा मामा भूख लगी
ल ले बेटा मूगफली
मगफ्नी मे दाना नही
हम तुम्हारे मामा नही।

इस गीत म पूरे साथक अथ की तनाश म न भी करना चाह या न कर पाए तो कम से कम प्र यक्ष रूप से यह बात तो प्रमाणित हो ही जाती है कि इसमे दाना नाना—जसे श दो के ज्ञान के साथ प्रचनित भूख की प्रवत्ति से मानसिक जगत् का पूरा परिचय होता है। जीवन की सामा य प्रवत्तियो सम्ब धो के साथ भाषा के विस्तार को नापने की क्षमता कम से कम इन गीतो म होती है जिनमे एक मनोरजन का रेशा भी विकसित हो उठता है और ब चे प्र यक्ष रूप से इन गीतो के साथ खेल मे भले ही प्रवत्त न हो फिर भी य गीत उनकी मानसिक रुचियो पर बराबर प्रभाव डालते है और यदि लगातार सजग रूप से ब चो के प्रशिक्षण और यवहार म इनको मह व दिया जाय तो ये अनेक समूचे विकास को निश्चित दिशा और गति प्रदान कर सकते है।

(5) **बाल जीवनी**—ीवनी ब चो क भावो को जहाँ उत्तजित करती है वही उनमे क्रिया मकता का भी सचार करती है और फिर उनका पथ प्रदशक बन कर उ हे आलोक देती है। इसलिए बालका म बचपन से ही ऐमे गुणो को अकुरित करना आवश्यक हो जाता है जिससे वे भविष्य मे महान् बन सक। अत ब चो के लिय जीवनियाँ लिखते समय इस बात का यान रखना होता है कि इससे ब चो के मन पर दूषित प्रभाव न पड। जावन कथा पढते समय बच्चे म ब धित पात्न से ता म्य स्थापित करन नगते है और पात्न के स्थान पर अपने चरित्न की क पना करने नगते । उन पात्नो के प्रति ब चो के मन मे सहज सम्मान आकषण और सवे नशीलता रहती है। इसनिये ब चो के जीवन चरित्नो के बारे मे बताते समय जहाँ उससे पडने वाले प्रभावो के प्रति सजग रहना अनिवार्य ोता है वही इस बात की पूरी छानबीन कर लेनी चाहिये कि उन कथा के किन अशो के प्रति बालक के कोमल मन पर कसी प्रतिक्रिया होगी। इससे बा न जीवनकारो का उत्तरदायि व बहुत बढ जाता है और वे बालको मे स गुणो वे विकास चारित्रिक दृढता तथा यो य नागरिक बनने क लिये महापुरुषो क जीवन चरित्नो का आधार बनाते है। ये महापुरुष ऐतिहासिक राजनैतिक साहि यिक या वज्ञानिक कोई भी हो सकते है। बाल जीवनी लिखते समय साहि यकार को इस बात का ध्यान रखना होता है कि उनके द्वारा बालक अपनी क पना शक्ति तथा अपनी सीमाओ के भीतर आदर्श चरित्न का ग्रहण कर सक।

डा माताप्रसाद गुप्त ने विषय की द ि ट से जीवना सा ि य का विभाजन क ते समय निम्नलिखित क टियाँ निर्धारित की है—

1 आ म चरित्र

2 स त चरित्र

3 ऐति ासिक चरित्र

4 राजनैनिक च ि त्र

5 विदेशीय च ि त्र और

6 स्फर चरित्र ।

इनका विस्तृत विश्लेषण आगामी अ यायो मे विकासक्रम के अनुसार किया ायगा ।

(ड) बाल साहि य मे बाल पाठक की आयु का मह व

विभिन्न आयु क बालको का मानसिक विकासक्रम अलग अलग होता है । उनकी रुचि उनकी या य ा उनकी प्रवत्ति अलग अलग होती है । उनकी विभिन्न अव थाए विकास की एक ही प्रक्रि ा क अविच्छिन्न च ण होते हुए भी अलग अलग आयु वग की सीमाओ मे बाँधी जा सकती है । इन सीमाओ को पहचानना कोई मुश्किल काम नही है । लेकिन उनकी पहचान वष गणना पर नही उनके लक्षणो पर आधारित होनी चाि ए । विकास की एक अवस्था के परिपक्व होने पर जब ब चा दूसरी अवस्था म प्रवेश करता है तब उसकी दनिक क्रियाओ मे जबदस्त परिवतन होते । ऐसे ही परिवतनो के आधार पर बच्चे के विकास की विभिन्न अवस्थाओ की सीमा रेखाओ का निधारण किया जा सकता है । अत आवश्यकता इस बात की है कि लेखक बाल साहि य लिखते समय प्रारम्भिक रूप स स्प ट विचार कर ले कि हम जो कुछ भी लिख रहे है वह किस उम्र के बालक के लिए लिख रहे है । परन्तु कठिनाई यह है कि बाल साहि यकार साहित्य रचना छोडकर बच्चो के मनोवज्ञानिक अ ययन मे नही जुट सकते । वे या तो शिक्षाशास्त्र द्वारा निर्धारित किए हुए आयु वग के आधार पर रचना करते है या अपनी अ तर्जात प्ररणा और अनुभूति को आधार बनाते हैं । प्रतिभासम्पन्न लेखको मे यह गुण स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहता है और वे बिना किसी अध्ययन के बालको के लिए श्र ठ साहित्य की रचना कर सकते हैं ।

फिर भी यदि लेखक मनोवैज्ञानिको द्वारा निर्धारित बाल मनोविकास का अध्ययन कर साहि्य रचना कर तो अधिक लाभदायक होगा और उ हे ब्चो के साहि्य का मू्याकन करने मे आसानी रहेगी और उ्हे अपने लेखन को शिशु बाल और किशोर साहित्य की सूची मे बाँटने मे आसानी हो जायेगा। साथ ही उनके लिए अपने लेखन की भाषा विषय शैली पार्श्व भूमि आदि निश्चित करने मे अ्य्त सरल हो जायगा फिर भी अ य अनेक साहि्यकार बिना किसी अध्ययन क अपनी ज मजात प्रतिभा के बल पर बालको के लिए श्रे ठ साहि्य की रचना नि स्वार्थ भाव से कर रहे है।

बीसवी सदी के पूर्वाद्ध मे बाल मनोविज्ञान के विकास के कारण ब चो के विकासक्रम के अनुरूप ऐसे साहि्य का सृजन होने लगा जो ब्चो का केवल मनोरजन ही प्रदान न करे केवल शिक्षा ही न दे वरन् उसक द्वारा उनका बौद्धिक विकास एक निश्चित गति से होता रहे। धीरे धीरे स बात पर और भी अधिक बल दिया जाने लगा। स्वत्त्रता पूर्व और स्वात्त्र योत्तर काल की स्थिति की ही तुलना कर तो स्प ट हो जाता है कि तब इतनी रोचक सु्दर और इतनी बडी सख्या मे पुस्तक नही थी और आज इनकी सख्या का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि बाल पुस्तको ने असीमित बाल पाठक तैयार कर लिये ह।

बालक की मानसिक अवस्थाओ का वर्गीकरण मोटे तौर पर निम्न लिखित है।

आयु की दृष्टि से बाल साहित्य का वर्गीकरण

इसे बाँटने के लिए निम्नलिखित आयु क्रम को लिया गया है—

(1) **तीन से पाँच वष की आयु**—इस आयु के ब चो का भाषा ज्ञान लगभग श य रहता है। वह ध्वनि सकेतो से या चित्रो के मा यम से किसी विचार या वस्तु का ज्ञान प्राप्त करता है। दूसरी ओर इस आयु के बालक का ध्यान शारीरिक चेष्टाओ क्रीडाओ की ओर अधिक रहता है। वह एका त मे खेलकर ही आन्द प्रा त करता है जसे—कूदना फिसलना दौडना फेकना आदि। किन्तु अभी उसमे प्रतियोगिता की भावना नही आती कि वह दूसरे बालको से आगे निकलने की चेष्टा करे। वह तो अपने आप मे मगन रहता है पर्तु इस अवस्था मे बालक की क्पनाशक्ति बहुत सजीव होती है और उसका प्र्यक्ष ज्ञान बहुत स्पष्ट होता है।

अत इस अवस्था के बालको के लिए लेखन करते समय लेखको का बहुत सावधानी रखनी होती है। पुस्तक तैयार करने मे अ्य त कठिनाई

का सामना करना पडता है क्योकि लेखक के पास अपनी बात बाल पाठको तक पहुचाने के लिए भाषा के अतिरिक्त और कोई साधन नही रहता और ऊपर क ा जा चु ा है कि इस आयु क बालको का भाषा ज्ञान नगण्य रहता है। इसक लिए लेखको को अपनी बात कहने क लिए चित्रकार की सहायता लेनी पडती है और यह काय (अर्थात् बाल क पना शक्ति के अनुरूप चित्र बनाना) अधिक कठिन हाता है। कुल मिलाकर इस वग के ब चो की पुस्तक लेखक तथा चित्रकार के स मिलित प्रयास से तयार की जा सकती हैं। ये पुस्तक चित्रो से भरपूर तथा आकार मे बडी होनी चाहिए। क्योकि इस आयु के ब चो की मनोभावनाए अस्प ट रहती हैं और बालक अपने आस पास की वस्तुओ जीव ज तुओ से ही परिचित रहता है।

पिछले तीस चालीस वर्षो के बाल साहि य के इतिहास को देखने से पता चलता है कि विभिन्न आयु के बालक बालिकाओ के लिए जो साहि य हि दी मे तैयार हुए उनमे तीन स पाच साल के ब चो के लिए उपयुक्त साहि य का अभाव है। इस दिशा मे सबसे पहले प्रयास किया था आचाय रामलोचनशरण ने बाल पोथी प्रकाशित करके जो त कालीन बालको को प्रभावित करने मे सक्षम रहा और बाल मनोविज्ञान के अनुकूल भी था। इस कमी को देखते हुए रा ट्रीय शक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद् ने इस दिशा मे मह वपूण कदम उठाया और इस आयु वग के ब चो के लिए गोल क्या है लाल क्या है जसी पुस्तक यूनिसेफ की सहायता से तैयार की। इनके द्वारा इसका काम ब चो को रगो का ज्ञान आकार का ज्ञान तथा वस्तु का ज्ञान कराना ही मुख्य उद्दश्य है जिससे बालक के मानसिक विकासा को गति और दिशा मिलेगी।

इस आयु के ब च तरह तरह के निरथक श द बोलते रहते है। इन श दो में लयबद्धता आ जाने स ब च इ हे दोहराने लगते है और ज दी याद कर लेते है। यही का ण है कि इस वग के ब चो के लिए अथहीन तुक ब दियो और नर्सरी गीतो का लेखन हुआ। फिर भी इस प्रकार के गीतो का अभाव ही दिखाई देता है क्योकि लेखको मे गीतो को साथक और भावाथक बनाने की प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है और यह स्थिति तथा कथित उम्र के ब चो के लिए अनुपयुक्त तथा निरथक है।

(2) **पाँच से आठ वष की आयु**—इस आयु वर्ग के बालको का भाषा ज्ञान बढ़ने लगता है पर तु लिखित भाषा पढ़ने का अ यास काफी कम रहता है फलत उनके लिए स्वय ही पुस्तक पढकर आन दित होना सम्भव

नही । वयस्को की मद मे वे पुस्तक प्ने का प्रय न करते है । इस ायु बच्चो म जिज्ञासा और कुतूहल के भाव की अधिकता रहती है फलत मनु यो क। तरह बोलने वाले पशु पक्षी परिकथाए क्पनाप्रधान लोव कथाए जादूगरो तथा परियो की मनोरजक कथाओ का वह स्वागत करता है। साथ ही जीव ज्तुओ को बात छोटी मोटी ुा थया को सुनझाने वा । रचनाए पहेलियाँ गणित के चम कार तरह तरह क खिलोने और वस्त् बनाने के तरीक जानन के लिए भी उ सुक रहता है । ऐसी अवस्था के ब्ा का उपयुक्त ाि य देने क लिए लखका को अधिक सतक तथा अनुभवशान होना चाहिए ।

खका ा अपनो रचनाओ म उ ही श दो विचारा बाता स भव क पनाआ और भावनाआ आदि का उपयोग करना होता जा ब्चो के अनुभव क अ्दर आता हो या जिनका तत्काल अनुभव कराया जा सके । विभि न रचना के हर पात्रो का उपयुक्त नाम और रूप भी आवश्यक है ाभी बालक उस आ मसात कर सकता है । ब चो की यह अवस्था पु तका के स्वय इस्तेमाल करने की प्रारम्भिक अवस्था है । यि इस अवस्था म उ ह मनोनुकूल पुस्तक न ी मिली तो पुस्तको के प्रति उनका मोह कम हाने लगेगा । इस दि ट से बाल साहि य लेखको का उत्तरदायि व ब्रुत बढ जाता है । अपने इस उत्तरदायि्व का निर्वाह करते हुए अनेक कवि तथा लेखकगण बालको के ि रचना करने मे प्रवत्त है ।

(3) **आठ से बारह वष को आयु**—इस अवस्था के ब चो की मान सिक क्षमता एक हद तक विक सत हो जाती है और व घर परिवार से आगे बढकर सम ज मे र्ने के लिए अधिक इ्छक हता ै । अब वह अकेले रहने की अपेक्षा दल बनाकर रहना चाहता है । उसके खेल ी यक्ति गत न रहकर दलीय आधार पर होते हैं जिनमे एक निश्चित नियम उद्द्श्य और आि तथा अ त होता है । व अपने उपार्जित ज्ञान की सहायता अमूर्त वस्तुआ विषयो और अनुभवो की क्पना क लेता है उसके आधार पर भवि य मे तर्क करने की प्रवत्ति का भी ज म नता है ।

इस आय का बालक व तु जगत् भौतिक अभौतिक सम्ब धा घटनाओ आदि के बारे मे नियमबद्ध तार्किक क्रम मे साचने म समथ हो जाता है । उसे अपनी बुद्धि का प्रयोग कर कोई काम करने मे अधिक आन्द आता है । अपन्व का भाव बढने के साथ साथ सग्रह की वत्ति ज्म लेती है और वह टिकट तस्वीरें प्थर के विभिन्न प्रकार के टकडे आदि का सग्रह करने

लगता है । एकाग्रता इस आयु के बालक का विशेष गुण होता है जिसके कारण वह कुछ देर तक किसी भी विषय पर सोचने की क्षमता रखता है। इसके साथ ही भाषा के नये नये प्रयोगो मे भी अधिक रुचि लेने लगता है तथा वीरता साहस और रहस्य की कथाए उसे अधिक प्रभावित करने लगती हैं ।

इस आयु वर्ग के बालको की अपेि्त गुणवत्ता के आधार पर हि्दी मे सबसे अधिक बाल साहि्य की रचना इस कोटि के बालको के लिए हुई है । पूर्वापेक्षा इस आयु वग के लिए अधिक लिखा गया क्योकि लेखको को भी बिना किसी अ ययन के लिखना अधिक सरल तथा सहज लगा और बाल मन की अनुभूतियो को अपने साथ सहयोजित कर लिखने मे अधिक आन्द भी आया । इस वग के ब्चे सभी क्षेत्रो मे अपनी पकड रखने मे सक्षम होते है । इस विशेषता ने भी बाल लेखको का काय आसान कर दिया। विभिन्न लेखको तथा कवियो और नाटककारो के अतिरिक्त अ्य अनेक सस्थाओ ने भी इस दिशा मे सफल प्रय्न किए । रा ्ीय शक्षिक अनुसधान परिषद् एव यूनेस्को की सहायता से इस क्षेत्र के साहि्य भण्डार को भरने का प्रय्न कर ही रहा है ।

विभि्न आयु वर्ग को ध्यान मे रखकर सबसे पहले बाल साहि्य का वर्गीकरण मिश्रब्धु कार्यालय जबलपुर ने प्रस्तुत किया । इस कार्यालय से नमदा प्रसाद मिश्र के परिश्रम से अनेकानेक पुस्तको का प्रकाशन हुआ जिसने बाल साहि्य के क्षेत्र मे युगान्तर उपस्थित कर दिया । सु्दर छपाई चित्रो की आकर्षक स्जा सरल भाषा तथा अच्छ भाव के कारण बालक इ हे बड चाव से पढते थे । आलोचको का यह कहना मैंने प न्र्मदा प्रसाद जी मिश्र बी ए एम एल ए द्वारा लिखित और मिश्रब धु कार्यालय जबलपुर द्वारा प्रकाशित नई सु्दर सरल और सचित्र पुस्तिकाओ का सेट आद्योपा्त पढा । ये छोटी पुस्तक 5 से लेकर 7 वर्ष तक के ब चो के लिए बहुत ही मनोरजक और उपयोगी है । इन पुस्तको से छोटे बालको का केवल मनोरजन ही न होगा कि तु उनमे पढने की रुचि भी उ प्न हागी । इनका प्रकाशन हमारी भाषा मे एक नया आयोजन है । शत प्रतिशत सही है ।

कार्य अ य त कठिन है। लेखक जब लिखता है तब शाय ही वह यह देखता है कि वह किसी विशेष आयु वग के बालक बालिकाओ के लिए लिख रहा है। होता य है कि कोई साहित्य जिसका मानद ड किसी आयु विशप के आधार पर निर्धारित कर लेते हैं तो वह उससे बडी अथवा छोटी आयु के बाल पाठको को भी पर्याप्त अ न द देता है। यह अवश्य है कि बालक अपनी समझ के अनुसार उसका रस ग्र ण न लेते हैं। यह मनोवैज्ञानिक त य है कि बालको मे जिज्ञासा की प्रवृत्ति ब ी बलवती ोती है। चार पाच वष के बच्चो से लेकर किशोरावस्था तक बालक र बात को जानने के लिए याकुल रहता है। हाँ अवस्था के अनुसार विषय क्षेत्र छोटा ब ा अवश्य होता है। छोटा बालक अपनी आस पास की व तुओ को देखकर ही ज्ञान प्राप्त करना चा ता है तो चौद प ह वष का बालक देश विदेश भौगोलिक भूगम आदि सभी बातो को जानना चा ता है। उसका विषय क्षेत्र अ यन्त विकसित ो जाता है। छोटे ब चो के लिए लिखा कोई कहानी या गीत बडा बालक भी पढना चाहेगा क्योकि वह इस पहले की अवस्था को पार कर चुका होता है और अवसर मिलने पर पूव की आन दानुभूति को फि से जीना चा ता है। रोक लगाने से उसमे वि ो की भावना भर जाती । इसके विपरीत यह देखा गया है कि ब ी आयु के बालक के लिये लिखा साहित्य छोटी आयु के बालक पढ रहे हैं भले ही उसमे व आनन्द तथा रस न मिले। परन्तु श ज्ञान तथ विषय मे परिचय तो प्रा त होता ही है। यह भी मनोवैज्ञानिक स य है कि इस आयु के बालक का मानसिक तर उसकी शारीरिक आयु की अपेक्षा अधिक विकसित हो तभी वह बडे ब चो के साहि को पढने मे रुचि लेता है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि बाल साहित्य को आयु सीमा मे बाँधना उचित न ी। क भी स्तर का बाल साहित्य विभि न आयु वर्ग को समान रूप से मनोरजन प्रदान क ता है।

बालक की आयु वृद्धि के साथ साथ उसके ज्ञान रुचि तथा आदतो मे परिवतन होता रहता है कि तु इस परिवतन के सूक्ष्म नि ीक्षण के अनुरूप रचना करना कठिन कार्य है क्योकि आयु वग और साहित्यिक विधता का उपयुक्त अनुशीलन केवल तभी हो सकता है जबकि बाल साहि य का प्रकाशन छितरा हुआ न हो बल्कि कुछ केन्द्रीय सस्थाओ के त वावधान मे नि पश रूप से व्यवस्थित और प्रकाशित हो। आज इस दिशा मे ठोस कदम उठाए जा रहे है तथा विभिन्न प्रकाशको का योगदान भी इस दिशा मे सराहनीय है। इसकी विस्तृत चर्चा अगले अ याय मे होगी।

बाल साहि य के लेखन के विषय का चुनाव एक कठिन एव मह व पूर्ण काय है। बडो के लिए तो किसी विषय पर कुछ भी लिखा जा सकता है कि तु ब चे तो उ ही विषयो का आ मसात कर सकते है जो उनकी समझ की सीमा मे किमी न किसी रूप मे आ जाये। उनका अनुभव ान सीमित होता है। अपने आस पास देखने वाले प्र येक चीज से उनका रा ा मक एव भावा मक स ब ध स्वत उ पन्न हो जाता है। पशु पक्षी नदी तालाब पुस्तक घर परिवार आदि विषयो पर लिखी पुस्तक वे बडे प्रेम से पढते है। पचतन्त्र पशु पक्षी पर ही आधारि त पुस्तक है जो आज भी बच्चो को उतना ही मनारजन प्रदान करती है जितना पह े करती थी। पारिवारिक धार्मिक रा ानतिक नतिक पौराणिक साहसिक एव आध्या मिक विषयो को आधार बना कर विभिन्न प्रकार की पुस्तक यथा उप यास कहानी कविता आदि लिखी जा रही हैं जो युगानुरूप सस्कृति वातावरण रहन सहन आदि से बालको को परिचित कराती ह।

विषयो की विविधता को देखत हुए लेखको व प्रकाशको पर बहुत ही उत्तरदायि व का भार है। ब चा के जीवन का सर्वांगीण विकास करने वाले विषयो का चुनाव कर सरल तथा सरस भाषा मे मनोरजक ज्ञानवधक कौतूहल एव जिज्ञासावधक साहि य का लेखा एव प्रकाशन के लिए एक योजना बने जिसे रा ट्रीय योजना के अ तगत रखा जाय।

— ——

सदभ-सूची

1 आरिगपूडि – मधमती जुलाई अगस्त 1967 पृ 269।

2 जनादन राय नागर मधमती जुलाई अगस्त 1967 पृ 270 71।

3 रामलाचन शरण—बिहार सरकार द्वारा आयोजित साहित्य रचनालय मे बाल साहित्य पर दिए गए भाषण का एक अश—21 मार्च 1959 पृ 7।

4 रामलोचन शरण—वही—पृ 10।

5 निरकारदेव सेवक— वीणा —बाल साहि य रचना (निब ध) नवम्बर 1954।

काय अ य त कठिन है। ेखक जब लिखता है तब शाय ही वह यह देखता है कि व किसी विशेष आयु वग के बालक बालिकाओ वे ि िख रहा है। होता य है कि कोई साहि य जिसका मानद किमी ायु विशेप के आधार पर निर्धारित कर ेते ै तो वह उससे वडी अथवा छोटी ायु वे बाल पाठको को भी पर्याप्त अ न द ेता ै। ह अवश्य है वि बालक पनी समझ के अनुसार उसका रस ग्र ण क लेते हं। यह मनो ज्ञानिक त य है कि बालको मे जिज्ञासा की प्रवृत्ति ब ी बनवी ोी है। चा पाच वष के ब चो से लेकर किशोरावस्था तक बा क र बात को ाने े लिए याकु रहता है। हाँ अवस्था े नुमार षय क्षेत्र ोटा ब ा वश्य होता है। छोटा वालक अपना स पास की व तुओ को देखकर ही ज्ञान प्राप्त करना चा ता है तो चौदह प ह वष का बा क देश विशेश ा ि क्ष भूगर्भ आदि सभी बातो को जानना चाहता है। उसवा विपय क्षत्र अ ग ा विकमित ो जाता ै। छोटे ब चो के िए िखी को कहानी या गीत ब ा बालक भी पढना च हेगा क्योकि वह इस प े की वस्था को पार कर चुका होा है और अ मर मिलने पर पू की आ ा दानुभूति क ा फि से जीना चा ता है। रोक लगाने से उसमे ि ा की भावना भर जाती ै। म े विपरीत यह देखा गया है कि ब ी ायु के बा क के लिये लिखा साहि य छोटी आयु के बालक प रहे हैं भल ही उसमे वह ान द तथा रस न मिले। पर तु श ज्ञान तथा िपय मे परिचय ता प्राप्त ोता ही है। यह भी मनोवज्ञानिक स य है कि इस आयु के बालक का मानसिक स्तर उसकी शारीरिक आयु की अपेक्षा अधिक विकसित हो तभी वह ब ब चो के साहि को पढने मे रुचि लेता है। इस आधार पर कहा जा मकता है कि बाल साहि य को आयु सीमा मे बाँधना उचित न ी। फ ी स्तर का बाल साहित्य िभि न आयु वर्ग को समान रूप से मनोरजन प्रदान क ता ै।

बालक की आयु वृद्धि के साथ साथ उस ान रुचि त ा आ तो मे परिवतन होता रहता है कि तु स परि तन के सू म ि ा ा वे अ ु प रचना करना कठिन कार्य ै क्योकि आयु वग और सा ि यिक ि िधता का उपयुक्त अनुशीलन केवल तभी हो सकता हे जबकि बा साहि य का काशन छितरा हुआ न हो ब ि क कुछ के द्रीय सस्थाओ के त वावधान मे नि पक्ष रूप से व्यवस्थित और प्रकाशित हो। आज इस दिशा म ठोस कदम उठाए जा रहे है तथा विभिन्न प्रकाशको का योगदान भी इस दिशा मे सराहनीय है। इसकी विस्तृत चर्चा अगले अ याय मे हागी।

बाल साहि् य के लेखन के विषय का चुनाव एक कठिन एव मह्व पूण काय है। बडो के लिए तो किसी विषय पर कुछ भी लिखा जा सकता है कि तु ब चे तो उ ही विषयो को आ मसात कर सकते हैं जो उनकी समझ की सीमा मे किसी न किसी रूप मे आ जाये। उनका अनुभव ान सीमित होता है। पने आस पास देखने वाले प्रयेक चीज से उनका रागामक एव भावा मक स ब ध स्वत उपन्न हो जाता है। पशु पक्षी नदी तालाब पुस्तक घर परिवार आदि विषयो पर लिखी पुस्तक वे बड प्रेम से पढते है। पचतन्न पशु पक्षी पर ही आधारित पुस्तक है जो आज भी बच्चो को उतना ही मनारजन प्रदान करती है जितना पहो करती थी। पारिवारिक धार्मिक रानैतिक नतिक पौराणिक साहसिक एव आध्यामिक विषयो को आधार बना कर विभिन्न प्रका की पुस्तक यथा उपयास कहानी कविता आदि लिखी ा रही है जो युगानुरूप सस्कृति वातावरण रहन सहन आदि से बालको को परिचित कराती ह।

विषयो की विविधता को देखते हुए लेखको न प्रकाशको पर बहुत ही उत्तरदायि व का भार है। बच्चो के जीवन का सर्वांगीण विकास करने वाले विषयो का चुनाव कर सरल तथा सरस भाषा मे मनोरजक ज्ञानवधक कौतूहल एव जिज्ञासावधक साहि्य का लेखन एव प्रकाशन क लिए एक योजना बने जिसे रा ट्रीय योजना के अ तगत रखा जाय।

— —

सदभ-सूची

1 आरिगपूडि – मधमती जुलाई अगस्त 1967 पृ 269।

2 जनार्दन राय नागर मधुमती जुलाई अगस्त 1967 पृ 270 71।

3 रामलाचन शरण—बिहार सरकार द्वारा आयोजित साहित्य रचनालय मे बाल साहि् य पर दिए गए भाषण का एक अश—21 माच 1959 पृ 7।

4 रामलोचन शरण—वही—पृ 10।

5 निरकारदेव सेवक— वीणा —बाल साहित्य रचना (निबध) नवम्बर 1954।

6 अनातोले अलेविसन सोवियत सघ अक–1 (239) 1976 पृष्ठ 44।
7 अनातोले अलेविसन सोविय सघ अक 1 (239) 1976 पृ
8 45 हरिकृ ण देवसरे हि दी बाल साहि य एक अ ययन शोध प्रबन्ध पृ 24।
9 रामकुमार वर्मा बाल साहित्य का लक्ष्य और हमारा कत्त य (निबन्ध)।
10 आनन्द प्रकाश जन शृगार (मासिक) ब चो का नया साहि य जुलाई 1962।
11 पाल हेजड बालक और आदमी पृ 42।
12 रवीन्दनाथ टगोर—साहित्य अकादमी मे प्रकाशित निबध पृ 392 93।
13 जवाहरलाल नेहरू—बाल पुस्तक सप्ताह सन् 1957 के लिए दिए गए सदेश से।
14 बालशौरि रेड्डी—बाल साहित्य रचना और समीक्षा पृ 27।
15 आरिगपूडि मधुमती जुलाई अगस्त 1967 पृ 266
16 कन्हैयालाल नन्दन बाल साहित्य रचना और समीक्षा पृ 21।
17 आर वकटरमण आर वी मधुमती जुलाई अगस्त 1967 पृ 273।
18 जनादन राय नागर मधुमती जुलाई अगस्त 1967 पृ 272।
19 डी आई लाल आधुनिक मनोविज्ञान पृ 134 35।
20 श्यामसुन्दर दास एव पीता बर दत्त बडथ्वाल रूपक रहस्य पृ 1।
21 विष्णु प्रभाकर नटरग अक 29 पृ 34।
22 हरिकृष्ण देवसरे हि दी बाल साहित्य एक अध्ययन पृ 322।
23 निरकार देव सेवक बाल गीत साहित्य पृ 95।
24 आनन्द प्रकाश जैन पराग सित बर 1964 पृ 52।
25 निरकारदेव सेवक बाल गीत साहित्य पृ 89।
26 शुकदेव दुबे बाल साहित्य रचना और समीक्षा पृ 119।
27 माता प्रसाद गुप्त हि दी पुस्तक साहित्य पृ 131।
28 जगदीश पांडे मधुमती जुलाई अगस्त 1967 पृ 349 50।

प्राचीन व मध्यकालीन बाल साहित्य

प्राचीन एव म यकालीन साहि्य को गहराई से देखने पर ऐसा ज्ञात होता है कि उनमे कुछ त व ऐसे भी हैं जो बाल साहि्य के योग्य गुण रखते हैं और यही से बाल साहि य की उ पत्ति मानी जा सकती है जो आगे चल कर अनेक शाखाओ प्रशाखाओ मे प्रस्फटित हुआ।

(क) हि दी बाल साहित्य का उद्भव

हि्दी मे बाल साहि य का मह व सामा्य साहि्य के समान ही है। इसमे साहि्य के सामा य सभी धम गुण पाए जाते है। वह अत प्रेरणा से स्वाभाविक शैली मे रचित मौलिक साहि्य है। अ्य्त प्राचीन काल से छिटपुट रूप मे कुछ ऐसी रचनाए मिलती है जि्हें बाल साहि्य की कोटि मे रखा जा सकता है। सस्कृत अरबी फारसी के अतिरिक्त हि्दी मे भी बहुत पहले साहि्य लिखा गया था। सुविक सत भाषा के रूप मे हिंदी के प्रदुर्भाव का इतिहास ईसा के 997 वष बाद शुरू होता है। कुछ विद्वान इसे सन् 997 के 200 वष पूर्व निर्धारित करते हैं। यद्यपि पशुदत नामक प्रथम हि्दी का्य 9वी शता दी के अ्त से पहले प्रकाश मे आ चुका था। इस द ट से हि्दी सा ्य अ य त प्राचीन काल से जनजीवन को प्रभावित कर रहा था।

अ य्त प्राचीन काल से ही मौखिक रूप मे जीवन मे घटित घटनाओ तथा अनुभवो को एक दूसरे से कहने सुनने की परम्परा चली आ रही है। नानी की कहानी हर अगली पीढी को पिछली पीढी से मू्यवान विरासत के रूप मे मिलती रही। साथ ही खेतो मे काम करते समय अलाव के आगे बठ कर समुद्री यात्राओ के समय लोग कथाओ के रूप मे अपने अनुभव सुनाते रहते थे जो एक देश से दूसरे देशो मे होते हुए विश्व भर मे फल जाते थे। ये कहानियाँ पीढी दर पीढी अपने मूल रूप मे जीवित रहती थी भले ही देश काल एव परिवेश के कारण उनकी भाषा और शला मे परिवर्तन होते रहे। इस प्रकार हमे ज्ञात होता है कि उन दिनो कहानिया पराक्रमो समुद्री यात्राओ तथा अन्य अनेक घटनाओ पर आधारित थी जिनमे कुछ का्पनिक भी होती थी। इन कहानियो पर धार्मिक भावनाओ

का भी प्रभाव अवश्य ही था क्योकि बौद्धो और जनो ने अपने सिद्धातो के प्रचाराथ कथा साहित्य का ही सहारा लिया था ।

ये कथा साहित्य मौखिक रूप मे प्रौढ़ो को आनद देने के साथ बालको को भी समान रूप से मनोरजन प्रदान करती ह इसम कोइ स देह नही । आज लोक कथाओ मे इन प्राचीन कथाओ के बा ा अवश्य निहित रहते हैं भले ही आज के विस्तृत वातावरण मे इनका स्वरप परिवतन हो चुका है । देश काल भाषा आदि के भी प्रभाव के फल वरूप इसम पर्या त परिवतन परिलक्षित होता है ।

(ख) हिदी साहित्य के प्राचीन एव मध्यकाल के बाल साहित्य का स्वरूप

(1) **प्राचीन काल**—हिदी मे बाल साहित्य का तिहास अधिक पुराना नही है । अ यत प्राचीन काल मे तो इसका नाम भी कही नही था । वसे प्राचीन काल मे विशेष रूप से श्रीमद्भागवत पुराण म जिसकी रचना व्यास जी ने की है जिस तरह की कहानियाँ एक के अ तगत दूसरी गुन्थी हुई बुनी गई है उनमे से कुछ तो इस रूप मे पाई जाती ह जि हे हम आज भी बाल साहित्य के अ तगत रख सकते है । यह बात अलग है कि उनक अदर जिस तरह का ज्ञान प्रस्तुत किया गया है वह कोई गहरा दाशनिक आधार रखता है लेकिन इनमे भी बाल कहानियो जसा आकषण है । उदाहरण के लिए यक्ष के युधिष्ठिर से प्रश्न पूछना—ो युधि ठर और यक्ष कहानी मे द्रष्ट य है—या काठोपनिषद् से नचिकेता की कहानी ऐसी ही कहानियाँ हैं और भी उपनिषदो मे ऐसी कहानियाँ मिल जायेगी ।

इसी तरह बौद्ध काल मे जातक कथाएँ भी ऐसी कथाए कही जा सकती हैं जो अपने रूप मे बालको की कहानियो जसा आकपण रखती हैं ।

आज जो कुछ साहित्य उपल ध है वह सस्कृत पालि प्राकृत भाषा मे है जो विशेष रूप से जनसामा य को नीति तथा धर्म की शिक्षा देने के लिए लिखा गया है । शायद नीति विषयक अश को लेकर बा को को भी शिक्षा देने का कार्य तब होता था । राजाओ के पराक्रमो का वणन रामायण की कथाएँ उदयन और वासवदत्ता की कहानी उदयन के पुत्र नरवाहन दत्त के पराक्रमो के वणन समुद्री यात्राओ से सम्बधित घटनाओ का वर्णन सबसे प्राचीन कथा ग्रथ गुणाढयकृत वहकथा मे है जो पशाची प्राकृत भाषा मे लिखा गया है । इसका रचनाकाल ईस्वी पूर्व प्रथम शताब्दी माना जाता है । इस पुस्तक का मूल रूप अब नष्ट हो चुका है पर तु इसका

रूपा तरित स्वरूप बुद्ध स्वामी का वृह्कथा श्लोक सग्रह क्षमेन्द्र की वृहत्कथा मजरी एव सोमदेव के कथा सरि सागर मे मिलता है। इन ग्रथो के नेखको का कहना है कि ये ग्रथ वह कथा के सक्षिप्त रूप है। कथा सरिसागर के हिदी अनुवाद ने—जिसे बिहार रा ट भाषा परिषद् पटना ने प्रकाशित कराया आज के साहि य को प्रभावित किया और इसके कुछ अश बालको के लिए भी कहानी रूप मे प्रकाशित हुए।

इसमे से उदाहरण के लिए एक कहानी प्रस्तुत है—

मित्र से धोखा

एक बार राजा योगानद का पुत्र हिरण्य गुप्त शिकार खेलने जगल मे गया। घोडा बहुत तेज ैडा। इस कारण राजकुमार घने जगल मे पहुँच गया। ेसके साथा छट गए और वह रास्ता भूल गया।

रात बिताने के लिए राजकुमार एक पेड पर चढ गया। कुछ ही देर बाद वहा एक भाल आया। वह भी घबराकर उसी पेड प चढ गया। बात यह थी कि क शे उसका पीछा कर रहा था। जब भालू को राज कुमार ने देखा तब राजकुमार डर गया। भाल ने मनुष्य की बोली मे कहा डरो मत! तुम मेरे मित्र हो। मैं तुम्हे कोई नुकसान नही पहुँचा ऊगा। यह सुनकर राजकुमार निश्चित हो गया। थोडी देर बाद उसे नीद आ गयी। भाल जागता रहा और राजकुमार सो गया। जब तक शर पेड के नीचे आ चुका था। वह भालू से बोला – राजकुमार को नीच गिरा दे। मैं इसे लेकर चला जाऊँगा तुझे छोड दगा।

भाल बोला अरे पापी! यह मेरा मित्र है। मैं मित्र को धोख ा नही दे सकता।

कुछ देर बाद राजकुमार जागकर पहरा देने लगा। भाल सो गया। शर ने राजकुमार से कहा अगर तुम अपनी खर चाहत हो तो इस भालू को नीचे गिरा दो।

राजकुमार ने शर को खश करने के लिए भानू का गिराने का निश्चय किया। वह जसे ही भालू को गिराने वाला था कि भालू जाग गया। उसने राजकुमार से कहा— तूने मित्र के साथ धोखा किया है। अब तू उस समय तक पागल रहेगा जब तक कोई इस कारण को नही बताएगा।

राजकुमार उसी क्षण से पागल हो गया। काफी समय बाद एक

बुद्धिमान मन्त्री ने राजकुमार के पागल होने का कारण बताया। तब कही राजकुमार भालू के शाप से मुक्त हुआ।

पालि भाषा मे आयशूर द्वारा रचित जातक माना जातक कथाओ का सग्रह है। इसका रचनाकाल भदन्त आनन्द कौशल्यायन पाचवी शताब्दी ई पू से लेकर पहली शताब्दी ई पू तक मानते है।

इस कथा सग्रह को पशु पक्षियो की कहानी का सबसे प्राचीन ग्रन्थ माना जाता है। इस पुस्तक मे लोक मे प्रचलित छोटी बडी कथाए है जो बोधिसत्व के पुनजन्म से सम्बन्धित हैं। ये कहानियाँ सीधी सादी बिना सवरी हुई अवस्था मे मिलती है जिनमे गद्य और पद्य दोनो का समावेश है। आज बच्चो के लिए जातक कथाओ के जितने भी सग्रह प्रकाशित हुए है उनमे मूल रूप मे ये ही कहानिया हैं। उदाहरण के लिए रस लोभी हिरन ऐसी ही कहानी है—

रस लोभी हिरन

पुरानी बात है। वाराणसी मे राजा ब्रह्मदत्त राज्य करते थे। राजा का एक बहुत बडा उद्यान था। उस उद्यान की शोभा की चर्चा चारो ओर थी।

उसमे फलो के अलावा हरी हरी घास भी थी। कोमल रसभरी घास को देखते ही जानवरो के मुह मे पानी आ जाता था।

उद्यान की चहारदीवारी बहुत ऊची थी। लेकिन वह एक जगह से टूटी हुई थी। वही से एक हिरन आकर रोज उस उद्यान की घास चरता था। जसे ही माली आता कि हिरन भाग जाता। वह हिरन भागता तो लगता कि हवा से बात कर रहा है।

एक दिन राजा ने माली से पूछा उद्यान का क्या हाल है? फल पत्त कैसे है? मौसम के सभी फल तो उगे है? कोई नया समाचार?

माली ने कहा सब ठीक है महाराज! फल पत्त सब उगते हैं। मौसमी फल भी है। आपकी कृपा से हम लोग भी ठीक ही है परन्तु एक विचित्र बात है महाराज!

क्या?

महाराज एक हिरन रोज आता है और घास चरकर भाग जाता है।

क्या व हिरन बहुत सु दर है ?

बहुत सु दर है महाराज। उसका रग साने की तरह है। उसकी आँख चमकदार है। उसे देखकर मन प्रसन्न हो जाता है।

तो फिर उसे पकडकर मेरे पास हाजिर करो।

उसे पकडना तो बहुत मुश्किल है महाराज।

प्रय न करो। प्रय न करने से सब कुछ सभव है।

अगर थोडा शहद मिले तो महाराज मैं उसे पकड लगा।

राजा ने माली को शहद दे दिया। मानी ने शहद को उद्यान की घास पर छिडक दिया। मधु लगी घास को खाने से हिरन का मन प्रसन्न हो गया। अब वह उद्यान मे देर तक रुकता। शहद लगी घास चरता रहता।

पहले तो माली उसके सामने नही आया पर धीरे धीरे आने लगा। हिरन पहले माली को देखते ही भाग जाता धीरे धीरे वह उसके हाथ की घास भी खाने लगा माली यह देखकर प्रसन्न हुआ। हिरन बहुत तेज और चालाक जानवर होता है। इतने ही पर उसे पकडना सभव नही था। अत माली ने हिरन को पकडने के लिए एक और उपाय का सहारा लिया।

माली ने राजभवन तक चटाइयाँ बिछवाई। उन चटाइयो पर उसने जहाँ तहा शहद मिलाकर घास डाल दी। इसके बाद एक लोटे मे शहद लिया। हाथ मे कुछ पत्त लेकर उनमे शहद लगा लगा हिरन को खिलाते खिलाते राजभवन की ओर बढने लगा। हिरन कभी हाथ की कभी चटाई पर की घास को खाता हुआ शहद के लोभ मे आगे बढता गया। इस तरह शहद के रस के लोभ मे फँसा वह हिरन राजमहल के फाटक के अ दर चला गया।

फाटक के अ दर जाते ही फाटक ब द कर दिया गया। हिरन को अब अपनी गलती मालूम हुई। फाटक के अ दर बहुत स लोगो को देखकर वह डरकर इधर उधर भागने लगा। उसे अपनी मृ यु करीब मालम पडी। वह भय से काँपने लगा।

राजा ने जब हिरन के आ जाने की बात सुनी तब वह नीचे उतरा। हिरन को काँपते हुए देख उसने सोचा यह अपनी जीभ के फर मे पडकर इस कद में आ गया। रस के लोभ से बढकर कोई लोभ नही है। उस रस लोभी हिरन को बाँधकर चिडियाखाने मे डाल दिया गया। इसलिए रस के लोभ से

बुद्धिमान मत्री ने राजकुमार के पागल होने का कारण बताया । तब कही राजकुमार भालू के शाप से मुक्त हुआ ।

पालि भाषा मे आयशूर द्वारा रचित जातक माला जातक कथाओ का सग्रह है । इसका रचनाकाल भदन्त आनन्द कोशल्यायन पाचवी शताब्दी ई पू से लेकर पहली शताब्दी ई पू तक मानते है ।

इस कथा सग्रह को पशु पक्षियो की कहानी का सबसे प्राचीन ग्रन्थ माना जाता है । इस पुस्तक मे लोक मे प्रचलित छोटी बडी कथाए है जो बोधिसत्व के पुनर्जन्म से सम्बन्धित हैं । ये कहानियाँ सीधी सादी बिना सवरी हुई अवस्था मे मिलती है जिनमे गद्य और पद्य दोनो का समावेश है । आज बच्चो के लिए जातक कथाओ के जितने भी सग्रह प्रकाशित हुए हैं उनमे मूल रूप मे ये ही कहानियाँ है । उदाहरण के लिए रस लोभी हिरन ऐसी ही कहानी है—

रस लोभी हिरन

पुरानी बात है । वाराणसी मे राजा ब्रह्मदत्त राज्य करते थे । राजा का एक बहुत बडा उद्यान था । उस उद्यान की शोभा की चर्चा चारो ओर थी ।

उसमे फलो के अलावा हरी-हरी घास भी थी । कोमल रसभरी घास को देखते ही जानवरो के मुह में पानी आ जाता था ।

उद्यान की चहारदीवारी बहुत ऊची थी । लेकिन वह एक जगह से टूटी हुई थी । वही से एक हिरन आकर रोज उस उद्यान की घास चरता था । जसे ही माली आता कि हिरन भाग जाता । वह हिरन भागता तो लगता कि हवा से बात कर रहा है ।

एक दिन राजा ने माली से पूछा उद्यान का क्या हाल है ? फल-पत्त कैसे है ? मौसम के सभी फल तो उगे है ? कोई नया समाचार ?

माली ने कहा सब ठीक है महाराज ! फल पत्त सब उगते है । मौसमी फल भी है । आपकी कृपा से हम लोग भी ठीक ही है परतु एक विचित्र बात है महाराज !

क्या ?

महाराज एक हिरन रोज आता है और घास चरकर भाग जाता है ।

क्या वह ि रन बहुत सुन्दर है ?

बहुत सु दर है महाराज । उसका रग साने की तरह है । उसकी आँख चमकदार है । उसे देखकर मन प्रसन्न हो जाता है ।

तो फिर उसे पकडकर मेरे पास हाजिर करो ।

उसे पकडना ता बहुत मुश्किल है महाराज ।

प्रयत्न करो । प्रय न करने से सब कुछ सभव है ।

अगर थोडा शहद मिले तो महाराज मैं उसे पकड लूँगा ।

राजा ने माली को शहद दे दिया । माली ने शहद को उद्यान की घास पर छिडक दिया । मधु लगी घास को खाने से हिरन का मन प्रसन्न हो गया । अब वह उद्यान मे देर तक रुकता । शहद लगी घास चरता रहता ।

पहले तो माली उसके सामने नही आया पर धीरे धीरे आने लगा । हिरन पहले माली को देखते ही भाग जाता धीरे धीरे वह उसके हाथ की घास भी खाने लगा माली यह देखकर प्रसन्न हुआ । हिरन बहुत तेज और चालाक जानवर होता है । इतने ही पर उसे पकडना सभव नही था । अत माली ने हिरन को पकडने के लिए एक और उपाय का सहारा लिया ।

माली ने राजभवन तक चटाइयाँ बिछवाईं । उन चटाइयो पर उसने जहाँ तहा शहद मिलाकर घास डाल दी । इसके बाद एक लोटे मे शहद लिया । हाथ मे कुछ पत्त लेकर उनमे शहद लगा लगा हिरन को खिलाते खिलाते राजभवन की ओर बढने लगा । हिरन कभी हाथ की कभी चटाई पर की घास को खाता हुआ शहद के लोभ मे आगे बढता गया । इस तरह शहद के रस के लोभ मे फसा वह हिरन राजमहल के फाटक के अन्दर चला गया ।

फाटक के अ दर जाते ही फाटक बन्द कर ि या गया । हिरन को अब अपनी गलती मालूम हुई । फाटक के अन्दर बहुत स लोगो को देखकर वह डरकर इधर उधर भागने लगा । उसे अपनी मृत्यु क ीब मालम पडी । वह भय से काँपने लगा ।

राजा ने जब हिरन के आ जाने की बात सुनी तब वह नीचे उतरा । हिरन को कापते हुए देख उसने सोचा यह अपनी जीभ के फेर मे पडकर इस कैद मे आ गया । रस के लोभ से बढकर कोई लोभ नही है । उस रस लोभी हिरन को बाँधकर चिडियाखाने मे डाल दिया गया । इसलिए रस के लोभ से

बुद्धिमान मन्त्री ने राजकुमार के पागल होने का कारण बताया। तब कही राजकुमार भालू के शाप से मुक्त हुआ।

पालि भाषा मे आयशूर द्वारा रचित जातक माना जातक कथाओ का सग्रह है। इसका रचनाकाल भदन्त आनन्द कौशल्यायन पाचवी शताब्दी ई पू से लेकर पहली शताब्दी ई पू तक मानते है।

इस कथा सग्रह को पशु पक्षियो की कहानी का सबसे प्राचीन ग्रन्थ माना जाता है। इस पुस्तक मे लोक मे प्रचलित छोटी बडी कथाए है जो बोधिसत्व के पुनर्जन्म से सम्बन्धित हैं। ये कहानियाँ सीधी-सादी बिना सवरी हुई अवस्था मे मिलती हैं जिनमे गद्य और पद्य दोनो का समावेश है। आज बच्चो के लिए जातक कथाओ के जितने भी सग्रह प्रकाशित हुए हैं उनमे मूल रूप मे ये ही कहानिया है। उदाहरण के लिए रस लोभी हिरन ऐसी ही कहानी है—

रस लोभी हिरन

पुरानी बात है। वाराणसी मे राजा ब्रह्मदत्त राज्य करते थे। राजा का एक बहुत बडा उद्यान था। उस उद्यान की शोभा की चर्चा चारो ओर थी।

उसमे फलो के अलावा हरी हरी घास भी थी। कोमल रसभरी घास को देखते ही जानवरो के मुँह मे पानी आ जाता था।

उद्यान की चहारदीवारी बहुत ऊची थी। लेकिन वह एक जगह से टूटी हुई थी। वही से एक हिरन आकर रोज उस उद्यान की घास चरता था। जसे ही माली आता कि हिरन भाग जाता। वह हिरन भागता तो लगता कि हवा से बात कर रहा है।

एक दिन राजा ने माली से पूछा उद्यान का क्या हाल है? फल पत्त कैसे हैं? मौसम के सभी फल तो उगे है? कोई नया समाचार?

माली ने कहा सब ठीक है महाराज! फल-पत्त सब उगते हैं। मौसमी फल भी है। आपकी कृपा से हम लोग भी ठीक ही है परन्तु एक विचित्र बात है महाराज!

क्या?

महाराज एक हिरन रोज आता है और घास चरकर भाग जाता है।

क्या व हिरन बहुत सु दर है ?

बहुत सु दर है महाराज । उसका रग साने की तरह है । उसकी आँख चमकदार ह । उसे देखकर मन प्रसन्न हा जाता हे ।

तो फिर उसे पकडकर मेरे पास हाजिर करो ।

उसे पकडना ता बहुत मुश्किल है महाराज ।

प्रयन करो । प्रय न करने से सब कुछ सभव है ।

अगर थोडा शहद मिले तो महाराज मैं उसे पकड लगा ।

राजा ने माली को शहद दे दिया । माली ने शहद को उद्यान की घास पर छिडक दिया । मधु लगी घास को खाने से हिरन का मन प्रसन्न हो गया । अब वह उद्यान मे देर तक रुकता । शहद लगी घास चरता रहता ।

पहले तो माली उसके सामने नही आया पर धीरे धीरे आने लगा । हिरन पहले माली को देखते ही भाग जाता धीरे धीरे वह उसके हाथ की घास भी खाने लगा माली यह देखकर प्रसन हुआ । हिरन बहुत तेज और चालाक जानवर होता है । इतने ही पर उसे पकडना सभव नही था । अत माली ने हिरन को पकडने के लिए एक और उपाय का सहारा लिया ।

माली ने राजभवन तक चटाइयाँ बिछवाई । उन चटाइयो पर उसने जहा तहा शहद मिलाकर घास डाल दी । इसके बाद एक लाटे मे शहद लिया । हाथ मे कुछ पत्त लेकर उनमे शहद लगा लगा हिरन को खिलाते खिलाते राजभवन की ओर बढने लगा । हिरन कभी हाथ की कभी चटाई पर की घास को खाता हुआ शहद के लोभ मे आगे बढता गया । इस तरह शहद के रस के लोभ मे फसा वह हिरन राजमहल के फाटक के अन्दर चला गया ।

फाटक के अ दर जाते ही फाटक बन्द कर न्या गया । हिरन को अब अपनी गलती मालूम हुई । फाटक के अन्दर बहुत स लोगो को देखकर वह डरकर इधर उधर भागने लगा । उसे अप ी मृयु करीब मालम पडी । वह भय से कापने लगा ।

राजा ने जब हिरन के आ जाने की बात सुनी तब वह नीचे उतरा । हिरन को कापते हुए देख उसने सोचा यह अपनी जीभ के फेर मे पडकर इस कद मे आ गया । रस के लोभ से बढकर कोई लोभ नही है । उस रस लोभी हिरन को बाँधकर चिडियाखाने मे डाल दिया गया । इसलिए रस के लोभ से

बचो। जीभ मनुष्य का कही से क ी न ा सकती है। िसने ीभ को वश मे कर लिया उसने भारा विजय प्रा त क र ी।

इसक अतिरिक्त राजा विक्रमादि य के जीव ा रा स बद्ध सरकृत भापा मे वतान पच विशति का एव सिहासन द्वा ा ि । हानी सग्रह है ा विक्रमादि य तथा राजा भोज के गुणा एव पराक्रम क प्रकट करती । अ ज इन कहानियो के हि दी क अतिरि त ि ि भा ीय भा ाओ म अनुवाद हा चुके ।

पर परागत रूप म अति प्राची ाका ा सस्कृत क पचत त्र तथा हितोपदेश क रचना ि णु शर्मा ने लगभग अस ी वप की उम्र मे तृतीय शता दी मे ी थी। सस्कृत साहि य की इस अनमा ा कृ ि की रचना का मुख्य उद्दश्य बालको को नीति की शिक्षा देना है िसक ा पूर्ति पश पक्षी के मा यम से की जाती है। इसके पात्र पशु पक्षी मानवीय गुणो से युक्त ह और लेखक ने इनके द्वारा जीव ा के अ छ े बुरे दो ा स्वरूप का बडी सु दरता क साथ प्रतिपादन किया है। साथ ी जावन की या ा ि ता का भी स्पष्ट चित्रण द ि टगाच ा ा है। इस ग्र थ की कहानिया उपद ा मक अ ा नातपरक अवश्य कि तु उनमे रोचकता का परिचय ी पया त ा त्रा म प्राप्त होता है। इसके औचि य की चर्चा करते हुए स ी विद्वान् क मन स सहमत हे कि पचत त्र का कथा ो और ईसप की कहानिया क निमाण का औचि य क्या है? उनमे निहित नीति चातुय युक्ति उपाय आदि व ो को जितना आकर्षित कर सके है उतना अ त कृति नही। मूख स राजकुमारो को सव विद्या विशारद बना देने का श्रय पचतत्र की कहानियो को । इस ससार मे कैसी कसी मनोवत्तियाँ और उनका सामना किस तरह करना चाहिए आदि का ज्ञान देती हैं ये कहानियाँ। यही कारण है कि आज देश ही नही यूरोपीय साहि य भी पचत त्र का बहुत आ ारी है। उदा रण क लिए एक कहानी प्रस्तुत है —

हस्तक्षप का फल

करकट ने कहा दमनक! हमे दूसरो के काम हस्तक्षेप मे नही करना चाहिए। जो ऐसा करता है वह उसी ब दर की तरह तडप तडप क म ता है जिसने दूसरे के काम मे कौतूहलवश व्यथ मे हस्तक्षेप किया।

दमनक ने पूछा यह बात कही तुमने ?

करटक ने कहा सुनो।

एक गाँव के पास एक मं दिर बन रहा था। वहाँ के कारीगर दोपहर के समय भोजन के लिए गाव मे आ जाते थे। एक दिन वे जब गाव मे आए हुए थे तब ब दरो का एक दल इधर उधर घूमता हुआ वही जा पहुँचा। कारीगर तो थे नही। ब दरो ने उनके काम । खब उथल पुथल मचाई।

एक जगह बड़ से ा ती को चीरने का काम चल रहा था। शह ती को आधा ची कर उसमे की न फसा दी गई थी। एक ब र उस कील को उखाडने की कोशिश मे जुट गया। उसे पता न था कि वह श तीर के चिरे हुए भाग म पस भी सकता है। बस वही हुआ। जसे ही कील निकली कि ब दर शहतीर के चिरे हुए भाग मे फस गया और चाख चीख कर मर गया।

इसीलिए मैं कहता हूँ कि हमे दूसरो के काम मे हस्तक्षप नही करना चाहिए।

इस नीति कथा का प्रचार दश विदेश मे इतना अधिक हुआ कि इसके अनुवाद अनेक भाषाआ मे हुए। अरबी लैटिन जमन क अतिरिक्त खडी बोली हिन्दी म अनुदित होने के इसे कई अवसर प्रा त ए। भारत की विभिन्न भाषाओ मे तो अनुवाद हुए ही। हिन्दा सा ित्य के प्रारंभिक कान स लेकर अब तक अनेक पुस्तक पचत त्र तथा ईसप की कहानियो क लेकर प्रका शित हुई जिनम समयानकून भापा शनी का भी प्रभाव पडा। ाल मे वि णु प्रभाकर द्वारा स पादित और भारत स कार के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित सरल पचतन्त्र औ चिल्ड्रन बुक ट्र द्वारा प्राशित पचत त्र की क ानियाँ उल्लेखनीय कृति जिनम आधनिक युग के अनुरूप कहानियो को ढाल कर बालको को मनोरजन प्रदान करने का प्रयास किया गया।

पचतन्त्र की क ानियाँ बा । स्वभाव के अनुकूल लिखी होने के कारण विश्व प्रसिद्ध हो चुकी । य निर्विवाद स य है कि विश्व साहि्य को भारतीय साहि् य की एक ही म ती देन है। ये पचत त्र की कहानियाँ बहुत दूर दूर की सर कर चुकी ह। इन भ्रमण की एक कहानी स्वय बडी रोचक है। स कृत की इन कहानियो का ससार मे तना अधिक प्रचार हुआ कि वह विश्व साहि य का अग बन गयी हे। पचतन्त्र की अधिकाश कहानियाँ चार खण्डो मे हितोपदेश मे दृ टिगाचर होती है जो राजनीति शास्त्र के अ तगत आती हैं और समय समय पर इसके भी अनुवाद हिन्दी मे प्रस्तुत होते रहे।

(2) **मध्य काल**—कालक्रम स सामाजिक एव रा नातिक गति विधियो मे उलटफेर के कारण बालकोपयोगी या जनोपयोगी साहित्य निखने के प्रति विद्वान् उदासीन होते गए। कविता वीर रस से परिपूण होकर राज महल की वस्तु रह गई। अपभ्रश काल म जगनिक का आ हा ऊदन नोकप्रिय अवश्य हुआ पर तु वह जनमामा य को ही मनोरजन प्रदान करता रहा। ब चो के लिए भावनाओ की अभि यक्ति उसमे नही थी। उसकी सरन पक्तियो को बड द्वारा गाए गीतो के आधार पर ब चे अपने मनोरजन क लिए गाते अवश्य होगे इसमे सदेह नही।

सच पूछा जाय तो ब चो के लिए उपयुक्त का य की रचना 13वी शता दी मे होने लगी थी जबकि अमीर खुसरो ने सरन दोहे तुकब दिया पहेलिया और मुकरियाँ बड ही मनोरजन ढग से प्रस्तुत की। खसरो की रचनाए बडो वृक्षो के साथ साथ बालको का भी पर्याप्त मनोरजन करती ह यद्यपि उ होने अपने दोहो की रचना बालको के लिए नही की। इ होने आम जनता मे प्रचलित भाषा को अपनी रचना का आधार बनाया क्योकि उस समय (सन् 1283 के आस पास) हि दी भाषा का कोई साहित्यिक रूप स्थिर नही हो पाया था। फिर भी उनकी पहेलियो और मुकरियो के सरल अश को बालको ने अपनी समझ के अ तगत अपना लिया।

पहेलियों का एक उदाहरण—

बाला था जब सब को भाया।
बढा हुआ कुछ काम न आया॥
खुसरो कह दिया उसका नाम।
अर्थ करो या छोडो ग्राम॥

मुकरियो का एक उदाहरण—

जब मागू तब जल भर लावे।
मेरे तन की तपन बुझावे॥
मन का भारी तन का छोटा।
ए सखि साजन न सखि लोटा॥

इसको देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि बाल साहित्य की दृष्टि से खसरो की पहेलियो और मुकरियो का महत्व कम नही है। बच्चो के मान सिक स्तर के उपयुक्त अश उनकी रचनाओ से छाँटकर अलग कर दिया जाय तो उसका महत्व और भी बढ जाता है।

अमीर खसरो के बाद लगभग 16वी शताब्दी तक कोई ऐसा साहित्य नही मिलता जिसे बाल साहित्य की कोटि मे रखा जा सके। कालक्रम से राजनीतिक उलट फर होते रहे। मुगलो ने अपनी जड भारत मे दृढ कर ली। साहित्यकारो ने देखा कि निरीह जनता उनकी शासन शिला के नीचे पिस रही है। सवत्र निराशा एव विवशता का घोर अधकार छाया हुआ है। तब उन्होने अपनी साहित्यिक उपासना का आधार नर की अपेक्षा नारायण को बनाया और हिंदू धर्म तथा भारतीय सस्कृति को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। सूर तुलसी कबीर मीरा आदि इस युग के प्रमुख कवि हुए। कबीर जायसी और मीरा के काव्य तो रहस्य के आवरण मे स प्रकार ढक गए कि उनका अर्थ ग्रहण करने मे बाल बुद्धि असमर्थ थी।

मध्य काल के दो प्रमुख कवि सूर और तुलसी के काव्य के कुछ भाग बाल साहित्य की चर्चा करते समय हमारा ध्यान अपनी ओर खीचते है। विशेष रूप से इसलिए कि इन कवियो ने अपनी काव्यात्मक क्षमता से बाल क्रीडाओ का सहज वणन किया है जो हर एक को आकर्षित करने की क्षमता रखता है। लेकिन यह भी पूरी तरह स्पष्ट है कि इसे हम बाल साहित्य के अन्तर्गत नही रख सकते क्योकि इस साहित्य की अभिव्यक्ति बालको के स्तरानुकूल नही है। यह बात अलग है कि इन कवियो के लिए बालको की सरल भावनाओ क्रीडाओ चेष्टाओ आदि का स्वाभाविक चित्रण कर पाना बहुत ही सहज था। यह बाल मनोविज्ञान के आधार पर सही होते हुए भी बालको के मानसिक स्तर के अनुकूल न होने से ही इसे बाल साहित्य नही कह सकते।

एक बात और है। तुलसी ने राम के बाल रूप का वणन जब भी किया है वे अपने आराध्य देव भगवान राम के देवत्व को भूल नही सके हैं। दूसरी ओर सूरदास की पकड अपने द्वारा रचित गीतो मे इतनी गहरी है कि बाल रुचियो और प्रवृत्तियो को वे पूरी तरह उभार कर रख देते हैं। इतनी गहरी पकड शायद किसी अन्य भक्त कवि मे नही है। लेकिन यह सब बालको के स्तर के अनकूल न होने के कारण उनका मनोरजन नही कर पाते। भले ही बडो के लिए बाल लीला चित्रण उनमें पूण रूप से वात्सल्य रस उत्पन्न करने की क्षमता रखता हो।

यह सच है कि सूरदास ने बच्चो के लिए अपने काव्य की रचना नही की। वे तो अपने आराध्य बाल कृष्ण की लीलाओ का गायन करते रहे।

कि तु ब चो के मनोभावो का जितना स्वाभाविक और सजीव चित्रण हमे उनके बाल कृ ण विषयक पदो मे मिलता है उतना अ य किसी कवि मे नही। अस्तु कृ ण के बाल लीला ो का वणन सूरदास ने ऐसे मनोवैज्ञानिक ढग से किया है जिससे ज्ञात होता है कि उनका ब ल स्वभाव का ज्ञान बहुत विषद् था। बच्चो के मन के राग द्वेष हृष विषाद इ यादि मनोभावो से वे भली भाति परिचित थे। बाल स्वाभाव का ऐसा सु दर चित्रण हि दी के और किसी पुराने कवि की रचनाओ मे हमे नही मिलता। इसलिए हम उ हे हि दी मे बाल भावनाओ को चित्रित करने वाला प्रथम कवि कह सकते है। उदाहरण के लिए—

मैया मै नही माखन खाया
जान पर सब सग सखा मिलि मेरे मुख लपटायो

अथवा

मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायौ
मोसो कहत मोल को लीहो तोहि जसुमति कब जायौ

इन पदो को पढकर उसके साथ अपने स्वभाव का तादा म्य स्थापित किए बिना नही रह सकता। इसमे ब चो का मनोरजन भी खब होता है। यद्यपि ब च सूरदास की बाल लीला पदो को पढकर रस मे डब जाते है फिर भी इ हे विशुद्ध बालगीत नही कह सकते। बाल गीत उन गीतो को कहते हैं जिनमें ब चो के मन को आ तरिक अनुभूतियो और क पनाओ को उ ही की भाषा मे व्यक्त किया गया हो। इन गीतो मे बडो के लिए वा स य रस की अभि यक्ति ही है।

भक्ति काल के बाद रीति काल का युग आया जिसमे कवियो का यान भावपक्ष से हटकर का य पक्ष की ओर ाधिक रहा। कविता कामिनी अलकारो से सुसज्जित हो उठी। रा याश्रित कवियो ने अपने आश्रयदाता का मनोरजन करने के लिए शृ गार रस से कविता को ओतप्रोत कर दिया। अत यह तो सभव था ही नही कि ये कवि ब चो के लिए कुछ लिख। हा कुछ जनकवि अवश्य हुए जि होने हास्य का पु देकर साधारण बाल चाल की भाषा मे कुछ रचनाए प्रस्तुत की जो जनता मे प्रचलित हुई। इन कवियो मे घाघ लाल बुझक्कड का नाम लिया जा सकता है। लाल बुझक्कड की कविताए बच्चे बड चाव से पढते हैं और याद करते हैं।

इसी युग मे गिरिधर कवि की कडलियाँ भी प्रसिद्ध हुइ जिनके अन्तर्गत निहित व्यावहारिक ज्ञान बडो के साथ साथ ब च्चो के लिए भी लाभदायक है। रहीम कवि के दोहे भी उपदेशा मक थे। आज इन दोहो और कुडलियो को बालको के पाठ्यक्रम मे स्थान मिला है फिर भी इन रचनाओ को बाल साहि य नही कहा जा सकता।

सदभ सूची

1 ज ीवन नायक योजना (पाक्षिक) पृ 9।

2 L I Sm th As f th past as w h e a y o d th to s th t we t ld aro nd th h th the folk t l s th t l th t w g by wo d ng m st l th gr t hall w th al al Lite t f ll y g & ld
—A C t l App h to Ch ld s L teratu p 15

3 भदन्त आन द कौश यायन जातक (प्रथम खण्ड) पृ 12।

4 रामच द्र उ चिल मधुमती जुलाई अगस्त 1967 पृ 279 80।

5 शकरदयाल यादव लोक साहि य सिद्धात और प्रयोग पृ 342।

6 निरकारदेव सेवक बाल गीत साहि य पृ 133 34।

7 रामच द्र शुक्ल हि दी साहि य का इतिहास पृ 379।

8 कीडी सच तीतर खाय पापी को धन पर ले जाय (घाघ)।

9 लाल बुझक्कड बूझते और न बूझा कोय
पर मे चक्की बाध के हिरना कूदा होय। (लाल बुझक्कड)

10 रहीमन प्रीति न कीजिए जस खीरा ने कीन
ऊपर से तो दिल मिला भीतर फाके तीन। (रहीम)

तृतीय खण्ड

भारतेन्दु कालीन बाल साहित्य

(सन 1850 से 1900 तक)

भारतेन्दु कालीन बाल साहित्य
(सन् 1850 से 1900 तक)

हिन्दी साहित्य का भारतेन्दु युग सामाजिक अशान्ति की दृष्टि से महान् अराजकता का युग था। अंग्रेजो का सुदृढ शासन भारत पर स्थापित था। जन जीवन अस्त व्यस्त था तथा शिक्षा का कोई सुव्यवस्थित रूप स्थिर नही हो पाया था। साधारण जनता अनपढ ही रही जबकि उच्च वर्ग के बालक बालिकाएँ ऊची नौकरी पाने की लालच मे अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा ग्रहण करते थे। कार्यालयो की भाषा फारसी थी किन्तु सन् 1837 के बाद कार्यालयो को भाषा फारसी के स्थान पर उदू हो गई। उच्च शिक्षा का माध्यम अंग्रजी और प्रारम्भिक शिक्षा का उर्दू था। अपने घर मे भी हिन्दी की पूछ नही थी। सभ्य कहलाने के लिए उदू या अंग्रजी जानना अनिवार्य था। हिन्दी जानने वाले गवार समझे जाते थे। हिन्दी की उपेक्षा का यह एक प्रबल कारण था।

भाषा की इस गम्भीर समस्या का अनुभव अंग्रेजो ने किया और समझा कि शिक्षा के लिए दोनो प्रकार की भाषा का प्रचार आवश्यक है। वे समझ गए थे कि उर्दू देश की अपनी भाषा नही है। वह भी कालान्तर मे भारतवासियो के ऊपर जबरन थोपी हुई है। इस समय तक हिन्दी का स्वरूप स्थिर नही हो पाया था। अंग्रेजी का भार भी उन पर डाल नही सकते थे क्योकि वे समझते थे कि किसी देश के साहित्य का सम्बन्ध उस देश की संस्कृति परम्परा से होता है। अतः साहित्य की भाषा उस संस्कृति का त्याग करके नही चल सकती। भाषा मे जो रोचकता और शब्दो में जो सौन्दर्य का भाव रहता है वह देश की प्रकृति के अनुसार होता है। इस प्रकृति के निर्माण मे जिस प्रकार देश के प्राकृतिक रूप रंग आचार व्यवहार आदि का योग रहता है उसी प्रकार परम्परा से चले आते हुए साहित्य का भी। संस्कृत शब्दो के थोडे बहुत मेल से भाषा का जो रुचिकर साहित्यिक रूप हजारो वर्षों से चला आता था उसके स्थान पर एक विदेशी रूप रंग की भाषा गले मे उतारना देश की प्रकृति के विरुद्ध था। इस बात को ध्यान मे रखकर अंग्रेजो ने हिन्दी और उर्दू दोनो प्रकार की पुस्तकें लिखाने का प्रयाग किया।

फोट विलियम कालेज के प्रो गिलक्राइस्ट के प्रयास से उस युग के चार प्रमुख लेखको—मुशी सदासुख लाल सैयद इशा अल्ला खाँ ल लू लाल और सदल मिश्र—ने इस काय को आगे बढाने का व्रत लिया । लल्लू लाल ने उद खडी बोली हिन्दी एव ब्रज भाषा—तीनो मे गद्य की पुस्तक लिखी । सिंहासन बतीसी बेताल पचीसी शकुन्तला नाटक मोधोनल और प्रमसागर उदू और हिन्दी गद्य मे लिखा । इसके अतिरिक्त स 1869 मे हितोपदेश की कहानियो को राजनीति के नाम से ब्रजभाषा गद्य मे लिखी ।

सदल मिश्र ने नासिकेतोपाख्यान का अनुवाद सरल एव यावहारिक भाषा मे किया । इस अनुवाद का मुख्य उद्दश्य बालको को धर्मशास्त्र पढाने तथा नतिक ज्ञात देने का था । इस पुस्तक का लेखन पाठय पुस्तक की दष्टि से हुआ ।

हिन्दी और उदू का झगडा जोर पकडता गया । पाठशालाओ मे पढाने के लिए लल्लूलाल सदल मिश्र ने पुस्तको का अनुवाद अवश्य किया किन्तु उनका मुख्य स्वर उद ही रहा । ऐसे ही समय मे राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द पाठय पुस्तकें लिखने के लिए अग्रसर हुए । इन्होने हिन्दी की उपादेयता समझी और उसी को प्रमुखता देते हुए पाठयक्रम के उपयुक्त कई पुस्तक लिखी । इसके लिए पडित श्रीलाल और पडित बशीधर की सहायता ली । सच पूछा जाय तो बालको के लिए पृथक साहित्य का महत्व समझने वाले प्रथम व्यक्ति राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द ही थे । इन्होने दो दृष्टिकोण को ध्यान मे रखकर पुस्तकें लिखी —

(1) पाठशालाओ मे पढाने योग्य पुस्तक तथा

(2) बालको के मनोरजनार्थ लिखी गई पुस्तक ।

प्रथम कोटि के अन्तर्गत भारत वर्षीय इतिहास इतिहास तिमिर नाशक मानव धर्मसार भूगोल हस्तामलक हिन्दी याकरण हिन्दी की उत्पत्ति आदि पुस्तक थी तो आलसियो का कोडा राजा भोज का सपना बच्चो का ईनाम आदि द्वितीय कोटि के अन्तर्गत थी । राजा साहब के प्रयत्न से ही हिन्दी को शिक्षा मे स्थान मिला ।

सितारे हिन्द ने स 1960 के उपरान्त जो भी इतिहास भूगोल की पुस्तक लिखी उनकी भाषा बिल्कुल उर्दूपन लिए है । इसका कारण यह समझा जा सकता है कि शिक्षा विभाग मे हिन्दी के प्रवेश से उर्दू वालो मे

बडा तहलका और हाय तोबा मच गया। अलीगढ इस्टीटयूट गजट और बनारस अखबार मे आन्दोलन हुआ। राजा शिव प्रसाद सरकारी आदमी थे। उन पर इस हायतोबा का बुरा असर हुआ और प्रतिक्रिया के फलस्वरूप अब वे ऐसी हिन्दी के हिमायती हुए जिसकी लिपि तो नागरी हो पर भाषा उर्दू हो। राजा साहब ने उदू की ओर झुकाव हो जाने पर भी साहित्य की पाठय पुस्तक गुटका मे भाषा का आदश हिन्दी हो रखा। उक्त गुटका मे राजा भोज का सपना रानी केतकी की कहानी का भी बहुत सा अश रखा। पहला गुटका स 1924 मे प्रकाशित हुआ था। इन्होने शिक्षा विभाग मे हिन्दी का प्रवेश कराकर हिन्दी का अनन्य उपकार किया। यह उ ही के प्रयास का परिणाम है कि आज का शिक्षा विभाग पूर्णरूपेण हिन्दी को अपना रहा है।

शिक्षा के लिए कौन सी भाषा अपनाई जाय इस प्रश्न को लेकर आन्दोलन जोर पकडता गया। पजाब के बाबू नवीनचन्द्र राय हिन्दी का पक्ष लेते थे तो हिन्दी के शत्रु गार्सी द तासी समय समय पर उदू के समथन मे हिन्दी पर अपने भाषणो से प्रहार करते रहे। न्नका कहना था कि हिन्दी एक पुरानी भापा है जो सस्क्रन से बहुत पहले चनती थी। आर्यों ने आकर उसका नाश किया।

हि दी उद मिश्रित भाषा खटकी तो बहुत न गो को होगी पर असली हिन्दी का नमूना लेकर उस समय राजा लक्ष्मण सिंह ही आगे बढे। राजा लक्ष्मण सिंह (1826 1896) के समय मे ही हि दी गद्य की भाषा अपने भावी रूप का आभास दे चुकी थी। अब आवश्यकता ऐसे शक्ति सम्पन्न लेखको की थी जो अपना प्रतिभा और उद्भावना के बल से उसे सु यवस्थित और परिमार्जित करते और उसमे ऐसा साहित्य का विधान करते जो शिक्षित जनता की रुचि के अनुकूल होता। ठीक इसी परिस्थिति मे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का उदय हुआ। ये वर्तमान हि दी गद्य के प्रवर्तक माने जाते हैं। रीति काल मे हिन्दी साहित्य जन जीवन से अलग हो गया था। भारतेन्दु को इस बात का श्रेय है कि उन्होने साहि य और जीवन का सम्पर्क स्थापित कर इस विच्छद की गहरी खाई को पाट दिया। भारते दु हरिश्च द्र ने त कालीन साहित्यक सामाजिक परिवेश को समझा और साहित्य की विभिन्न विधाओ मे इस पर कटु यग्य किया तथा साथ ही साहित्य का सुस्थिर रूप निश्चित करने का प्रयास किया।

भारतेन्दु के प्रभाव से अनेक लेखक मण्डल भी तैयार हो गये।

भाषा उदू कलेवर को छोडकर हि दी परिधान अपनाने के लिए प्रेरित हुई। यद्यपि राजा साहब हि दी के विकास मे प्रय नशील थे फिर भी परिस्थिति वश उदू को अपनाने के लिए उ हे बा य होना पडा था। तभी भारते दु और राजा साहब मे विरोध भावना प्रार भ हुई यद्यपि दोनो ही हि दी के हितैषी थे।

साहि य के क्षेत्र मे खडी बोली हि दी के लिए जो युद्ध आरम्भ हो गया था उसमे बाल साहि य ने भी अपना स्थान बनाना आर भ कर दिया भले ही उसमे बाल साहि य के स पूण गुणो एव विशषता ो का अभाव रहा। फिर भी बाल साहि य का सूत्रपात यही से मानना चाहिए। आधुनिक बाल साहि य की नीव हम इसी युग के साहि य से मान सकते हे यद्यपि उनका लेखन भाषा की समस्या को सुलझाने के लिए किया गया।

राजा साहब ने ब चो के लिए अनेक पुस्तक लिखी लेकिन स्वत त्र रूप से बाल साहि य के मह व को समझने वाले यक्ति हुए भारते दु हरिश्च द्र। बालको के लिए उ होने अधर नगरी (सन् 1881) भारत दुदशा (1880) तथा स य हरिश्च द्र सन् (1875) नाटको का नखन किया जो अभिनय की दृष्टि से सशक्त कृतियाँ सिद्ध हुई। अधेर नगरी के गीत बालक बडे प्रम से गाते है। इस कृति मे लखक ने यह बताया है कि राजा की मूर्खता के कारण प्रजा का भवि य खतरे मे पड सकता है।

बालक बालिकाओ मे नवजागरण का सदेश देने के लिए बाल बोधिनी पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया जिसकी पहली प्रति 1 जून 1874 को प्रकाशित हुई। यह पत्रिका अधिक दिन नही चल पायी। विद्यार्थी के साथ मिलकर इसका रूप रग बदल गया फिर भी बाल साहि य का सूत्रपात करने का श्रेय इसी को है।

तत्कालीन सामाजिक राजनतिक स्थितियो का प्रभाव बाल साहि य पर पडना स्वाभाविक था। अब तक धार्मिक कथाए तथा परियो की का पनिक कहानियो से मानसिक भूख को वे शा त करत रहे कि तु भारत दुर्दशा मे भारत के प्राचीन गौरव और उसकी वतमान दुरावस्था का ऐसा वर्णन था कि बालक उससे प्रभावित हुए बिना नही रह सके। उसकी भावनाओ में महान परिवर्तन हुए। अग्रजी सरकार के प्रति विरोध की भावना ही मूल रूप से उनमे रच बस गई। स य हरिश्च द्र के प्रभाव से विदेशी सस्कृति को जड से उखाड फेंकने का बीडा उठा लिया था। सच पूछा जाय तो इन पुस्तको ने अनेक स्वतत्रता सग्राम सेनानी उ प न किए जो आगे चलकर भारत को स्वत त्र कराने मे मह वपूर्ण भूमिका निभा सके।

स-य हरिश्चन्द्र को बाल साहित्य की सर्वोत्कृष्ट रचना—इस युग की मानी जा सकती है । भारत दु की यह सर्वथा मौलिक कृति है । डा हरेकृष्ण देवसरे तो बाल साहि य की पहली मौलिक रचना इसे ही मानत हैं । इस नाटक मे बाल साहि य के वे सभी गुण विद्यमान है जो इसे स्कूली साहि-य से अलग करते हैं । इसका उद्देश्य बालको को स-य की ओर प्ररित करना है । इस नाटक मे बालको को सद्गुण की शिक्षा देने के साथ मनोरजन का भरपूर प्रवाह है ।

इसके अतिरिक्त भारतेन्दु ने बादशाह दपण एव काश्मीर कुसुम जसी रचनाओ के माध्यम से बालको का भारताय इतिहास की जानकारी दी । दोनो ही रचनाएँ हरिश्च द्र कला (द्वितीय भाग सन् 1918) मे सग्रहीत है । इसके अतिरिक्त महारा ट्र देश का इतिहास रामायण का समय जसे अनेक ऐतिहासिक ग्र थ प्रस्तुत किए । इनकी कई का य रचनाएँ आज भो कक्षाओ मे पढाई जाती है । भले ही इ-हे बाल साहि-य नही मान कि-तु बच्चो के ज्ञानवर्धन के अवश्य सहायक है । भारते दु हरिश्च-द्र हि-दी बाल साहि-य के ज मदाता के रूप मे भले ही न स्वीकार किए जाय किन्तु उ-हे उसका प्रथम प्ररक मानना अ-य त समीचीन होगा । इ-होने अपने जीवन के अ-प समय मे ही अनेक लेखकगण तैयार कर लिए थे जिनमे ब रीनारायण चौधरी प्रमघन प्रतापनारायण मिश्र श्रीधर पाठक लाला श्रीनिवासदास प बालकृष्ण भटट राधाकृष्णदास काशीनाथ खत्री फ्र डरिक पिंकाट आदि मह व मह-वपूर्ण नाम है ।

प्रमघन ने बालोपयोगी कविताए कवित्त सवया शली मे लिखी और इसी शली मे लिखी कविता के द्वारा बालकों मे देश प्रम की भावना जागत की । भारतेन्दु के विपरीत प्रमघन के का-य मे प्राचीनता का अपेक्षा नवीनता का त व अधिक है । ये ब्रजभाषा मे अधिक लिखते थे कि तु जीवन के अ-तिम दिनो मे मयक महिमा जसी कृति खडी बोली हि-दी मे लिखी । भारतेन्दु मण्डल के ये सब प्रमुख कवि थे । इ-होने ब-चो के लिए बहुत कम फिर भी जो लिखा उसका मह-व ही है ।

भारतेन्दु युग के प्रमुख कवि लेखक एव निब धकार प्रतापनारायण मिश्र ने बालको के लिए कई रचनाए प्रस्तुत की । विनोद प्रियता इनका प्रमुख गुण था । किसी भी विषय मे विनोद एवं मनोरजन की सामग्री ढूँढ़ने मे उ-हे देर नही लगती । इस गुण के कारण कठिन विषय का भी सरल बनाकर बच्चो के लिए लिख सके । मिश्र जी प्रमुख रूप से निब-धकार थे । निबन्ध

लिखते समय इनकी भाषा अति सरल रहा करती थी। निरकार देव सेवक इ्हें बाल साहित्यकार इसलिए नही मानते कि उनकी रचनाओ से बालको का कोई भावना्मक सम्ब ध नही हे कि्तु पूववर्ती लेखको की अपेक्षा मिश्र जी ने बच्चो के लिए कुछ पुस्तक अवश्य लिखो भले ही वे अनुवाद हो। नीति र्नावली मे बालको को देश प्रम स चरित्रता एव नीति त्रिषयक उपदेश दिए गए है। राष्ट्रीय नाटक भारत दुर्दशा मे त कालीन भारत की दशा का सजीव वणन है तथा हठी हमीर बालको को भारतीय इतिहास की गौरवमयी परम्परा का परिचय देता है। उनकी सुचाल शिक्षा बालो पयोगी प्रब्ध है। इन्होने बगला उप यासकार बकिमच्द्र चटटोपाध्याय के बगला उप्यासो का हि्दी अनुवाद किया जिनमे राजसिह इ्दिरा तथा राधारानी प्रमुख हैं। चरिताष्टक मे वर्णित आठ महापुरुषो के जीवन चरित को पढकर ब्चे अवश्य लाभा्वित होते है।

इस युग मे ब्चो के लिए स्वत्त्र रूप से साहि्य लिखने की महत्ता को समझा श्रीधर पाठक ने। ये प्रमुख रूप से कवि थे और इ्होने ही बडो के साथ साथ बच्चो की कविता लिखने की और सबसे पहले ध्यान िया। बच्चो के आस पास बिखरे सुपरिचित विषयो जसे—तोता बि्नी कुत्ता कोयल—पर छोटी छोटी सरस कविताए लिखी। यह कविताए पाठक जी ने अग्रजी भाषा के अध्ययन के प्रभाव से लिखी थी। उनकी ब ो वे लिए लिखी अनेक पुस्तको के समान वह अग्रजी भाषा की पुस्तको के हि दी अनुवाद नही है। पर्तु आधुनिक समय लिखी गई बालोपयोगी कविता का प्रारंभक रूप हमें उनकी इन कविताओ मे ही मिलता है। त कालीन युग मे श्रीधर पाठक ने बाल गीतो के विशाल प्रासाद मे नीव के प थर का काम किया। इनकी कविताएँ इतनी सहज तथा सरल होती हैं कि ब्चे इ्हे बड प्रम से पढते है। इनका लेखन काय सन् 1898 के आस पास अवश्य हुआ होगा कि्तु सन् 1917 मे प्रकाशित पुस्तक मनोविनोद के बाल विलास (भाग 1) मे ये कविताए सम्मिलित की गई हैं।

पाठक जी ने अपनी रचनाओ को बाल सुलभ सरलता से मनो वज्ञानिक ढग से प्रस्तुत की है। गीत ब्चो को शीघ्र याद हो जाते है इस बात को ध्यान मे रखकर उन्होने बाल भूगोल नाम से एक पुस्तक पद्य में लिखी। पुस्तक से ऐसा ज्ञात होता है कि ज्ञान विज्ञान के कठिन विषय भी पद्य के माध्यम से बच्चो को सरलता से याद कराई जा सकती है।

लाला श्रीनिवास दास ने बालको के लिए केवल प्रह्लाद चरित नाटक लिखे। यह नाटक बाल साहित्य के विकास मे एक महत्वपूर्ण कृति अवश्य मानी जा सकती है किन्तु अपने रचनाकाल मे अनेक आलोचनाए प्रत्यालोचनाए इसे सहनी पडी।

प बालकृष्ण भटट इस युग के लेखको मे निबन्धकार के रूप मे प्रसिद्ध हुए। मुहावरेदार भाषा ने इनकी रचनाओ मे विशेष स्थान प्राप्त किया। आख कान नाक जसे निबन्ध मे मुहावरो का विविध रूपी प्रयोग द्रष्टव्य है। इन्होने नूतन ब्रह्मचारी तथा सौ अजान एक सुजान उपन्यास भी लिखे जो किशोरावस्था के पाठको के लिए लिखे गए है। दोनो ही उपन्यास उपदेशात्मक तथा सुधारपरक रचनाए ह जिनमे स्थान स्थान पर नीति कथन तथा सूक्ति लिखे हैं।

शिशुपाल वध नल दमयन्ती शिक्षा दान जसे नाटक बाल पाठको को आकर्षित करते हैं।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के फुफेर भाई राधाकृष्ण दास ने उस युग के साहित्य के भण्डार को भरने का प्रयास अवश्य किया किन्तु बालोचित साहित्य लिखने की ओर से उदासीन ही रहे। फिर भी महाराणा प्रताप नामक ऐतिहासिक नाटक बाल पाठको मे लोकप्रिय हुआ।

भारतेन्दु युग की सामाजिक दुदशा को देखते हुए काशीनाथ खत्री ने बालको के लिये नीतिपरक रचनाए लिखी। सिन्धु देश की राज कुमारियाँ गुन्नौर की रानी एव रघुवश की कथा पर आधारित लवजी का स्वप्न ऐतिहासिक बाल रूपक बाल साहित्य के क्षत्र मे प्रसिद्धि पा सका। शेक्सपीयर के नाटको के कथानको का हिन्दी मे अनुवाद किया जो बाल पाठको के लिए उपयोगी हुआ है।

इगलण्ड मे रहकर हिन्दी भाषा मे रचना करने वाले फ्रेडरिक पिंकाट सवप्रथम विदेशी व्यक्ति थे जिन्हे सस्कृत भाषा के प्रति लगाव था फलस्वरूप उन्होने भारतीय साहित्य का अध्ययन करने मे रुचि ली थी। बालकों के लिए दो पुस्तको की रचना उन्होने की बाल दीपक जो उन दिनो बिहार के स्कूलो मे पढाई जाती थी और जिसमे नीतिपरक एव शिक्षा सम्बन्धी बातें ही हैं। दूसरी विक्टोरिया चरित जिसकी रचना बच्चो के मन मे विक्टारिया के प्रति सम्मान जगाने के लिये की गई।

(क) इस युग मे बाल साहित्य के विकसित रूप

इस समय का बाल साहि य मुख्यत पाच प्रकार का है जिसकी चर्चा की जाती है—

(1) बाल उप यास—बाल साहि य के क्षत्र मे उप यास रचना बहुत पुर नी विधा नही है। आरम्भ मे इस ओ हमारे लेखको का ध्यान गया ही नही था। वसे उप यास छोटे ब चो के लिए उपयुक्त विधा नही है। क्योकि बारह तेरह वष की आयु के बाद ही ब चे ल बी कहानिया या उप यास पढने मे रुचि लेने लगते हैं। भारते दु के समय मे लेखकगण हि दी भाषा का सुस्थिर रूप सवारने मे लगे थे। स्वत त्र कहानिया या उप यास का लेखन काय नग य ही रहा क्योकि आधुनिक युग के पूव उप यास को केवल मनोरजन का एक साधन समझा जाता था और उसका उद्दश्य केवल जी बहलाना मात्र था। फलस्वरूप इस युग मे बाल उप यास का अभाव ही रहा। वैसे सिंहासन बत्तीसी (सन् 1801) बेताल पचीसी (सन् 1801) नासिकेतोपाख्यान (सन् 1803) मे कथा साहि य का आभास मात्र मिलता है उप यास के त व तो है ही नही। इस काल के लेखका के समक्ष कहानी और उप यास का अ तर भी स्प ट नही था। जो कुछ लिखा गया उनम अनुदित ग्र थ ही थ जिनमे नतिक शिक्षा पर अधिक बल दिया गया है तथा नवजागरण का सदेश और राष्टीयता की भावना भरने का प्रयास किया गया है। लेखकगण जनता को अधोगति के गर्त से निकालकर उचित माग पर लाना चाहते थे फलस्वरूप अपने उप यासा मे देश के प्राचीन गौरव और पतन की ओर पाठको का ध्यान आकृष्ट करते है दूसरे वे समाज सुधार धर्म सुधार यक्तिगत चारित्रिक सुधार अग्रजी प्रभाव से बचना आदि बातो पर जोर देते ह। यहाँ पर श्रीनिवास दास का नाम मह वपूण है जि होने हि ी म नीति विषयक उप यासो की नीव डाली। इनकी पह ी कृति परीक्षा गुरु है जिसका विषय नीति शिक्षा स सम्बन्धित है। इस उप याम म सस्कृत हि दी अग्रजी फारसी अरबी आदि भाषाओ की सूक्तियाँ भी दी गई ह। स शिक्षाप्रद उप यास के विषय मे स्वय लेखक का मत है कि यह अनुभव पर आधारित उपदेशपरक सासारिक वार्ता है।

इसी परम्परा मे बालकृ ण भटट का नूतन ब्रह्मचारी उप यास सन् 1886 मे हि दी प्रदीप (पत्रिका) मे धारावाहिक रूप से प्रकाशित ो रहा था। बाद मे स्वत त्र रूप से भी इसका प्रकाशन हुआ। यह उप यास भी उपदेश प्रधान है जिसमे भोले भाले निष्कपट बालक के यवहार तथा उसके

माता पिता के धर्म परायण कृत्यो से दो परिवारो की डाकुओ से रक्षा होती है । इन्होने बालको के लिए एक अ य सौ अजान और एक सुजान उपदेश परक उप यास की रचना की जिसका प्र येक परि छद किसी न किसी कथन अथवा सूक्ति से आर भ होता है । इसमे से के बालको का पतन उनके विलासी मित्रो द्वारा दिखाया गया है तो एक समझदार यक्ति के प्रयास से उन बालको का स माग पर आना चित्रित किया गया है । उपर्युक्त दोनो ही उप यास किशोर पाठको के लिये लिखे गए लेकिन साहि य के क्षत्र मे सर्वथा नवीन प्रयोग होने के कारण उ नीसवी शता दी से ऐसी रचनाए मौलिक समझी जाती थी । मतलब यह कि चूकि उप यास विधा का आरम्भ ही था इसलिये उसकी विशेष प्रवृत्तियो की समझ उ प न नही हुई थी । अत मह व आदि का प्रश्न ही नही उठता ।

(2) **बाल कहानी**—जब हम भारते दु युग की बाल कहानियो की ओर ध्यान देते हैं तो पाते है कि इस युग मे मौलिक कृति का अभाव ही रहा । सन् 1854 मे बदरीलाल ने हितोपदेश का अनुवाद राजनीति के नाम से प्रस्तुत किया जो ब्रज भाषा गद्य मे है । आरम्भ मे तो सस्कृत ग्र थो का ही अनुवाद ल ल लाल एव सदल मिश्र ने किया । शिवदास कवि लिखित सस्कृत रचना बेता न पचविंशतिका की सूरत मिश्र द्वारा ब्रज भाषा मे किये गये एक अनुवाद की खडी बोली रूपा तर बेताल पचीसी के नाम से है ।

बालको को धर्मशास्त्र का ज्ञान देने एव नीति सम्ब धी बातें सिखाने के लिए सस्कृत ग्र थ नासिकेतो पाख्यान का अनुवाद श्री सदल मिश्र ने सरल एव यावहारिक भाषा मे सन् 1803 मे किया । इसकी कथा धार्मिक भावना प्रधान है और इसका आधार पौराणिक है । त व रूप मे इस ग्रथ मे यह नि शित किया गया है कि ससार मे जप तप धार्मिक जीवन व्यतीत करने का मह व अवश्य है पर तु इसके साथ ही मनु य को सासारिक कत्त यो की भी पूणत उपेक्षा नही करनी चाहिए । इन ग्र थो की कहानियो के मा यम से लेखको का मुख्य उद्दश्य बालका मे भारतीय सस्कृति का ज्ञान देना एव नीति की शिक्षा देना है ।

राजा शिवप्रसाद सितारे हि द ने मौलिक कहानिया लिखी जिनमे राजा भोज का सपना ब चो का ईनाम लडको की कहानी उ लेखनीय हैं । इन दिनो हि दी की निश्चित भाषा शली का अभाव था । फिर भी खडी बोली गद्य के स्वरूप परिचय की दष्टि से इन कृतियो का मह व

विशेष रूप से है । सन् 1900 मे सरस्वती पत्रिका मे केशव प्रसा सिह की कहानी च द्रलोक की यात्रा काश्मीर यात्रा मे अनेक क्पित त । यथाथ स्थानो की यात्रा का रोचक वणन प्रस्तुत किया गया है। इनमे क्पना्मक त वो का आधिक्य है जो ब्चो मे कुतूह्न जगाने के लिए पर्याप्त है। च द्रलोक का यात्रा नो ब्चो को ख ोनीय ज्ञान यव स्थित ढग से देने वाली प्रथम रचना मा ी जा सकती है ।

(3) **बाल नाटक**—हि दी साहि य मे भारते दु युग म बाल नाटक अ्य प मात्रा मे लिखे गये । स्वय भारते दु ने खडी बोली ि दी के प्रचार प्रसार पर ध्यान देते हए भी कई नाटको की रचना की । उस समय इस बात का अनुभव किया गया कि भारतीय जनता को नवजा ारण का सदेश सुनाने के लिए नाटक से बढकर ऐसा दूसरा उपाय नही था जिससे सव साधारण की सामाजिक दशा का वतमान चित्र दिखाकर उसका पू ा पूरा सुधार किया जाय । इस बात को ध्यान मे रख युग स्र टा एव युग द्रष्टा भारते्दु ने नाटक के माध्यम से भारत दुदशा का चित्र खीचकर जनता के मन मे राष्टीयता का भाव उ्पन्न करने का बीडा उठाया । भारत दुदशा एव स्य हरिश्च्द्र नाटक की रचना इसी उद्दश्य से की गई । बडो के साथ बालको मे भी इन नाटको के माध्यम से रा ट्रीय चेतना का उदय हुआ । इसकी विशषताओ को देखते हुए डा हरिकृष्ण देवसरे— स्य हरिश्च्द्र को बाल नाटक के रूप मे अनूठी कृति मानते हैं । अधर नगरी (सन् 1881) नामक प्रहसन मे नाटककार ने यग्य और विनोद से परिपूर्ण शैली मे अनेक विडबनात्मक चित्रण प्रस्तुत किए है ।

इसी समय लाला श्रीनिवास दास ने प्रह्लाद चरित्र नाटक की रचना बालको के लिए की । प्रताप नारायण मिश्र का हठी हमीर ऐतिहासिक नाटय कृति है । बदरी नारायण चौधरी प्रमघन की एकाकी भारत सौभाग्य सन् 1888 मे प्रकाशित हुई । इस युग के बालको के निए नाटक अधिक नही लिखे गए कि्तु बाल नाटको का सूत्रपात यही से मानना चाहिए ।

(4) **बाल गीत कविता**—हि्दी मे बाल गीत का इतिहास अधिक पुराना नही है । यद्यपि भारते्दु ने राष्ट्र प्रम की कविताएँ नाटक तो कई लिखे कि्तु बच्चो के लिए कविताए नही लिख सके । अधेर नगरी नाटक के कुछ हास्य गीत बालको को मनोरजन अवश्य प्रदान करते हैं । बाल गीत के आदि कवि श्रीधर पाठक (सन् 1960) ने बालको के लिए स्वतत्र रूप से अनेक कविताओ की रचना की। हि्दी के आशुकवि

सखराम चौबे गुणाकार अ य त सीधी और सरल भाषा मे बालको के लिए पद्य लिखते थे जिससे ब चो मे हि दी के प्रति रुचि जागत हो । उ होने हि दी की सबसे पहली कविता विनती गीत लिखी जो त कालीन पाठय पुस्तको के प्रथम पाठ के रूप मे विद्यार्थियो को पढाई जाती थी । गणाकार ने अपना अधिकाश सा ि य विद्यार्थी वग के लिए ही लिखा । कौवा हस तोता तथा यायाम पुस्तक उनकी प्रमुख प्रकाशित पुस्तक है ।

इस युग के बाल गीतो की प्रमुख विशषता यह है कि वे धार्मिक आध्या मिक राष्टीय चेतना जागत करने वाली तथा पौराणिक कथाओ पर आधारित है । एक ओर तो ये बाल गीत केवल मनोरजन करने वाले हैं शिक्षा और उपदेश का वहाँ कोई स्थान नही तो दूसरी ओर वे गीत हैं जिनमे कोई न कोई उपदेश की बात अवश्य कही गई है । इन गीतो के माध्यम से ब चो को बड सरल एव स्वाभाविक ढग से शिक्षा दी जाती है ।

लेकिन हमे इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि इस युग मे बाल गीतो के कवि हरिऔध और श्रीधर पाठक ही है जो प्रमुख रूप से द्विवेदी युग के कवि हैं । वास्तव मे अपने प्रारभिक लेखन मे उ होने बाल गीत लिखने का जो रचना मक प्रयोग किया था उसके कारण उनकी बाल गीत रचनाएँ सन् 1901 के पहले काल मे सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त करती हैं जिसे हम हि दी साहि य के इतिहास की दृष्टि से भारते दु काल मानते हैं । इसलिए मैंने इन रचनाओ का यहा उ लेख करना उचित समझा ।

(5) **बाल जीवनी**—भारते दु ने हि दी की अनेक विधाओ को अपनी लेखनी द्वारा सवारा है तो जीवन चरित लिखने मे भी वे पीछे नही रहे । इन्होने सर्वप्रथम भारते दु चरितावली मे कालिदास जयदेव सूरदास के जीवन वृत्ता त छोटी छोटी रचनाओ के माध्यम से भारतीय जनता के समक्ष प्रस्तुत किया । इनका ध्यान प्रमुखत ऐतिहासिक एव धार्मिक विभूतियो पर ही केद्रित रहा । इन निब धो के माध्यम से भारत की सोई हुई सस्कृति को जगाने का भी प्रयास किया है । भारत का यह दुर्भाग्य ही रहा कि इसे विभिन्न समय मे अनेकानेक लडाइयो का सामना करना पडा । मुगल और अग्रेज शासको ने भारत की सस्कृति और परम्परा को नष्ट करने का प्रयास किया। भारत की प्रमुख विभूतियों के माध्यम से भारतेन्दु ने जनता मे नवीन प्ररणा साहस तथा आदर्श का मन्त्र फंकने का कार्य किया ।

जीवन चरित्र लिखने के विभि न प्रकारो की चर्चा प्रथम अध्याय मे हो चुकी है। भारते दु के इस युग मे अधिक जीवन चरित तो नही लिखे गए जो लिखे गए उनका मह व कम नही है। सत चरित्र के अ तर्गत भारते दु ने पुस्तक लिखी जिसकी चर्चा ऊपर हो चुकी है। ऐतिहासिक ीवन चरित्र के अ तगत देवीप्रसाद मु सिफ लिखित मानसिंह (सन् 1889) उदयसिंह महाराणा (सन् 1893) आदि इस युग की मह वपूण कृति है। रमाशकर यास ने नेपोलियन बोनापाट (सन् 1883) की जीवनी विदेशीय चरित्र के अ तगत प्रस्तुत की।

(ख) भावपक्ष और भारते दु कालीन बाल साहित्य

किसी भी साहि य के लिए भाव एव कला का सामजस्य होना आवश्यक है। एक के बिना दूसरे का अस्ति व नही है जसे शरीर के बिना आ मा की या आ मा के बिना शरीर की क पना नही की जा सकती। साहि य रचना करते समय अपने भावो को प्रकट करने के लिए भाषा श द शली आवश्यक है उसी प्रकार भाषा मे जब तक लयबद्धता क पना का चम कार अलकार रस न हो तो उसमे सौ दय नही आ पाता।

मनुष्य की भौगोलिक स्थिति सामाजिक सगठन महापुरुषो के प्रभाव आदि के कारण देश और जाति के भाव बदलते रहते हैं। कभी कभी एक देश की कविता दूसरे दश को रुचिकर नही होती। इसका कारण है कि भावो की धारणा भिन्न भिन्न हो गई है भावो की अभि यक्ति की शैली ही कविता और कलाओ का रूप धारण करती है। कभी स्वर (सगीत) द्वारा कभी श द (साहि य) द्वारा और कभी चित्र आदि द्वारा भाव यजित किए जाते है और कभी इनके सम्मिलित प्रभाव से ही यह कार्य किया जाता है। तभी साहि य का साफ सुथरा अथमय रूप पाठको के सम ा आता है और ऐसा साहि य पशसा पाने का अधिका ी होता है।

(1) **भावपक्ष**—भारते दु युग मे बालको के निमित्त रचा गया साहि य अ य प मात्रा मे है क्योकि लेखकगण मुख्यत भाखा की समस्या सुलझाने मे यस्त थे तथा हि दी को गद्य के पथ पर आसीन करने के लिए प्रय नशील थे। राजा शिवप्रसाद सितारे हि द ने इस क्षेत्र मे महत्वपूर्ण योग दते हुए बालको के योग्य कुछ पुस्तक लिखी जिनमे अधिकाश विद्या ायो मे पढाने के लिए पाठय पुस्तको के रूप मे थी तथा कतिपय पुस्तक ही बा नको के मनोरजनार्थ लिखी। उन्होने अपनी पुस्तको मे बालको की मनोवृत्ति के

अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है। उसमे न तो उद की भरमार है जसी कि सरकारी नीति के कारण अ य लेखक प्रयोग मे लाते थे और न सस्कृत के त सम श दो का बाहुल्य है जो पडितो की भाषा थी। उन्होने बालको के लिए विषय को सरल रूप से समझाने के लिये यावहारिक बोल चाल की भाषा का प्रयोग किया। उनका मत था कि सस्कृत के तत्सम शब्दो को ग्रहण करने मे बालक (क्लिष्ट होने के कारण) असमथ होते हैं। वे उस भाषा को आसानी से सीख लेते हैं जिसे घर मे उनके माता पिता बोलते हैं।

सरकार द्वारा शिक्षा मे भाषा के प्रचार प्रसार के कारण तथा जन बोलियो मे उद के व्यापक प्रयोग के कारण सितारे हिन्द ने बालको के पाठय पुस्तक की भाषा उदू मिश्रित ही रखी। इन पुस्तको के द्वारा बालको के ज्ञान का विकास करना समकालीन खडी बोली गद्य का परिचय दना तथा मनोरजन प्रदान करना उनका मुख्य उद्दश्य था। हिन्दी का ज्ञान कराने के लिए हिन्दी व्याकरण की रचना उनकी सूझ का परिचायक है। वास्तव म बालको के लिए स्वतन्त्र रूप मे हिन्दी की पुस्तको का महत्व समझने वाले व्यक्ति सितारे हिन्द ही थे। यद्यपि उस समय की अनगढ भाषा अब खटकती है परन्तु हिन्दी का कोई स्वरूप निश्चित नही होने के कारण उस पुस्तको मे इस प्रकार का नया प्रयोग महत्वपूर्ण माना जाता है।

इससे पूर्व ल ललाल द्वारा खडी बोली हिन्दी मे अनूदित बेताल पचीसी (सस्कृत से) तथा सिंहासन बतीसी (ब्रजभाषा से) के कुछ अश बाल पाठको का मनोरजन करने मे समथ है और यही प्रमुख उद्दश्य है इन पुस्तको के अनुवाद का।

इन दिनो का समस्त बाल साहित्य या तो सस्कृत में है या लोक बोलियो के मौखिक रूप मे। पुस्तक रूप मे उद और अग्रजी का बाल साहित्य उपल ध है। हि दी मे बाल साहि य का सूत्रपात करने का श्रय राजा शिव प्रसाद सितारे हि द को है यह तो निर्विवाद स य है। उन्होने मौलिक कृतियो की रचना अधिक की जबकि उनके पूर्ववर्ती लेखक मौलिक साहि य की रचना नही कर सके।

भारते दु हरिश्च द्र ने स बात का अनुभव किया कि हिन्दी गद्य मे मौलिक पुस्तको का अभाव है। ब लको को हि दी की शिक्षा देने वाली ही कुछ पुस्तक उपल ध हैं। नाटको का तो पूर्णत अभाव ही है। फलस्वरूप अपने अ प ी न क ल मे भारते दु ने जिन नाटको की रचना की वे बाल तथा किशोर पाटको मे लोकप्रिय हुईं। वे चाहते थे कि बड ही उनकी रचना से

लाभान्वित नही वरन् बालक और किशोर वग भी भावी नागरिक के रूप मे तयार हो। भारत दुर्दशा के मा यम से इ ोने त कालीन भारत की स्थिति का मार्मिक चित्र खीचा है। इस नाटक से उनके देश प्रम की उ`कट भावना परिलक्षित होती है। देश की दुदशा देखकर उनका हृदय रो उठता है। साथ ही वे भारतवासियो से आग्रह करते है कि वे विद्रोह के लिए तैयार रहे।

स`य हरिश्च`द्र नाटक (सन् 1874) उनकी बाल साहि`य की सर्वो`कृष्ट रचना मानी जाती है। जो ब`चो के पढने योग्य बोधग`य तथा सरल है। इसका उद्देश्य बालको को स`य की ओर प्ररित करना है। इस नाटक मे हरिश्च`द्र राजा की पौराणिक कथा को बालोपयोगी बनाकर प्रस्तुत किया गया है। स`य की अ`त मे विजय होती है। इसके निर्वाह मे चाहे जितना भी कष्ट उठाना पड। यही इस नाटक का मूल स्वर है।

अधर नगरी नाटक ह`स्य से भरपूर बालको को मनोरजन प्रदान करने में सक्षम है। भाषा सरल है तथा नाटक शिक्षाप्रद हैं जिसके द्वारा बताया गया है कि जिस देश का राजा ही मूर्ख हो उस देश की जनता को भी समय के अनुकूल मूर्खता का नाटक तो करना ही पडता है। पर`तु अवसर देखकर राजा को प्रजा ही नष्ट कर देती है। इसके साथ ही समाज के आडम्बरपूर्ण जीवन और उसके खोखले सिद्धा`तो पर पर्याप्त चोट की गयी है।

मौखिक रचना के अतिरिक्त भारते`दु ने शेक्सपीयर के नाटक मर्च`ट आफ वेनिस का हि`दी अनुवाद दुर्लभ ब`धु के नाम से किया जिससे बाल पाठको ने भरपूर आन`द उठाया। इनकी रचना काश्मीर कुसुम् तथा बादशाह दर्पण द्वारा बाल पाठको को भारतीय इतिहास की जानकारी मिलती है। इनकी अनेक का`य रचनाएँ तो आज भी पाठ्य पुस्तको मे स्थान पा रही हैं।

नाटक तथा कविता के अतिरिक्त बालकृष्ण भटट के दो उप`यासो नूतन ब्रह्मचारी तथा सौ अजान एक सुजान की चर्चा आवश्यक है। नूतन ब्रह्मचारी का बाल पात्र विनायक राव धम प्रवृत्ति परक परिवार मे ज`म लेने के कारण धर्मपरायण निष्कपट तथा भोला है। उसके इसी गुण के कारण डाकुओ से दो परिवारो की रक्षा होती है। भारतीय परम्परा के अनुसार वह डाकुओ की आवभगत उसी प्रकार करता है जिस प्रकार किसी अतिथि के आने पर की जाती है। बालक के इस व्यवहार के कारण डाकू बिना

डाका डाले वापस चल जाते है। इस उपन्यास द्वारा बालक के सद्गुणो पर प्रकाश डाला गया है तथा भारतीय परपरा की महत्ता बताई गई है। इनकी सौ अजान एक सुजान भी सुधारपरक तथा उपदेशा मक कृति है। इसका प्रत्येक अ याय किसी न किसी नीति वाक्य से शुरू होता है जो बालको को नतिक ज्ञान प्रदान करता है। लेखक ने इस उपन्यास मे उन दो अबोध बालको को स माग पर आते दिखाया है जो अवसर पाकर गलत व्यक्तियो के हाथो की कठपुतली बन जाते हैं और अपनी समस्त पत्रिक सम्पत्ति न ट कर देते ह। एक स जन यक्ति प चन्द्रशेखर दोनो बालको को सुधारने की चेष्टा करते हैं और उन्हे सन्माग पर लाने मे सफल होत हैं।

कविगण कविता के माध्यम से ईश्वर के प्रति आस्था नीति शिक्षा देत थे तथा मनोरजन भी प्रदान करत थे। साथ ही इस समय की कविता रा ट्रीय भावना से परिपूरित है।

भारतेन्दु युग मुख्यत हिन्दी साहित्य मे गद्य की स्थापना का युग था। कविता की भाषा ब्रजभाषा है किन्तु गद्य को हिन्दी मे लिखने के प्रयास हुए। राजा लक्ष्मणसिंह द्वारा हिन्दी मे अनूदित शकुन्तला नाटक मे—जो सस्कृत ग्रन्थ है—हिन्दी का स्पष्ट रूप मिलता है। नाटक का एक भाग भरत बालोपयोगी अ याय है जिसकी भाषा सरल हिन्दी है फिर भी उसमे प्रान्तीय बोली का यत्र तत्र प्रयोग हुआ है।

भारतेन्दु युग मे हिन्दी अपनी प्रारम्भिक अवस्था मे थी किन्तु धीरे धीरे इसका विकास होता ही गया। यद्यपि हिन्दी को सरकारी सरक्षण नही मिल पाया फिर भी यह अधिकाधिक उन्नति ही करती गई। इसका कारण उसकी सस्कृति का विस्तृत लौकिक आधार ही था। उर्दू जो कि दरबारो से सम्बद्ध अन्यन्त सस्कारी शहरी भाषा थी अपनी इन्ही विशषताओ के कारण अपेक्षतया दुर्बल भी थी। उसमे वह लचीलापन और प्रत्युत्पन्न प्रतिभा नही थी जो कि देश यापी हलचल के साथ चल सकने के लिए आवश्यक थी। हिन्दी मे परिमार्जन और भाषा के सुनिश्चित प्रतिमानो की कमी रहत हुए भी उसमे यथे ट लचीलापन और जीविष्णुता थी।

इन बातो पर ध्यान देने से लगता है कि इन सबसे अलग भारतेन्दु युग की रचनाओ का मुख्य उद्देश्य बालको को भारतीय सस्कृति तथा इतिहास का ज्ञान कराना हिन्दी के प्रति रुचि उत्पन्न करना पढ़ने की प्रेरणा देना तथा सद्गुणो का विकास करना था। बालको के लिए पाठ्य पुस्तको के अभाव की पूर्ति स युग की महत्वपूर्ण देन है। राष्ट्रीय भावना का भी विकास इस युग

की रचनाओ के माध्यम से होता है। त कालीन अग्र जी शासन की बेडी मे जकड भारत की दुदशा का चित्रण भारत दु ने अपनी कृतियो के द्वारा जिस ढग से प्रस्तुत किया है वह मार्मिक ही नही हृदय पर चोट करने वाला भी है। स्वतन्त्रता सग्राम के अनेक सेनानी इस युग म पदा हुए और हे प्ररणा देने वाला एक मा यम साहि्य भी है। फिर भी स युग की रा ट्रीय भाव नाओ से परिपूण कविताओ तथा नाटको को पढने से ऐसा प्रतीत होता है कि लखकगण भारत की दुदशा को देखकर आँसू तो बहात थे पर तु उ हे समस्या का हल खोजने की राह नही मिल रही थी।

अनेक कमियो के बावजूद इस युग के साहि्य का अपना एक अलग महत्व है। हि्दी की स्थापना मे इस युग के साहि्य की भूमिका महत्वपूण है विशेष रूप से बालको के लिए साहि्य लखन की महत्ता स्वीकार करने की बात उल्लखनीय है।

(2) **कला पक्ष और भारते दु कालीन बाल साहित्य**

भाषा—बच्चो का भाषा ज्ञान विकसित करने मे बाल साहि्य का महत्वपूण योगदान रहता है। कहानियो के लोभ मे बच्चे पुस्तक पढने के लिए आकर्षित होते हैं। इसके लिए भाषा की सरलता एक अनिवाय शर्त है अ यथा बच्चे भाषा की दुरूहता मे फसकर रह जायग कहानी का आनन्द उन्हे नही मिलेगा। यह सच है कि बाल साहि्य के लिए भाषा की सरलता ही एकमात्र आधार है लेकिन यह तभी सभव हो सकता है जबकि लेखक का जीवन और आचरण बच्चो के साथ मिलकर उनके साथ एक होकर अपनी प्रवत्तियो को उतना नरम और सरल बनाए और दूसरी ओर उनकी बातो को अपने लेखन आचरण मे इस तरह पकड लें तथा अपनी अभिव्यक्ति मे ढाल कर उसे एक रस कर दे कि वह सा्ि य ब चो के अपने आकषण का केन्द्र बन जाय।

असल मे लेखक के लिए किसी भी स्तर की भाषा को प्राप्त करना कोई अलग से भाषा सीखने का प्रयत्न करना नही है वरन् लेखक जिस स्तर की भाषा मे लिखना चाहता है उसे मजबूर होकर समाज के उन लोगो के बीच रहकर अपना जीवन बिताना चाहिए और उनके आचरण को अपना बनाना चाहिए तभी वह अपनी रचनाओ मे उस तरह के मानसिक स्तर और भाषा को प्राप्त करने की यो यता उ पन्न कर लेता है। मतलब यह कि लेखक को बाल जीवन के साथ एक रस होकर अपना जीवन बिताने पर ही या अपने जीवन को बालो मुख करने पर ही उस तरह की भाषा

प्राप्त करने मे सफलता मिलती है। यो प्रत्येक लेखक बालक के लिए रचना करते समय भाषा की सरलता की ओर तो ध्यान देता ही है पर मात्र सरलता ला देने से किसी भी रचना की भाषा बालोपयोगी नही हो जाती। वस्तुत अनेक बार तो ऐसा भी देखा गया है कि रचना की भाषा अत्यधिक सरल है सुबोध है तथापि वह रचना बालको की भाषा मे नही लिखी गई। बाल साहित्य लेखक जब तक यह न ध्यान रखे कि मैं उस बालक के लिये रचना कर रहा हू जिसके स्वभाव रुचि मानसिक प्रक्रिया मूल प्रवत्तिया तथा आयु आदि के स्तर प्रौढ पाठक से अनेक अर्थों मे भिन्न होते हैं तथा वह जो भाषा बोलता समझता है उसकी शब्दावली क्षेत्र और वातावरण के अनुसार अनेक स्तरो पर विभाजित होती है तब तक वह लेखक ऐसी भाषा का अपनी रचनाओ मे प्रयोग नही कर सकता जो उन्हे पूर्णत बालोपयोगी बना सके। भारतेन्दु का युग खडी बोली की स्थापना का युग था। उस समय के लेखको पर ब्रजभाषा का प्रभाव अधिक था और जनता के निकट पहुचने के लिए चलती हुई व्यावहारिक भाषा का भी प्रयोग वे हिन्दी गद्य मे करते थे जिस पर उर्दू का प्रभाव था। सितारे हिन्द की पुस्तको की भाषा इसी प्रकार की है। भूगोल हस्तामलक मे अधिक उदपन नही है क्योकि लेखक उर्दू को एक अजनबी भाषा के रूप मे देखते रहे। वे देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा के प्रशसक थे तथा सरकार को इसे अपनाने के लिए जोर देते रहते थे किन्तु सरकार की ओर से जो हिन्दुस्तानी भाषा के प्रचार का प्रयत्न चल रहा था उससे राजा साहब का मार्ग कुछ कठिन हो गया। फिर भी वे भाषा सम्बन्धी अपनी नीति का प्रयोग हर दिशा मे कर दिखाने मे नही चूके। यही राजा साहब की शैली की विशेषता थी।

इन्हे तत्कालीन सरकारी नीति के कारण इतिहास तिमिरनाशक की भाषा उर्दू हिन्दी मिश्रित रखनी पडी। इन्होने दोनो भाषाओ को सरल करके उनमे एकरूपता लाने के लिए उर्दू और हिन्दी का व्याकरण लिखा।

सितारे हिन्द बच्चो की पुस्तक मे तत्सम शब्दो का प्रयोग उपयुक्त नही समझते थे। क्योकि संस्कृत के क्लिष्ट शब्द या उर्दू की पुस्तको मे अरबी फारसी के शब्द ही प्रयुक्त होते थे। अत बच्चो की पुस्तको मे वे व्यावहारिक भाषा ही अपना सके। इसी विशेषता के कारण उनका साहित्य बोधगम्य हो सका।

शैली और शि प

कोई लेखक जो लिखना चाहता है या वह जिस तरह की बात कहना चाहता है उस तरह की बात को मन मे उठ हुए आधार पर ही बाहर लाकर कहने के लिए स्वाभाविक रूप से भाषा का प्रवाह उस बात को अपने मे बाधता है और यह प्रवाह मुखी भाषा ही उस बात को नेखक के प्रयोग के साथ अभि यक्त कर देती है। देखने और विचार करने से ज्ञात होता है कि इस भाषा मे लेखक की अपनी विशिष्ट शैली प्रयुक्त हुई होती है। वसे हम शैली पर विचार करते समय स्थूल आधार पर शलियो के कई प्रकार करके इस विभाजित ढग से शलियो की सख्या निर्धारित करते हुए उनकी अलग अलग ढग से उनकी याख्या करते है लेकिन बहुत गहराई से देखा जाय तो शैली विचार से अलग अलग वस्तु नही है। वास्तविक रूप से मन के विचार उन विचारो के पीछ छिपा हुआ प्रयोजन और उस प्रयोजन को कितने लगाव से किस बात के लिए किस तरह की भाषा मे य क करना चाहते है अभिव्यक्ति की यही एक उमग ही भाषा को प्रस्तुत करती है और सभी अनुकूलताओ को अपने मे पकड लेने और ढाल लेने वाली भा ा देखने पर एक विशिष्ट शली हो जाती है। इसीलिए शनी पर भले ही हम अलग से विचार करते है लेकिन शली लेखक से विचार और प्रयोजन से उ पन्न होने वाली वस्तु ही होती है। चूँकि विचार और प्रयोजन तथा उसके पीछ छिपी मन की तीव्रता प्र येक लेखक के वस्तु स्थान और काल के आधार प अलग अलग होती है इसीलिए उस लेखक की शैली भी भिन्न हो जाती है।

यह सब कुछ बाल साहि य की शैली के लिए भी यो का यो लागू होता है। फलस्वरूप लेखक के विचार उसके सोचने का ढग वस्तु के प्रति उसकी समझ और लगाव तथा अभि यक्ति की अपने ढग की विशिष्ट तीव्रता आदि बात बाल साहि य की शली का निर्धारण करती है यही बात है कि लेखक के अपने विशि ट म त य के कारण बाल साहि य की सभी विधाओ मे विभिन्न शलियो का प्रयोग हुआ है जिसके परिणामस्वरूप पुस्तक की सामग्री रोचक मनोरजक तथा उपयोगी हो गई है।

यहाँ इस बात पर विचार कर लेना आवश्यक प्रतीत होता है कि बाल शैलियो के प्रकार कितने हैं और साहि य मे इन शलियो का प्रयोग क्यो होता है। बालक दिन भर विद्यालयो मे शु क पाठयक्रम का भार ढोते हैं साथ ही पुस्तको का भी बोझ उ हे ढोना पडता है। इस सबके बाद उ मुक्त वातावरण मे जब वे सांस लेते हैं तो कुछ ऐसा पढना चाहते है जो मनोरजक

हा उ हे गुदगुदाए उनकी क पना की ऊचाइयो को छए और साथ ही उनकी समस्याओ और शकाओ के उत्तर भी प्रस्तुत करे। यह सब कुछ इतना अनजाने मे हो कि उ हे न तो अतिरिक्त श्रम करना पड और न ही किसी का सहारा लेना पडे। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये आज जो भी बाल साहि य रचा जा रहा है उसमे लेखक विषय को विभिन्न ढगो से अभि यक्त करता है। यही शली है। शली का सम्ब ध एक ओर साहि यकार के यक्ति व से है तो दूसरी ओर भावाभि यक्ति एव भाषा के विशि ट परिधान से भी है। शली का यह गुण ही साहि य को अधिक रसपूर्ण भावपूण तथा बोधगम्य बना देते हैं।

यह शली कई प्रकार की हो सकती है। यथा—

(क) आ मचरित शली
(ख) पात्रा मक शैली
(ग) कथा मक शली
(घ) डायरी शली
(ङ) ा कीय श ती या पत्रा श ली
(च) मिश्रित शली।

भारते दु युग मे बालको के यो य साहि य का अभाव ही है। जो भी कहानियाँ इस युग मे लिखी गई वे सस्कृत से अनूदित है। उनकी कोई स्वत त्र ाषा शली नही है। हि दी म अनूदित बेतालपचीसी और सिंहासन बत्तीसी की भाषा शली को देखने से पता चलता है कि इनमे कहावतो एव मुहावरो का खलकर प्रयोग हुआ है। इन पर ब्रज भाषा का प्रभाव है तथा साथ ही इनमे उद् शली का वाक्य वि यास भी है। दोनो के सम्मिश्रण से वणना मक चित्रण सु दर है इसमे कोई स देह नही। सदल मिश्र की पुस्तको की शली मे ब्रज भाषा का पर्याप्त प्रभाव परिलक्षित ोता है। इनमे पूरबी बोली के श अरबी फारसी के श द तथा ब्रज भाषा की मधुरता भी मिलती है।

भारते दु हरिश्च द्र को इस प्रकार की भाषा शली पस द नही आयी। वे ऐसी भाषा शली चा ते थे जिसे शिष्ट समाज अपना सके। इस बात को ध्यान मे रखते हुए उ होने अपने ग्र थो मे यावहा रिक शैनी का प्रयोग किया जिसका स्वरूप उनके नाटको मे दिखाई देता है। इन नाटको मे वर्णना मक शली का प्रयोग हुआ है। उनकी भाषा सरल सुधरी है जिस पर ब्रज भाषा

का प्रभाव है। उ्होने यत्र तत्र शिष्ट समाजोपयोगी मुहावरो का भी प्रयोग किया है। सस्कृत के सरल श दो का प्रयोग करने से भी वे अपने को रोक न ा सके। शलीगत प्रयोगो की द ि ट से एकाकी भारत सौभा य (सन् 1888) का मह् व इस युग की एकाकी रचनाओ मे सबसे अधिक है।

इस युग के बाल गीतो मे गीत कथा शैली का प्रयोग है और इस शली मे रचित गीत बालको को अधिक कणप्रिय तथा मधर लगते है। इस शैली के लिए ताल और आवृत्ति का प्रयोग होता है क्योकि इसके कारण गीतो का सौ दर्य बढ जाता है। किसी के द्रीय वाक्य का स्वरबद्ध होना ताल कहलाता है और ता्नयुक्त वाक्यो को बार बार दुहराया जाना उसकी आवृत्ति है। (उदाहरण क लिए एक कविता प्रस्तुत है)—

भारते दु युग मे इस प्रकार की शली मे बालको के लिए गीत कविता लिखने वाले ्यक्ति श्रीधर पाठक हैं जि हें बाल साहि्य का आदि कवि कहा जाता है और आज भी उनकी कविताए बाल पाठको को गुदगुदाती हैं।

सदभ सूची

1 उदयभानुसिह महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग पृ 30।

2 रामच द्र शुक्ल हि्दी साहि्य का इतिहास पृ 440।

3 किशोरी लाल गुप्त भारते दु और अ य सहयोगी कवि पृ 346।

4 रामच द्र शक्ल हि्दी साहित्य का इतिहास पृ 448।

5 किशोरी लाल गप्त भारत दु और अ य सहयोगी कवि पृ 2।

6 अधर नगरी चौपट राजा
टके सेर भाजी टके सेर खाजा
—बच्चो के सौ नाटक पृ 22।

7 हरिकृ ण देवसरे हि्दी बाल साहि्य एक अ ययन पृ 175।

8 हरि कृष्ण देवसरे हि्दी बाल साहि्य एक अध्ययन पृ 181।

9 जय जय भारत भूमि भवानी
जाकी सुयश पताका जग के दस दिसि फहरानी
—हिन्दी साहित्य मे राष्ट्रीय काव्य का विकास पृ 136।

10 निरकार देव सेवक बाल गीत साहित्य पृ 139।

11 कुक्कुट इस पक्षी का नाम
जिसके माथे मुकट ललाम था
हुआ सबेरा जागो भया
खडी पुकारे प्यारी मया बाल गीत साहित्य पृ 139 40।

12 भूमि हमारी गाल है नारगी की भात
चक्कर देती सूय का मत पूजो यह बात
कीली पर घमी तभी होता है दिन रात
और सूय के चक्र से होय वष विख्यात
—बाल गीत साहित्य पृ 140।

13 प्रतापनारायण टडन। हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास पृ 73।

14 लक्ष्मीसागर वाष्णय आधुनिक हिन्दी साहित्य पृ 196।

15 ओम शक्ल हिन्दी उपन्यास की शिल्प विधि का विकास पृ 41 42।

16 प्रताप नारायण टडन हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास। पृ 106।

17 किशोरीलाल गास्वामी नाटय सभव पृ 2।

18 प्रभवर हम सबकी कर जोर विनय है तुमसे आज यही
—सुखराम चौबे गणाकार

19 मेरे पास चाद तू आ जा आकर अपना खाना खाजा
मुझको अपना हिरन दिखा जा मीठी मीठी बात सुना जा
—हरिऔध चन्द्र खिलौना

20 जगत है सच्चा तनिक न कच्चा समझो बच्चो इसका भेद
पीओ खाओ सब सुख पाओ कभी न लाओ मन मे खेद
श्रीधर पाठक जगत सचाई सार

21 श्यामसुन्दर दास साहित्यालोचन पृ 70।

22 रोवहु सब मिलि के आवहुँ भारत भाई
हा! हा!! भारत दुदशा न देखी जाई।
—भारतेन्दु नाटकावली पृ 597।

23 आठ मास बीत जजमान
अब तो करो द‍छिका दान प्रतापनारायण मिश्र
(हर गगा कविता से)

24 स्वाधीन बनो बल धीरज सबहि नसहै
मगलमय भारत भव मसान ह्व ज है । भारते‍दु हरिश्च‍द्र
(नील देवी से) पृ 661 ।

25 इस लडके को खिलाने को मेरा जी कसा चाहता है । (आह भर कर) ध‍य है वे मनुष्य जो अपने पुत्रो को कनिया लेकर उनके अग की धू‍लि से अपनी गोद मली करते हैं ।
—राजा लक्ष्मण सिंह (शकु‍तला)

26 सच्चिदान द हीरान द वा‍सयान अज्ञय आज का भारतीय साहि‍य पृ 381 ।

27 रामगोपाल शर्मा दिनेश मधमती जुलाई अगस्त 1967 पृ 397 ।

28 निदान यह बगले का मैदान नदियो से सिचा हुआ गगा के दोनो तरफ हिमालय और वि ध के बीच हरिद्वार तक चला गया और गगा यमुना के बीच जो देश पडा है उसे अ‍तवद और पुराना दुआब भी कहते है । और यही ो चार सूबे अर्थात् दि ली आगरा अवध और इलाहाबाद यथा—म य प्रदेश अर्थात् असली हि‍दुस्तान है ।
—राजा शिवप्रसाद सितारे हि द भूगोल हस्तामूनक भाग 2 पृ 150 ।

29 हरनारायण सिंह सरस्वती जुलाई 1950 पृ 449 ।

30 I f m f th V la th d c h s b e f t d w th th G amm f S k t th w th th G mm f A ab wh at l d f th g th g amm h uld foll w th g

—राजा शिवप्रसाद सितारे हि‍द याकरण की भूमिका ।

31 उसमे पूरे के लिए सभाप्त लिखा है गर्मी के लिए उष्णता लिखा है । तज के लिए तीक्ष्ण पेड के लिए वृक्ष मजबूत के लिए दढता पदा करने के लिए उ‍प न बराबर के लिए तु‍य और

इसी तरह किस्सा सूरजपुर मे जिसे उदू पढने वाले ब च्चो को हारूप तह जी खतम होत ही देते हैं अराजी मुश्कशम बटी हुई जमीन की जगह पर और खुदकला सकमापदेह छोट बड रहने वालो की जगह पर लिखा है ।

—राजा शिवप्रसाद हितारे हिन्द हिन्दी बाल बोध भूमिका ।

32 हरिकृष्ण देवसरे बाल साहित्य रचना और समीक्षा पृ 207 ।

33 Styl th t th y p l f th py m d f t th nd th t s th g at t f all th p em h m t a d th v tal p pl f ll th t d g l t at r — J M ddl t M y — Th P bl m f Styl p 36

34 सन सन री प्यारी मैना
जरा सना तो मीठे बैना

—श्रीधर पाठक (बाल साहित्य रचना और समीक्षा से पृ 54 से) ।

चतुथ खण्ड

दी कालीन एव स्वातन्त्र्य कालीन बाल साहित्य

(सन् 1901 से 1947 तक)

द्विवेदी कालीन एव पूव स्वातत्र य कालीन बाल साहित्य (सन 1901 से 1947 तक)

युग प्रवतक भारतेन्दु हरिश्च द्र असामयिक निधन के पश्चात् हि दी गद्य के स्वरूप मे विश्रुखलताए व्याप्त हो गई। हिन्दी गद्य लेखक हिन्दी प्रान्तो के ही न होकर विभिन्न प्रा तो यथा—पजाब ब गाल महारा ट मे भी पाए जाने लगे। फल इनकी गद्य रचना मे स्वाभाविक रूप से विभिन्न प्रा तीय बोलियो का बाहुल्य हो गया। पजाबी गद्य लेखको मे उद और फारसी के श ा का बाहु य हो रहा था। बगाला प्रा त के निवासी गद्य लेखक कोमलका त पदावली का अधिक प्रयोग कर रहे थे। बगला से अनूदित हिन्दी ग्रथो मे भी यही प्रवृत्ति काय कर रही थी। महारा ट्र प्रान्त के निवासी हिन्दी गद्य लेखक मराठी एव सस्कृत शब्दो से युक्त गद्य का व्यवहार करते थे। अतएव मनमाने ढग से शब्द गढ जाने लगे। इस युग मे व्याकरण के नियमो की अवहेलना तो थी ही स्थानीय श दो के प्रयोगो की भी भरमार हो गयी। ऐसी स्थिति मे भाषा की दष्टि से हिन्दी गद्य एक अराजकतापूर्ण परिस्थिति से गुजर रहा था। इसका प्रभाव उन पुस्तको पर पडना स्वाभाविक था जो विद्यालयो मे बालको को पढाने के लिए तथा उनके मनोरजनार्थ लिखी जा रही थी।

सौभा य की बात है कि इसी समय प महाबीर प्रसाद द्विवेदी सरस्वती के स पादक हो गए और उनका सम्पक प्रत्यक्ष रूप से भाषा और साहित्य से जुड गया। उन्होने हिन्दी भाषा को सजाने सवारने के लिए तत्कालीन लेखको एव साहित्यकारो को प्रोत्साहित किया। परिणामस्वरूप वे हिन्दी भाषा मे एक रूपता लाने याकरण स मत वाक्यो के प्रयोग करने तथा कविता को ब्रजभाषा की अपेक्षा खडी बोली हि दी मे लिखने के लिए प्रयत्नशील हुए। आचार्य द्विवेदी जन समाज के अपने व्यक्ति थे। कभी भी महापुरुष कहलाने की इ छा नही थी। उनके साहित्यिक का य का प्रमुख लक्ष्य सामान्य समाज तक भारतीय साहित्य और सस्कृति की निधियो को पहुचा देने का था।

इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए उ-होने पडितो की भाषा न अपना कर सामा-य पाठक के समझ मे आने यो य भाषा अपनाई । उनकी श-ी म सरलता और स्पष्टता थी । उ-चतर पाडि य की बातो को भी व बोध । य बनाकर सरस्वती के पाठको के स मुख रखते थे । उनकी रुचि सिद्धा तो के ऊहा पोह मे उतनी नही थी जितनी यावहारिक त यो को सामा-य लोगो मे पहुचाने मे थी । वस इस युग म हि दी सा ि य मे अग्रजी एव बगला साहि-य से अनुवाद ही अधिकाश होते थे । जसा कि प ने क०ा जा चुका है ।

इसी समय (मन् 1903 मे) द्विवेदी जी ने सरस्वती के सम्पादन का भार ग्रहण कर लिया था । उ हान इस पत्रिका मे अनेक नेखका कविया निब धकारो को अपनी प्रतिभा का परिचय देने का अवसर दिया । सभी प्रकार की साहि-यिक सामग्री इसमे दी गई और साथ ही इसमे बालोपयोगी रचनाओ को भी स्थान मिला । द्विवेदी -ी द्वारा इस पत्रिका के माध्यम से हि-दी भाषा का परि कार प्रचार एव प्रसार तो हुआ ही साथ ही बालको का साहि य भी इस समय पूर्वापेक्षा प्रचुर मात्रा मे लिखा जाने लगा । द्विवेदी जी ने इस बात का अनुभव किया कि हि दी साहि-य मे बालको के साहि य का अभाव है । उनके पूव जो कुछ भी लिखा जा चुका है वह बाल मनो विज्ञान के अनुकूल नही है तथा वे बालको को मानसिक तुष्टि देने मे समथ नहीं हो पा रहे है । फलत उ-होने लेखको से इस क्षेत्र मे लिखने का अनुरोध किया । स्वय बालको के लिए पौराणिक कहानियाँ लिखी जिनका उद्दश्य शिक्षाप्रद ही रहा । इनकी भाषा बच्चो के अनुकूल सरल तथा बोधग य है ।

इस स दर्भ मे द्विवेदी जी ने दो तरह के बाल साहि य के लेखन को न केवल प्रभावित किया वरन् स्वय ही लेखक के रूप मे आगे आए । पहला पाठय पुस्तक साहि-य पर बल दिया और दूसरा ब चो के लिए मनोरजनाथ साहित्य पर भी उ-होने विशेष यान दिया । पाठय पुस्तको के अ तगत उ होने विद्यालयो के लिए छ रीडर पुस्तक सम्पा ित की जिनक नाम ३स प्रकार हैं —

(1) लोअर प्राइमरी रोडर
(2) अपर प्राइमरी रीडर
(3) बालबोध
(4) वर्ण बोध
(5) बाल भूगोल तथा
(6) जिला कानपुर का भूगोल ।

जहाँ तक ब चो के लिए मनोरजनार्थं बाल साहि य का प्रश्न है उ होने बाल भागवत बाल रामायण आदि ग्र थो की रचना की जिनसे प्रेरणा पाकर उस युग के अनेक लेखक इस क्षत्न मे सक्रिय रूप से सामन आए। परिणामत बाल साहि य लेखन तथा प्रकाशन मे एक नई चेतना का उभार दिखाई देने लगा।

इस प्रकार ि वे ी युग मे बालको के लिए साहि य लेखन की दो धाराए प्रमुख रूप से प्रचलित थी। पहली—विद्याल ो मे पढाई जाने वाली पुस्तक तथा दूसरी–बालको के मनोरजनाथ लिखी जाने वाली पुस्तक जिन ो–कविता गीत कहानी उप यास जीवनी निब ध आदि थे। पाठय पुस्तक लिखने मे प विनायकराव सुखराम चौबे गुणाकर कामता प्रसाद गुरु तथा ल जाशकर झा श्याम सु दरदास भाषा सग्र सार (सन् 1902) हि दी निब ध माला भाग–1 (मन् 1922) हि दी प्रायमर (सन् 1905) हि दी की पहली पुस्तक (सन् 1905) हि दी ग्रामर (सन् 1906) बालक विनोद (न् 1908) जसे प्रभृत विद्वानो का मह वपूर्ण योगदान रहा। खडगविलास प्रम पटना ने बालको के लिए पाठय पुस्तक छापने का भार लिया। इमके स पा क वामी रामदीन सिंह थे जि होने क्षत्न त व गणित बत्तीसी हि दी साहि य सा ि य भूषण तथा बाल बोध की रचना की। मुशी राधालाल माथुर को उनके श द कोश पर पुरस्कार भी मिला। चार भागो मे इ होन भापा बोधिनी की भी रचना की जो विद्या लयो मे पढाई जाती थी।

राय सोहनलाल की वायु विद्या बालोपयोगी पाठय पुस्तक है। इसके अतिरिक्त बाबू साहब प्रसाद सिंह की भाषा सार अपूव पाठय पुस्तक थी जिसकी ख्याति देशो मे भी थी। इन पुस्तको की भाषा सुबोध रोचक तथा प्राजल थी। खडी बोली का प्राण प्रतिष्ठा करने वाले अयोध्या प्रसाद खत्नी ने भी अग्रजी याकरण की रीति पर एक हि दी याकरण लिखा था। छात्न वग अब अपनी मातृभाषा मे विधिवत् शिक्षा पाने लगे। साहि या चाय अम्बिका दत्त यास ने भी साहि य नवनीत उपयोगी पुस्तक लिखी। इसके अतिरिक्त खडग विलास प्रस पटना से विद्यार्थियो के मनोरजन के लिए भी विद्या विनोद तथा शिक्षको के लिए शिक्षा नामक पत्निका निकली।

तत्कालीन सामाजिक राजनैतिक परिस्थितियाँ बदली। लोकमा य तिलक का नारा स्वरा य हमारा ज म सिद्ध अधिकार है की गूज जनमानस

इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए उन्होने पडितो की भाषा न अपना कर सामान्य पाठक के समझ मे आने योग्य भाषा अपनाई। उनकी शैली म सरलता और स्पष्टता थी। उच्चतर पाडित्य की बातो को भी वे बोधगम्य बनाकर सरस्वती के पाठको के सम्मुख रखते थे। उनकी रुचि सिद्धान्तो के ऊहापोह मे उतनी नही थी जितनी व्यावहारिक तथ्यो को सामान्य लोगो मे पहुचाने मे थी। वैसे इस युग म हिन्दी साहित्य मे अग्रजी एव बगला साहित्य से अनुवाद ही अधिकाश होते थे। जैसा कि पहले कहा जा चुका है।

इसी समय (सन् 1903 मे) द्विवेदी जी ने सरस्वती के सम्पादन का भार ग्रहण कर लिया था। उन्होन इस पत्रिका मे अनेक लेखको कवियो निबन्धकारो को अपनी प्रतिभा का परिचय देने का अवसर दिया। सभी प्रकार की साहित्यिक सामग्री इसमे दी गई और साथ ही इसमे बालोपयोगी रचनाओ को भी स्थान मिला। द्विवेदी जी द्वारा इस पत्रिका के माध्यम से हिन्दी भाषा का परिष्कार प्रचार एव प्रसार तो हुआ ही साथ ही बालको का साहित्य भी इस समय पूर्वापेक्षा प्रचुर मात्रा मे लिखा जाने लगा। द्विवेदी जी ने इस बात का अनुभव किया कि हिन्दी साहित्य मे बालको के साहित्य का अभाव है। उनके पूर्व जो कुछ भी लिखा जा चुका है वह बाल मनोविज्ञान के अनुकूल नही है तथा वे बालको को मानसिक तुष्टि देने मे समर्थ नही हो पा रहे है। फलत उन्होने लेखको से इस क्षेत्र मे लिखने का अनुरोध किया। स्वय बालको के लिए पौराणिक कहानियाँ लिखी जिनका उद्देश्य शिक्षाप्रद ही रहा। इनकी भाषा बच्चो के अनुकूल सरल तथा बोधगम्य है।

इस सन्दर्भ म द्विवेदी जी ने दो तरह के बाल साहित्य के लेखन को न केवल प्रभावित किया वरन् स्वय ही लेखक के रूप मे आगे आए। पहला पाठय पुस्तक साहित्य पर बल दिया और दूसरा बच्चो के लिए मनोरजनार्थ साहित्य पर भी उन्होन विशेष ध्यान दिया। पाठय पुस्तको के अन्तर्गत उन्होने विद्यालयो के लिए छ रीडर पुस्तक सम्पादित की जिनके नाम इस प्रकार हैं —

(1) लोअर प्राइमरी रीडर
(2) अपर प्राइमरी रीडर
(3) बालबोध
(4) वर्ण बोध
(5) बाल भूगोल तथा
(6) जिला कानपुर का भूगोल।

इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए उन्होने पडितो की भाषा न अपना कर सामान्य पाठक के समझ मे आने यो य भाषा अपनाई। उनकी शनी म सरलता और स्पष्टता थी। उच्चतर पाडि य की बातो को भी व बोध ा य बनाकर सरस्वती के पाठको के स मुख रखते थे। उनकी रुचि सिद्धा तो के ऊहा पोह मे उतनी नही थी जितनी यावहारिक त या को सामा य लोगो मे पहुचाने मे थी। वसे इस युग म हि दी सा ि य मे अग्रजी एव बगला साहि य से अनुवाद ही अधिकाश होते थे। जसा कि प ने क ा जा चुका है।

इसी समय (सन् 1903 मे) द्विवेदी जी ने सरस्वती के सम्पादन का भार ग्रहण कर लिया था। उ होन इस पत्रिका मे अनेक लेखको कवियो निबन्धकारो को अपनी प्रतिभा का परिचय देने का अवसर ि या। सभी प्रकार की साहि यिक सामग्री इसमे दी गई और साथ ही इसमे बालोपयोगी रचनाओ को भी स्थान मिला। द्विवेदी जी द्वारा इस पत्रिका के माध्यम से हिन्दी भाषा का परि कार प्रचार एव प्रसार तो हुआ ही साथ ही बालको का साहि य भी इस समय पूर्वापेक्षा प्रचुर मात्रा मे लिखा जाने लगा। द्विवेदी जी ने इस बात का अनुभव किया कि हि दी साहि य मे बालको के साहि य का अभाव है। उनके पूव जो कुछ भी लिखा जा चुका है वह बाल मनो विज्ञान के अनुकूल नही है तथा वे बालको को मानसिक तुष्टि दने मे समथ नही हो पा रहे है। फलत उन्होने लेखको से इस क्षेत्र मे लिखने का अनुरोध किया। स्वय बालको के लिए पौराणिक कहानियाँ लिखी जिनका उद्देश्य शिक्षाप्रद ही रहा। इनकी भाषा बच्चो के अनुकूल सरल तथा बोधग य है।

इस स दर्भ मे द्विवेदी जी ने दो तरह के बाल साहि य के लेखन को न केवल प्रभावित किया वरन् स्वय ही लेखक के रूप मे आगे आए। पहला पाठय पुस्तक साहि य पर बल दिया और दूसरा ब चो के लिए मनोरजनार्थ साहि य पर भी उन्होने विशेष यान दिया। पाठय पुस्तको के अ तर्गत उ होने विद्यालयो के लिए छ रीडर पुस्तक स पादि त की जिनक नाम स प्रकार हैं —

(1) लोअर प्राइमरी रीडर
(2) अपर प्राइमरी रीडर
(3) बालबोध
(4) वर्ण बोध
(5) बाल भूगोल तथा
(6) जिला कानपुर का भूगोल।

जहाँ तक बच्चों के लिए मनोरंजनार्थ बाल साहित्य का प्रश्न है उन्होंने बाल भागवत बाल रामायण आदि ग्रंथो की रचना की जिनसे प्रेरणा पाकर उस युग के अनेक लेखक इस क्षेत्र मे सक्रिय रूप से सामने आए। परिणामत बाल साहित्य लेखन तथा प्रकाशन मे एक नई चेतना का उभार दिखाई देने लगा।

इस प्रकार द्विवेदी युग मे बालको के लिए साहित्य लेखन की दो धाराएँ प्रमुख रूप से प्रचलित थी। पहली—विद्यालयो मे पढाई जाने वाली पुस्तक तथा दूसरी—बालको के मनोरंजनार्थ लिखी जाने वाली पुस्तक जिनमे—कविता गीत कहानी उपन्यास जीवनी निबन्ध आदि थे। पाठय पुस्तक लिखने मे पं विनायकराव सुखराम चौबे गुणाकर कामता प्रसाद गुरु तथा लज्जाशंकर झा श्याम सुन्दरदास भाषा संग्रह सार (सन् 1902) हिन्दी निबन्ध माला भाग–1 (सन् 1922) हिन्दी प्रायमर (सन् 1905) हिन्दी की पहली पुस्तक (सन् 1905) हिन्दी ग्रामर (सन् 1906) बालक विनोद (सन् 1908) जैसे प्रभृत विद्वानो का महत्वपूर्ण योगदान रहा। खडगविलास प्रेस पटना ने बालको के लिए पाठय पुस्तक छापने का भार लिया। इसके संपादक स्वामी रामदीन सिंह थे जिन्होंने क्षेत्र त व गणित छत्तीसी हिन्दी साहित्य साहित्य भूषण तथा बाल बोध की रचना की। मुंशी राधालाल माथुर को उनके शब्द कोश पर पुरस्कार भी मिला। चार भागो मे इन्होंने भाषा बोधिनी की भी रचना की जो विद्यालयो मे पढाई जाती थी।

राय सोहनलाल की वायु विद्या बालोपयोगी पाठय पुस्तक है। इसके अतिरिक्त बाबू साहब प्रसाद सिंह की भाषा सार अपूर्व पाठय पुस्तक थी जिसकी ख्याति देशो मे भी थी। इन पुस्तको की भाषा सुबोध रोचक तथा प्रांजल थी। खडी बोली को प्राण प्रतिष्ठा करने वाले अयोध्या प्रसाद खत्री ने भी अंग्रेजी व्याकरण की रीति पर एक हिन्दी व्याकरण लिखा था। छात्र वर्ग अब अपनी मातृभाषा मे विधिवत् शिक्षा पाने लगे। साहित्याचार्य अम्बिका दत्त व्यास ने भी साहित्य नवनीत उपयोगी पुस्तक लिखी। इसके अतिरिक्त खडग विलास प्रेस पटना से विद्यार्थियो के मनोरंजन के लिए भी विद्या विनोद तथा शिक्षको के लिए शिक्षा नामक पत्रिका निकली।

तत्कालीन सामाजिक राजनैतिक परिस्थितियां बदली। लोकमान्य तिलक का नारा स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है की गूंज जनमानस

को सुनाई देने लगी। सन् 1921 के स्वदेशी आ दोलन एव सन् 1930 31 के असहयोग आ दोलन के कारण विद्यार्थी वग भी विद्यालय एव विश्व विद्यालय की प ाई छो कर स्वत त्रता सग्राम मे कूद प । इस वातावरण के निर्माण मे कविया लेखको एव विचारको का पूण योग दान रहा । अग्रजी भाषा तथा अग्रजी शासन को उखाड फकने के लिए गुरुकुल का ी शा ति निकेतन डी ए वी स्कूल जसी सस्थाए खुलने ल ी जो शुद्ध भारतीय स कृति तथा स यता की शिक्षा हि दी मा यम से देन का काय कर रही थी ।

इन परिस्थितियो ने भारतीय साहि-य को बहुत ही प्रभावित किया । बाल साहि-य भी इससे बच न ी सका । म ावीर प्रसाद द्विवेदी तथा त का लीन लेखको ने बाल साहि-य के माध्यम से बच्चो को रा ट्रीय जागरण के सदेश दिए । उनमे नई चेतना का सचार करने के जो भाव भारते दु युग मे भरे गए थे उ-हे पनपने के अवसर दिए । इसके अतिरिक्त पाश्चा-य सस्कृति के प्रति बालको म घृणा -पन्न क र भारतीय सस्कृति की पुनर्स्थापना ही उनका मुख्य उद्देश्य था ।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कक्षाओ मे विद्यार्थियो को पढाई जाने वाली भाषा का माध्यम हि-दी को अनिवार्य करने मे बडौदा नरेश का मह वपूर्ण हाथ रहा । इ-होने सन् 1910 मे 5वी और 6वी कक्षाओ के लिए हि-दी अनिवाय कर दी और हि-दी पुस्तको के प्रकाशन की भी यवस्था की । सन् 1915 मे युक्त प्रा-त के शिक्षा विभाग ने आठवी कक्षा तक हि-दी का माध्यम स्वीकार किया । द्विवेदी युग के उत्तराद्ध मे हि दी को शिक्षा का मा यम बनाने और विश्वविद्यालयो मे हि-दी साहि य को पाठ्य विषय निर्धारित करने के लिए विशेष आ-दोलन हुआ । सन् 1919 मे कलक ा विश्वविद्यालय एव सन् 1920 मे काशी विश्वविद्यालय ने हि- ी साहि-य को अ-य विषयो के समकक्ष ही पाठयक्रम मे स्थान दिया । इस प्रकार हि दी को अपना स्थान निर्धारित करने का अवसर मिलने लगा ।

इस युग का बाल साहि-य राष्ट्रीय जागरण तथा भारतीय स्वत त्रता की रक्षा की भावना से ओत प्रोत रहा चाहे वह कविता हो या कहानी या नाटक ! बाल लेखक तथा कवियो का स्थान साहि-य के मच पर बनने लगा और ये अपेक्षाकृत योजनाबद्ध ढग से बाल साहि-य की रचना करने लगे । त-कालीन पत्र पत्रिकाओ मे तथा स्वत त्र रूप से भी प्रकाशित पुस्तकाे मे बाल साहि-यकार अपनी प्रतिभा उडेलने लगे ।

इस काल की हिन्दी कविता म प्रधानतया दो प्रवृत्तियाँ स्प ट रूप से लक्षित होती है। एक स्व छ दत वादी प्रवत्ति और सरी रा ट्रीय भावना की प्रवृत्ति। प नी प्रवृत्ति के प्रमुख कवि प श्रीधर पाठक है। अग्रजी साहि य के अ ययन का उन पर पर्याप्त प्रभाव था। श्री गोपालश ण सिंह श्री जगमोहनसिंह प रामनरेश त्रिपाठी आदि कवियो ने इसी शली को अपनाया। दूसरी प्रवत्ति के कवियो ने अग्रजी की छाया से भी बच कर रा ट का गुणगान करने और भारत के प्राचीन गौरव को जगाने का प्रयत्न अपनी कविता ो द्वारा किया। इनमे राष्टकवि मैथिलीशरण गुप्त तथा प अयोध्यासिंह उपाध्याय प्रमुख है। इसी प्रकार बाल गीतो का विकास भी इन्ही दो प्रवृत्तियो की छाया मे हुआ है। श्रीधर पाठक के विषय मे तीसरे अ याय मे चर्चा हो चुकी है। ा ट्र नि मैथिलीशरण गुप्त ने अनेकानेक रा ट्र प्रम की कविताए ब चो के लिए भी लिखी। गुप्त जी अपनी कविताओ के लिए भारतीय सस्कृति तथा पर परा से विषय चुनते थ। साथ ही उनमे अग्रजी का बाल कविताओ जसी सरलता भी िखाई देती है। ये बच्चो की रुचि म ोवृत्ति तथा भावनाओ ा निर्मा ता करत े ये अपनी रचनाओ के मा यम से कोई न कोई शक्षा अवश्य देन थ।

अयो यासिंह पा याय हरिऔ ा ने त कालीन पत्र पत्रिकाओ मे अनेक बालोपयोगी कविताए लिखी साथ ही स्वतन्त्र रूप से भी पुस्तक रचना की ो बाल विभव बाल विलास फल पत्त पद्य पमून च द्र खिलौना तथा खेल तमाशा नाम से प्रकाशित ुई। न कविताओ मे स ल बाल भावनाओ की सु दर अभि यक्ति है।

राष्ट्र गीत तथा कविता लिखने मे सिद्धहस्तकवि सोहन लाल द्विवेदी ने बाल साहित्य के लिए योजनाबद्ध ढग से काम किया तथा इ होने ब चो की रुचि को सवारने ाल कुछ कविता सग्रह बासुरी शिशु भारती विषपान झरना तथा बिगुल का प्रका ान सन् 1945 मे किया। शिशु भारती के स ब ध मे कवि स्वय कहते ह कि हमने शिशु भारती के नाम से बालको के प्रतिनिधि कवियो के का य का सग्रह प्रकाशित करने का निश्चय किया है। बाल साहि य की ओर समृद्ध साहित्यकारो की उपेक्षा देखकर यह का ी हमने आपके सहयोग के विश्वास पर ही अपने ऊपर लिया है। इसमे कवि को सफलता भी मिली और उनका यह प्रयास तो सराहनीय है।

सुखराम चौबे गुणाकार ने भी बाल गीत लिखे। इनके लिखे गीतो से बालको का मनोरजन तो होता ही है क्योकि इन गीतो के विषय उसके

आस पास की वस्तुए एव जीव ज तु है। साथ ही ये गीत शिक्षाप्रद भी हैं।

सबसे बडी बात तो त कालीन क ि ता की य थी कि व अ ब्रज भाषा मे न लिखी जाकर खडी बोली हि दा मे लिखी ाने ल ी। सकी प्ररणा द्विवेदी जी ने ही दा थी। भारत दु का मे गद्य को तो खडी बो ी मे लिखने के प्रयास हुए थे कि तु कविता की भाषा ब्रजभाषा ही रही। द्विवेदी जी इसके विरुद्ध थे क्योकि बोलना एक भाषा औ क ि ता मे प्रयोग करना दूसरी भाषा प्राकृतिक नियमो के विरुद्ध है। जो लोग हि्दी बोलते है और हि दी मे ही गद्य साहि्य की सेवा करते है उनके पद्य मे ब्रज की भाषा का आधिप्य बहुत ि नो तक न ी रह सकता। अ य अनेक त कालीन साहि्यका ो का भी यही मत था कि द्य औ पद्य की भिन्न भिन्न भाषा होना मारे लिए ल्जा ा का विषय ा ै जितना ल ा और उपहास का है कि हम ि स भाषा मे द्य ि खत उसमे प ा ी लिख सकते। यह आ दोलन तो पकडता गया और ब ा ा र मे पद्य भा खडी बोली हि्दी म लिखा जाने लगा।

अब बाल साि य के विषया के क्षत्र भी पहले से अधिक विस्तृत हो गए। शिक्षा और उपदेश ही इस का के बाल गीतो की रचना क मुख्य उद्दश्य रह गए। रा ट्रीय भावना पहले से कही अधिक ा ा ा द रूप मे बाल गीतो मे यक्त हुई। इसके साथ ही इस युग व बाल गीता मे मनोरजन के त व कम दिखाई देते हे। तथा प्राचीन धार्मि स म ि और सास्कृतिक पर पराओ के प्रति मोह बहुत परिलक्षित हा ा । ा रचना का उद्दश्य यह था कि ब चा म देश प्रम औ प्रा ीन प प ा ा े प्रति आस्था विश्वास की भावनाएँ भरा जा सक जिनसे व े ा ि त्र औ गुणवान् बन सक। मन्नन द्विवेदी ग ापुरी की वि ा ो न ा भगवान राम नरेश त्रिपाठी का है अ ो आन ददाता सोह लाल द्वि े ी का वो मातृ भूमि मेरी आदि कविताए इसी प्रकार की हे जिनमे ब ा े ब चो के मुख से अपनी बात कहलाने की चे टा की है। ये ीत ब चो के अपने गीत न ी हैं वरन् उन पर आरोपित है। कि्तु युग की माग यही थी।

इसके अतिरिक्त मनोरजनाथ जो गीत लिखे गए नमे कामता पसा गुरु की यह सु दर छडी हमारी गीत ब्चो मे बहुत पस द कि गए। राम नरेश त्रिपाठी के सोटा अधला छीक तथा बि्नी की गाडी आदि बाल

गीत भी ब चो ने बहुत पस द किए। सुभद्रा कुमारी चौ ान आरसी प्रसाद सिंह शम्भ दयाल सक्सेना रमापति शुक्ल आदि इस युग के प्रमुख कवि है।

स युग मे बालको के अतिरिक्त छोटे ब चो के लि भी शिशु गीत लिखने की नीव पडी। रघुन दन प्रसाद त्रिपाठी ने रघु पनाम से अनेक शिशु गीत लिखे जो खिनौना शिशु आदि पत्रिकाओ क माध्यम से छोटे ब चो तक पहुँची। गुलाबराय ने भी ब चो की रुचि के अनुकूल छोटे छोटे गीतो की रचना की।

कविता के अतिरिक्त अ य ानेक नि ध कहानिया जीवनी भी लिखे गए। इडियन प्रस इलाहाबाद से बाल मनुस्मृति बान ि तोपदेश बाल नीति मा ा ादि ग्र थ समय समय पर प्रकाशित होते रहे। इन पौराणिक तथा धार्मिक कहानियो का मुख्य उद्दश्य बालको की नतिक तथा चारित्रिक शिक्षा देना था। साथ ही सस्कृत से अभिज्ञान शाकु तल जातक कथाए वेताल चीसी िं ासन बतीसी आ ि ग्र थो के हि दी मे अनुवाद हुए। का पनिक कथाए प ि यो की कहानियाँ शेख चि ी ऐतिहासिक कहानी बानक का वीरता (बाल सखा जन री 1921) जहानारा (बाल सखा – प्रथम अक) आ ि सुखदेव प्रसाद चौबे का मगर और सियार (बाल सखा– सित बर 1923) जिसकी लाठी उसकी भस (बाल सखा–जनवरी 1923) आदि मौलिक कृतिया प्रकाश मे आई तथा ऐति ासिक आदश यक्तियो का च ि त्र निब ध के मा यम से प्रस्तुत किया गया। उदाहरण के लए सुखराम चौबे का अमेरिका का धन कुबेर राकफलर (बाल सखा–जनवरी 1923) मे प्रकाशित हुआ।

सुदशनाचाय ने छोटे ब चो के लिए नानी की कहानी ब चू का ब्याह अनूठी कहानियाँ शिशु पत्रिका के मा यम से प्रस्तुत की तो राम नरेश त्रिपाठी ने भी गवया गधा (अक्टूबर 1921) बि ली के बाला आदि कहानिया ब चो के लिए लिखी। विद्याभूषण विभ ठाकुर श्रीनाथ सिंह गिरिजादत्त शुक्ल गिरीश ने शिशु बाल सखा त कालीन पत्रिका के स पादन काल मे अनेक बाल साहि य की रचना की। विभ लगभग तीस वर्षो तक ब चो के लिए लिखते रहे। इ होने विद्यार्थी जीवन मे ही ब चो के लिए कविताए लिखना प्रारम्भ कर दी। इनकी कविताएँ अग्रजी के बाल गीतो के समकक्ष रखी जाने योग्य सद्ध हुई। छोटी आयु के ब चो के लिए दो दो चार चार पक्तियो की सरल तुकबन्दियाँ लिखी। अनेक

बालोपयोगी पुस्तक— चार साथी च दा बबुआ गोवर णश लान बुझक्कड शेख चि ली फल बगिया आदि प्रकाशित हो चुकी है।

ठाकुर श्रीनाथ सिं आर भ मे तो शिशु तथा बाल सखा के स पादक रहे बाद मे स्वत त्र प्रेस खोलकर दीदी और बाल बोध नामक पत्रिकाए निकाली जिनके माध्यम से बाल गीत बाल कहानी के भ डार को समृद्ध किया। बाल मनोवृत्ति के अनुकूल कविताए लिखते रहे। होने बाल साहि य को शशव काल से लेकर किशोरावस्था तक सजाया सवारा है।

शम्भ दयाल सक्सेना स्वण सहोदर गोपाल शरण सिंह शालिग्राम आदि अनेकानेक लेखक तथा कविगण ने बाल साहि य की समृद्धि मे योग दिया। इस युग के लेखको की वि ेषता यह है कि वे किसी न किसी बाल पत्रिका से स ब धित अवश्य हे। इस युग को पत्र पत्रिकाओ का युग हा जाय तो अ युक्ति नही होगी।

न लेखको तथा कवियो का स्वर प्रमुख रूप से उपदेशा म ी । क्योकि यह युग की माग थी। फलत त कालीन पत्र पत्रिका ो । उपदेश प्रधान कहानी प्रकाशित हुई। इस युग मे अधिकतर अग्रेजी कहानियो के ी अनुवाद हुए फिर भी स्वत त्र रूप से प्रेमच द कौशिक सुदर्शन आदि कहानी कारो ने बालको के लिए क ानिया लिखी जिसकी चर्चा अग ो पृ ठो मे की जायगी। जयशकर प्रसाद मुख्य रूप से कवि एव नाटककार रहे कि तु उ होने कहानियो और तीन उप यासो की रचना की। इ द्र जाल क ानी सग्र मे बाल कहानी छोटा जादूगर प्रकाशित हुआ जो एक चरित्र ा ान कहानी है।

इस युग मे बालको को प्रो साहित करने के लिए बालको द्वारा भी गद्य पद्य लिखवा ए गए। हि दी बाल साहि य को यह पहली देन है क्योकि अभी तक लेखक ण स्वय ही बालको के लिए साहि य की रचना करते हे और अपने विचार उन पर लादते रहे। बाल साहि य के नाम पर पस्त ो की सख्या मे वृद्धि होती जा रही थी भले ी उनमे बाल चियो तथा मनो वृत्तियो का कोई स्थान न हो। पर तु अब इस ोष को समझा गया और बालको को भी इस ि शा मे लिखने के लिए प्रो सा ि ि या गया क्योकि ब चे जो भी लिखते ह उनमे उनके मन की ानुभूति स्वाभाविकता तथा तथा उनकी अपनी क पना रहती है। तब बेतियाराज स्कूल के एक छात्र ने बालक की उदारता कहानी लिखी। गणेश व दना राजाराम तिवा ी द्वारा तथा गुलाब प नालाल महता द्वारा लिखा गया। छ बालक तथा

बालिकाओ ने मिलकर आम का पेड कविता लिखी तथा अगर तुम हिन्दुस्तान के बादशा बना दिए जाओ में अठारह बालक बालिकाओ के विचार प्रस्तुत किए जिनमे ब चो ने अपने मन की बात खलकर लिखी। यह बडी स्वाभाविक पुस्तक है।

इस प्रकार हिन्दी बाल साहित्य को विकास के विभिन्न सोपानो से गुजरना पडा। इसका श्रेय आचार्य महावीर प्रसा द्विवेदी को है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के रचना म साहि य को आज क उचित बहुत उ च कोटि का न ी समझा जायेगा और म ावीर प्रसा द्विवेदी की रचना ो का स्थान तो उसमे भी कुछ नीचा ही ोगा कि तु देश के सास्कृतिक पुनरु थान पर भार ते दु का प्रभाव ग रा और दूर यापी था। द्विवेदी ी का एक सम्पादक के रूप मे निस्पृ मठता गौर उ साह ने उन्हे आधुनिक ि ी गद्य के नर्माता के प प प्रति ठित कर ि ा । यही ा ण है कि जो कुछ काय द्विवे ी जी ने किया वह अनुवा का हो का ना का हो आलोचना ा हो अथवा ापा सस्कार का हो या केवल साहि यिक नेतृ व का ही हो—व स्थायी मह व का ो या अस्थायी—हि ी ो युग विशष के प्रवतन और निर्माण मे सहायक हु ा है। उसका ऐति ासि म व है। उसी के आधार पर नवीन युग का साहि य प्रासाद खडा ि ा जा सका है। उसकी समस्त कृतिया युग क प्रतिनिधि ोने का गौरव रखती । तभी बाल साहि य के स्वरूप मे परिवतन होने लगा। साहित्य अब जीवनो मुख होने लगा।

धीरे धीरे क ानियो का भी स्तर ब लने लगा। कहानिया उपदेशा मकता का दामन छोड बाल मनोविज्ञान के धरातल पर लिखी जाने लगी। प्रमच सुभ ा कुमारी ौ ान राजे ि गौ आ इ]ु ो उपयक्त पर परा को ध्यान मे रखकर लिखने वाले प्रमुख कहानीकार ए। प्रमचद का ो बैलो की कथा बड भया पूस की रात तोता ाम आि क ानियाँ उ लेखनीय है। सभद्रा कुमा ी चौ ान की ारिया हीग वाला तीन ब चे इसी कोटि मे आती हैं। इसके अतिरि त मनोरजक कहानियाँ म्याऊँ याऊ नी पछ लेमा चूम की चोरी ा की नकड दादी उ लेखनीय है। साहस की कहानियाँ भी इस युग मे लिखी गईं— जान जोखिम की कहानी का नामो लेख करना उचित प्रतीत होता है।

बा ोपयोगी पुस्तक—चार साथी च दा बबुआ गोवर णश ला बुझक्कड शेख चि ी फल बगिया आदि प्रकाशित हो चुकी है।

ठाकुर श्रीनाथ सिं आर भ मे तो शिशु तथा बा सखा के स पादक रहे बाद मे स्वतन्त्र प्रेस खोलकर दीदी और बा बोध नामक पत्रिकाएँ निकाली जिनके माध्यम से बाल गीत बाल क ानी के भ डार को समृद्ध किया। बाल मनोवृत्ति के अनुकूल कविताए लिखते रहे। न्होने बाल साहि य को शशव काल से लेकर किशोरावस्था तक सज या सवारा है।

श भ दया सक्सेना स्वण सहोदर गोपाल शरण सिं शालिग्राम आदि अनेकानेक लेखक तथा कविगण ने बा साहि य की समृद्धि मे योग दिया। इस युग के लेखको की विशेषता यह है कि वे किसी न किसी बाल पत्रिका से स बधित अवश्य हे। इस युग को पत्र पत्रिकाओ का युग ा जाय तो अ युक्ति नही होगी।

इन लेखको तथा कवियो का स्वर प्रमुख रूप से उपदेशा म ी ा क्योकि यह युग की माग थी। फलत त कालीन पत्र पत्रिका ो ो उपदेश प्रधान कहानी प्रकाशित हुई। इस युग मे अधिकतर अग्रेजी कहानियो के ी अनुवाद हुए फिर भी स्वत त्र रूप से प्रेमच द कौशिक सुदशन आदि क ानी कारो ने बालको के लिए क ानियाँ लिखी जिसकी चर्चा अगले पृ ठो मे की जायगी। जयशकर प्रसाद मुख्य रूप से कवि एव नाटककार रहे कि तु उ होने कहानियो और तीन उप यासो की रचना की। इ द्र जाल कहानी सग्र मे बाल कहानी छोटा जादूगर प्रकाशित हुआ जो एक चरित्र प्रधान कहानी है।

इस युग मे बालको को प्रो साहित करने के लि बालको द्वा ा भी गद्य पद्य लिखवाए गए। हि ी बाल साहि य को यह पहली देन है क्यो कि अभी तक लेखक ाण स्वयं ही बालको के लिए साहि य की रचना करते हे और अपने विचार उन पर लादते रहे। बाल साहि य के नाम पर पुस्त ो की सख्या मे वृद्धि होती जा रही थी भले ी उनमे बा रुचियो त था मनो वृत्तियो का काई स्थान न हो। पर तु अब इस ोप को समझा गया और बालको को भी इस दि शा मे लिखने के लिए प्रो सा ि त कि या गया क्योकि ब चे जो भी लिखते है उनमे उनके मन की अनुभूति स्वाभाविकता तथा तथा उनकी अपनी क पना रहती है। तब बेनियाराज स्कूल के एक छात्र ने बालक की उदारता कहानी लिखी। गणेश व दना राजाराम तिवारी द्वारा तथा गुलाब प नालाल महता द्वारा लिखा गया। छ बालक तथा

जीवनियाँ जीव जन्तु का परिचय भूगभ विज्ञान आकाशकीय विज्ञान आदि का रोचक वर्णन विभिन्न निब ध और कहानियो के माध्यम से प्रस्तुत किया जाने लगा।

कहानियो के अतिरिक्त बाल रुचि के अनुकूल नाटका का ी प्रणयन आरम्भ हुआ। इस कडी मे सबसे पहले सन् 1930 के माच अक मे स भाव भूमि पर आधारि त पहला मौलिक नाटक दयान लड़का प्रकाशित हुआ जिसके रचयिता थे रामानुज लाल श्रीवास्तव।

स प्रकार के बालको के मनोवज्ञानिक विचारधारा को यान मे रखकर र‌ना करने की पर परा आचार्य रामलोचन शरण जी ने डाली थी क्योकि वे बालको के मनोविज्ञान से पूण प‌ि चित थ। इस स ब ध मे अनेक विद्वान एक मत हैं कि आचाय रामलोचन की विषय प्रतिपादन श ी से पता ‌ ाता है कि अनेकानेक विषयो के ज्ञान के साथ उनमे बाल मनो विज्ञा क गह ा ‌ ानुभव है। उनकी प्रति ा और कायक्षमता अद्‌भ‌ा है। सा‌ि मलोचन श ण जी को ी शिवपूजन सहाय ने सन् 1942 मे उनके ‌ ‌ि न दन समारोह म ‌ि हा प्रा त का द्विवेदी कहा है और अभिनव गद्य शली का प्रवर्तक माना है।

‌म‌ोचन शरण ने सन् 1915 मे लहेरिया सराय (दरभगा) में पुस्तक भ ‌ ार की स्थापना करके नई श‌ ी एव मनावज्ञानिक पद्धति पर अनेक पाठ्य पुस्तको की रचना की। साहि‌ य ‌याकर ‌ ‌ निबध रचना इति ास भूगोल गणित स्वास्‌ य विज्ञान आदि ‌ि‌षयो पर बड मार्मिक एव स ‌ ‌ ढग से लिखा। इसके अतिरिक्त अ य ‌नेक मनोरजक पुस्तक ‌ अली बाबा और चालीस चो दादी की कहानिया पे पौधो की कहानि ‌ ‌ जानवरो की कहानिया गोनू झा की कहानियाँ लिखी ‌। पुस्तक भ ‌ ार की सूची देखने से ज्ञात होता है कि रामलोचन श ण बालको की नीद सोते थे और बालको की ‌ ीद जागते थे।

सन् 1926 को बस त पचमी के दिन पुस्तक भण्डार की शाखा बालक का ‌ लिय से बालक मासिक पत्रिका का प्रकाशन तो बाल साहि‌त्य के क्षेत्र म क्रान्ति उपस्थिति करने वाला हुआ। भारत के कोने कोने मे बालक का नाम गजने लगा। आज भी यह बालको की सेवा कर रहा है। पुस्तक ‌ ‌डार से प्रकाशित आचार्य रामलोचन शरण का बालापयो ‌ ी शिक्षण पद्धति की ‌यावहारिकता स ‌ ‌ हनीय है। मनोहर पोथी का प्रकाशन छोटे ब चो को पढ ने के लिए ही हुआ है। रग बिरगे चित्रो को देखकर

यावहारिक ढग स छोट ब`चे बडी आसानी से अक्षर ज्ञान कर लेते है। दसरी ओर बाल पोथी बाल वर्ग को प्रभावित करता रहा। पाठयक्रम के परिवर्तनो के साथ साथ उनकी लेखनी से उसके अनुरूप सबसे पहले पुस्तक का लेखन तथा स पादन होता था। शरण जी की सफलता का सबसे बडा रहस्य यह था कि वे बाल मनोविज्ञान के पडित थ। गणित इतिहास विज्ञान जैसे दुरूह विषय को सरल सरस और सगम कर बच्चो के लायक बना देना हीं का काम था। बालको मे कौतू ल लगाकर किसी विषय मे उनकी रुचि कसे उ`प न की जा सकती है इसे वे भली प्रकार जानते थ। ये कथोपकथना मक श ली के ममज्ञ थे। याकरण और गणित मे सवप्रथम अवरोह विधि (I d t M tl od) का यवहार किया। विश्लेषण और स्प टीकरण की कला मे सिद्धहस्त हे। इससे ज्ञात होता है कि आचाय शरण ने बाल ो के लिए याक ण स मत ऐसे सा`ि य का अभाव देखा जो बा को को शुद्ध मनोरजन प्रदान कर सके। परिणामस्वरूप बालक जसी उ`कृ ट मासिक पत्रिका का प्रका न आरभ करने मे पुस्तक भडार का प्रयास स ाहनीय हे। आ ा रामलोचन श ण के सुपुत्र श्री सियाराम शरण के स पादक त्व म बालको के लिए ानकानेक पठनीय सामग्री इस प्रस से निकल र ी है। बालक मे ब`चो के लिए रोचक तथा पठनीय सामग्री र ती है इसलिए सकी गणना हि ी क ा ठ बालोपयोगी स`चित्र मासिक पत्रो मे होने लगी। हि दी के अनेक लखा तथा विद्वानो ने इसे हि दी का सर्वश्र ठ बालोपयागी पत्र कहा है। आ ा ी यह पत्र अपनी सफलता की मजिल पूरी करने मे लगा है।

स युग मे ा य बाल पत्र ी प्रकाशित हुए। सन 1915 मे प्रयाग से श्रीमती गोपाल देवी ने छोट ब चा के लिए शिशु मासिक पत्र निकाला जो लग ग चालीस वर्षों तक नि तर शिशु साहि`य की श्रीवद्धि करता रहा। काला तर मे इनके पति प सदर्शनाचाय ने इसके स पादन का भार सभाला। बाल मन की जिन गह ाइयो को प सदर्शनाचाय ने समझा था उतना अब तक कोई नही समझा था। यही कारण था कि शिशु की ख्याति पताका सरे हि दी ससार म फहराती रही लेकिन यह भी एक क र विड बना ही थी कि परतन्त्र भा त मे जिस पत्रिका ने युग युगो तक सघर्षरत रहकर हि दी के माध्यम से देश के अनगिनत बाल गोपालो की सेवा की और बडी बडी हस्तियाँ पदा की वह पत्रिका देश की आजादी के बाद ब`द होने को विवश हो गई। इसे इस पत्रिका का सबसे बडा दुर्भाग्य कहा जा सकता है।

वस्तुत शिशु बहुत छोटी आयु के बालको के लिए बडी उपयोगी पत्रिका थी जिसके मा यम से ब-चे छोटी कहानिया कविताए तथा पहेलियाँ और चुटकुलो का आन द लेते रहे।

शिशु के बा द्विवेदी जी की प्ररणा से प्रकाशि बाल सखा भी त त्कालीन युग की उपयोगी पत्रिका है। आलोचको का य मत कि स कथन मे कोई अ युक्ति नही कि शिशु ने अगर हि दी बाल साहि य को उगली पकडकर चलना सिखाया तो सन् 1917 मे प्रयाग (डियन प्रस) से प्रकाशित बाल सखा ने इसे सजाया सवारा और इसका रूप निखारा। इस पत्रिका ने बाल पत्रिका के प्रकाशन को नई दि शा दी।

सन् 1927 मे सरस्वती पत्रिका का एक मह वपूण विशेषाक वीराक निकला जिसमे युग की माग के अनुरूप वीर कृ ण म हाराणा प्रताप बाजीराव पेशवा आदि के विषय मे वीरतापूर्ण लेख एव कहानिया थी। अनेक यक्तियो तथा पत्रो ने इस पत्र की प्रशसा स लिए कि बालको के लिए वीरता से ब कर क्या साधन ? जब मारी ज ति निर्बल और क्षीण होती जा रही है तब उसके बालकों मे वीरता की शिक्षा ही सबसे बडा काम है। यह अश निकालकर बालक समाज का बडा उपकार किया गया है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि त युगीन माग के अनुरूप इस प्रकार के विशेषाक का प्रकाशन एक साहसपूण कदम था।

ये समस्त पत्र पत्रिकाए अ प समय तक ही बाल साहि य की सेवा कर सकी। आर्थिक कठिनाइयो बालको मे पढने के प्रति रुचि का अभाव वितरण की असतोषजनक यवस्थ प्रकाशन तथा प्रकाशन स ब धी अनेक कठिनाइयो के कारण इ हे ब द करना पडा।

विभिन्न बाल पत्र तथा पत्रिकाए इस युग मे जन्म लेती रही जो बाल साहित्य के विकास मे सहयोग देती रही। ग्वालियर से क्रमा साप्ताहिक बा से न ला बाल बोध तथा शेर ब चा नगर मे ... (न री सन् 1944 म) जोधपुर से झरना दि ली से बाल भारती ... भया कानपुर से बाल सेवा लखनऊ से भारता (म ी सन् 1947 म) मह वपूर्ण पत्रिकाए थी। बालको के अनुरूप रूप सामग्री तथा आकार लेकर कला प्रस प्रयाग से सन् 1930 मे चमचम का प्रकाशन हुआ जो बच्चो ने बहुत पसन्द किया गया। अ पायु होने पर भी ये पत्रिकाए बाल साहित्य मे श्रीवृद्धि करती रही। ये समस्त बाल पत्रिकाएं अ प समय तक ही बाल साहित्य की सेवा कर सकी। आर्थिक कठिनाइयो बालको मे प ने के प्रति

रुचि का अभाव वितरण की असतोषजनक व्यवस्था प्रकाशन तथा प्रकाशन सबधी अनेक कठिनाइयो के कारण इन्हे बन्द करना पडा। चौथे अध्याय मे इनका विस्तृत विवरण दिया गया है।

सन् 1931 से अगले सत्रह वर्षों मे बाल साहित्य रचना की ओर अनेक लेखक कवि प्रवृत्त हुए तथा उसे साहित्य जगत् मे स्वतन्त्र अस्तित्व के रूप मे निरूपित करने के प्रयास करने लगे। यह बाल साहित्य के विकास मे एक क्रातिकारी कदम था। वैज्ञानिक निबन्ध इस युग की विशेष उपलब्धि थे। गुलाब राय की विज्ञान वार्ता (सन् 1936) तथा बदरीनाथ भट्ट की विज्ञान वाटिका (सन् 1933) महत्वपूर्ण रचनाए है जिनमे विज्ञान का गूढ बातो को बडे ही सरल ढग से समझाया गया है। पदुमलाल पुन्नालाल ने भी अनेक निबन्धो के द्वारा अपनी बाल साहित्य कला को सजाया सवारा।

सन् 1940 मे मिश्र बन्धु कार्यालय—जबलपुर की स्थापना नर्मदा प्रसाद मिश्र ने की थी इस कार्यालय के द्वारा अनेक पुस्तक बालको के लिए प्रकाशित हुई। इन्होने स्वय तो लिखा ही अनेक लेखको तथा कवियो को साहित्य के क्षेत्र मे प्रवृत्त होने के लिए सहारा दिया। इस कार्यालय से प्रकाशित सभी पुस्तक बडी लोकप्रिय रही और पाच से दस वर्ष तक के बच्चो के लिए आकर्षण का केन्द्र रही। क्योकि इनके विषय बच्चो के आस पास के है तथा उनके मन की सतुष्टि होती है।

छोटे बच्चो के लिए पठन पाठन की रुचि के विकास के लिए मिश्र बन्धु कार्यालय ने जिन पुस्तको का प्रकाशन किया वह सराहनीय है। ये छोटी पुस्तक पाँच से लेकर सात वर्ष तक के बच्चो के लिए बहुत ही मनोरजक और उपयोगी है इन पुस्तको से छोटे बालको का केवल मनोरजन ही नही होगा किन्तु उनमे पढने की रुचि भी उत्पन्न होगी। मैने ऐसी पुस्तक हिन्दी मे अन्यत्र नही देखी। इनका प्रकाशन हमारी भाषा मे एकदम नया आयोजन है। कार्यालय द्वारा प्रकाशित ये पुस्तक बालको पर गहरा प्रभाव डालती हैं।

सबसे बडा काम तो इस कार्यालय से यह हुआ कि पुस्तको के प्रकाशन के समय आयु वर्ग का विशेष ध्यान रखा गया। पाँच छ वर्ष की आयु के बालको के लिये सयुक्त अक्षर रहित पुस्तक— उडन छूरी बकबक का खेल भूत का घर काव काव काका गजी खोपडी आदि पडित नर्मदा प्रसाद मिश्र ने लिखी तो स्वर्ण सहोदर ने चगन मगन गिनती के गीत लिखे।

सरल श दो के कारण बालक पुस्तको को आसानी से पढ लेते थे तथा अपनी ही मानसिकता के अनुरूप होने के कार ा उ हे उनमे मनोरजन प्राप्त होता था ।

छ सात वर्ष के बालको के लि लिखी पुस्त ो म मु य है— कसा बुद्ध बनाया खरगू की चालाकी जादी के खेल फ ल का फलझडी आदि (प नमदा प्रसाद मिश्र) टीपू और सु लता (ाण ा मिश्र) प चीस कहानिया (क हैया लाल शर्मा दुबे) आदि ।

सात आठ वर्ष के बालको के लिए जो पुस्तक लिखी गई उनमे प्रमुख है— ग ापुर के गवये आ ा ऊ न चू राम का सर सपाट छ मतर की पोथी (नर्मदा प्रसाद मिश्र) चु नू और मु नू मान का अनार (केशवलाल गुमाश्ता) लम्बी नाक (गणग मि ा) नाक कटाई (आ मराम देवकर) आदि । आठ स दस वष के बालको के लिए अ य त रोचक पुस्तक लिखने वालो मे प नम ाप्रसाद मिश्र— कलयुग के सतयुगीसपूत भारतीय वीरो का आ म याग भारत की वीरागनाएँ भारत के वीर बालक आदि—स्वर्ण सहोद — वीर बालक बादल हकीकत राय—बाबूलाल भागव— वीर गाथाए हरिवश प्रसाद दुबे— आजाद भारत कामताप्रसाद गुरु— ा याक्षरी ज हूरबख्श— पहेली बुझौवल आदि हैं । इनकी रचनाओ को देखने से प्रतीत होता है कि त कालीन भारत की राजनीतिक स्थिति से छटकारा पाने के लि छोटे बालको मे भी देश प्रम तथा याग की भावना भरने की प्रवृत्ति प्रार भ हो गयी थी । मिश्र ब धु कार्यालय स प्रकाशित इन पुस्तको म जानवरो तथा पक्षियो की जा कहानिया बालको का ब हुत रुचती । ला खो विद्यार्थियो न इनक द्वारा हि दी सीखी है । क्याकि प ु पक्षियो क क्रिया कलाप को बालक प्रतिदिन देखता है और उसे वह स हज रूप से ग्रहण क लेता है । तब उसे सीखने मे भी आसानी रहती है ।

इ ही दिनो कामताप्रसाद गुरु न हि दी मे याकरण की पुस्तक लिखी जिसका मह व बालको के लिए आज भी है । इसके अतिरि क्त हि दुस्तानी शिष्टाचार पद्य पु पाली सुदशन आदि बालोपयोगी पुस्तक भी लिखी । इनके यक्ति व एव कृति व से अनेक त कालीन लेखक प्रभावित हुए तथा बाल साहित्य लिखने के लिए प्ररित एव उ साहित हु ।

इतना सब होने पर भी हि दी साहि य मे बाल साहि य का स्थान इस युग मे नग य ही रहा । प्रारम्भिक अवस्था मे होने के कारण यह लगभग

नया ही था। परिस्थिति पर परा और साम र्य इस साहि य के अनुकूल नही थे। अतएव उतनी उ च कोटि का और उतनी विविधतापूर्ण बाल साहि य हि दी मे नही लिखा जा सका। वह हि दी वालो की सतकता एव जागरूकता का द्योतक है। फिर भी समयानुकूल इस समय जो भी बाल साहि य लिखा गया उसका अपना मह व है। भविष्य के लिए इस यग के साहि य न ठास आधार तैयार किए है तथा विकास की ति देने मे योग दिए है।

(क) द्विवेदी कालीन एवं पूव स्वात य कालीन बाल साहि य के विकसित रूप—

(1) **बाल उप यास**—हि दी साहित्य के क्षत्र मे बाल उप यास लिखने की ओर द्विवेदी यग के आर भ मे साहि यकारो का यान नही गया। छोटी छोटी कहानियो के मा यम से बालको मे नैतिक एव चारित्रिक गुणो का विकास ही इस यग को मुख्य उद्देश्य रहा। साथ ही भाषा की शुद्धता एव याकरण के नियमो को ध्यान मे रखकर साहि य रचना होती रही। इस यग मे विद्यालयो तथा कालेजो मे पढाई जान वाली हि दी की पुस्तको का अभाव था तो भला उप यास लिखने की ओर किसी का यान क्यो जाता–वह भी बालको के लिए उप यास लिखना तो लोगो को कदापि स्वीकार नही था क्योकि उप यास को केवल मनोरजन का साधन माना गया अत इसे उच्च साहि य मे स्थान नही दिया गया। इन दिना अग्रजी भाषा के ज्ञाता अग्र जी के जासूसी उप यासो मे रम रहे तो सस्कृतज्ञ रामायण महाभारत पुराणो को छोडकर कुछ भी पढन को तयार नही थ। उनके लिए तो ज्ञान का सारा भ डार सस्कृत के प्राचीन ग्र था मे ही निन्ति था। अत उप यास के पठन पाठन की ओर सुधाजनो की रुचि नही रह गई।

फिर भी इन दिना अग्रजी बाल साहित्य का प्रचर भण्डार उप ल ध होने के कारण बाल साहि यकारो ने हि दी मे उनका अनुवाद करने का का साहस दिखाया। फलस्वरूप राबि सन क्रसा (सन् 1719) जो विश्व बाल साहि य का प ला उप यास है टाम काका की कुटिया टेजर आइलैण्ड (स्टिव सन) एलिस इन द वडरलै ड (लेविस करोल—सन् 1865) सिंदबाद की जहाजी यात्राएँ गुलिवर की कहानिया आदि का हि दी मे अनुवाद हुआ। वस्तुत इनका अनुवाद बालका के लिए नही हुआ किन्तु बालोपयोगी होने के कारण ये बालको द्वारा पढ़ गए और उनका मनोरजन करने मे सक्षम रह। एलिस इन द वडरल ड तो बाल साहि य की अमू य कृति है। रवी द्रनाथ टगोर बकिमच द्र चटर्जी के बगला उप यासो का हि दी

रूपा तर बालको के उप यास की पूर्ति करते रहे। अ ी बाबा चालीस चोर राबिन हुड आदि ल बी कहानियाँ भी इस कमी को दूर करने का पयास करती रही।

इस युग म बा नको के लिए मौलिक उप यास लि ने वा साहस कृ ण च द्र शर्मा ने किया। आदमी का ब चा धारावाहि क रूप मे सरस्वती के जुलाई सन् 1946 के क से प्रकाशित हुआ जिसकी सराहना कम नही हुई। बजनाथ के डया का उप यास का न की क तूत (1933) मौलिक उप यास है जो बालको को पर्याप्त मनोर जन प्रदान करती हे। पौराणिक उप यास अधिक मात्रा मे प्रकाशित हुए जिनमे लक्ष्मण प्रसाद भारद्वाज कृत बाल यद्रथ वध बाल महाभारत बाल शकु तला सावित्री स यव न आदि पुस्तक उ लेखनीय है। ये विभि न कथाआ के बा न सस्करण मात्र हैं। इ ही की महारानी पद्मिनी ऐतिहासिक उप यास है।

लेखको का यह विचार कि उप यास मे कहानी ही की तरह कथा त व रहता तो है कि तु उप यास इतना बडा और इतना परिपूण होता है कि बच्चो की अविकसित चेतना उसके बिखरे हुए सूत्रो मे स ब ध स्थापित नही कर पाती। परिणामत ब चे उप यासो मे उतने नही रम सकते जितनी कहा नियो मे बाल उपन्यास लिखने की प्ररणा नही दे सका। फिर भी छिटपुट रूप से कुछ बाल उप यास प्रकाश मे आए। दोस्त की दुनहिन सन् 1944 (देवी दयाल कुलश्र ठ) छ म तर की पोथी गजी खोपडी 1944 (नर्मदाप्रसाद मिश्र) सेवासदन गोदा न (प्रमच द) झासी की रानी व दावन लाल वर्मा) के सक्षिप्त करके ब चो के पढने के यो य कर दिया गया। इ हे ब चो के लिए कम दसवी यारहवी कक्षा तक के विद्यार्थियो के िए अधिक कह सकत हैं।

(2) **बाल कहानी**—प्रथम अध्याय मे बाल कहानी के सम्ब ध मे जिन अपेक्षाओ की चर्चा हुई है उनपर विचार करत हुए जब हम उप ल ध बाल कहानी साहित्य को दृष्टिपथ मे रखते है तो निश्चित ही एकदम प्रारभ से हमारा ध्यान आचाय महावीर प्रसाद द्विवेदी रचित बा न कहानियो पर पहुच जाता है। उ होने लगभग सभी बातो पर यान रखते हु सरस्वती के माध्यम से बालको के समक्ष भारतीय प्राचीन साहि य की पौराणिक एव धार्मिक कथाओ को छोटी छोटी कहानियो के रूप मे प्रस्तुत किया। इनकी प्ररणा से अनेक लेखकगण भी महाभारत एव रामायण का कहानियो को हि दी मे छोटी एव सरल भाषा मे लिखने का प्रयास करत रहे। सरस्वती

पत्रिका उन दिनो कितनी मह वपूर्ण मानी जाती थी इसका सकेत हमे इस कथन से मिलता है कि हम लोगा की छात्रावस्था मे हिन्दी साहित्य की उच्च शिक्षा दुलभ थी। सरस्वती से ही मैने साहित्य का ज्ञान प्राप्त किया। सबसे पहली कहानी जिसने मुझको मु ध किया व स्वग की झलक है। यह कहानी सन् 1903 4 मे निकली थी। सन् 1911 मे गुजराती भाषा मे श्री आन द शकर बापूभाई ध्रुव ने प्राथमिक पाठशालाओ के ब चो को नीति विषयक शिक्षा देने के लिए बाल नीति कथा लिखी। हिन्दी मे इस प्रकार की नीति तथा सदाचार पर नये ढग से लिखी पुस्तको का अभाव था। सकी उपयोगिता समझते हुए श्री बदरीनाथ भटट ने प्रमचद के स पादक व मे सन् 1925 मे इस पुस्तक का हि दी अनुवाद प्रकाशित कराया।

शिशु बालक बाल सखा मे बालको की रुचि एव भावनाओ को यान मे रखकर छोटी छोटी शिक्षाप्रद कहानियाँ प्रकाशित की गई जिनम परियो की क पना प्रधान कहानियो से लेकर ऐतिहासिक पौराणिक कहानिय भी थी। शालग्राम शर्मा की कहानी डिकविटिंगटन बाल सखा के जुलाई 1921 के अक मे प्रकाशित हुई तो सहराब रुस्तम ऐतिहासिक कहानी इसी पत्रिका के फरवरी 1932 के अक मे। डा रामकुमार वर्मा ने ब चो के लिए बहुत थोडा लिखा कि तु जो भी लिखा वह मह वपूर्ण है। सन् 1932 मे शिशु शिक्षा नाम से पुस्तक प्रकाशित का जिसमे बालको के लिए कविताए कहानिया थी। सुदशनाचार्य ने शिशु मे अनूठी कहानियाँ नानी की कहानी बच्चू का याह आदि लिखा।

अभी तक जो कहानिया लिखी गई उनका विकास प्रमचद की कहानियो म देखने को मिलता है। प्रमच द ने बच्चो के लिए नही लिखा कि तु उनकी कहानियो के पात्र जीवित एव बालको के आस पास के यक्ति होते थे अत बालको को उनके पात्रो से तादा मय की अनुभूति हुई। फलस्वरूप उ होने प्रेमच द की कहानियो को अपनाया। नमक का दरोगा कफन दो बलो की कहानी दो बहन बड भाई साहब पच परमश्वर परीक्षा प्रर ा ईदगाह आदि अनेकानेक कहानियो को पढकर बालक आनन्दित होने लगे। पौराणिक एव धार्मिक नीति कथाओ को पढकर बालक ऊब उठ थे। उन कहानियो की उपदेशा मक वृत्ति अब उ हे बोझिल लगने ल ी थी फलस्वरप प्रमच द की कहानियाँ उ हे अधिक रोचक अपनी मनोवृत्ति के अनुकूल एव अपने जीवन से तादा म्य स्थापित करने वाली लगी।

कहानी ब ।। ण न शौक चरित्र प्रधान हो गई। इनकी कहानियो मे
। ।। । । बडे ाई सा ब बाल मनोविज्ञान के अनुकूल है। प्ररणा तो
बाल मम माओ भो लेकर मनोवैज्ञानिक आधार पर लिखी पहली कहानी है
जो पन्नी प्र क शित हुई। ईदगाह मे बालको की मानसिक प्रवृत्तियो का
बडी बारीकी स चित्रण है। पात्रो के माध्यम से बालको की ललक मन की
इच्छाओ और आपसी ईर्षा द्वेष का अच्छा चित्रण है। इस आदर्शवादी
कहानी से बालक अपने जीवन मे युग युगो तक शिक्षा और प्ररणा ग्रहण कर
सकते है।

वस्तुत ब चो के लिए कहानी लिखना सरल काय नही है। ब चो
के बौद्धिक स्तर को यान मे रखकर ही कहानी लिखनी चाहिए। प्रमच द
स दिशा मे पू ी तरह सचेत रहे। बाल रुचि एव बाल मनोवृ ति को ध्यान
मे रखकर उ होने मनमो क (1926) कुत्त की कहानी (सन् 1936)
जगल की कहानियाँ दुर्गादास आदि लिखी। इसी पर परा मे बालको पर
मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालने वाली कौशिक की कहानी पन्नाधाय सुदशन
की हारकी जीत मह वपूर्ण कहानी सिद्ध हुई।

काशी से सन् 1924 मे उ साह पत्रिका के प्रकाशन के साथ प्राचीन
इतिहास और महाका यो की आधारभूमि पर लिखी गई साहसिक बाल
कथाएँ प्रकाशित हुई। श्रीराम शर्मा ने बालक के लिए शिकार की कहानिया
लिखो जो अभी तक की लिखी कहानियो की लीक से अलग हटकर है। इससे
बालको मे साहसिक कहानियाँ पढने के लिए रुचि उ पन्न हुई। अभी तक
जितनी कहानियाँ बालको के लिए लिखी गई वे विभिन्न पत्र पत्रिकाओ के
माध्यम से बालको तक पहुची। पहली बार बालको की कहानियो को
पुस्तकाकार प्रकाशित करने का श्रेय जहूर बख्श को है जि होने कई बाल
कहानियो को मजेदार कहानियाँ के अ तगत सन् 1922 मे प्रकाशित कराया।

इस युग की बाल कहानियो का स्वर मुख्य रूप से साहसिक नीति
परक उपदेशा मक क पना मक तथा मनोरजक रहा।

काला तर मे इस युग की हि दी कहानी की स्थिति पहले की अपेक्षा
सुधरने लगी। इनम पर्याप्त नवीनता तथा मौलिकता आने लगी। इसका
कारण है लेखको मे बाल मनोविज्ञान की बढ़ती हुई जानकारी। प्रमच द का
नाम इस क्षत्र मे सर्वोपरि है। इनकी कहानियो के पात्र आस पास के यक्ति
जानवर तथा पक्षी होते थे। दो बलो की कहानी कुत्ते की कहानी
तोताराम आदि कहानियाँ पशु तथा पक्षी को पात्र बनाकर लिखी गई तथा

पूस की रात कफन ईदगाह बडे भैया नमक का दरोगा आदि कहानिया मनोवज्ञानिक धरातल पर लिखी गई। पौराणिक और धार्मिक नीति कथाओ की सीधी उपदेश वृत्ति से मुक्त होकर ब चा के लिए बाल समस्याओ को लेकर मनोवज्ञानिक आधार पर लिखी पहली कहानी प्ररणा है। जगत की कहानियाँ मनमोदक नमक का दरो ा पच परमश्वर परीक्षा आदि कहानियाँ (प्रमचद) बाल मनोवृत्ति तथा रुचि को यान मे रखकर लिखी गई हैं। हि दी बाल कहानियो के पारम्परिक विकास को प्रमच द ने ही गति दी है। कु ते की कहानी पर चि ड्रन फि म सोसायटी ने फि म भी बन ई है।

सुभद्राकुमारी चौहान को बालको के मनोविज्ञान का अ छा ज्ञान था। क यित्री हाते हुए भी इनका झकाव सन् 1932 33 से सन् 1941 42 तक कहानियो की ओर हुआ। हीग वाला तीन बच्चे किस्मत बि नो की राखी आदि कहानियो से पता चलता है कि बाल स्वभाव के चित्रण मे सुभद्रा ी को अ छी सफलता मिलो है। इसमे बाल भावनाओ का सु दर चित्रण परिलक्षित होता है।

हीगवाला कहानी मे बालको के मनोविज्ञान का सजीव चित्रण है तथा हीगवाले के मा यम स भाई चारे के वातावरण को चित्रित किया गया है। तीन ब चे मे अपनी क्यारी के फलो को सबसे सु दर मानने की जिद बाल सुल र ही है। ब चो का भोलापन किस्मत कहानी की मुन्नी मे साकार हो उठता है तो बि नो की राखी बाँधने की बाल लालसा स्वाभाविकता से पूर्ण है।

सियारामशरण गुप्त की कहानी काका मे बाल मनोविज्ञान का सजीव चित्रण है। सरल और स्वाभाविक चित्रो मे बालक की जिज्ञासा आशका और मनोभावो का सही चित्रण इसमे मिलता है। जयशकर प्रसाद की कहानी मधुमा इसी कोटि मे आती है।

त कालीन पत्र पत्रिकाए इन कहानियो को समय समय पर प्रकाशित करती रही और पूर्व स्वातत्र्योत्तर युग मे बाल कहानी की दिशा मे निर तर अभिवृद्धि होती रही कि तु उसमे वह गति नही आई जो उसे उन्नति के शिखर पर पहँचा सके। इस दिशा म प्रयोग का निता त अभाव था। भारत मे दो दशा के लोग बालको की कहानिया लिखते थे—लोगो के अनुरोध करने पर धार्मिक पौराणिक ऐतिहासिक कहानिया लिख देते थे और किसी घटना

या प्रसग से प्ररित होकर कभी कभी बाल कहानिया लिख देते थे। ये प्र क और प्रभावशाला कहानी होती थी। महावीर प्रसाद द्विवेदा कौशि क च द्रधर शर्मा गुनेरी जने द्रकुमार चतरसन शास्त्री ही ऐसे थे। खटपट शर्मा न बी नाक अदल बदल (गणेश मिश्र) निठ न राम वी कहानिया (पं पूर्णान द वर्मा) देखा और हँसो सवा तीस मार खाँ अक बे । खा (बजनाथ केडिया) बूढिया बुढिया किसे खाऊँ चटक मटक की गाडी पकड पँछ कटे को (रामनरे त्रिपाठी) आदि कहानियाँ ब चा को पर्याप्त मनोरजन प्रदान करती रही। इति ासो की कहानिया बलभदर (आन द कुमार) मीठी मीठी हानिया चाखी कहा या (बजनाथ केडिया) तीन सुनहले बा तान मेमने (रामननेश त्रिपाठी) भी बा को क यो य अ छी पुस्तक ह। राक्षसो प या की कथाओ पर आधारित पुस्तक भी इस युग मे लिखी गई। जादू की कहानिया राक्षसो की कहानियाँ (आन दकुमार) परी देश सोने का हस जादू का हम सोने का तो । (ामच द्र प्रताप) आदि अनेक का पनिक कहानिया ब चो की कहानियो की कमी पूरी करती रही। भूपनारायण ीक्षित रामलोचन शरण सुदर्शन सुदशनाचाय विद्या भूपण यथित हृ य शभु याल सक्सेना आि लेखको ने भी अ छी कह निया लिखी है।

सरस्वती सन् 1946 के अक्टूबर अक मे रामशरण शर्मा की कहानी परी देश की रानी प्रकाशित हुई जिसे ब चो ने बहुत पस द किया। बदरीनाथ भटट की कहानी फलवती अगूठी का मुकदमा राजकुमार सागर बच्चो का हितोपदेश तथा सुदशन की हार की जीत भी स र पुस्तक ह।

बाल साहि य के अ तगत सन् 1941 मे बा कथा का प्रकाशन हुआ जिसकी लेखिका कमला बाई किबे है।

विज्ञान कथा लिखने का भी शुभारभ इस युग म हो चुका था और पहली विज्ञान कथा बिजली के चम कार विद्याभूपण अग्रवाल ने प्रकाशित कराई। इस स ब ध मे कहा गया कि— विज्ञान की कुछ करामातो को भी सीधे सादे रूप मे कहानियो की तरह लिखकर बच्चो के या छोटे दर्जे क विद्यार्थियो के पढने के यो य कर दिया गया। ऐसी पस्तको की स या अधिक होना चाहिए कि तु हम लागो के दुर्भा य से है कमी। विज्ञान कथा का चर्चा अगले अध्याय मे विस्तारपूवक होगी।

(3) **बाल नाटक**—भारते दु के अवसान के बाद हि दी मे नाटको का अभाव हो गया। इसका कारण य था कि त कालीन लेखको मे नाटक के सूक्ष्म नियमो का ज्ञ न नही था दूसरे पारसी थियेटर कम्पनी के कारण नाटको मे हास्य त व एव भोडी नकल करने की प्रवृत्ति का विस्तार होने लगा था। ऐसी वि षम प रि स्थति मे बालको के लिए नाटक लिखने की क पना भी कोई सार्थ यक र न ी कर सकता था। द्विवेदी जी की लेखनी साहि य के सभी क्षत्रो को सीचती रही फल वरूप उनकी छत्र छाया म रहने वाले कतिपय लखको के यास से बाल नाटक की अवरुद्ध परम्परा अनेक यव धानो के ब द इस युग मे फिर से अपना स्थान बनाने मे सफल हो सकी। इस दिशा मे अग्रजी तथा बगला नाटको के हि दी मे अनुवाद भी हुए। सन् 1924 मे त कालीन माधुरी के स पादक श्री रूप नारायण पाडेय ने रवी द्र नाथ ठाकुर के नाटको का हि दी अनुवाद अचलायतन के नाम से किया। इसम वर्णित सभी नाटक मनोरजक होने के साथ साथ शिक्षाप्रद भी है तथा छुआ छूत मानने वाले प्राचीन पर पराओ के अध पुजारी वर्गभेद के कायल समाज पर करारा य य है और उसके दु यवहारो का परिणाम भी दिखाया गया है। अभिनय की दृ ि से भी नाटक सुविधाजनक है। इससे पूव मिश्र ब धु प्रकाशन—जबलपुर से नम दा प्रसाद मिश्र द्वारा सम्पादित सरल नाटक माला सन् 1917 मे प्रकाशित हुई। इसके सभी नाटको मे मनोरजन का स्थान तो पर्या त मात्रा मे था कि तु उनमे पाठशाला के दृश्यो और शिक्षको की हसी उडाने के अति रि क्त ब चो के विकास के लिए कोई स्थान वहाँ नही था फिर भी उस समय बाल न टको के अभाव के कारण इस प्रकार की नाटकमाला के प्रकाशन का प्रय म प्रशसनीय है। इसके अतिरिक्त अभी तक छिट पुट नाटक ब चो के लिए विभिन्न पत्रिकाओ मे छपते रहे कि तु एक स्थान पर चौवालीस नाटको का सग्रह पहली बा हुआ जो एक अनूठा प्रयास था। यह नाटकमाला सग्र रूप मे पहली बार नाटक के रूप में प्रस्तुत हुआ जो ब चो के लिए नाटक लेकर आया। इसने द्वितीय महायुद्ध के पहले बाल नाटक की कमी का पूरा किया। सन् 1931 मे सात अ य नाटको को लेकर यह पुस्तक सग्र रूप मे दूसरी बार प्रकाशित हुई। इसी समय माच सन् 1930 मे बाल सखा मे रामानुजलाल श्रीवास्तव का नाटक दयालु लडका प्रकाशित हुआ जो बाल मनोवृत्ति के अनुकूल सफल नाटक की कोटि मे रखने योग्य है। गोवि द ब लभ पत मैथिलीशरण गुप्त जसे विद्वानो ने सु चिपूण नाटको की सृष्टि की जिसमे कोरा उपदेश न होकर साहि यिकता

या प्रसग से प्ररित होकर कभी कभी बाल कहानिया लिख दत थे । ये प्र क और प्रभावशाला कहानी होती थी । महाबीर प्रसाद द्विवेदा कोशिक च द्रधर शर्मा गुनेरी जने द्रकुमार चतुरसेन शास्त्री ही ऐसे थे । खटपट शर्मा न बी नाक अ ल बदन (गणश मिश्र) निठ न राम वी कहानियाँ (पां पूर्णान द वर्मा) देखो और हँसो सवा तीस मा खाँ अक बे । खा (बजनाथ कडिया) बुढिया बुल्यिा किसे खाऊ चटक मटक की गा ी पकड पँछ कटे को (रामनरे न त्रिपाठी) आदि क ानिया ब चो को पर्याप्त मनोरजन प्रदान करती रही । ति ासो की कहानिया बनभदर (आन द कुमार) मीठी मीठी कहानिया चाखी क ानिया (बजनाथ केडिया) तीन सुाहले बान तीन मेमने (रामननेश त्रिपाठी) भी बा को क यो य अ छी पुस्तक ह । ाक्षसो पर यो की कथाओ पर आधारित पुस्तक भी इस युग मे लिखी गई । जादू की कहानिया राक्षासो की कहानियाँ (आन दकुमार) परी देश सोन का हस जादू का हस सोने का तो ा (ामच द्र प्रताप) आदि अनेक का पनिक कहानिया ब चो की कहानियो की कमी पूरी करती रही । भूपनारायण ीक्षित राम ोचन शरण सुदर्शन सुदर्शनाचार्य विद्या भूपण यथित हृ य शभ याल सक्सेना आ लेखको ने भी अ छी कह निया लिखी हैं ।

सरस्वती सन् 1946 के अक्टूबर अक मे रामशरण शर्मा की कहानी परी देश की रानी प्रकाशित हुई जिसे ब चो ने बहुत पस द किया । बदरीनाथ भटट की कहानी फलवती अगूठी का मुकदमा राजकुमार सागर ब चो का हितोपदेश तथा सुदशन की हार की जीत भी स दर पुस्तक ह ।

बाल साहित्य के अ तर्गत सन् 1941 मे बा न कथा का प्रकाशन हुआ जिसकी लेखिका कम ना बाई किबे हैं ।

विज्ञान कथा लिखने का भी शुभारभ इस युग मे हो चका था औ पहली विज्ञान कथा बिजली के चम कार विद्याभूपण अग्रवाल ने प्रकाशित कराई । इस स ब ध मे कहा गया कि— विज्ञान की कुछ करामातो को भी सीध सादे रूप मे कहानियो की तरह लिखकर ब चो के या छोटे दज के विद्यार्थियो के पढने के यो य कर दिया गया । ऐसी पुस्तको की सख्या अधिक ाना चाहिए कि तु हम ोगो के दुर्भा य से है कमी । िज्ञान कथा की चर्चा अगले अ याय मे विस्तारपूवक होगी ।

(3) **बाल नाटक**—भारतेन्दु के अवसान के बाद हिन्दी मे नाटको का अभाव हो गया। इसका कारण य था कि तत्कालीन लेखको मे नाटक के सूक्ष्म नियमो का ज्ञान नही था दूसरे पारसी थियेटर कपनी के कारण नाटको मे हास्य तत्व एव भोडी नकल करने की प्रवृत्ति का विस्तार होने लगा था। ऐसी विषम परिस्थिति मे बालको के लिए नाटक लिखने की कल्पना भी कोई सार्थक रूप न कर सकता था। द्विवेदी जी की लेखनी साहित्य के सभी क्षेत्रो को सीचती रही फलस्वरूप उनकी छत्र छाया मे रहने वाले कतिपय लेखको के प्रयास से बाल नाटक की अवरुद्ध परम्परा अनेक व्यवधानो के बाद इस युग मे फिर से अपना स्थान बनाने मे सफल हो सकी। इस दिशा मे अग्रजी तथा बगला नाटको के हिन्दी मे अनुवाद भी हुए। सन् 1924 मे तत्कालीन माधुरी के सपादक श्री रूप नारायण पाडेय ने रवीन्द्र नाथ ठाकुर के नाटको का हिन्दी अनुवाद अचलायतन के नाम से किया। इसम वर्णित सभी नाटक मनोरजक होने के साथ साथ शिक्षाप्रद भी है तथा छुआ छूत मानने वाले प्राचीन परपराओ के अध पुजारी वर्गभेद के कायल समाज पर करारा व्यग्य है और उसके दुर्व्यवहारो का परिणाम भी दिखाया गया है। अभिनय की दृष्टि से भी नाटक सुविधाजनक है। इससे पूर्व मिश्र बन्धु प्रकाशन—जबलपुर से नर्मदा प्रसाद मिश्र द्वारा सपादित सरल नाटक माला सन् 1917 मे प्रकाशित हुई। इसके सभी नाटको मे मनोरजन का स्थान तो पर्याप्त मात्रा मे था किन्तु उनमे पाठशाला के दृश्यो और शिक्षको की हसी उडाने के अतिरिक्त बच्चो के विकास के लिए कोई स्थान वहा नही था फिर भी उस समय बाल नाटको के अभाव के कारण इस प्रकार की नाटकमाला के प्रकाशन का प्रयास प्रशसनीय है। इसके अतिरिक्त अभी तक छिट पुट नाटक बच्चो के लिए विभिन्न पत्रिकाओ मे छपते रहे किन्तु एक स्थान पर चौबालीस नाटको का सग्रह पहली बार हुआ जो एक अनूठा प्रयास था। यह नाटकमाला सग्र रूप मे पहली बार नाटक के रूप मे प्रस्तुत हुआ जो बच्चो के लिए नाटक लेकर आया। इसने द्वितीय महायुद्ध के पहले बाल नाटक की कमी को पूरा किया। सन् 1931 मे सात अन्य नाटको को लेकर यह पुस्तक सग्र रूप मे दूसरी बार प्रकाशित हुई। इसी समय मार्च सन् 1930 मे बाल सखा मे रामानुजलाल श्रीवास्तव का नाटक दयालु लडका प्रकाशित हुआ जो बाल मनोवृत्ति के अनुकूल सफल नाटक की कोटि मे रखने योग्य है। गोविन्द बल्लभ पत मैथिलीशरण गुप्त जैसे विद्वानो ने सुरुचिपूर्ण नाटको की सृष्टि की जिसमे कोरा उपदेश न होकर साहित्यिकता

एव कला मकता भी है। इन ना को मे पौराणिक युग के वातावरण की भी रक्षा की गई है।

ऐतिहासिक नाटको का भडार लेकर जयशकर प्रसाद आए जिनके कुछ नाटक च द्रगुप्त (1931) स्कद गुप्त (1928) अजात् शत्रु (सन् 1922) का अभिनय बालक बडी आसानी से कर सकते थे। प्रसाद ने अपने नाटको के मा यम से ऐतिहासिक त यो की रक्षा करते हुए सास्कृतिक वातावरण उपस्थित क ने मे अभूतपूव सफलता प्राप्त की है। त कालीन राजनीतिक अराजकता के युग मे प्रसाद के नाटको ने जनता मे नई चेतना का मत्र फका।

त कालीन समस्या के आधार पर सा प्रदायिक एव धार्मिक भेदभाव से दूर रहने की शिक्षा देने के उद्दश्य से प्रसिद्ध नाटककार सठ गोि ास ने ईद और होली की रचना की। इस नाटक मे ब चो का भोलापन भी चित्रित किया गया है। धम के अध ख ाबखश का ह य परिवतन स नाटक मे ब चो ने ही किया क्योकि ब चे मैली आ माओ को पवित्र करने की भगवान् की देन है।

आचाय चतुरसेन ने पौराणिक नाटक गाधारी की रचना की जो महाभारत की कथाभूमि पर आधारित थी। यह नवी तथा दसवी कक्षा क छात्रो के खेलने यो य नाटक है। इस युग के नाटको की विशेषता यह है कि वे विद्यालयो मे खेले जाने के लिए ही लिखे जाते थे। बालका की चि त अनुकूल न होने के कारण वे न तो चा से इन नाटको को प ने न आ न अभिनय करने की उ सुकता ही उनमे रहती थी। सके ातिरिक्त ा युग मे यह पर परा थी कि विद्यालयो मे वार्षिको सव के अवस प ििा न कायक्रम के अतिरिक्त नाटक भी खेले जाते थे। इस कार्य के लि न ो के लिए लिखे नाटको को काट छाटकर ब चो द्वारा मचित करा ि या ज ता था। इसमे वह स्वाभाविकता नही आ पाती थी क्योकि उन नाटको म ब चो की रुचि मनोवृत्ति उपादेयता अभिनेयता और भागीदा ी को को मह व नही दिया जाता था जबकि सिद्धा नत इन बातो का मह व स ा स्वीकार किया गया है। विड बना तो यह है कि स स स्या को समझते हुए भी इस युग मे हि दी मे मौलिक बाल नाटको का अभाव ही रहा।

इस समय शक्सपीयर के अग्रजी नाटको का हिन्दी अनुवाद प्रकाश मे आ चुका था तो बगला नाटककार रवी द्रनाथ टगोर द्विजे द्रला ा

राय के नाटको का भी हि दी मे सफल अनुवाद हो चुका था। रवी बाबू का नाटक डाक घर 1928 से पहले अनूदित हो चुका था।

सच पूछा जाय तो इन नाटको को मचित करना एक कठिन काय था। इसके लिए मच की विशेष यवस्था पात्रो की उचित वेशभूषा लम्बे ल बे सवाद रटने की मजबूरी नाटक खेलने का अथक प्रयास परदा उठाने गिराने का झझट आदि अनेक समस्याए थी। ये बाल नाटक के दोष ही कहे जायगे। बाल अभिनय की अपनी एक सीमा होती है। उसी सीमा के अ दर बाल नाटको का लेखन होना चाहिए और उसमे ऐसा प्रावधान हो कि बालक अपनी प्रस द और इ छानुसार अभिनय करने नाचने गाने के लिए स्वत त्र रहे कि तु इस युग के नाटककारो ने इस बात पर ध्यान न ी दिया।

(4) **बाल गीत कविता**—पिछले अ याय के विवरण से पता चलता है कि हि दी मे बा न गीत की पर परा अधिक प्राचीन नही है। हि दी बाल गीत के आदि क वि श्रीधर पाठक की रचनाए सन् 1900 के बाद ही प्रकाश मे अधिक आई। यद्यपि गीत निखने की पर परा तो अति प्राचीनकाल से चली आ रही है जबकि मानव समाज मे कविता की तरह बाल गात भी रचे सुने जाते ह होगे। उनकी कोई सचित निधि हमारे पास नही है कि तु भाषा ज्ञान से रहित ब चो को लारिया सुनाने की प्रथा ससार मे सब देशो मे अ य त प्राचीन काल से रही है। ब चो को भाषा ज्ञान कराने की दष्टि से ये बाल गीत बडे उपयोगी होते है। कि तु बालको को कोमल अनुभूतियो के अनुरूप गीतो का विषय चुनने का काय आधुनिक युग म सबस पहले श्रीधर पाठक न किया। अग्रजी के प्रभाव के कारण इ होने अनेक बालोपयोगा अग्रजी कविताओ के हि दी मे अनुवाद किए तथा भारतीय वातावरण के अनुकूल अनेक कविताए भी लिखी। श्री लोचनप्रसाद भी इसी पर परा के कवि माने ात है।

दूसरी ओर वे बा न गीतकार हुए जि होने ब चो मे रा टीयता और भारत के प्राचीन गौरव के भाव जगाने के प्रयास किए जिनमे कामता प्रसाद गुरु म नन द्विवेदी गजपुरी सोहन ा न द्विवेदी प्रमुख है। अयो याप्रसाद सिह हरिऔध के गीतो की प्रमुख विशेपता यह है कि ये प्राकृतिक उपकरणो के मा यम से बालको की अनुभूतियो को जगाता है तो दूसरी ओर कामता प्रसाद गुरु की कविताएँ ब चो मे नतिक भावनाओ का सचार करने वाली है।

रा ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने बालको के लिए अनेक रा ट्रीय गीत लिखे साथ ही हितोपदेश तथा पचतन्त्र की क ानियो पर आधारित गीत कथाए भी लिखी।

इसी पर परा मे रामनरेश त्रिपाठी ने भारतीय जीवन त था सस्कृति से परिचित कराने वाली कविताए लिखी। सरस्वती म सन् 1911 मे पुस्तक कविता बालको को पुस्तक बताने के लिए लिखा तथा उनकी विनती गीत भी बडी प्रसिद्ध हुई।

अन्य गीतकार विभ सोहनलाल द्विवेदी आदि की चर्चा पिछले पृष्ठो मे हो चुकी है।

स्वर्ण सहोदर ने भी अनेक बाल गीत लिखे कि तु चगन मगन गिनती के गीत आदि कुछ ही पुस्तक प्रकाशित हो सकी है। चगन मगन के सारे गीत मात्रा रहित श दो मे ही लिखे गए। इनके अतिरिक्त प सुदशनाचाय लोचनप्रसाद प ड्य प सुखराम चौबे गुणाकार मायन लाल चतुवदी आदि प्रमुख बाल गीतकार हुए। इनकी कविताए स्फुट रूप से तथा पुस्तकाकार प्रकाशित होती रही।

अब बालको के लिए गीतो की रचना बहुतायत से होने लगी परिणाम स्वरूप विषयो के क्षेत्र भी बढ गए। शिक्षा और उपदेश से हटकर भी बाल गीत लिखे जाने लगे। रा टीय भावना गीतो के मा यम से अधिक प्रखर रूप मे उभरकर सामने आई। सोहन द्विवे ी शकु तला सिरोठिया आरसी प्रसाद सिह सुभद्राकुमारी चौहान रमापति शुक्ल त्रिभुवन नाथ रामेश्वर दयाल दुबे सुमित्रा कुमारी सि हा रामधारीसिं दिनकर आदि प्रमुख कविगण अपनी अपनी रचनाओ के माध्यम से बालको मे विभिन्न गुणो को विकसित करने का कार्य करने लगे। इन सबो मे सोहनलाल द्विवेदी का योग दान प्रशसनीय है जबकि उ होने अपार बाल साहि य लिखा और अपनी रचनाओ को युगानुरूप बनाकर नई दिशा नया रूप नया भाव देने का प्रयास किया। इसके लिए उ हे अनेक प्रयोग भी करने पड। इसीलिए कहा है कि आपने बाल साहि य को उसी प्रकार सवारा है जिस प्रकार महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हि दी के खडी बोली साहि य को सवारा यह उनकी महानता है कि बाल साहि य के भडार को उ होने अमू य मोतियो से भरा। बाल साहि य सदा उनका ऋणी रहेगा तथा उनसे प्ररणा ग्रहण करता रहेगा।

आरसी प्रसाद सिंह ने भारत की गरिमा का वणन कई उदाहरणो द्वारा प्रस्तुत किया है। सुभद्राकुमारी चौ ान ने कविताए तथा कहानिया समान रूप से लिखी। मुख्य रूप से कवयित्री होने के कारण इनकी लेखनी बडो की कविता पर भी मधान ा मे चली। रा प्रम की भावनाओ मे वीरो का कथा ो बमन झासी की रानी की रचना की जिसमे जोश वीरता के भाव स्प ्रूप से दिखाई देते । नका ो वाल कविताए सग्रह कोयल तथा मभा का खेल प्रकाश मे आया जिनमे पर परा ात परिपाटी से हटाकर बाल मनोविज्ञान का बडा ही स्वाभाविक वणन किया गया है। अ ा की पाठशाला मे इसका उ ह उ ा रण ेखने को मिलता है। ब ा प ने ि न पाठशाला जाता है तब उ सा और उ सुकता से भरा रहता है। व ा से आ े पर मा से ब ा ोने का अवसर ाथ से गवाना नही चा ता। न ख विजय ामु ी ाना कु ी पता मुन्ना का यार क ब का पेड आदि इनकी कविताओ मे बाल सुलभ अनेक स्वाभाविक चित्र मिलते । मभा क खेल उन देश भक्त ब चो का खेल है जो गाधी ने ू और सरोजिनी नायड के प्रतिरूप हैं किन्तु इस अभिनय मे भी बालपन उभर आया है।

हरिकृ ा प्रेमी की कविता खिलौना भी बाल मनोवृत्ति का सु दर उ ाहरण प्रस्तुत करता है। देशप्रम का गौरव वर्णित करने वाले बालकृ ण शर्मा नवीन की ओजस्विनी कृति ि ुस्तान मारा है रा ोय भावधारा की लोकप्रिय कविता है। रमापति शुक्ल की उ ादेशा मक एव त्रि वन नाथ की प्रेरणा मक कविता भी ब ो को कर्म की ओर ारित करती हैं।

रा ोय जागरण के इस युग े ब लको को स ा अपने कर्त य का पालन करना आवश्य या ा कर कम के ेत्र मे कु पडने की प्रेरणा देने वाली अनेक कविताओ का सृजन त कालीन कविगण कर रहे थे जिन्होने मातृभूमि के प्रति अपने हृ य का स वा स्ने यक्त किया है स्वत त्रता सग्राम के वीर सेनानी ोने के कारण इनमे स्वाभाविकता परिलक्षित होती है।

रामेश्वर याल ु े की ब न मा ी भ रत के लाल आदि बालोपयोगी कृतियाँ इसी ेणी मे आती । जि ा ब चो के प्रेरणा दायक गीत हैं।

प्रमुख छायावा ी कवि सुमित्रान न पत भी बालको की कविता लिखने से नही चूके। दो लडके और भारत माता उनकी प्रसिद्ध

रा ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने बालको के लि अनेक रा टीय गीत लिख साथ ही हितोपदेश तथा पचतन्त्र की क ानियो पर आधारि त ीत कथाए भी लिखी ।

इसी पर परा मे रामनरेश त्रिपाठी ने भारतीय जीवन तथा सस्कृति से परिचित कराने वाली कविताए लिखी । सरस्वती म सन् 1911 ो पुस्तक कविता बालको को पुस्तक बताने के लिए लिखी तथा उनकी विनती गीत भी बडी प्रसिद्ध हुई ।

अ-य गीतकार विभ सोहनलाल द्विवेदी आ ि की चर्चा पिछले पृष्ठो मे हो चुकी है ।

स्वण सहोदर ने भी अनेक बाल गीत लिखे कि तु चगा मगन गिनती के गीत आदि कुछ ही पुस्तक प्रकाशित हो सकी है । चगन मगन के सारे गीत मात्रा रहित श दो मे ही लिखे गए । इनके अतिरि क्त प सुदशनाचाय लोचनप्रसाद प ड्य प सुखराम चौबे गुणाकार गायत्रन लाल चतुर्वदी आदि प्रमुख बाल गीतकार हुए । इनकी कविता रूप प स तथा पुस्तकाकार प्रकाशित होती रही ।

अब बालको के लिए गीतो की रचना बहुतायत से होने लगी परिणाम स्वरूप विषयो के क्षेत्र भी बढ गए । शिक्षा और उपदेश से हटकर भी बाल गीत लिखे जाने लगे । रा टीय भावना गीतो के माध्यम से अधिक प्रखर रूप मे उभरकर सामने आई । सोहन द्विवेदी शकु तला सिरोठिया आरसी प्रसाद सिंह सुभद्राकुमारी चौहान रमापति शुक्ल त्रिभुवन नाथ रामेश्वर दयाल दुबे सुमित्रा कुमारी सि हा रामधारीसिंह दिनकर आ ि प्रमख कविगण अपनी अपनी रचनाओ के माध्यम से बालको मे विभिन्न गुणो को विकसित करने का काय करने लगे । इन सबो मे सोहनलाल द्विवेदी का योग दान प्रशसनीय है जबकि उ होने अपार बाल साहि-य लिखा और अपनी रचनाओ को युगानुरूप बनाकर नई दिशा नया रूप नया भाव देने का प्रयास किया । इसके लिए उ-हे अनेक प्रयोग भी क ने पड । इसीलिए कहा है कि आपने बाल साहि-य को उसी प्रकार सवारा है जिस प्रकार महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हि-दी के खडी बोली साहि य को सवारा [4] यह उनकी महानता है कि बाल साहि-य के भडार को उ होने अमू य मोतियो से भरा । बाल साहि-य सदा उनका ऋणी रहेगा तथा उनसे प्रेरणा ग्रहण करता रहेगा ।

आरसा प्रसाद सिंह ने भारत की गरिमा का वणन कई उदाहरणो ारा प्रस्तुत किया है। सुभद्राकुमारी चौ ान ने कविता तथा कहानिया समान रूप से लिखी। मुख्य रूप से गिनी ोने के कारण इनकी लेखनी ब ो की कविता पर भी समान ा मे चली। रा प्रम की भावनाओ मे वीरो का कथा ो बस त झासी की रानी की रचना की जिसमे जोश वीरता के भाव स ट रूप से दिखा देते । नका ो ा त कविताएँ सग्रह कोयन तथा सभा का खेल प्रकाश मे आया जिनमे पर परा त परिपाटी से हटाकर बाल मनोविज्ञान का बडा ी स्वाभाविक वणन किया गया है। अजय की पाठशाला मे सका उ ह उ हरण देखने को मिलता है। ब वा प ले दिन पाठशाला जाता है तब उ सा और उ सुकता से भरा रहता है। व ा से आ े पर माँ से ब ता ेने का अवसर हाथ से गवाना नही चा ता। न ख विजय बासु ी ाला कु ो पतग मुन्ना का यार क ब का पेड आदि इनकी कविताओ मे बाल सुलभ अनेक स्वाभाविक चित्र मिलते । सभा क खेल उन देश भक्त ब चो का खेल है जो गाँधी ने रू और सरोजिनी नायड के प्रतिरूप हैं कि तु इस अभिनय मे भी बालपन उभर आया है।

हरिकृ ण प्रेमी की कविता खिलौना भी बाल मनोवृत्ति का सु दर उ ाहरण प्रस्तुत करता है। देशप्रम का गौरव वर्णित करने वाले बालकृष्ण शर्मा नवीन की ओजस्विनी कृति ि न न मारा है रा ीय भावधारा की लोकप्रिय कविता है। रमापति शुक्ल की उत्प्रेरणा मक एव त्रि वन नाथ की प्रेरणा मक कविता भी ब चो को कम की ओर प्रेरित करती है।

रा ीय जागरण के इस युग े ा लको को स । अपने कर्त य का पालन करना आलस्य याग कर कम के क्षेत्र मे कू पडने की प्ररणा देने वाली अनेक कविताओ का सृजन त का ीन कविगण कर रहे थे जि होने मातृभूमि के प्रति अपने हृ य का स चा स्ने यक्त किया है स्वतन्त्रता सग्राम के वीर सेनानी ोने के कारण इनमे स्वाभाविकता परिलक्षित होती है।

रामेश्वर याल ु े की व न भा नी भ रा के लाल आदि बालोपयोगी कृतियाँ इसी श्रेणी मे आती । जि ो व चो के प्ररणा दायक गीत हैं।

प्रमुख छायावा ी कवि सुमित्रान न पन्त भी बालको की कविता लिखने से नही चूके। दो लडके और भारत माता उनकी प्रसिद्ध

रचना है। माखनलाल चतुवदी के गीतो का मूल स्वर भारतीयता तथा उसकी स्वत त्रता के लिए बलिदान होना ही था। ा ट्रीय भावना स परिपूण कविताओ को पढकर वे अपूर्व जोश मे भर जाते थे। कवि भी उनक मुख से देश के लिए समर्पित होने के भाव का वणन करने मे पीछ ाही हते थे। साथ ही देश की स्वत त्रता के लिए वीरगति प्राप्त करनी हो ता उसके लिए भी तैयार रहना होता था। मथिलीशरण गुप्त ने भारत भारती के माध्यम से भारत के स्वर्णिम अतीत वर्तमान दुदशा तथा उ वल भवि य की ओर भारतवासियो का यान आकृ ट किया। स्वत त्रता का आह्वान जयशकर प्रसाद के गीतो मे भी है। वस्तुत ा ट्रीयता की भावना से परिपूण साहि य का सजन किसी देश की जागति के लिए अ य त आवश्यक है। कवि देश की जनता को नव निर्माण की प्ररणा दे। ये ही सब कारण है कि स युग मे हि दी कविता के मा यम से स्वत त्रता का स्वर सर्वाधिक मुखर रहा। यह भी युग की माग के अनुकूल ही था।

बाल गीतो मे इन विचा धाराओ के अतिरिक्त लोरियो का भी लेखन कार्य इस युग मे हुआ। शकु तला सिरोठिया रा ट्र ब धु ब्रजकिशोर नारायण निरका देव सेवक आदि ने लोरी गीत लिखे जो सग्रह रूप मे भी प्रकाशित हुए। ब्रज किशोर नारायण कृत ारी निंदिया नाम से लोरी गीतो का एक सग्रह प्रकाशित हो चुका है। निरकारदेव सेवक के मन्ना के गीत मे भी कुछ उ कृष्ट लोरियाँ हैं।

इसके अतिरिक्त इस युग म शिशु ीतो की भी रचना हुई। शिशु गीतका सोहनलाल द्विवेदी ने दूध बताशा (1934) मे एक तीस गीतो का सग्रह प्रकाशित क ाया जो न हे पाठको के लिए है औ जिसके विषय तित ी रानी कोयल गर्मी की बहार यास मकडी कबूतर वर्षा तक ी आदि है। इनके अतिरिक्त इ होने प्रेरणा गीत भी लिखे हे।

इस प्रकार इस युग के कविता सग्रह मे श्रीनाथसिंह का पिपिह ी (1935) बाल कवितावली (1940) शभुदया सक्सना का पालना (1932) नारायण चतुवदी का र न दीप (1936) उ लेखनीय है।

रा ट्रीय जागरण का युग होने के कारण रा ट्रीय भावना से प पूर्ण कविताओ का प्राधा य रहा। कविताओ के द्वारा कवियो ने बा को मे याग साहस वीरता बलिदान जसे गुणो का विकास किया और स्वतत्र भारत के लिए नागरिक बनने के नीव निर्मित किए। तभी स्वतत्रता पूर्व रा ट्रीय का य

मे जन यापी विद्रोह अकुलाहट और विदेशी सत्ता को उखाड फकने का अदम्य उ साह परिलक्षित होता है।

(5) **बाल जीवनी**— द्विवेदी युग भाषा परि कार का युग रहा है। इस समय लेखकगण भारत की आ ण विभूतियो की चरित्रावली से बालको को महान् बनने की प्र णा अवश्य दे रहे थे कि तु उनका यान भाषा को व्याकरण सम्मत बनाकर लेखन काय करने की ओ अधिक था। स्वय महा वीर प्रसाद द्विवेदी ने चरित्र चित्रण नामक एक पुस्तक सन 1938 मे लिखी जिसे हि दी प्रस प्रयाग ने प्रकाशित किया। इस पुस्तक के विषय मे आलोचको के विचार थे कि द्विवे ी जी ने अपनी प्रभावशाली लेखनी से बडी ओजस्विनी भाषा मे अपनी खास शली से उ तीस चरित्रो का चित्रण किया है। हम चाहते है कि प्र येक हि दी लिखने और सीखने की इ छा रखने वाला विद्यार्थी या अ यापक द्विवेदी जी की लेख शली से अवश्य पर चित हो जाय। कारण यह है कि आप अपने समय के हि ी के आचाय और एक ि शुद्ध और पर मार्जित शली के आविष्कर्ता है। इस पुस्तक के पढने वाले को विषय ज्ञान के साथ ही सु दर शली और मनोहर भाषा का भी अ छा ज्ञान ो ज येगा।

द्ववेदी ी की प्र णा से अ य अनेक बाल जीवनी लेखको ने अपनी पुस्तको क पक शन ि यन प्रस से करवाया। रूपनारायण पाडय का बाल कालिदास पृ नी महा थी अजन प्रतापी परशुराम तथा म नन द्विवदी की पुस्तक भा तवष के महापरुष उ लेखनीय पुस्तक हैं। सन 1927 मे महाव प्रसाद द्विवदी की पुस्तक कोवि कीर्तन इसी प्रस से प्रकाशित हई जिसमे श्रीशच द्र बसु बहादुर बौद्धाचार्य शीलभद्र वि ण शा त्री चिपनूनकर आदि बा ह महापुरुषो का सक्षि त जीवन चरित्र है। ऐतिहासि चरि त्रो मे देवी प्रसाद मुसिफ लिखित प्रताप सिंह महाराणा (सन 1903) तथा सग्राम सिंह राणा (सन 1904) सपूर्णानद कृत सम्राट हषवधन (सन् 1920) सम्राट अशोक (सन 1924) महाराज छत्रसाल (सन 1916) महा ाजी सिंधिया (सन 1920) आदि उ लेखनीय है।

रा नतिक चरि त्रो मे महादेव भटट कृत लाजपत महिला (सन 1907) स पूर्णान कृत धमवीर गाधी (सन 1914) राम च द्र वर्मा का महा मा गाधी (सन 1937) आदि महापुरुषो की जीवनी से बालको में देश प्रम देश के प्रति मर मिटने की भावना सदाचार आदि गुणो का विकास करने का पयास किया गया।

रचना है। माखनलाल चतुर्वेदी के गीतो का मूल स्वर भारतीयता तथा उसकी स्वत त्रता के लिए बलिदान होना ही था। [4] ा ट्रीय भावना स परिपूर्ण कविताओ को पढकर वे अपूव जोश मे भर जाते थे। कवि भी उनक मुख से देश के लिए समर्पित होने के भाव का वणन करने मे पीछ नही रहते थे। साथ ही देश की स्वत त्रता के लिए वीरगति प्राप्त करनी हो ता उसके लिए भी तैयार रहना होता था। मथिलीशरण गुप्त ने भारत भारती के माध्यम से भारत के स्वर्णिम अतीत वतमान दुदशा तथा उ वल भवि य की ओर भारतवासियो का यान आकृ ट किया। स्वत त्रता का आह्वान ज शकर प्रसाद के गीतो मे भी है। वस्तुत ा ट्रीयता की भावना से परिपूण साहि य का सजन किसी देश की जागृति के लिए अ य त आवश्यक है। कवि देश की जनता को नव निर्माण की प्ररणा दे। ये ही सब कारण है कि इस युग मे हि दी कविता के मा यम से स्वत त्रता का स्व सर्वाधिक मुखर रहा। यह भा युग की माग के अनुकूल ही था।

बाल गीतो मे इन विचा धाराओ के अतिरिक्त लोरियो का भी लेखन कार्य इस युग मे हुआ। शकु तला सि ोठिया राष्ट्र ब ध ब्रजकिशोर नारायण निरकारदेव सेवक आदि ने लोरी गीत लिखे जो सग्रह रूप मे भी प्रकाशित हुए। ब्रज किशोर नारायण कृत आरी निंदिया नाम से लोरी गीतो का एक सग्रह प्रकाशित हो चुका है। निरकारदेव सेवक के मुन्ना के गीत मे भी कुछ उ कृष्ट लोरियाँ हैं।

इसके अतिरिक्त इस युग म शिशु ीतो की भी रचना हुई। शिशु गीतका सोहनलाल द्विवेदी ने दूध बताशा (1934) मे एक तीस गीतो का सग्रह प्रकाशित क या जो न हे पाठको के लिए है और जिसके विषय तितली रानी कोयल गर्मी की बहार यास मकडी कबूतर वर्षा लक नी आदि है। इनके अतिरिक्त इ होने प्ररणा गीत भी लिखे हे।

इस प्रकार इस युग के कविता सग्रह मे श्रीनाथसिह का पिपिहरी (1935) बाल कवितावली (1940) शभदयाल सक्सना का पालना (1932) नाराय ा चतुवदी का र न दीप (1936) लेखनीय है।

रा ट्रीय जागरण का युग होने के कारण रा ट्रीय भावना से परिपूर्ण कविताओ का प्राधा य रहा। कविताओ के द्वारा कवियो ने बालको मे याग साहस वी ता बलिदान जसे गुणो का विकास किया और स्वतत्र भारत के लिए नागरिक बनने के नीव निर्मित किए। तभी स्वतत्रता पूव रा टीय का य

मे जन यापी विद्रोह अकुलाहट और विदेशी सत्ता को उखाड फकने का अदम्य उ साह परिलक्षित होता है।

(5) **बाल जीवनी**— द्विवेदी युग भाषा परि कार का युग रहा है। इस समय लेखकगण भारत की आदश विभूतियो की चरित्रावली से बालको को महान् बनने की प्र णा अवश्य दे रहे थे कि तु उनका यान भाषा को याकरण स मत बनाकर नेखन काय करने की ओ अधिक था। स्वय महा वीर प्रसाद द्विवेदी ने चरित्र चित्रण नामक एक पुस्तक सन 1938 मे लिखी जिसे हि दी प्रस प्रयाग ने प्रकाशित किया। इस पुस्तक के विषय मे आलोचको के विचार थे कि द्विवे ी जी ने अपनी प्रभावशाली लेखनी से बडी ओजस्विनी भाषा मे अपनी खास शली से उ तीस चरित्रो का चित्रण किया है। हम चाहते हे कि प्र येक हि दी लिखने और सीखने की इ छा रखने वाला विद्यार्थी या अ यापक द्विवेदी जी की लेख शली से अवश्य परिचित हो जाय। कारण यह है कि आप अपने समय के हि ी के आचाय और एक विशुद्ध और पर मार्जित शली के आविष्कर्ता हैं। इस पुस्तक के पढने वाले को विपय ज्ञान के साथ ही सु दर शली और मनाहर भाषा का भी अ ा ज्ञान ो ज येगा।

द्विवेदी जी की प्र णा से अन्य अनेक बाल जीवनी लेखको ने अपनी पुस्तको क प्रक शन ि यन प्रस से करवाया। रूपनारायण पाडय का बाल कालि ास पृ ीर मह़ा थी अजन प्रतापी परशुराम तथा म नन द्विव ी की पुस्तक भा ाप के महापरुष उ लेखनीय पुस्तक हैं। सन 1927 मे मह व प्रसाद द्विवदी की पुस्तक कोविद कीर्तन इसी प्रस से प्रक शित हुई जिसम श्रीशच द्र बसु बहादुर बौद्धाचार्य शीलभद्र वि ण शा त्री चिप ूकर आदि बा ह महापुरुषो का सक्षि त जीवन चरित्र है। ऐतिहासि चरित्रो मे दवी प्रसाद मुसिफ लिखित प्रताप सिह महाराणा (सन 1903) तथा सग्राम सिंह राणा (सन 1904) सपूर्णानद कृत सम्राट हर्षवधन (सन् 1920) सम्राट अशोक (सन 1924) महाराज छत्रमाल (सन 1916) महादाजी सिंधिया (सन 1920) आदि उ ले खनीय हे।

ा ानतिक चरित्रो मे महादेव भटट कृत लाजपत महिला (सन् 1907) स पूर्णा द कृत धमवीर गाधी (सन 1914) राम च द्र वर्मा का महा मा गाधी (सन 1937) आदि महापुरुषो की जीवनी से बालको मे देश प्रम देश के प्रति मर मिटने की भावना सदाचार आदि गणो का विकास करने का प्रयास किया गया।

रचना है। माखनलाल चतुवदी के गीतो का मूल स्वर भारतीयता तथा उसकी स्वत त्रता के लिए बलिदान होना ही था। [4] ाष्ट्रीय भावना स परिपूर्ण कविताओ को पढकर वे अपूव जोश म भर जाते थे। कवि भी उनक मुख से देश के लिए समर्पित होने के भाव का वणन करने मे पीछ नही रहते थे। साथ ही देश की स्वत त्रता के लिए वीरगति प्राप्त करनी हो ता उसके लिए भी तयार रहना होता था। मथिलीशरण गुप्त ने भारत भारती के माध्यम से भारत के स्वर्णिम अतीत वतमान दुदशा तथा उ वल भवि य की ओर भारतवासियो का यान आकृ ट किया। स्वत त्रता का आह्वान ज शकर प्रसाद के गीतो मे भी है। वस्तुत ा ट्रीयता की भावना से परिपूण साहि य का सजन किसी देश की जागति के लिए अ य त आवश्यक है। कवि देश की जनता को नव निर्माण की प्ररणा दे। ये ही सब कारण हैं कि इस युग मे हि दी कविता के मा यम से स्वत त्रता का स्वर सर्वाधिक मुखर रहा। यह भा युग की माग के अनुकूल ही था।

बाल गीतो मे इन विचा धाराओ के अतिरिक्त लोरियो का भी लेखन काय इस युग मे हुआ। शकु तला सि ोठिया रा ट्र ब ध ब्रजकिशोर नारायण निरकारदेव सेवक आदि ने लोरी गीत लिखे जो सग्रह रूप मे भी प्रकाशित हुए। ब्रज किशोर नारायण कृत ारी निंदिया नाम से लोरी गीतो का एक सग्रह प्रकाशि ा हो चुका है। निरकारदेव सेवक के मुन्ना के गीत मे भी कुछ उ कृष्ट लोरियाँ है।

इसके अतिरिक्त इस युग मे शिशु गीतो की भी रचना हुई। शिशु गीतकार सोहनलाल द्विवेदी ने दूध बताशा (1934) मे एक तीस गीतो का सग्रह प्रकाशित कराया जो न हे पाठको के लिए है औ जिसके विषय तितली रानी कोयल गर्मी की बहार यास मकडी कबूतर वर्षा लक ी आदि है। इनके अतिरिक्त इ होने प्ररणा गीत भी लिखे हे।

इस प्रकार इस युग के कविता सग्रह मे श्रीनाथसिह का पिपिहरी (1935) बाल कवितावली (1940) शभदयाल सक्सना का पालना (1932) नारायण चतुवदी का र न दीप (1936) उ लेखनीय है।

रा ट्रीय जागरण का युग होने के कारण रा ट्रीय भावना से प रिपूर्ण कविताओ का प्राधा य रहा। कविताओ के द्वारा कवियो ने बालको मे याग साहस वीरता बलिदान जसे गुणो का विकास किया ौर स्वतत्र भारत के लिए नागरिक बनने के नीव निर्मित किए। तभी स्वतत्रता पूर्व रा ट्रीय का य

मे जन यापी विद्रोह अकुलाहट और विदेशी सत्ता को उखाड फकने का अदम्य उ साह परिलक्षित होता है।

(5) **बाल जीवनी**— द्विवेदी युग भाषा परिष्कार का युग रहा है। इस समय लेखकगण भारत की आदश विभूतियो की चरित्रावली से बालको को महान् बनने की प्र णा अवश्य दे रहे थे कि तु उनका यान भाषा को व्याकरण स मत बनाकर लेखन काय करने की ओर अधिक था। स्वय महावीर प्रसाद द्विवेदी ने चरित्र चित्रण नामक एक पुस्तक सन 1938 मे लिखी जिसे हि दी प्रस प्रयाग ने प्रकाशित किया। इस पुस्तक के विषय मे आलोचको के विचार थे कि द्विवेदी जी ने अपनी प्रभावशाली लेखनी से बडी ओजस्विनी भाषा मे अपनी खास शली से उ तीस चरित्रो का चित्रण किया है। हम चाहते हे कि प्र येक हि दी लिखने और सीखने की इ छा रखने वाला विद्यार्थी या अ यापक द्विवेदी जी की लेख शली से अवश्य परिचित हो जाय। कारण यह है कि आप अपने समय के ि ी के आचाय और एक ि शुद्ध और प मार्जित शली के आवि कर्ता है। इस पुस्तक के पढने वाले को विषय ज्ञान के साथ ही सु दर शली और मनोहर भाषा का भी अ ा ज्ञान हो जायेगा

द्विवेदी ी की प्र णा से अ य अनेक बाल जीवनी लेखको ने अपनी पुस्तको का प्रक शन डियन प्रस से करवाया। रूपनारायण पाडय का बाल कान्ति ास पृ ी ाज महा थी अजन प्रतापी परशुराम तथा म नन द्विवदी की पु तक भा तवष के महापुरुष उल्लेखनीय पुस्तक हैं। सन् 1927 म महाव प्रम द द्विवदी की पुस्तक कोवि कीर्तन इसी प्रस से प्रक शित हुई जिसमे ीशच द्र बसु बहादुर बौद्धाचार्य शीलभद्र वि ण शा त्री चिपन कर आदि बा ह महापुरुषो का सक्षि त जीवन चरित्र है। ऐतिहासिक चरित्रो मे द ी प्रसाद मुसिफ लिखित प्रताप सिह महाराणा (मन 1903) तथा सग्राम सिह राणा (सन 1904) सपूर्णानद कृत सम्राट हषवधन (सन् 1920) सम्राट अशोक (सन 1924) महाराज छत्रसाल (सन 1916) महादाजी सिंधिया (सन 1920) ादि उ लेखनीय है।

ानतिक च रित्रो मे महादेव भटट कृत लाजपत महिला (सन् 1907) स पूर्णान द कृत धमवीर गाधी (सन 1914) राम च द्र वर्मा का महा मा गाधी (सन् 1937) आदि महापुरुषो की जीवनी से बालको मे देश प्रम देश के प्रति मर मिटने की भावना सदाचार आदि गुणो का विकास करने का पयास किया गया।

भारतमाता को मुक्त कराने के लिए बालको मे रा टीय भावना के ाकुर उगाए गए ।

समय की माग के कारण गीतो के अतिरिक्त कहानियो का भी मुख्य स्वर रा ट्रीयता देश प्रम भारतीय सस्कृति तथा ा र्श का है । ब चो की अपनी समस्याओ के लिए उनमे कोई स्थान नही है व न् सा ि य का मु य उद्देश्य शिक्षा मनोरजन तथा ज्ञान प्रदान करना है । इस समय की कहानियो के विषय पौराणिक तथा ऐतिहासिक चरित्र ठग चोर ाकू भूत प्रत आदि है । काला कु रा मे हमकुमार तिवारी ने यह बताने का प्रयास किया है कि अपनी सूझ बूझ तथा युक्ति से नथु ी नाई ने दो भूतो को अपने वश मे किया और उनसे प्रतिदिन अनाज नेक मालामा न हो गया ।

प्रमच द जसे कुछ कहानीकारो ने नए प्रतिमान अवश्य स्थापित किए । यद्यपि इनकी कहानिया विशेपत बालका क िए नही लिखी गई परन्तु अपनी मनोवृत्ति के अनुकूल होने के कारण बा नको ने इसे अपना अवश्य लिया । इनकी क ानियो द्वारा बालको को समाज की कुरीतिया अ यवस्थाओ पारिवारिक परिस्थितिया धम के नाम पर प्रचलित ढाग आदि का परिचय प्रा त होता है । इसके अतिरिक्त सुदशन का हार की जीत कौशिक की ताई आदि कहानिया बालका क मनोविज्ञान के अनुकूल सिद्ध हुई ।

इस युग की कहानियो की एक विशषता यह भी हे कि कहानी के अन्त मे एक या ो पक्तियो मे गद्य या पद्य के द्वारा बालको को सीध उपदेश देने की प्रवृत्ति अपनाई गई । बाबूलाल भा व की समुद्र की परी तथा शेख नईमुद्दीन मास्टर की मुशी जी कहानी इसी प्रकार की है ।

द्विवेदी युग मे जयशकर प्रसाद ने अपने ऐतिहासिक नाटको के मा यम से राष्ट्रीयता तथा सस्कृति का जो सम वय प्रस्तुत किया है वह अपूव है । इनके नाटको मे स्कद गुप्त अजात शत्रु तथा च द्र गुप्त बालो चित हैं जिनका कथानक भारतीय इतिहास के क्रमश गुप्तकाल बुद्ध काल मौर्य काल से लिया गया है । स्क गुप्त की रचना के समय (सन् 1922) भारत सघर्षमय स्थिति से गुजर रहा था । नाटक के नायक स्कद गुप्त के मा यम से बालको मे तथा भारतीय जनता मे भी वीरता तथा साहस के भाव भरने के प्रयास किए गए । रा ट्रीय भावना से युक्त नाटक मे यह दर्शाया गया है कि युद्ध केवल शस्त्रो की नही भारतीय सस्कृति की है । इसी प्रकार

अजात शत्रु मे बुद्ध द्वारा दिया गया उपदेश त‍कालीन पीडित मानवता को ाम सस्कृति तथा शा‍ति का सदेश देने वाला है ।

च‍द्रगुप्त नाटक म नाटककार ने भारतीय सस्कृति के उ थान की ाथा वर्णित की है तथा सास्कृतिक एकता पर बल दिया है । दूसरे श‍दो ा यह कहा जा सकता है कि इस नाटक मे प्रसाद का सास्कृतिक दृ टकोण ौर राष्टीय भावना सतुलित रूप मे सयोजित मिलती है । प्रसाद ने ाटको के माध्यम से त कालीन परिस्थितियो की स्पष्ट बुराई न ी की र‍तु जो कुछ कहा वह इससे कही अधिक है । इस युग के बाल नाटको पर ो प्रवृत्तियाँ परिलक्षित होती हैं—ऐतिहासिक तथा सामाजिक नाटय वृत्तिया ।

इस युग मे जो भी बाल नाटक प्रकाश मे आए पाठय पुस्तको म ही थान प्राप्त कर सके । अत इनका मुख्य उद्दृश्य ब‍चो की शिक्षा प्रदान करना ा न कि मनोरजन प्रदान करना । कत्त य पालन वयाकरण आदि ऐसे ी नाटक है जो बडा की नाटको को काट छाँटकर सरल भाषा मे बालको े लिए प्रस्तुत किए गए । वयाकरण नाटक द्वारा बालको को शुद्ध भाषा ा प्रयोग करना सिखाया गया । अभिनय होने के कारण बालक बडी ासानी से कारको का प्रयोग सीख जाते है । इस युग मे ब‍चो के लिए ाटको की रचना की और विशष ध्यान नही दिया फिर भी जो नाटक ्काशित हुए उनकी मुख्य प्रवृत्ति देश प्रम साम्प्रदायिकता की भावना ीरतापूण कृ य करने की प्रेरणा दी । जसे कि सेठ गोविंद दास के नाटक ईद की होली मे भेद भाव दूर करने की शिक्षा दी गई है ।

इस युग के बाल साहि य की एक प्रमुख विशेषता यह है कि बालको े आयु वर्ग को ध्यान मे रखकर विभिन्न विषयो पर पुस्तक प्रकाशित हुई । ाल साहि‍य के क्षत्र म यह एक मह‍वपूण उपल‍धि है । फलस्वरूप बाल ानोविज्ञान के अनुरूप कहानियो और नाटको की रचना होने लगी । बाल ्नुभूतियो का जीव त चित्र सुभद्रा कुमारी चौहान की हीगवाला कहानी े देखने को मिलता है । हीगवाला स माँ का हीग खरीदना ब चो का अ‍छा ही लगता क्योकि माँगने पर माँ पसे नही देती थी और हीग वाले के आते ी उससे हीग खरीद लेती थी । इस पर आठ साल की बच्ची का कथन ावपूर्ण है जो उसने अपने भाई से कहा ।

इस युग की कविताओ का भी मुख्य स्वर राष्ट्र प्रम ही रहा । कवि ण गीतो के अ से ल गीतो मे देश प्रम एकता की भावना

अग्रेजो के प्रति विद्रोह पाश्चा य सरकृति के प्रति घणा धम का पालन आदि के भाव भरते रहे । त कालीन गीतो म कविताओ मे इस प्रवृत्ति के अतिरिक्त मनोरजनपरक त य तो है ही कविताए बाल मनोविज्ञानो मुख भी होने लगी । पिछले पृ ठो मे सकी चर्चा हो चुकी है ।

इस युग के समरत बाल साहि य को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि ये कुछ निश्चित उद्देश्य को लेकर लिखे गए हैं —

(अ) बालको का मनोरजन करना ।

(आ) पाश्चा य सस्कृति के प्रभाव से र कर न चो मे भारतीय सस्कृति के प्रति मोह उ पन्न करना ।

(इ) गाधीवादी विचारधारा के माध्यम से बालको मे देश के प्रति समर्पित होने की भावना भरना ।

(ई) प्राचीन पौराणिक ऐतिहासिक धार्मिक चरित्रो के मा यम से बालको का नतिक विकास करना िससे वे स्वतत्र भारत के भावी नागरिक बन सक ।

(उ) बाल साहि य की अभिवृद्धि करना और

(ऊ) बालको का ज्ञानवधन करना तथा उ ह भारतीय साहि य से परिचित कराना ।

(2) कला पक्ष तथा द्विवेदी कालीन एव पूव स्वात य काली । बाल साहित्य

भाषा—भारतेन्दु युग मे साहि यिक भाषा का जो अनगढ स्वरूप है उसका पर्याप्त परि कार द्विवेदी युग मे दृष्टिगोचर होता है । इस युग के लेखकगण याकरण स मत भाषा लिखने का ही प्रयास क रहे थे । पिछली त्र टियो को दूर कर शुद्ध हि दी भाषा को स्थापित करने का भी प्रयास रहा । सरस्वती का प्रकाशन (सन् 1900) बीसवी शता दी के भाषा साहि य का अ यतम प्रतीक है । दूसरे श दो मे यह आधुनिक हिन्दी साहित्य की वह प्रयोग भूमि अथवा सधि स्थल है जहाँ एक ओर भारतेन्दु युग की प्ररणा से मिले हुए साहित्य के रूपो पर आधुनिक प्रयोग किए गए वही दूसरी ओर विभिन्न साहित्य रूपो क लि निश्चित और स्वाभाविक भाषा का पयोग हुआ है । प्राचीनता एव नवीनता का अद्‌भुत सगम इसमे देखने को मिलता है ।

बालको की पाठ्य पुस्तको मे हि दी उ मिश्रित जिस खिचडी भापा का प्रयोग होता रहा उस देखकर विद्वानो तथा आलोचको को बडा दु ख होता था और हि दी ाषा की यनीय स्थिति उनके लिए बडी कष्ट प्रद थी। इस पर टि पणी करते हुए आचार्य शुक्ल ने लिखा है आज कल भाषा की बडी बु ी दशा है। बहुत स नोग शुद्ध भापा का अ यास होने के पहले ही बड बड पोथे लिखने नगते ह जिनमे व्याकरण की भद्दी भूल तो रहती ही है कही कही वाक्य वि यास तक ठीक नही रहता । याकरण की भूलो तक ही बात नही है अपनी भापा की प्रकृति की पहचान न होने के कारण कु लोग सका स्वरूप भी बिगा चले है। वे अग्रजी के श द वाक्य मुहावरे तक यो के या उठाकर रख देत हैं यह नही देखने जाते कि भाषा हि दी उद है या और कुछ। स समस्या को देखते हुए सन् 1911 मे श्री कामता प्रसा गुरु ने हि दी का याकरण शीषक निब ध लिखा जो सरस्व ी म प्रकाशित हुआ। इस निब ध का आज भी उतना ही मह व है जितना तब था।

इस युग के बाल साहि य को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि भाषा का साफ सुथरा रूप सामने नाने का प्रयास किया जा रहा था।

वस्तुत भाषा के क्षत्र मे द्विवेदी जी का योगदान अद्वितीय कहा जायगा। इसके पूव हि दी भाषा का अपना कोई स्वरूप निश्चित नही होने के कारण उसका खिचडी रूप दिखाई देता है जिसमे अपरिचित श दो की भरमार तथा क्षेत्रीय भाषा के प्रयोग की बहुलता थी। याकरण के नियमो की शिथिलता तो सवत्र याप्त थी। इस सबको यवस्थित रूप देने का श्रय महावीर प्रसा द्विवेदी को ही है जसा कि पहले भी कहा जा चुका है।

याकरण के नियमो मे बध जाने के कारण भाषा में नीरसता आना स्वाभाविक था। पर तु कवियो ने कविता मे श द माधुय लाकर इस दोष को दूर करने का प्रयास ावश्य किया। भारते दु युग मे कविता जो ब्रज भाषा मे लिखी जाती थी और द्विवेदी युग मे भी कतिपय कवियो ने इस पर परा को अपनाए रखा उन पर आलोचको ने अ य त निर्मम प्रहार किए कि यह अ य त हास्यजनक एव लज्जास्पद है कि हम सोच एक स्वर मे प्रकट करें दूसरे स्वर मे। हमारे मन की वाणी न हो हमारे गद्य का कोश भिन्न पद्य का भिन्न हो हमारी आ मा के सा रे ग म पृथक हो वाद्य यत्र के पृथक

अग्रजो के प्रति विद्रोह पाश्चा य सरकृति के प्रति घणा धम का पाल आदि के भाव भरत रहे। त कालीन गीतो कविताओ मे इस प्रवृत्ति के अतिरिक्त मनोरजनपरक तथ्य तो है ही कविताए बाल मनोविज्ञानो मुख भी होने लगी। पिछले पृ ठो मे सकी चर्चा हो चुकी है।

इस यु के समरत बाल साहि य को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि ये कुछ निश्चि उद्देश्य को लेकर लिखे गए है —

(अ) बालको का मनोरजन करना।

(आ) पाश्चा य सस्कृति के प्रभाव से र कर ब चो भारतीय सस्कृति के प्रति मोह उपन्न करना।

(इ) गाधीवादी विचारधारा के माध्यम से बालको मे दश के प्रति समर्पित होने की भावना भरना।

(ई) प्राचीन पौराणिक ऐतिहासिक धार्मिक चरित्रो के मा यम से बालको का नतिक विकास करना िससे वे स्वतत्र भारत के भावी नागरिक बन सक।

(उ) बाल साहि य की अभिवृद्धि करना और

(ऊ) बालको का ज्ञानवधन करना तथा उ भारतीय साहि य से परिचित कराना।

(2) कला पक्ष तथा द्विवेदी कालीन एव पूव स्वात य कालीन बाल साहित्य

भाषा—भारते दु युग मे साहियिक भाषा का जो अनगढ स्वरूप है उसका पर्याप्त परि कार द्विवेदी युग म दृ टिगोच होता है। इस युग के लेखकगण व्याकरण स मत भाषा लिखने का ही प्रयास क ते। पिछली त्रटियो को दूर कर शुद्ध हि दी भाषा को स्थापित क न का भी प्रयास रहा। सरस्वती का प्रकाशन (सन् 1900) बीसवी शता दी के भाषा साहि य का अ यतम प्रतीक है। दूसरे श दो मे यह आधुनिक हिन्दी साहि य की वह प्रयोग भूमि अथवा सधि स्थल है जहाँ एक ओर भारते दु युग की प्ररणा से मिले हुए साहि य के रूपो पर आधुनिक प्रयोग किए गए वही दूसरी ओर विभिन्न साहि य रूपो क लिए निश्चि और स्वाभाविक भाषा का प्रयोग हुआ है। प्राचीनता एव नवीनता का अद्भुत सगम इसमे देखने को मिलता है।

बालको की पाठ्य पुस्तको मे हि दी उ मिश्रित जिस खिचडी भाषा का प्रयोग होता रहा उसे देखकर विद्वानो तथा आलोचको को बडा दु ख होता था और हि दी भाषा की दयनीय स्थिति उनके लिए बडी क ट प्रद थी। इस पर टि पणी करते हुए आचार्य शुक्ल ने लिखा है आज कल भाषा की ब ी बुरी दशा है। बहुत स नोग शुद्ध भापा का अ यास होने के पहले ही बड बड पोथे लिखने लग ह जिनमे याकरण की भद्दी भूल तो रह ी ही है कही कही ाक्य वि यास तक ठीक नही रहता । याकरण की भूलो तक ही बात न ी है अपनी भाषा की प्रकृति की पहचान न होने के कारण कु लोग उसका स्वरूप भी बिगा चले हैं। वे अग्रजी के श द वाक्य मुहावरे तक यो के यो उठाकर रख देत है यह नही देखने जाते कि भाषा हि दी उद है या और कुछ। इस समस्या को देखते हुए सन् 1911 मे श्री कामता प्रसाद गुरु ने हि दी का याकरण शीषक निब ध लिखा जो सरस्वती म प्रकाशित हुआ। इस निब ध का आज भी उतना ही मह व है जितना तब था।

इस युग के बाल साहि य को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि भाषा का साफ सुथरा रूप सामने लान का प्रयास किया जा रहा था।

वस्तुत भाषा के क्षत्र मे द्विवेदी जी का योगदान अद्वितीय कहा जायगा। इसके पूव हि दी भाषा का अपना कोई स्वरूप निश्चित नही होने के कारण उसका खिचडी रूप दिखाई देता है जिसमे अपरि चित श दो की भरमार तथा क्षेत्रीय भाषा के प्रयोग की बहुलता थी। याकरण के नियमो की शिथिलता तो सवत्र याप्त थी। इस सबको यवस्थित रूप देने का श्रय महावीर प्रसाद द्विवेदी को ही है जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है।

याकरण के नियमो मे बँध जाने के कारण भाषा मे नीरसता आना स्वाभाविक था। पर तु कवियो ने कविता मे श द माधुय लाकर इस दोष को दूर करने का प्रयास अवश्य किया। भारते दु युग मे कविता जो ब्रज भाषा मे लिखी जाती थी और द्विवेदी युग मे भी कतिपय कवियो ने इस पर परा को अपनाए रखा उन पर आलोचको ने अ य त निमम प्रहार किए कि यह अ य त हास्यजनक एव ल जास्पद है कि हम सोचे एक स्वर मे प्रकट कर दूसरे स्वर मे। हमारे मन की वाणी न हो हमारे गद्य का कोश भिन्न पद्य का भिन्न हो हमारी आ मा के सा रे ग म पृथक हो वाद्य यन्त्र के पृथक

अग्रजो के प्रति विद्रोह पाश्चा्य सरकृति के प्रति घ ।। धम का पालन आदि के भाव भरते रहे । त कालीन गीतो ो कविताओ मे स प्रवृत्ति के अतिरिक्त मनोरजनपरक तथ्य तो है ही कविताए बाल मनोविज्ञा्गो मुख भी होने लगी । पिछले पृ ठो मे सकी चर्चा हो चुकी है ।

इस युग के समरत बाल साहि य को देखने रो ऐसा प्रतीत होता है कि ये कुछ निि चत उद्दश्य को लेकर लिखे गए है —

(अ) बालको का मनोरजन करना ।

(आ) पाश्चा य सस्कृति के प्रभाव से र कर ब चो मे भारतीय सस्कृति के प्रति मोह उ्पन्न करना ।

(इ) गाधीवादी विचारधारा के माध्यम से बालको मे देश के प्रति समर्पित होने की भावना भरना ।

(ई) प्राचीन पौराणिक ऐतिहासिक धार्मिक चरित्रो के मा यम से बालको का नतिक विकास करना ि स से वे स्वतत्र भारत के भावी नागरिक बन सक ।

(उ) बाल साहि य की ाभिवृद्धि करना और

(ऊ) बालको का ज्ञानवधन करना तथा उ हे भारतीय साहि य से परिचित कराना ।

(2) कला पक्ष तथा द्विवेदी कालीन एव पूव स्वात्य कालीन बाल साहित्य

भाषा—भारतेन्दु युग मे साहि्यिक भाषा का जो अनगढ स्वरूप है उसका पर्याप्त परि कार द्विवेदी युग म दृष्टिगोचर होता है। स युग के लेखकगण व्याकरण स मत भाषा लिखन का ही प्रयास करो े । पिछली त्र टियो को दूर कर शुद्ध हि दी भाषा को स्थापित करने का भी प्रयास रहा। सरस्वती का प्रकाशन (सन् 1900) बीसवी शता दी क भाषा साहि य का अ यतम प्रतीक है । दूसरे श दो मे यह आधुनिक हिन्दी साहि य की वह प्रयोग भूमि अथवा सधि स्थल है जहाँ एक ओर भारते दु यग की प्रेरणा से मिले हुए साहि्य के रूपो पर आधुनिक प्रयोग किए गए वही दूसरी ओर विभिन्न साहि्य रूपो के नि निश्चित और स्वाभाविक भाषा का प्रयोग हुआ है । प्राचीनता एव नवीनता का अद्भुत सगम इसमे देखने को मिलता है ।

बालको की पाठ्य पुस्तको मे हि दी उ मिश्रित जिस खिचडी भाषा का प्रयोग होता रहा उसे देखकर विद्वानो तथा आलोचको को बडा दु ख होता था और हि दी ाषा की दयनीय स्थिति उनके लिए बडी कष्ट प्रद थी। इस पर टि पणी करते हुए आचार्य शुक्न ने लिखा है आज कल भाषा की बडी बुरी दशा है। बहुत से नोग शुद्ध भाषा का अभ्यास होने के पहले ही बड बड पोथे लिखने नगते है जिनमे याकरण की भद्दी भूल तो रहती ही है कही कही वाक्य वि यास तक ठीक नही रहता । याकरण की भूनो तक ही बात नही है अपनी भाषा की प्रकृति की पहचान न होने के कारण कु नोग उसका स्वरूप भी बिगा चने है। वे अग्रजी के श द वाक्य मुहावरे तक यो के यो उठाकर रख देत है यह नही देखने जाते कि भाषा हि दी उद है या और कुछ। इस समस्या को देखते हुए सन् 1911 मे श्री कामता प्रसाद गुरु ने हि दी का याकरण शीषक निब ध लिखा जो सरस्वती मे प्रकाशित हुआ। इस निब ध का आज भी उतना ही महत्व है जितना तब था।

इस युग के बाल साहि य को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि भाषा का साफ सुथरा रूप सामने नाने का प्रयास किया जा रहा था।

वस्तुत भाषा के क्षत्र मे द्विवेदी जी का योगदान अद्वितीय कहा जायगा। इसके पूव हिन्दी भाषा का अपना कोइ स्वरूप निश्चित नही होने के कारण उसका खिचडी रूप दिखाई देता है जिसमे अपरि चित श दो की भरमार तथा क्षेत्रीय भाषा के प्रयोग की बहुलता थी। व्याकरण के नियमो की शिथिलता तो सवत्र याप्त थी। इस सबको यवस्थित रूप देने का श्रेय महावीर प्रसा द्विवेदी को ही है जसा कि पहले भी कहा जा चुका है।

याकरण के नियमो मे बँध जाने के कारण भाषा मे नीरसता आना स्वाभाविक था। परन्तु कवियो ने कविता मे श द माधुर्य लाकर इस दोष को दूर करने का प्रयास अवश्य किया। भारतेन्दु युग मे कविता जो ब्रज भाषा मे लिखी जाती थी और द्विवेदी युग मे भी कतिपय कवियो ने इस पर परा को अपनाए रखा उन पर आलोचको ने अत्य त निर्मम प्रहार किए कि यह अ य त हास्यजनक एव लज्जास्पद है कि हम सोचें एक स्वर मे प्रकट कर दूसरे स्वर मे। हमारे मन की वाणी न हो हमारे गद्य का कोश भिन्न पद्य का भिन्न हो हमारी आ मा के सा रे ग म पृथक हो वाद्य यत्न के पृथक

अग्रजो के प्रति विद्रोह पाश्चा य सरकृति के प्रति घृणा धम का पालन आदि के भाव भरते रहे । त कालीन गीता । कविताओ मे स प्रवृत्ति के अतिरिक्त मनोर जनपरक त य तो है ही कविताए बाल मनोविज्ञा नो मुख भी होने लगी । पिछले पृ ठो मे सकी चर्चा हो चुकी है ।

इस यु । के समस्त बाल साहि य को दे ने से ऐसा प्रतीत होता है कि ये कुछ निश्चित उद्दश्य को लेकर लिखे गए है —

(अ) बालको का मनोरजन करना ।

(आ) पाश्चा य सस्कृति के प्रभाव से र कर ब चो मे भारतीय सस्कृति के प्रति मोह उ पन्न करना ।

(इ) गाधीवादी विचारधारा के माध्यम से बालको मे दश के प्रति समर्पित होने की भावना भरना ।

(ई) प्राचीन पौराणिक ऐतिहासिक धार्मिक चरित्रो के मा यम से बालको का नतिक विकास करना कि इससे वे स्वतन्त्र भारत के भावी नागरिक बन सक ।

(उ) बाल साहि य की अभिवृद्धि करना और

(ऊ) बालको का ज्ञानवधन करना तथा उ भारतीय साहि य से परिचित कराना ।

(2) कला पक्ष तथा द्विवेदी कालीन एव पूव स्वात य कालीन बाल साहित्य

भाषा—भारते दु युग मे साहि यिक भाषा का जो अनगढ स्वरूप है उसका पर्याप्त परि कार द्विवेदी युग मे दृष्टिगोचर होता है । इस युग के लेखकगण याकरण स मत भाषा लिखने का ही प्रयास क ते थे । पिछली त्र टियो को दूर कर शुद्ध हि दी भाषा को स्थापित करने का भी प्रयास रहा । सरस्वती का प्रकाशन (सन् 1900) बीसवी शता दी के भाषा साहि य का अ यतम प्रतीक है । दूसरे श दो मे यह आधुनिक हि दी साहि य की वह प्रयोग भूमि अथवा सधि स्थल है जहाँ एक ओर भारते दु युग की प्ररणा से मिले हुए साहित्य के रूपो पर आधुनिक प्रयोग किए गए वही दूसरी ओर विभिन्न साहि य रूपो के लि निश्चित और स्वा भाविक भाषा का पयोग हुआ है । प्राचीनता एव नवीनता का अद्भत सगम इसमे देखने को मिलता है ।

बालको की पाठ्य पुस्तको म हि दी उ मिश्रित जिस खिचडी भाषा का प्रयोग होता रहा उसे देखकर विद्वानो तथा आलोचको को बडा दु ख होता था और हि दी भाषा की यनीय स्थिति उनके लिए बडी कष्ट प्रद थी। इस पर टि पणी करते हुए आचार्य शुक्ल ने लिखा है आज कल भाषा की बडी बु ी दशा है। बहुत स लोग शुद्ध भाषा का अ यास होने के पहले ही ब बड पोथे लिखने लगते है जिनमे याकरण की भद्दी भूल तो रहती ही है कही कही वाक्य वि यास तक ठीक नही रहता । याकरण की भूलो तक ही बात नही है अपनी भाषा की प्रकृति की पहचान न होने के कारण कु लो उसका स्वरूप भी बि ा चले है। वे अग्रजी के श द वाक्य मुहावरे तक यो के यो उठाकर रख देत हैं यह नही देखने जाते कि भाषा हि दी उद है या और कुछ। इस समस्या को देखते हुए सन् 1911 मे श्री कामता प्रसाद गुरु ने हि दी का याकरण शीर्षक निब ध लिखा जो सरस्वती म प्रकाशित हुआ। इस निब ध का आज भी उतना ही मह व है जितना तब था।

इस युग के बाल साहि य को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि भाषा का साफ सुथरा रूप सामने लान का प्रयास किया जा रहा था।

वस्तुत भाषा के क्षत्र मे द्विवेदी जी का योगदान अद्वितीय कहा जायगा। इसके पूव हिन्दी भाषा का अपना कोई स्वरूप निश्चित नही होने के कारण उसका खिचडी रूप दिखाई देता है जिसमे अपरिचित श दो की भरमार तथा क्षेत्रीय भाषा के प्रयोग की बहुलता थी। याकरण के नियमो की शिथिलता तो सर्वत्र याप्त थी। इस सबको यवस्थित रूप देने का श्रय महावीर प्रसाद द्विवेदी को ही है जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है।

याकरण के नियमो मे बध जाने के कारण भाषा में नीरसता आना स्वाभाविक था। पर तु कवियो ने कविता मे श द माधुर्य लाकर इस दोष को दूर करने का प्रयास अवश्य किया। भारते दु युग मे कविता जो ब्रज भाषा मे लिखी जाती थी और द्विवेदी युग मे भी कतिपय कवियो ने इस पर परा को अपनाए रखा उन पर आलोचको ने अ य त निमम प्रहार किए कि यह अ य त हास्यजनक एव ल जास्पद है कि हम सोचें एक स्वर मे प्रकट कर दूसरे स्वर मे। हमारे मन की वाणी न हो हमारे गद्य का कोश भिन्न पद्य का भिन्न हो हमारी आ मा के सा रे ग म पृथक हो वाद्य यन्त्र के पृथक

अग्रेजो के प्रति विद्रोह पा चा य सस्कृति के प्रति घणा धम का पालन आदि के भाव भरते रहे। त कालीन गीतो ने कविताओ मे इस प्रवृत्ति के अतिरिक्त मनोरजनपरक त य तो है ही कविताएँ बाल मनोविज्ञानो मुख भी होने लगी। पिछले पृ ठो मे सकी चर्चा हो चुकी है।

इस यु। के समस्त बाल साहि य को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि ये कुछ निश्चित उद्दश्य को लेकर लिखे गए है —

(अ) बालको का मनोरजन करना।

(आ) पाश्चा य सस्कृति के प्रभाव से दूर कर ब चो मे भारतीय सस्कृति के प्रति मोह उ पन्न करना।

(इ) गाधीवादी विचारधारा के मा यम से बालको मे देश के प्रति समर्पित होने की भावना भरना।

(ई) प्राचीन पौराणिक ऐतिहासिक धार्मिक चरित्रो के मा यम से बालको का नतिक विकास करना जिससे वे स्वतन्त्र भारत के भावी नागरिक बन सक।

(उ) बाल साहि य की अभिवृद्धि करना और

(ऊ) बालको का ज्ञानवधन करना तथा उ हे भारतीय साहि य से परिचित कराना।

(2) कला पक्ष तथा द्विवेदी कालीन एव पूव स्वात य काली । बाल साहित्य

भाषा—भारते दु युग मे साहि यिक भाषा का जो अनगढ स्वरूप है उसका पर्याप्त परि कार द्विवेदी युग म दृ टिगोचर होता है। इस युग के लेखकगण याकरण स मत भाषा लिखने का ही प्रया । क ते थे। पिछली त्र टियो को दूर कर शुद्ध हि दी भाषा को स्थापित करने का भी प्रयास रहा। सरस्वती का प्रकाशन (सन् 1900) बीसवी शता दी के भाषा साहि य का अ यतम प्रतीक है। दूसरे श दो मे यह आधुनिक हिन्दी साहि य की वह प्रयोग भूमि अथवा सधि स्थल है जहाँ एक ओर भारतेन्दु युग की प्ररणा से मिले हुए साहित्य के रूपो पर आधुनिक प्रयोग किए गए वही दूसरी ओर विभिन्न साहित्य रूपो के लि निश्चित ओ स्वाभाविक भाषा का प्रयोग हुआ है। प्राचीनता एव नवीनता का अद्भुत सगम इसमे देखने को मिलता है।

बालको की पाठ्य पुस्तको मे हि दी उ मिश्रित जिस खिचडी भाषा का प्रयोग होता रहा उसे देखकर विद्वानो तथा आलोचको को बडा दु ख होता था और हि दी ाषा की यनीय स्थिति उनके लिए बडी कष्ट प्रद थी। इस पर टि पणी करते हुए आचार्य शुक्ल ने लिखा है आज कल भाषा की बडी बु ी दशा हे। बहुत से लोग शुद्ध भाषा का अ यास होने के पहले ही ब बड पोथे लिखने लगते ह जिनमे व्याकरण की भद्दी भूल तो रहती ही है कही कही वाक्य वि यास तक ठीक नही हता । याकरण की भूलो तक ही बात नही है अपनी भाषा की प्रकृति की पहचान न होने के कारण कुछ लोग उसका स्वरूप भी बिगा चले ह। वे अग्रजी के श द वाक्य मुहावरे तक यो के या उठाकर रख देत है यह नही देखने जाते कि भाषा हि दी उद हे या और कुछ। इस समस्या को देखत हुए सन् 1911 मे श्री कामता प्रसाद गुरु ने हि दी का याकरण शीषक निब ध लिखा जो सरस्वती म प्रकाशित हुआ। इस निब ध का आज भी उतना ही महत्व है जितना तब था।

इस युग के बाल साहि य को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि भाषा का साफ सुथरा रूप सामने लाने का प्रयास किया जा रहा था।

वस्तुत भाषा के क्षत्र म द्विवेदी जी का योगदान अद्वितीय कहा जायगा। सके पूव हि दी भाषा का अपना कोई स्वरूप निश्चित नही होने के कारण उसका खिचडी रूप दिखाई देता है जिसमे अपरिचित श दो की भरमार तथा क्षेत्रीय भाषा के प्रयोग की बहुलता थी। याकरण के नियमो की शिथिलता तो सवत्र याप्त थी। इस सबको यवस्थित रूप देने का श्रेय महावीर प्रसा द्विवेदी को ही हे जसा कि पहले भी कहा जा चुका है।

याकरण के नियमो मे बध जाने के कारण भाषा में नीरसता आना स्वाभाविक था। पर तु कवियो ने कविता मे श द माधुर्य लाकर इस दोष को दूर करने का प्रयास अवश्य किया। भारते दु युग म कविता जो ब्रज भाषा मे लिखी जाती थी और द्विवेदी युग मे भी कतिपय कवियो ने इस पर परा को अपनाए रखा उन पर आलोचको ने अ य त निमम प्रहार किए कि यह अ य त हास्यजनक एव ल जास्पद है कि हम सोच एक स्वर मे प्रकट कर दूसरे स्वर मे। हमारे मन की वाणी न हो हमारे गद्य का कोश भिन्न पद्य का भिन्न हो हमारी आ मा के सा रे ग म पृथक हो वाद्य यत्न के पृथक

मूध यव की तरह हमारे साहि्य का हृदय वेश की आ मा एक कृत्रिम दीवार देकर दो भागो मे बाट दी जाये। आ ोचवो के प्रहार का परिणाम यह हुआ कि हि दी कविता मे खडी बो ी हि दी का प्रयोग खलकर होने लगा। त कानीन कवि भाषा को सरल बना कर बाल पात्रो को कविता के मा यम से शिक्षा देने ो। याकरण सम्मत ाषा की नीरसता को दूर करने के लिए देशज तथा तद्भव श दो का प्रयोग करते थे। (जसे—दौलत दुनिया आदि।)।

द्विवेदी जी के इस युग मे भाषा को परिमाजन एव प्रौढता प्रदान करने के प्रयास के बाद भाषा कला मक हो गई।

शली और शि प—द्विवेदी युग मे बाल साहि य के विभिन्न विधाओ में अनेक शलियो के प्रयोग हुए जि का उद्दश्य विषय को बाधगम्य बनाने के साथ साथ ब चो को अभि यक्ति के विभिन्न मा यमो से परिचित कराना भी है। बाल साहि्य की सबसे मह वपूर्ण विधा कहानी मे शलीगत प्रयोगों के अनेक उदाहरण मिलते है। पचतन्त्र सिंहासन बतीसी मे कथा मक शली अपनाई गई है तो बेता पचीसी मे प्रश्नात्तर शली का प्रयो हुआ है।

आ म कथा मक शली सभवत सबसे पुरानी शली है जिसका प्रयोग द्विवेदी युग से लेकर अब तक होता आ रहा है। इस शली के अ तर्गत प्रथम पुरुष के रूप मे वर्णित विषय रोचक तथा बोधगम्य हो जाता है जिससे बालक विषय अथवा पात्रो से तादा य स्थापित कर लेते है। इस युग मे इ यादि की आ म कहानी छडी की आ म कहानी पसे की आ म कहानी आदि उ लेखनीय पुस्तक हैं जिनमे वस्तुओ का मानवीकरण करके उनके गुणो का रोचक परिचय दिया गया है। इस प्रकार की शली मे रचित पुस्त बा को की क पना शक्ति को बढाती हैं। जिन वस्तुओ को वे अपने आस-पास देखते हैं उनकी कहानी उनके ही मुख से सुनकर वे बड आनन्दित होते । नदी पहाड इमारत वस्तुएँ विज्ञान के आवि कारो आदि अनेक विषयो को सु दर ढग से इस शली के माध्यम से प्रस्तुत करने का काय सफलतापूर्वक हुआ। मैथिलीशरण गुप्त की ओले की कहानी रोचक पुस्तक है जिसमे ओला अपनी दशा का वर्णन करुण स्वर मे करता है। गुप्त जी की इस शैली मे गव न करने का उपदेश भी वर्णित है। क्योकि मन मे ब गव आता है तब क्रूरता भी आ घेरता है।

पत्रा मक श नी का प्रयोग इस युग मे हुआ है। बाल सखा शिशु आदि पत्रिकाओ म ऐसी अनेक रचनाए प्रकाशित हुई जिनमे पत्र के माध्यम मे किसी स्था या वस्तु का परिचय कराया गया। कविता मे भी इसका प्रयोग अछता न ी र ा। के ा प्रसाद पाठक का माता को पत्र इसी शली के अ तगत नि ी ग एक रोचक पुस्तक है। पिता के पत्र पुत्री के नाम स्व ीय जवाहर ाल नेहरू की एक विश्व पसिद्ध पुस्तक है। अपने जेल के दिनो मे उ होने अपनी पुत्री इ दिरा को जो पत्र लिखे उ हे पुस्तक रूप मे प्रकाशित किया गया। इन पत्रा क द्वारा भारत के इतिहास सस्कृति समाज ौर स हि य की चर्चा की है।

दो यक्तियो के बीच हुए वार्तालाप के माध्यम से उनके गुण दोषो उपयो िता तथा किसी स्थिति विशेष का उद्घाटन करना भी एक रोचक श नी रही है। इस प्रकार की शली मे भी कई कहानिया तथा निब ध इस युग मे लिखे गए। सिक दर और डाकू हीरा और कोयला सूरज और हवा दूध और पानी जसी रचनाए पाठय पुस्तको मे स्थान पा सकी और बा नका को स्तुआ के गु ा दाषो से परिचित कराने के साथ साथ उनका पर्याप्त मनोरजन भी करती ही।

डायरी शली एव सवाद शली का इस युग मे अभाव ही था। मिश्रित शली के अ तर्गत प्रमच द की रचनाए आती है। प्रमच द यथाथ के धरातल पर अपने साहि य की रचना करते थे। फलत इनकी कहानियो की निर्माण श नी गे आरम्भ विकास एव चरम सीमा ये तीनो भाग पूणत स्पष्ट और सुनिश्चित होते हैं। नकी भाषा शली पात्रो के अनुरूप सरल है। बोलचाल की भाषा से लेकर उ कृ ट स्तर का गद्य इनके साहि य मे मिलता है। इसमें प्रमुख रूप से उद भाषा का प्रभाव हाते हुए भी शुद्ध हि ी का प्रवाह है। दोनो के साम स्य से उनकी भाषा चुस्त मुहावरेदार हो गई है। आवश्यकता अनुसार उसमे कथोपकथन की शली का भी प्रयोग हुआ है। नमक का दरोगा ईदगाह जसी कहानियो मे इस प्रकार की विशेषताए लक्षित होती है।

इस युग मे जयशकर प्रसाद क पना प्रधान भावमूलक परम्परा के अधिष्ठाता थे। फ स्वरूप नकी कहानियो या नाटक का मूल धरातल समा तिहास है तो परिस्थिति क पनाजनक। फलस्वरूप इनकी कहानिया भावा मक हो गई है। बा नको के लिए लिखी उनकी कहानी छोटा जादूगर मे यही गुण विद्यमान है। इसकी भाषा कला मक ढग से प्रस्तुत हुई है

जिसमे सस्कृत समासावली त सम श दो का बाहु य और का यमयता मिलती है ।

हि दी मे व ानिक शि प विधि का कोई स्वरूप ारते दु युग मे निश्चित नही हो पाया था । फिर भी पश्चा ा पुस्तका की शि प विधि का प्रभाव हि दी के बाल साहि य पर पडा । द्विवदी युग मे सका विकास देखा जा सकता है । इसे स्वय द्विवेदी जी प्रमचद प्रसाद सरीखे साहि यकारो की रचनाओ मे देखा जा सकता है । प्रमचद ने प्रा भ मे आ शा का सहारा लिया फिर यथाथवाद का उसके बाद उनकी बा कहानिया मनावज्ञानिक धरातल पर उतर आइ । दूसरी आर प्रसाद शि प विधि मे विश्वास नही करते थे । फलत उनकी बाल कहानिया भावना प्रधान होक रह इ ।

इस प्रकार हम देखत हैं कि हि दी क बा साहि य मे शि प का कोई स्वरूप अ ी तक स्प ट होकर नही आ पाया । बा का के लिए जो भी लिखा जा रहा था वह या तो पाठय पुस्तको के रूप मे हा या े पुस्तक जो विदेशी साहि य से अनदित होक आई उनका प्र ाव रहा और इसीलिए बाल साहि य के अपने शि प के विकास का कोई स्वरूप स युग मे दिखाई नही देता । इसीलिए शि प सम्बधी विचार की पु ट साहि य के प्रौ विकास के साथ ही देखने को मिलता है यही कारण है कि बाल साहि य के शि प पर विशष रूप से लिख पाना यहाँ सम्भव नही है ।

सदभ सूची

1 रामच द्र तिवारी हि दी का गद्य साहि य पृ 38 ।

2 न ददुलारे बाजपेयी प्रकीर्णिका पृ 87 88 ।

3 ब्रजन दन सहाय रामलोचन शरण अभिन दन ग्र थ पृ 261 ।

4 उदयभानु सिंह महावीर प्रसा द्विवेदी और उनका युग पृ 272 ।

5 निरकार देव सेवक बाल गीत साहि य पृ 143 44 ।

6 बहुत हुआ अब क्या होना है
रहा सहा भी क्या खोना है ?
तेरी मिटटी मे सोना है

तू अपने को तान ।

—स्वदेश सगीत पृ 50।

7 देखो लडको ब दर । या एक म री उसको लाया
उसका है कुछ ढग निराला कानो मे प ने है बाला ।।

— ब चा की सौ कविताए पृ 22।

8 सोहनलाल द्विवेदी बाल सखा जून 1946।

9 गधा एक था मोटा ताजा
बन बठा वह वन का राजा
कही सिंह का चमडी पाया
चट वैसा ही रूप बनाया।

—ब चो की सौ कविताए पृ 24

10 महावीर प्रसाद द्विवे ी रसज्ञ रजन पृ 20।

11 श्रीधर पाठक हि दोस्थान 8 मार्च 1882।

12 निरकारदेव सेवक बाल गीत साहि य पृ 155।

13 निरकार सेवक ाल साहि य रचना और समीक्षा पृ 55।

14 किसी पेड की डाल पकड कर झट उस पर चढ जाऊगा।
चिडिया चारो ओर उडगी देख उ हे सख पाऊँगा।

—हि दी के ७ ठ बाल गीत पृ 29।

15 अज्ञय आज का भारतीय इतिहास पृ 382।

16 न ददुलारे वाजपेयी हि दी साहि य बीसवी शता दी पृ 3।

17 सतीशच द्र मिश्र आचाय रामलोचन शरण कृति व और
य क्ति व पृ 13।

18 हरिमोहन झा रामलोचन शरण अभिन न ग्रथ पृ 889।

19 H B lak f ll f valu bl f m t o ot nly f th y g b t f ld ly p pl a w ll H h t k l d g p t ı th p pag t f juve l lıt atu d tle p ad f the H nd L ngu g th o gl o t I d a

—गोपालच द्र महराज रामलोचन शरण अभिन दन ग्रथ पृ 924।

37 जहा ज म ता हमे है विधाता।
उसी ठौर मे चित्त है मोद पाता।
जहा है हमार पिता ब धु माता।
उसा भूमि से है हमे स य नाता।
—बाल गीत साहि य पृ ठ 51।

38 म दिया माता सा जिसने किया सदा लालन पालन
जिसकी मिट्टी जल आदिक से विरचित है हम सबका तन
—ब चो का सौ कविताए पृ ठ 25

39 पीछ रहना ठीक नही
यह है वीरो की लोक नही
मत सकुचाओ मत घबराओ
आगे आओ आगे आओ।
—बाल गीत साहि य पृ ठ 54

40 सबके हृ य सवदा समवेदना का दाह हो
हमको तु ारी चाह हो तुमको हमारी चाह हो
सुख और ख मे एक सा सब भाइयो का भाग हो
अ त करण म गाता राष्ट्रीयता का राग हो।
— भारत भारती पृ 179।

41 आओ जो यारी पुस्तक मम कर पकज मे खेलो
खोलो तीनो द्वार दया कर भीतर मेरा मन ले लो
— सरस्वती हीरक जय ती विशेषाक (कविता खड) पृ 50।

42 बन चगन मगन
रह चगन मगन
उठ कसरत कर
आलस मत कर
—बाल गीत साहि य पृ 33

43 एक खिलाडी तगडा
एक पर स नगा
बूढा एक पुराना
एक आँख से काना
—बाल गीत साहि य पृ 33।

44 हरिकृ ण देवसरे बाल साहि य एक अध्ययन पृ 233

45 बहुत मशहूर दुनिया मे हमारा यह अखा ा है।
भयकर भीम भी आकर यहा पढता गहा ा हे ।।
ाहादुर वीर रुम्तम से यहा सुहराव न ता है।
यहा बलवान गामा से जिविस्को भी पछ ता हे ।।
—बाल गीत साहि य पृ 161।

46 सि ामन हिल उठ राजवशा ने भकु ी तानी थी।
बूढे भारत मे भी आई फिर से ा२ जवानी थी ।।
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी।
दूर फिरगी को करने की सबने मन म ठानी थी ।।
— झासी की रानी बा न भारती 4 पृ 92।

47 तुम लिखती हो हम आते
तब तुम होती हो नाराज
मैं भी तो लिखने बठा ह
कसे बोल रही हो आज ?
बु देले हरबोलो के मह
जिसने सुनी कहानी
—सुभद्रा कुमारी चौहान के सस्मरण पृ 143।

48 तेरे ही तो दिए हुए है मा ये सकल खिलौने सु दर।
दिल बहलाता रहता हू मै जिसके साथ खल जीवन भर ।।
उनमे त मय देख मुझे तुम क्यो होती ग्राकुल बेकार।
नही तु हारी स्मृति पर पर्दा डाल सकेगा इनका यार ।।
जिस क्षण मुझ पुकारोगी तुम फक खिलौने सारे पथ पर।
पास तुम्हारे आ जाऊगा बठ मरण के विद्युत रथ पर ।।
— सरस्वती हीरक जय ती विशेषाक पृ 107।

49 आलपीन के सिर होता पर बाल न होता उसवे एक।
कुर्सी की दो टाँगे हैं पर दूर नही सकती है फक ।।
है मनु य के पास सभी कुछ ले सकता है सबसे काम।
इसीलिए सबसे बढकर वह दुनिया मे पाता है नाम ।।
—बाल गीत साहि य पृ 160।

50 कब चीटी किससे कहती है दादा पानी लाओ
कब चिडियाँ किससे कहती है नाज मुझ दे जाओ

श्रम का भोजन सब करते है नही भरोसा पर का
अपने पर ही निर्भर रहना यही काम है नर का। वही पृ 160।

51 क्या कहा कठिन है काम कभी ऐसा मत बोलो तुम
कर सकते हो हर काम शक्ति अपनी तो तोलो तुम
कायर ही कठिनाई का रोना ले रुक जाते हैं
वीरो के चरणो पर आ कर पर्वत झुक जाते हैं। —वही पृ 162।

52 मेरे आगन मे (टीले पर है मेरा घर)
दो छोटे से लडके आ जाते है अक्सर
नगे तन गदबदे सावले सहज छबीले
मिटटी के मटमैले पुतले पर फुर्तीले

मनुज प्रेम से जहा रह सके मानव ईश्वर
और कौन सा स्वर्ग चाहिये तुझे धरा पर ?—युगवाणी पृ 27।

53 भारत माता ग्रामवासिनी
खेतो मे फैला है श्यामल
धूल भरा मैला सा आचल
गगा यमुना मे आँसू जल
मिटटी की प्रतिमा उदासिनी।— ग्राम्या पृ 48।

54 समय जगाता है हम सबको झटपट जग जाना ही होगा
देख विश्व सिद्धान्त कार्य मे निर्भय लग जाना ही होगा।
दृढ करके मस्तिष्क मनस्वी बनकर वीर कहाना होगा।
पूर्ण ज्ञान सर्वश चरण पर जीवन पुष्प चढाना होगा।
—सरल भाषा पृ 26।

55 मुझ तोड लेना वनमाली।
उस पथ पर देना तुम फेक।
मातृभूमि पर शीष चढाने।
जिस पथ जावे वीर अनेक।
—हिन्दी साहित्य मे राष्ट्रीय काव्य का विकास पृ 241।

56 रहे कही हम ऊचा सिर होगा
कारागार कृष्ण मदिर होगा
सूली! वह ईसा की शोभा
हू प्रस्तुत मैं सभी प्रकार—
—हिन्दी मे राष्ट्रीय काव्य का विकास पृ 215।

74 रामचन्द्र शुक्ल हि दी साहि य का इति ास पृ 534 ।

75 सुमित्रानदन पत प लव भूमिका ।

76 भूतल से मै उठा गगन मे गव हुआ यो मेरे मन मे
मिटा आद्रपन इमसे मेरा मुझे ऋरता ने आ घे ा
तब देवो ने कहा वहा पर क्रूरो का क्या काम यहा प
देकर मुझ पर का झटका पवन देव ने नीचे पटका
पडा पडा अब पछताता हू अपने आप घुना जाता हू ।

—ब चो की सौ कविताए पृ 20 ।

77 कि तु अदालत मे प हुचने की देरी थी । अलोपीदीन इस अगाध वन के सिंह थे । अधिकारी वग इनके भक्त अमने उनके सेवक वकील मुख्तार उनके आज्ञापालक और अदली व चपरासी तथा चौकीदार तो उनके बिना मोल के गुलाम थे ।

— नमक का दरोगा — बाल भारती —8 पृ 11 ।

78 कार्निवाल के मैदान मे बिजली जगमगा रही थी । हसी और विनोद का कलनाद गूज रहा था । मैं खडा था उस छोटे फहारे के पास जहाँ एक लडका चुपचाप शरबत पीने वालो को देख रहा था । उसके मुह पर गभीर विषाद के साथ धर्य की रेखा थी ।

— छोटा जादूगर बाल भारती –8 पृ 130 31 ।

— ——

पचम खण्ड

स्वातन्त्रोत्तर कालीन बाल साहित्य

(सन् 1948 से 1982 तक)

स्वातन्त्र्योत्तर कालीन बाल साहित्य
(सन् 1948 से 1982 तक)

रा ट्र प्रम और देश प्रम की जो भावना सन् 1947 तक साहि्य मे पनपती रही उसका स्वर अब बदलने लगा। कारण यह था कि सदियो की पराधीनता की बेडी कट ग । देश की जनता मे नई चेतना और जागति की लहर फल गई। सामाजिक राजनीतिक क्षत्र मे अनेकानेक नई योजनाएँ बनी जिसने जनता तथा जनता के साहि य को प्रभावित किया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के निए लिखे गए उत्त ाक रा ट्रीय गीतो के स्थान पर अब देश का गुणगान श्रद्धानु नेताओ का सम्मान साहि्य मे द टिगोचर होने लगा। शिक्षा का विस्तार तथा समस्त रा यो मे निरक्षरता को समा त कर देने के निश्चय ने चिर उपेक्षित बाल साहि य के भडार को भरने के लिए प्रो साहित किया और उसके प्रचार तथा प्रसार के साधनो मे अभिवृद्धि करने मे योग दान दिया। अब बाल साहि य की विभिन्न विधाएँ नये नये आवरण मे आवे ठित होकर प्रकाश म आई। कविता कहानी उप यास नाटक तथा जीवनी साहि य विषयो की विविधता को लेकर प्रकाशित हुए। इस बात पर बल दिया गया कि यदि एक भी ब च के साथ अ याय होता है तो पूरा समाज उसके लिए जिम्मदार है। जो भी पढ निखे है उनको चाहिए कि वे कम स कम एक ब च को पढाने का प्रयास करे। स्वतन्त्र भारत के बाल साहि य की ओर दृ टपात करन पर पाते हैं कि छठव दशक तक बाल साहि्य क स्वरूप म अधिक परिवर्तन नही आ पाया। इस समय तक बाल साहि्य का यह दुर्भा य रहा है कि उसे ब च कसा चाहते हैं इस बारे मे ब चो की कम बडो की आवाज यादा बुलद रही। ब चे क्या पढना चाहते है इसकी ओर कम उ ह क्या पढना चाहिए इस पर अधिक जोर दिया जाता रहा है। हम देखते है कि इस दशक मे भी अधिकाश बाल साहि यकार उपदश देने की प्रवृत्ति और नीति की कोई शिक्षा देने का मोह छोड नही पाए।

विदेशी बाल साहि य के प्रभाव के बावजूद बाल मनोविज्ञान के अनुरूप हि दी बाल साहि्य का सृजन अपेक्षाकृत नही हो पाया और बाल साहि य के स च मू याकनकर्ता द्वारा भी बालको के पसद की उपेक्षा की गई।

परिस्थितियो के बदलने के कारण बाल साहि य मे बाल मनोविज्ञान का मह व समझा गया क्योकि बाल साहि य बालको को मनोवैज्ञानिक रूप से सतुष्ट करता है वही अपने प्रति उ हे आकर्षित करने का मनोविज्ञान भी जगाता है। जसे जसे बाल साहि य का प्रचार और प्रसार होता गया है उसके अ ययन के प्रति ब चो मे मनोवज्ञानिक आकषण बढा है। स्वतत्रता पूव और स्वातन्योत्तर काल की स्थिति की ही तुलना कर लो स्प ट हो जाता है कि तब इतनी रोचक सु और इतनी बडी सख्या म पुस्तक न थी और आज जितनी सख्या मे जिस स्तर की पुस्तक हे पढने की तुलना मे आज क ब चो की बहुत बडी सख्या अपने पाठक के रूप मे तयार कर चुकी है। यह इस युग की सबसे बडा उपलब्धि इस साहि य के क्षेत्र मे है।

बालको की जिज्ञासा की प्रखरता तथा क पना की ऊची उडान उ हे अपने आस पास की समस्त वस्तुओ का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। अनेकानेक दुरूह विषयो को कविता या कहानी के मा यम से सरल बना कर उनकी जिज्ञासा को शा त करना बाल साहि यकार का मह वपूण काय हो जाता है। स प्रकार के साहि य मे मनोरजन भी पर्या त मात्रा मे अपेक्षित है क्योकि मनोरजन ब चो के जीवन का अनिवार्य अग होता है। इस प्रकार मनोरजक साहि य के द्वारा बालको की जिज्ञासा को शा त करना भी इस युग के साहि य की उपलब्धि मानी जा सकती है।

बाल मनोविज्ञान का मह व बढने के साथ साथ यह अनुभव किया गया कि बालको की रुचियो उनके परिवेश उनकी आदतो तथा ज्ञान लब्धि मे जितना परिवतन सातव दशक मे परिलक्षित होता है उतना पूर्व मे कभी नही हुआ। शहरो कस्बो और गाँवो मे यह परिवतन भिन्न होते हुए भी समग्रता मे एक था फलत ब चो से जीवन मू यो मे मा यताओ मे सामयिक सदर्भो मे परिवर्तन आया और इसन बाल-साहि य की दिशा ही बदल दी। इसकी विभिन्न विधाए नये आयामो को लेकर विकसित होने लगी।

बाल कहानी साहि य का स्वतत्रता के बाद अ य त विकसित रूप दिखाई देता है। कहानियाँ अब उपदेशा मक न रह कर बाल मन की अनुभूतियो के अधिक निकट हो गई। बालक अब पौराणिक धार्मिक तथा जादू और राक्षसो की कहानियो को तर्क वितर्क की कसौटी पर रख कर देखने लग। घिसी पिटी कहानियाँ उनमे उदासीनता का भाव भरने लगी। लेखको ने इसे समझा और आधुनिक जीवन मूल्यो के स दर्भ मे कहानियो की रचना होने लगी। विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ इस प्रकार की कहानियो के प्रकाशन मे

सहयोग देने लगी । परी कथाओ को लकर बाल साहि य के क्षत्र मे अनेक आलोचनाएँ हुइ । यद्यपि परी कथा तथा राजा रानी की कहानियाँ बहुतायत मात्रा मे छपती रही । आलोचको का एक वग इसे मनोवज्ञानिक आवश्यकता बताता है कि आधुनिकता के नाम पर यदि आप देवी देवताओ राजा रानियो और परी कथाओ को बाल साहि य से निकाल देना चाहते है तो यह कहना होगा कि बाल साहि य की चर्चा करने से पहले बाल मनोविज्ञान के बारे मे आप थोडी जानकारी बढ़ाएँ । धर्म निरपेक्षता के नाम पर म धम और नतिकता को बिसारते चले गए अब ब चो को अपनी सस्कृति सभ्यता पर पराओ आदि से भी क टना चाहेगे । तो दूसरा वग बि कुल इसके विपरीत धारणा रखता है— हम बात करते हैं मगल आर च द्र यात्रा की किन्तु ब चो को देते ह राक्षसो और परियो का अवैज्ञानिक साहि य । बात यह है कि बाल कहानी साहि य के द्वारा परी कथाओ का आकषण बालको मे उसकी रोचकता तथा कौतूहलता के कारण होता है । पर तु कौतूहल का यह भाव ब चो मे विज्ञान कथाओ से भी उ पन्न किया जा सकता है—उसमे नि य नये प्रयागो द्वारा । विज्ञान का जादू प्राचीन जादू कथाओ से अधिक आकषक हा सकता है यदि साहि यकार प्रयास कर । इसके अतिरिक्त परी कथाओ को भी नये स दभ मे प्रस्तुत करने का स्तु य प्रयास इस युग मे हुआ । डा हरिकृ ण देवसरे का नये प ी लोक मे उन परी कथाओ का सग्रह है िनका वास्तविक आधार धरती पर है । साथ ही ये बालको मे कौतूहल का विकास करती हैं और रहस्य तथा रोमाच के लिए भी पयाप्त अवसर प्रदान करती है । अमृत लाल नागर की परी कथाए जि ह घर के बालको के निए वे प्रतिदिन रचते थे भी इसी भावभूमि पर आधारित हैं । राजकुमारो की वीरता भरे कारनाम मुनाने की अपेक्षा ६ होने कथा का नायक बालक चुना जो चार डाकुओ के चगुल मे फँस कर अपनी वीरता तथा चतुराई से निकल भागता है और पुलिस की मदद से उनका सफाया करता है । यह कहानी बालको को अपनी कहानी अधिक लगी । इस प्रकार की कहानिया बच्चो के मन और मस्ति क को अधिक स्वस्थ बनाती हैं । इस प्रकार पार परिक ढग से प्रचलित परी कथाओ को जो नये सामयिक अथ देने होगे और उनकी अलौकिकता दूर कर बच्चे के आज के यथाथ से जाडना होगा ताकि आज का बच्चा उ हे अपनी चीज समझकर अपना सके और उनसे अथ ग्रहण कर सके । भूत प्रत और जादू टोने वाली कहानियाँ ब चो

के नतिक और मानसिक बल को भय और आतक मे न बदल दे सका भी बराबर यान रखना होगा। लेखक की इस धारणा को मानकर अन्य लेखकगण भी इस बात से सहमत हु कि ब चो की दुनिया सर्वथा पृथक होती है। उनका अपना स्वतत्र यक्ति व होता है। वे सस्कृति सा ि य तथा समाज के लिए नये होते है। स्कूली साहि य बाल साहि य नही है अपितु ब चो के जीवन तथा मनोभावो का जीवन के स य एव मू यो के पहचानने की स्थिति से जोडकर जो साहि य उनको सरल एव उनकी अपनी भाषा मे प्रस्तुत करता है और जो ब चों के मन को भाता है वही बाल साहि य है। इस स दर्भ में जने द्र की कहानी चोर किसका रुपया वि ण प्रभाकर की नागफास धर्मवीर भारती की गुल की बन्नो तथा कवर नारायण की गुडियो का खेल उ लेखनीय कहानिया हैं। म नू भडारी की कहा ी सजा बाल नायिका के मनोविज्ञान का चित्रण ब ी सु दर ढग से करती है। मोहन राके की भवानी इसी भावभूमि पर आधारित कथा है। ये कहानियाँ बाल नायक नायिका के मनोविज्ञान को चित्रित करने के साथ-साथ त कालीन सामाजिक समस्याओ का भी चित्रण करने मे सक्षम हैं। प्रमच द ने जिस प्रकार मनोवज्ञानिक कहानियो की नीव डाली थी उस आधार पर आज के अनेक लेखकगण कहानियाँ लिखने लगे। अ तर यही है कि प्रेमच द की कहानियो मे कोई न कोई शिक्षा अवश्य मिलती है जबकि सातव आठव दशक मे लिखी कहानिया सामाजिक समस्याओ को प्रस्तुत करते हुए उनका हल खोजने को विवश करती हैं।

कथा साहि य के क्षेत्र मे अभी भी अनेक विषय अछूते है जिनकी ओर लेखको को यान देना आवश्यक है। श्यामसिंह शशि जो बाल साहित्य के पुरस्कृत कवि एव लेखक हैं ने एक नया प्रयोग इस दिशा मे किया है। परी कथा पशु पक्षी कथा विज्ञान शिक्षा महापुरुषो की जीवनी जैस विविध विषयो से हटकर उ होने वनवासी ब चे कितने स चे का लेखन किया जिनमे दस आदिवासी जातियो के ब चो के जीवनयापन का सजीव चित्रण है जि हें जगलो मे बीहड पथ नग पाँव पार करने पडते हैं पहाडो की खडी चढ़ाइया भारी बोझ उठाए तय करनी पडती है रोटी की तलाश मे घर बार छोड अपने मा बाप के साथ भागना पडता है और प्रवास मे खले आकाश के नीच रात काटनी पडती हैं। वे प्राकृतिक प्रकोप खुशी-खुशी सहन करते हैं। उनके चेहरो पर नसर्गिक मुस्कान बदन मे चुस्ती और काम मे फर्ती को देखकर लगता है कि कोई रहस्यमय शक्ति उनका साथ दे रही है।

अपने इन उ च विचारो के अनुरूप शशि बालको के लिए कविताए कहा नियं तथा निबन्ध लिखत है तथा उन विषयो को लेते हैं जिनसे बालको का साहि य अभी भी अ ता है। रा य पुरस्कार भी इनकी योग्यता के कारण मिल चुके है। बालका ो र ष्ट्रीय इतिहास एव भूगोल की जानकारी कविता कहानी तथा नाटको के द्वारा देने के पक्षपाती है और उन अछते विषय की ओर सकेत करते है कि आदिवासी और पिछड क्षेत्रो के ब चो के विषय मे बाल साहि यकार यदि ब चो को रोचक जानकारी दे सके तो मुझे विश्वास है कि समाज क याण की भावना ब चो में बढेगी। राष्टीय गौरव सा भाव जगाने वाली कविता ब चो को दी जाय और डरावनी भूत प्रेतो की का प निक क नियो से परहेज रखा जाय तभी हम साथक स्वस्थ एव शिक्षाप्रद साहि य बोले भाले ब चो को दे पायेगे। बनवासी ब च इनकी वह बाल का य कृति है जिस पर इ हे रा य पुरस्कार प्राप्त हो चका है।

इस युग की सबस बडी उपलब्धि वज्ञानिक कथा साहि य की है। विज्ञान की ग बातो को कथा मक रूप देकर ब चो के लिये प्रस्तुत करने का सफल प्रय न हुआ। वतत्रता के पश्चात् ब चो के लिए वज्ञानिको की जीवनी विभिन्न व तुओ के वज्ञानिक आविष्कारो की कहानी आदि प्रकाशित हुई। दिनो दिन विज्ञान की प्रगति के प्रति बाल जिज्ञासाओ ने लेखको को नये तकनीक अपनाने का वाध्य किया। पशु पक्षियो के रहन सहन रग रूप बनावट आदि की तथा उनकी उपयोगिता के बारे मे वज्ञानिक जानकारी देने का काय आरभ हुआ तो ब्रह्माड एव भगोल सम्ब धी जानकारी देने का भी प्रयास किया गया। क्या क्यो कसे (आन द कमार) सागर की सर (ओमप्रकाश) जीव जगत जलचर तथा जीव जगत नभचर (तरुण भाई) मनुष्य की कहानी (जयच द्र विद्यालकार) खेल भी विज्ञान भी (योगे द्र कुमार ल ला) विज्ञान की कहानिया (र न प्रकाश शील) नाचती पृथ्वी के तमाशे (व्यथित हृदय) तुम पूछो हम बताए (श्रीकृष्ण) आदि पुस्तको के माध्यम से यह कार्य किया गया।

कविता तथा कहानी के द्वारा भी वैज्ञानिक तथ्यो की जानकारी सरल एव रोचक ढग से दी गई। विज्ञान गीत (अवध भषण मिश्र) ने टलिविजन रेल आदि वैज्ञानिक उपल धियो के लिए उपयोगिता को गीतो के द्वारा बताया है। विभि न कीडे मकोड पशु एव साग स जियो के विषय मे गीतो द्वारा बच्चो की फुलवारी (मधुकर) मे बताया गया है। राधश्याम प्रग भ ने कविता की विधा के माध्यम से धरती के ज म दिन रात का होना ग्रहण

आदि का परिचय सूरज की बेटी मे दिया है। रामचन्द्र तिवारी की पुस्तक आओ कर सवारी भी इसी शैली मे लिखी गई है जिसमे ट्रेन हवाई जहाज मोटर आदि का वर्णन है। समुद्र का खजाना (जय भा तदास) कथात्मक रूप से वैज्ञानिक जानकारी देता है। उसी प्रकार मगल रोड पर एक दिन (शकर सुल्तानपुरी) मे मगल ग्रह का विवरण संक्षिप्त जानकारी कहानी के रूप मे दी गई है।

आठवे दशक मे छोटे बच्चो के लिए रोचक विज्ञान पुस्तक प्रकाश मे आइ। मौलिक रूप मे विज्ञान कहानियाँ तथा उपन्यास आठवें दशक की ही देन हैं। इसके माध्यम से बालको के मनोरंजन के साथ बाल मन मे उठने वाली जिज्ञासाओ का समाधान इस ढग से किया जाता है कि उनके मस्तिष्क पर अतिरिक्त बोझ न पड़े।

विज्ञान के बढते चरण के साथ नित्य नये आविष्कारो की सही जानकारी बालको तक पहुँचाने के लिए नये नये प्रयोग हो रहे हैं जो विज्ञान साहित्य की प्रगति के सूचक हैं।

स्वातन्त्र्योत्तर बाल साहित्य मे उपन्यास विधा विकास की गति को प्राप्त करता गया। इस क्षेत्र मे नये-नये लेखन हुए तथा मौलिक उपन्यास लेखन का कार्य अधिक प्रगति की ओर अग्रसर हुआ। आरम्भ मे अंग्रेजी उपन्यासो का छायानुवाद बगला उपन्यासो का रूपान्तर तथा ऐतिहासिक और धार्मिक पौराणिक जीवन को उपन्यास की माला मे गूथ कर प्रस्तुत करने का जो प्रचलन चला वह कालान्तर मे धीमी गति से रेंगने लगा। बालक उन मौलिक उपन्यासो की ओर आकर्षित होने लगे जो समय समय पर विभिन्न पत्रिकाओ मे धारावाहिक रूप से प्रकाशित होते थे। नदन पराग धर्मयुग तथा साप्ताहिक हिन्दुस्तान इस प्रकार के मौलिक उपन्यास प्रकाशित करने मे अग्रणी रहे।

मौलिक उपन्यास लेखन का कार्य सबसे अधिक आठवे दशक मे हुआ। इस समय ऐतिहासिक सामाजिक मनोवैज्ञानिक तथा वैज्ञानिक उपन्यासो का प्रणयन बहुतायत से हुआ। इस प्रकार के उपन्यासो की लोकप्रियता इसलिये तो है ही कि बच्चों के लिए अब अच्छे और रोचक उपन्यास प्रकाशित हो रहे हैं। साथ ही इसका एक कारण यह भी है कि इन उपन्यासो मे वे अपने परिवेश से जुडने के अधिक अवसर प्राप्त करते है। इस

प्रकार का लेखन काय बाल मनोविज्ञान के बढते प्रभाव के कारण है इसमे कोई सदे नही ।

जासूसी एव साहसिक कारनामो से भरे उप यास भी पर्याप्त मात्रा मे दृष्टिगोचर ते हैं । इस प्रकार की कहानियो मे कुतूहल का भाव एव रोमाच रहता है । वह बालको को अधिक आकृ ट करता है । जासूसी कहानियो की लोकप्रियता ग्न वान पाकेट बुक्स के प्रचार ने इस प्रकार के उप यासो का विकास की दिशा दी । बाल पाकेट बुक्स की बढती हुई लोकप्रियता बालको की रुचि का परिचायक है । अनक निर्णायक दौर से गुजरने के पश्चात् इसकी प्रगति कुछ रुक गई है क्योकि सातव दशक के उत्तरार्द्ध मे बाल रुचियो मे जो परिवर्तन आया है उस बाल पाकेट बुक्स आ मसात नही कर पायी है । किरण बाल पाकेट बुक्स ज्ञान भा ती प्रकाशन सुबोध बाल पाकेट बुक्स तथा शकुन बाल पाकेट बुक्स ने योजनाबद्ध ढग से काय किया । शकुन प्रकाशन ने श्र ठ बाल साहि यकारो द्वारा बालको की रुचि और बाल मनोविज्ञान को आधार मानकर नये धरातल पर बाल पाकेट बुक्स लिखवाई । बाल बुक बैंक का भी इस दिशा मे सराहनीय सहयोग है ।

दुर्भाग्यवश प्रकाशको की यापारिक नीति के कारण बालकों को गुमराह करने वाले उप यास भी प्रकाशित हुए जिसने बाल साहि य के क्षेत्र मे प्रश्न चिह्न ही लगा दिया ।

आज का सामाजिक जीवन अनेकानेक विषमताओ तथा कठिनाइयो से भरा है । हर पग पर कठिनाइयो का सामना करना आवश्यक हो गया है । इन मुसीबतो और कठिनाइयो के प्रति सचेत रहने के उद्देश्य से बालको मे प्र यु पन्नमति व का गुण उ पन्न क ने के उद्देश्य से जासूसी बाल उप यासो का अच्छा खासा लेखन सातव दशक में हुआ । इस प्रकार के उप यास के पात्र ब च ही होते हैं फलस्वरूप बाल पाठक अपने को उस नायक के स्थान पर रख कर देखता है और आनन्दित होता है । परा मे प्रकाशित च दर का लिखा जासूसी उप यास डबल सीक्रट एजेन्ट—0012 एक उ लेखनीय कृति है । पर तु यावसायिकता के मोह मे इसके आधार पर अनेक गुमराह करने वाले उप यास प्रकाशित होने लगे जिसने ब चो को ह या मारधाड सब दिया । इसके विपरीत जासूसी उप यास के क्षेत्र मे उ लेखनीय कार्य भी हुआ । डाक्टर हरिकृष्ण देवसरे (होटल का रहस्य) शाति भटनागर (न हे जासूसी) मनोहर वर्मा (श्री टाइगर्स) एस सी वेदी (रोशनी के धमाके) रईस जादा (खूनी हवेली) राकेश कुमार जा (नकली चाँ) आदि

उप यासकारो ने अपनी रचना मे वज्ञानिक सूप बूझ तथा रो ाकता का ज छा परिचय दिया है ।

बालक की मनोवज्ञानिक समस्याआ को उप यास का विपय बनाकर लिखने की प्रथा हि दी म आठव दशक मे प्रारभ हुई । पि ना सु बाराव कृत घर से भागा मटरू सु दर कृति है । म न भडारी का उ यास आपका बटी बालक को पूण नायक व प्रदान करने वानी कृति है जिसम टी की चेतना तथा मानसिक उ नयन की विभिन्न भगिमाओ को सम ने का सफल प्रयास किया गया है ।

उप यास के लिए समाज के विभिन्न क्षत्रो से विषय िए गए । आबिद सुरती के उप यास बहत्तर मान का ब चा मे पा िवारिक जीवन का सजीव चित्रण किया गया है ि से समस्त बालक पने परिवार का ही चित्र समझते है । यहाँ तक कि छोट ब चो के लिए भी रोचक उप यास आठवें दशक के अ त मे प्रकाशित हुआ— चींटीपुरम के ूरलाल । बाल उप यास प्रकाशित करने मे शकुन प्रका न का योगदान निश्चय ही सराह ीय है जिसने विविध विषयो को कथा का आधार बनाया ।

हि दी बाल साहि य मे स्वतत्रता के पश्चात् उप यास और कहानी विधा का लेखन सबसे अधिक हुआ । यावसायिक द ि से भी ये ही विधाए सबसे अधिक लाभ ायक हैं क्योकि बालक जितना अधिक कहानी तथा प यास पढता है उतना कविता या नाटक न ी । कहानियो के द्वारा उनकी जिज्ञासा को उनके मस्तिष्क पर बिना अतिरिक्त बोझ डाले शा त किया जा सकता है । शि प का भार कथा-कहानियो द्वारा नही पडता ।

बाल नाटको का पर्याप्त विकास पिछले दो दशको े देखा जाता है । स्वतत्रता पूव के बाल नाटक सच पूछा जाय तो बा नाटक कह लाने के धिकारी नही थे । बूढो के नाटको को काट छाँट कर बालको द्वारा मचि करा देना ही बाल नाटक नही है । बालको के अपने परिवेश वातावरण परिवार तथा समाज की घटनाओ पर आधारित नाटक ही उ हे आकर्षित कर सकते जिनके पात्र बालक स्वय हो । ऐसे नाटको की पर परा नमदा प्रमाद खरे ने बा नाटक माना (1955) के अ तर्गत डाली जिसकी एकाकियो के पात्र—बा क थोडी सी साज स जा द्वारा उसे प्रस्तुत कर सकते थे । छठें दशक तक इस प्रकार के नाटक अ प मात्रा मे ही लिखे गए लेकिन जो लिखे गये उनमे अधिकाश के पात्र बालक तो होते ही थ कथावस्तु भी घरेलू

पारिवारिक हाती थी एव बोल चाल की भाषा का प्रयोग होता था। इन नाटको का उद्देश्य मनोरजन के साथ साथ शिक्षा देना भी था।

सातव दशक के प्रारभ में प्रतिनिधि बाल एकाकी (स योगेन्द्र कुमार लल्ला व श्रीकृ ण) द्वारा बाल ो का उपदेश देने के साथ साथ उनका सा ृ तिक विकास करना भी एक न य हुआ। ब चो के अपने परिवेश से जुड होने के कारण इस एकाकी सग्रह की एकाकियाँ अधिक प्रभावशाली सिद्ध हुइ।

सबसे बडी बात इस युग की एकाकियो या नाटको की यह थी कि ये सीधी उपदेशा मक वृत्ति से हटकर परोक्ष रूप से उपदेश देने का काय करने लगी। मनोरजन हास्य या रोचक कथानको क कारण यह प्रवृत्ति उभर कर सामने आयी। कमलेश्वर का पसो का पेड (1963) एकाकी सग्रह इस विशेषता की पूर्ति करता है। इस दशक मे रा ट्रीयता का भाव जगाने वाले (रा ट्रीय एकाकी—स योगेन्द्र कुमार लल्ला) एव हास्य का पुट भरने वाले (हास्य एकाकी—स योगेन्द्र कुमार ल ला) नाटक भी लिख गए।

नाटक के क्षेत्र मे आठवाँ दशक मह वपूर्ण है। इस समय पौ ाणिक कथानक को भी आधुनिक सदर्भ में प्रस्तुत कर श्रीकृष्ण ने उल्लेखनीय कार्य किया। हिर य कश्यप मडर केस इसी प्रकार का नाटक है। रेखा जन का अनोखा वरदान मे हास्य के साथ साथ शकर पावती एव गणश का एक भिखारी को वरदान देने की कथा आधुनिक सदर्भ मे बालको का खब मनोरजन करती है। बाल मनोविज्ञान के अनुकूल विष्ण प्रभाकर की एकाकियो का सग्रह हडताल मे बालको की जिद मागो के लिए तक हडताल आदि के दृश्य बड सजीव बन पड है।

इसके अतिरिक्त अन्य मह वपूण नाटय कृतियाँ विभिन्न समय में प्रकाशित होती रही। श्रीकृष्ण का अग्नि और अजलि (1970) चन्द्रशेखर का कमल और केतकी (1971) दयाशकर मिश्र दद्दा का नटखट टम्मो सेवक राम का फूल और काँटे (1972) उमाकात मालवीय का फलो की सभा (1977) मस्तराम कपूर उर्मिल का बच्चो के नाटक (1971) लक्ष्मीनारायण लाल का बुद्धिमान गधा जयशकर त्रिपाठी का भारत माता कहाँ रहती (1974) स्वदेश कुमार का लाल गुलाब (1973) जो 1962 के चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है रघुवीरशरण का वीर बालक (1973) रा ट्रीय भावना से ओतप्रोत इस

नाटक द्वारा बालको मे राष्ट्रीय भावना को विकसित करने की कोशिश की गई है—आदि महत्वपूर्ण कृतियाँ है ।

बाल रगमच का विकास इस युग की सबसे बडी उपलब्धि है । इसने बाल नाटको को विकास की दिशा दी । बच्चो के विकास के विषय मे सोचने वाले साहित्यकारो ने इस बात का अनुभव किया कि रगमच से बच्चो की अभिनयात्मक वृत्ति और अनुकरण करने की प्रवृत्ति को सही और स्वाभाविक दिशा मिलेगी । बच्चो की कल्पनाए बहुत दूर दूर तक उडा करती है । उनकी कल्पनाशीलता को रचनात्मक आधार और ठोस दिशा देने का काम रगमच बखबी कर सकता है । यहा तक कि परी कथाओ के चरित्र भी बाल कलाकार बखबी समझ लेते हैं और अधिक रुचि के साथ उन भूमिकाओ को निभा लेते है । लक्ष्मीनारायण के नाटक जादू की छडी तथा विजय तडुलकर के नाटक पापा खो गये इसके उत्तम उदाहरण है ।

बाल मनोविज्ञान सापेक्ष बाल रगमच का विस्तार देने के लिए दिल्ली मे चिल्ड्रेन थिएटर की स्थापना सन् 1954 मे हुई जो बच्चो की कल्पना शीलता को विकसित करने उनकी अभिनय रुचि को प्रकाशित करने स्वस्थ मनोरजन प्रदान करने तथा अप्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी प्रकार की शिक्षा प्रदान करने मे सहायक है । रेखा जैन ने इस प्रकार के प्रयोग के आधार पर बाल खिलौनो का ससार (1973) तथा दीवाली के पटाखे (1977) दो एकाकी सग्रह प्रकाशित कराये ।

दिल्ली बाल रगमच के अतिरिक्त हिन्दी भाषी विभिन्न प्रान्तो आगरा प्रयाग वाराणसी गोरखपुर —मे भी बाल रगमच की स्थापना एक महत्वपूर्ण कदम है । इस बात की भी आवश्यकता समझी गई कि शिक्षा और मनोरजन स्कूल और रगमच निकट और अर्थपूर्ण रगमच से मनोरजन के द्वारा बच्चो के व्यक्तित्व के विकास की विस्तृत सभावना को शिक्षा और सस्कृति की राष्टीय नीति के निर्धारण के समय ध्यान मे रखा जाये । अब सचमुच वक्त आ गया है कि बाल रगमच राष्ट्रीय आन्दोलन का रूप ले ।
परन्तु इसके केवल शक्षणिक महत्व मे ही अभिवृद्धि नही होनी चाहिए वरन् कलात्मक रूप से एक नई शैली के विकास का भी अवसर मिलना चाहिए और बालको मे मनोरजन के साथ साथ उनकी रुचि का परिष्कार भी होना चाहिए । अब बाल रगमच को निरन्तर विकसित होती हुई एक विधा बाल साहित्य के अन्तर्गत मान लिया गया । इसकी बढती लोकप्रियता के कारण

अनेक हिन्दी नाटककार बाल नाटक लिखने की ओर प्रवृत्त हुए तो हिन्दीतर भाषा मे लिखे बाल नाटको के अनुवाद भी हिन्दी मे हुए।

बाल रगमच को शिक्षा के साथ जोडने के भी प्रयास हो रहे है। इस सम्बन्ध मे आलोचको का विचार है कि इससे बच्चो को विभिन्न अवसर मिलेगे एक अनुकूल वातावरण बनेगा वे अपने चारो ओर के परिवेश से ज्यादा जुड सकेगे और उन मनोवैज्ञानिक ग्रथियो से भी छटकारा पा सकेगे जो उनमे असमय घर कर जाती है। आज के युग की विभिन्न समस्याओ से आक्रान्त बच्चे भी रगमच के माध्यम से छटकारा पा लेते है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटक लाख की नाक और भौं भौं खो खो इन्ही बाल समस्याओ पर आधारित है। बाल वर्ष के अन्तर्गत विभिन्न प्रान्तो तथा शहरो मे बाल नाटको को मचित करने का स्तुत्य प्रयास हुआ। दिल्ली चिल्ड्रेन्स थिएटर के अतिरिक्त नरेन्द्र शर्मा के निदेशन मे चलने वाली सस्था भूमिका सुषमा सेठ द्वारा निदेशित सस्था चिल्ड्रेन्स क्रिएटिव थिएटर चर्चित सस्थाए है। श्यामा जैन तथा आनन्द सिंह कलकत्ता मे प्रभात कुमार भट्टाचार्य तथा प्रोनाति भट्टाचार्य उज्जैन मे श्री प्रसाद वाराणसी मे बाल नाटको को मचित करने मे सक्रिय है। यद्यपि इन्हे अनेकानेक कठिनाइयो तथा समस्याओ का सामना करना पडता है फिर भी इनका प्रयास सराहनीय है।

प्रत्येक बालक अपने जीवन की कोई न कोई दिशा निर्धारित करने का प्रयास करता है। बचपन से ही वह किसी महान् व्यक्ति वैज्ञानिक राजनीतिज्ञ धार्मिक गुरु या पौराणिक चरित्रो के प्रति आकर्षित होता है और अपने जीवनादर्श को उसी के अनुरूप ढालने का प्रयास करता है। इतना अवश्य है कि युगानुरूप परिस्थितियो के अनुसार जीवनादर्श का निर्माण स्वय करना पडता है। इसके लिए सही दिशा निर्देश करने का कार्य जीवनी साहित्य करता है। बाल साहित्यकार बालको को नीति तथा धर्म की शिक्षा देने का कार्य तो प्राचीन काल से कर रहे थे। स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् उनका यह कार्य और भी महत्वपूर्ण हो उठा क्योकि वे बालको के चरित्र का निर्माण विकसित भारत के भावी नागरिक के रूप मे करते हैं। फलस्वरूप इस युग के बच्चो के लिए समसामयिक सामाजिक तथा राजनीतिक चेतना से अवगत कराते हुए सरल भाषा मे प्रेरक जीवनियाँ लिखी गई। पौराणिक चरित्रो के साथ तत्कालीन राजनीतिक महापुरुषो की तुलना एक प्रयोगात्मक उपलब्धि है जो नित्यगोपाल तिवारी के पाच पाडव (1948) मे प्रस्तुत है।

छठे दशक त ीवनी साहि य पौ ाणिक ऐति्ासिक च ि्रो की कथा सीध ढग से प्रस्तु क त हु िखा जाता था कि तु सा । शक के आर भ मे इसमे मूलभूत परिवर्तन लाने ी ओर ध्यान दिया ाने लगा तथा महापुरुषो क जीवन के सस्मरणो रोचक पसगा तथा बचपन की घटनाओ को साहि्य मे स्थान मिला। महान् भार ाय (बालकृ ण) न्हो के नेता (मुकु्देव शर्मा 1960) नवीन भा त क निर्माता आदि कृतिया उ लेख नीय है।

बाल जीवनी साहि्य प्रकाशि करने म पिपु स पि ंलशिग हाउस भारत सरकार का प्रकाशन विभाग शकुन प्रकाशन सस्ता साहि य मडन नीलाभ प्रकाशन उमेश प्रकाशन आ ि ने म वपूण भूमिका निभायी। उमेश प्रकाशन ने महापुरुषो के ीवन च ि्र को औप यासिक शली प्र तुत करने का नया प्रयोग सन् 1963 मे किया। जय भवाना (मनहर चौ ान) परसु राम (कुणाल श्रीवास्तव) शा तिदूत नेहरू (वीरे्द्र मोहन रतूडी) आदि अनेक ीवनी सा ि य इस शली मे लिख गये।

जीवनी लेखन की पर परागत शली को पीछ छोडकर साहि्यकारो का आकपण नये विषयो तथा शैली की ओर अधिक होने लगा फलत क्रा तिकारियो वज्ञानिको राजनीतिज्ञो सगीतज्ञो कलाकारो के जीवन चरित्रो से यह विधा अधिक समृद्ध बनने का अवसर प्राप्त करता है।

सातवाँ तथा आठवा दशक इस दिशा म अधिक मह वपूण है क्योकि इन दिनो योजनाब ढग से जीवन चरित्र लेखन की पराम्प ा चल पडी और पृथक चरित्रो पर पृथक पुस्तक प्रकाशित करने का कार्य प्रारम्भ हो गया। आजादी की पहरदारी में (स यदेव ना ायण सि्हा) हमारे बहादुर जरनल (सवदमन) मनुज साहसी जिसने पग भ से नापी दुनिया सारी (मनमो्न सरल) आदि रोचक एव ोमाचक जीवनी साहि्य है। आठवें दशक के अ त मे राधश्याम प्रग ल ने था मक शैली मे जीवनियाँ लिखने का काम सफलतापूवक किया। अभिम यु एव सीता का चरित्र वर्णित करने में लेखक का योगदान प्रशसित है। एक कटोरा पानी एतिहासिक चरित्रो को लेकर उपर्यक्त शली मे लिखा जीवनी च ि्त्र है।

बाल पत्र पत्रिकाओ का प्रकाशन अवाध गति से स्वात त्रता पूव होता रहा यद्यपि काला तर मे विभि न कठिनाइयो के कारण अधिकाश पत्र ब द भी हो गए। स्वत त्रता सग्राम की च म स्थिति के समय इस प्रकार का प्रकाशन अवरुद्ध भी हो उठा था। त कालीन परिस्थितियाँ प्रकाशको को इस बात की अनुमति नही देती थी कि वे नये प्रकाशन के जोखिम भरे काम को

हाथ मे नें। परन्तु कु प्रकाशक इस ओर प्रय नशील हुए और मद्रास से चन्दा मामा का प्रकाशन आर भ हुआ जो आज भी हि दी के अतिरिक्त अन्य प्रान्तीय भाषाओ मे भी प्रकाशित होता है। माँ ब चो का यह मासिक पत्र अपनी लोकप्रियता का दावा करता है। इस पत्रिका का स्वय का साहित्यिक मण्डल है और यह उच्च कोटि के बाल साहि यकारो का सहयोग नही लेती। सन् 1958 मे टाइम्स आफ इडिया ने पराग पत्रिका का प्रकाशन कर बाल साहि य की जड़ मजबूत करने का सराहनीय कार्य किया। अब तक बाल सखा तथा बालक ही सार बाल पत्रिकाओ मे अग्रणी थे और इनके त कालीन स पा कगण बाल साहि यकारो के निर्माण का कार्य कर रहे थे। पराग ने इस दिशा को नया मोड दिया एव नये प्रयोगो के लिए बाल साहि यकारो को आमत्रित किया। हि दुस्तान टाइम्स से प्रकाशित नदन ने भी काफी लोकप्रियता अर्जित कर ली। इसने नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक होने का दावा किया है। साथ ही यह बाल समाचारो की आवश्यकता की पूर्ति के लिए नदन बाल समाचार का प्रकाशन भी करता है। छोटे ब चो के लिए चम्पक का प्रकाशन पाक्षिक होता है। हास्य पत्रिकाए भी प्रकाश मे आई। लोट पोट पजू न बू बाल हास्य पत्रिकाएँ हैं परतु यह ब चो का स्वस्थ मनोरजन नही कर पाती। अ य उत्तम हास्य पत्रिका न होने के कारण बालक इसे ही लट कर पढते । इसके अतिरिक्त बाल भारती गुडिया शावक राजा भया अपनी अपनी नीति प प्रकाशित हो ही हैं। आन द बाजार पत्रिका कलकत्ता से मेला के प्रकाशन से इसमे एक कडी और जुड गई।

टाइम्स आफ इडिया प्रकाशन से सन् 1964 से इ द्रजाल कामिक्स तथा इडिया बुक हाउस से सन् 1969 से अमर चित्रकथा का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। विभि न भाषाओ में ये चित्रकथाए प्रकाशित होती हैं और भारत के अतिरिक्त विदेशो म भी लोकप्रिय हो रही हैं। इनके प्रकाशन की प्ररणा अग्रजी की चित्रकथाओ से मिली जि हें बालक लगन से पढते थे। उन कथाओ क माध्यम से बालक के मस्तिष्क मे हीरो का जो रूप उभरता था वह विदेशी था। फलस्वरूप विदेशी सस्कृति बालको पर हावी होने लगी थी। श्री अन त प ने इस दुर्भा यपूण स्थिति को समझा और वे भारत के गौरव चरित्रो का लेकर अमर चित्र कथा के मा यम से बाल साहि य के मच पर आए। नके द्वारा भारतीय चित्रकथा को एक नई दिशा मिली। इसके विपरीत इ द्रजाल कामिक्स के द्वारा बालको को एडवेचरस साहि य पढ़ने का अवसर मिला। इसके सम्पादक अभय टी सिंघवी के

विचारानुसार विदेशी पात्रो सम्ब धी कथा को भारतीय परिवेश के अनुसार परिवर्तित करके प्रकाशित किया जाता है ।

भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा सचित्र ८त जि दमय पुस्तक प्रकाशित हुई । असली जीमाकडे (गिमना मेहता) तदुआ और चीता (मेश बेदी) कौन जीता कौन हारा (कृ ण चत य) विश्व की श्र ठ लोक कथाएँ (हिमाशु जोशी) उ लेखनीय पुस्तक हैं । कौन जीता कौन हारा मे दो जातक कथाओ का पुनकथन आधुनिक स भ मे करने का अभिनय प्रयोग किया गया है । इस पु तक की कथा को आधुनिक जीवन म यो व स्थितियों से जोडा गया है ।

बालको को भारतीय गौरव च रित्रो से परिचित कराने के उद्देश्य से जीवनी साहि य के अ तर्गत दि ली से प्रकाशित गौरव गाथा एक नया प्रयोग है । अब तक इसमे छ महापुरुषो की चित्रमय जीवनी प्रकाशित हो चुकी है ।

ब चे काटन कोना अ यधिक पस द करते हैं । धमयुग का ढ बू जी (आबिद सुरती) साप्ताहिक हि दुस्ता का मुसीबत के बाबू (रवी द्र) नदन का चीटू नीटू (पी डी चोपडा) पराग का छोटू न बू (शेहाब) और बि ल (प्राण) आदि उ लेखनीय काटन कथाए हैं ।

अ तर्राष्ट्रीय बाल वप (1979) म बाल साहि य के विकास की ओर भारत मे भी ध्यान दिया गया । विभि न गोष्ठियो का आयोजन दि ली मथुरा पटना शोलापुर आदि स्थानो मे हुआ जिनमे बाल साहि य के निर तर विकास तथा उसके अ तगत त्रुटियो को दूर करने की लम्बी चौडी बात हुइ । विभि न साहि्यकारो ने अपने अपने विचार व्यक्त किये । पटना मे भारतीय बाल साहि्य अकादमी की बिहार शाखा का अधिवेशन हुआ जिसके अध्यक्षीय भाषण मे कहा गया— जसे ब चे के हाथ मे झुनझुना देकर हम उसे बहलाते है वसा ही उनके लिए रचा गया साहि य मनोरजन होना चाहिए । दूसरी ओर मथुरा मे विश्व बाल वष के उपलक्ष्य मे बाल कथा विचार गो ठी तथा बाल का य गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमे परी-कथाओ की उपयोगिता अनुपयोगिता पर उत्तजक विचार व्यक्त किए गए । परी कथाओ की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा गया कि बाल क ानियो का मुख्य उद्देश्य ब चो म क पना का विकास करना है फिर हम परी कथाओ का विरोध क्यो करें ? हाँ यह अवश्य ध्यान मे रखा जाय कि परी रचना मक रूप मे ही कथाओ मे आए । इसके विपरीत यह भी कहा गया कि

पौराणिक कहानियां या महापुरुषों की जीवनियाँ सुनाकर हम यदि चाहे कि बच्चा सुधर जाये तो यह हमारा दिवास्वप्न ही होगा। इसी प्रकार बाल साहित्य के लेखकों मे परस्पर विपरीत मतों की छत्र छाया मे भी बाल साहित्य पनपता फलता रहा।

15 अक्टूबर 1979 को विश्व बाल वर्ष मे प्रकाशित बाल साहित्य का विमोचन दिल्ली मे उपराष्ट्रपति श्री हिदायतुल्ला के हाथो हुआ। इस गोष्ठी मे भी विभिन्न विचारको ने अपने मत व्यक्त किए तथा बच्चो को मनोरंजक और सरल साहित्य देने की आवश्यकता पर बल दिया गया जो उनके विकास मे सहायक हो। परी कथाओ की अनुपयोगिता पर भी चर्चा हुई कि अब परियो भूत प्रेतो और राजा रानियो की कहानियो का जमाना नही है। बच्चो को नये बाल साहित्य की जरूरत है जो उन्हे आज के परिवेश से जोडे। इन सम्मेलनो का मुख्य उद्देश्य बाल साहित्य की अभिवृद्धि करना उन्हे प्रोत्साहन देना तथा बालको तक उन्हे पहुचाने के लिए जोर देना है। इन विभिन्न सम्मेलनो मे बाल साहित्यकारो का सम्मान कर उन्हे उच्च कोटि के बाल साहित्य लेखन के लिए प्रोत्साहित किया गया। बाल साहित्यकारो को पुरस्कृत करने की योजना राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान प्रशिक्षण परिषद् ने आरम्भ की और बाल साहित्य की पुस्तको पर पाँच पाँच हजार रुपये पुरस्कार देने की घोषणा की।

शकुन प्रकाशन दिल्ली की योजना के अन्तर्गत बाल वर्ष मे बाल साहित्य को श्रेष्ठ कृतिया देने के उद्देश्य से बच्चो के 100 नाटक 100 कहानियाँ तथा 100 कविताओ के सग्रह प्रकाशित हुए जिनके सपादक डा हरिकृष्ण देवसरे है। 12 उपन्यासो का एक सग्रह प्रकाशित हुआ—राधेश्याम प्रगल्भ के सम्पादन मे। इन पुस्तको मे हिन्दी बाल साहित्य की प्रत्येक विधा की श्रेष्ठतर रचनाए प्रकाशित की गई और उस विधा की रचना प्रक्रिया के विकासक्रम का परिचय भी प्रस्तुत किया गया। हिन्दी ही नही भारत की अन्य भाषाओ मे ऐसा सकलन पहली बार देखने को मिला जिसका सर्वत्र स्वागत हुआ।

आलोच्य वर्ष मे आनन्द बाजार पत्रिका ने नवम्बर से बच्चो का मासिक पत्र मेला का प्रकाशन आरम्भ किया। इसके प्रत्येक पृष्ठ को पढकर बच्चे अपनी ही दुनिया मे विचरण करते हैं चाहे वह कहानी हो कविता हो विज्ञान या खेलकूद का ही अध्याय हो। इस पत्रिका मे आधुनिक भावबोध

की रचनाए होता है तथा बालको की मनोवैज्ञानिक समस्याओ के समाधान होते है। इसका विशेषाक बालक को अपनी पुस्तक लगता है।

बालका मे अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास निमित्त अन्तर्राष्ट्रीय विलज समर के रूप मे आयोजन किया जाता है। आयोजन हिन्दुस्तान टाइम्स की दूसरी मंजिल पर 15 फरवरी 1977 को हुआ जिसमे डेनमार्क स्वीडन फिनलैंड अमरीका श्रीलंका वगैरा आदि भारत तथा भूटान के लगभग पचास बच्चे एकत्रित हुए। नन्दन मे प्रकाशित चित्रो की प्रदर्शनी देखकर अमरीका की ओहियो नगर की कुमारी शनी अपनी भावना रोक नही पाये और कहा कि ये चित्र तो हमारे बनाए चित्रो की तरह के लग रहे हैं बड प्यारे चित्र है। हमारे देश मे भी बच्चे इस प्रकार के चित्र बनाते हैं।

कुल मिलाकर हिन्दी मे बाल साहित्य का भविष्य उज्वल है। नित नये प्रयोगो के द्वारा इसका विकास निबाध गति मे होने लगा। हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ साहित्यकार अपना अमूल्य समय भी इसके लिए देने लगे हैं।

(क) स्वातन्त्र्योत्तर बाल साहित्य के विकसित रूप

(1) **बाल उपन्यास**—हिन्दी मे बच्चो के लिए लघु उपन्यासो की आवश्यकता भी स्वतन्त्रता के पश्चात् ही अनुभव की गई। बच्चो के लिए कहानिया तो बहुतायत सख्या मे लिखी गइ किन्तु बाल उपन्यासो का हिन्दी मे अभाव खटकता रहा जबकि बच्चो के उपन्यासो का अपना विशिष्ट महत्व इसलिए है कि बच्चे साहसिक रोमांचक ऐतिहासिक वैज्ञानिक विषयो पर लम्बी कहानियाँ पढने मे अधिक रुचि लेते है। बाल उपन्यास उन्हे पूरा मनोरजन और सतोष देते है। इस बात को ध्यान मे रखकर बाल उपन्यास की मौलिक रचना तो बहुत बाद मे होने लगी जबकि आरभ मे तो हिन्दी मे बगला तथा अग्रेजी उपन्यासो के रूपान्तर ही बाल उपन्यास की क्षतिपूर्ति करते रहे। लेकिन मौलिक उपन्यासो मे स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् उल्लेखनीय प्रगति हुई। वस्तुत उपन्यास ही ऐसी विधा है जो बच्चो के मन की अनेक गुत्थियो को सुलझाने मे सहायक होती है साथ ही इसमे अधिक रोचकता एव मनोरजकता रहती है क्योकि उपन्यास मे घटनाचक्र बडी तेजी से घूमता है और आगे क्या होगा यह जानने की उत्सुकता बनी रहती है।

न न उप यास के विषय विभिन्न क्षत्रो से लिये गये । ऐतिहासि- पौराणिक मामाजिक पारिवारिक तथा क पनाप्रधान उप-यासो की एक शृखला मे एक एक कड़ी जुडती गई । अब तक बालक राबि-सन क्रसो ट्रजर आइल ड तथा सि दबा का जहाजी यात्रा का आन-द लेते रहे एलिस इन द व-ड न ड के माध्यम से परीलाक मे विचरते रहे अली बाबा तथा राबिन हुड के कारनामो से प रिचित होते हे तभी तत्कालीन पत्र पत्रिकाओ में धारावहिक रूप म मौलिक तथा बगला से अनदित उपन्यास प्रकाशित होने लगे । स 1952 के बाल सखा मे खडखड देव मौलिक उप यास धारा वाहिक रूप मे प्रकाशित हुआ जिमके लेखक है भूपनारायण दीक्षित । उप यास की कथा रोचक तथा मनोरजक है । ब चो को इस उप यास मे बहुत आन द आया । बाल साहि यकारो का यह मानना कि कथा के पात्र महापुरुष या वीर अथवा पराक्रमी व्यक्ति होने चाहिए निराधार सिद्ध हो गया और यह माना गया कि उप-यास की कथावस्तु का रोचक शिक्षाप्रद एव समाज के किसी एक पहलू को लिया हुआ होना चाहिए । मानवीय गुणो का उजागर करने वाले त यो का समावेश होना चाहिए । दया करुणा स हस परोपकार शौर्य वीरता आदि के प्रसगो को लेकर कथानक का सृ न किया जाना चाहिए । यह सब बाल रुचि के अनुकूल होता है ब चे अपने को आ म सात कर लेते हे । जिस उप यास के पात्र बालक होते है वह उ-हे अपना अधिक लगता है ।

इसी परम्परा मे साप्ताहिक हि-दुस्तान मे दयाशकर मिश्र दद्दा का धारावाहिक उप-यास दीनू बेटा प्रकाशित हुआ । मौलिक उप-यासकारो मे अयोध्याप्रसाद झा का बाल उप यास लाल पुतला किशोर 1957 मे धारावाहिक रूप मे प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त समय समय पर प्रकाशित उप यास स्वण अभियान नकपुरी वे माई के लाल लोकप्रिय हुए ।

अब मौलिक उप यास लिखने की पर परा चल पडी । अब अनेकानक लेखक इस दिशा मे प्रवृत्त हुए । हरिकृ ण देवसरे का च-दामामा दूर के पराग म धारावाहिक रूप मे प्रकाशित हुआ । इ-ही का डाकू का बेटा बालको मे साहस और मनोबल की भावना भरने तथा उसके सुखद परिणाम दर्शाने वाला है । हिमाशु श्रीवास्तव कृत चदा मामा दूर के जूही रानी कृष्णच-द्र कृत खरगोश का सपना स-यप्रकाश अग्रवाल का एक डर पाँच निडर प्रशा-त का सुनहरा हिरन और जादू की टहनी मौलिक उप-यासो

की परम्परा मे आते हैं। इन उपन्यासो मे कौतूहल चारित्रिक गुण तथा प्ररणादायक बात है जिनसे बालको का मनोरजन तो होता ही है साथ ही यह भी शिक्षा मिलती है कि वे सच्चरित्र नागरिक बन सके उनमे कठिन परिस्थितियो से जूझने के लिए साहस तथा प्ररणा का ा मिले।

विद्या कनौजिया का ज्ञानी तोता शिवमूर्ति सिह व स का चाँद का म ल तथा सरोजिनी सिनहा का नदी की देवी मनोरजक तथा शिक्षाप्रद मौलिक बाल उपन्यास हैं। लक्ष्मीनारायण लान कृत— हरी घाटी (नदन 1966) द्रौणवीर कोहला कृत करामती कद तथा शशिप्रभा शास्त्री कृत सुनहरा उल्लेखनीय औपन्यासिक कृतिया ह।

कमल शुक्ल कृत गजाल गोविन्द सिह कृत हथेली पर हिमालय मनहर चौहान कृत सुबह के पछी शभ त्रिकल कृत गर्मियो की छुट्टियो मे हरिदास गुप्त कृत बदना यथाथ जीवन की भावभूमि प आधारित उपन्यास हैं। श्यामनदन प्रभात कृत पन्नी घरेल घटनाओ के ताने बाने मे बुना बच्चो को सजग बनाने वाला एक साफ सुथरा उपन्यास है।

बच्चो के आस पास बिखरी हुई समस्याओ के समाधान हेतु वह सपेरा था (कृष्ण मोहन) भोला (पदुमलान पुन्नालाल बख्शी) काँच का रास्ता सोन जूही और बौने (राबिन शा पुष्प) माँ की सहायता (विभूता लथरा) गुलेल के टुकड (स्वदेश कुमार) दादी का यार (विमल राय) आदि सरल उपन्यासो की रचना हुई।

अरविन्द गुट के उपन्यास लान निशान मे दो नन्हे बालको को अनेक क ट और दिक्कत उठाकर पूरे गाँव की रक्षा करना दिखाया गया है। रघुवीरशरण मित्र का कर भला हो भला बालको मे न्याय सत्यप्रियता प्रेम परापकार आदि गुणो को विकसित करने वाला उपन्यास है। वीरेन्द्रकुमार गुप्त का झील के पार वाछनीय जीवन मूल्यो के प्रति प्रेरित करने वाला लघु उपन्यास है। लीला मजूमदार का बडा पानी भी अच्छी कृति है। शान्ति भटनागर का माँ का आचल तथा देवेन्द्रकुमार का नानी माँ का महल रोचक उपन्यास है।

इन समस्यामूलक तत्कालीन यथाथ जीवन से सम्बन्धित उपन्यासो के अतिरिक्त ऐतिहासिक उपन्यासो की भी रचना इस युग मे पर्याप्त हुई। बच्चो को तद्युगीन वातावरण सस्कृति रहन सहन और आचार विचार से परिचित कराने मे ऐतिहासिक उपन्यासो की उपयोगिता असदिग्ध है। देवदत्त

शास्त्री कृत वीर अजुन मे महाभारत के पात्र अजन के चारित्रिक गुण गुरु भक्ति एकाग्रता वीरता आदि से सम्बन्धित सभी घटनाओ को उप यास शली मे प्रस्तुत किया गया है। मनहर चौहानकृत जय भवानी छत्रपति शिवाजी की ऐतिहासिक कथा है जिसमे उनकी मातृभक्ति आदेश पालन राष्ट्रीय भावना आदि पर प्रकाश डाला गया है। रामकृष्ण शर्मा का एकल य मे एकल य की जीवन गाथा रोचक शली मे वर्णित है। हरिकृष्ण देवसरे का राजा भोज मे उ जयिनी के राजा की विद्याप्रियता गुणग्राहता कलाप्रियता आदि का वणन है। इसी कोटि के अ तर्गत देवसरे का महाबली छत्रसाल च द्रहास उमाशकर का बाजीराव पेशवा चित्तौडगढ़ की रानी राजेश शर्मा का गुरुगोवि दसिंह शत्रु नलाल शर्मा का सम्राट शिलादित्य सुशील कुमार का च द्रगुप्त मौय विश्वामित्र शर्मा का सम्राट अशोक आदि उपन्यास बालको को ऐतिहासिक विभूतियो से परिचित कराने वाले हैं। मनहर चौहान के ऐतिहासिक उपन्यास हार पर हार (1974) मे बताया गया है कि अग्रेजो की कूटनीति एव भारतीय राजाओ महाराजाओ के पारस्परिक वैमनस्य के कारण महान् मराठा साम्रा य का अ त किस प्रकार हुआ। उप यास शली मे होने के कारण ये रोचक और मनोरजक हो गये है और अनजाने ही बालक उनके प्रभाव भी ग्रहण कर लेते हैं।

बालको को ऐतिहासिक चरित्रो का ज्ञान कराने के लिए उमेश प्रकाशन ने किशोर उप यासमाला के अ तगत लगभग साठ ऐतिहासिक उप यासो का प्रकाशन किया। सुदशन चोपडा कृत अजन कर्ण भीष्म मनहर चौहानकृत हरी घाटी गढ मडला की रानी वीरे द्रमोहन रतूडी का वीर कवरसिंह उमाशकर का बाजी राव पेशवा शिवमूर्ति सिंह व स का वीर कुणाल शत्रुघ्नलाल शुक्ल का दुर्गादास हरिकृष्ण देवसरे का महाबली छत्रसाल आदि। ये उप यास बालको मे दृढता साहस देशप्रेम क्त्तं य अधिकार आदि का भाव जगाने के लिए सक्षम हैं। साथ ही बालक यह भी जानने लगते हैं कि देश की कठिन परिस्थितियो में इन वीर पुरुषो ने साहस नही खोया।

अति प्राचीन काल की सभ्यता तथा सस्कृति का परिचय देने वाला उपन्यास बहुत दिन हुए (पी एम जोशी तथा मीठी चौक्सी) है जो औपन्यासिक शली मे प्राचीनकाल के मोहनजोदडो शहर की सभ्यता

महाभारत युद्ध के पश्चात् की भारतीय सभ्यता तथा सम्राट अशोक के राज्य तथा शासन का परिचय देता है ।

शकुन प्रकाशन ने भी ऐतिहासिक कथाओ तथा पात्रो को लेकर उपन्यास प्रकाशित किये हैं । इसके लिए उसने योग्य उपन्यासकारो का सहयोग लिया है । चित्तौड की महारानी (हरिकृष्ण देवसरे) मत चूके चौहान (सुशील कुमार) वासवदत्ता (कुणाल श्रीवास्तव) खब लडी मर्दानी व्यथित हृदय चाणक्य (वीरेन्द्र गुप्त) आदि उल्लेखनीय ऐतिहासिक बाल उपन्यास है । इसके अतिरिक्त व्यथित हृदय के ईश्वर चन्द्र विद्यासागर महर्षि अरविन्द राजा राममोहन राय मीरा बाई गोस्वामी तुलसी दास सुशील कुमार के महामना मदनमोहन मालवीय सम्राट अजात शत्रु सीढ़ी के सत (सूरदास) शकर वाम के सम्राट हर्ष राजेश शर्मा के महाराणा हमीर महाराणा कुभा महाराणा उदयसिंह आदि ऐतिहासिक उपन्यास है जो लोकप्रिय हुए । इन उपन्यासो मे इतिहास के तथ्यो की रक्षा तो की गई है पर्याप्त रोचकता भी इनमे है । इसका कारण यह है कि इतिहास और पौराणिक आख्यानो पर आधारित वे ही उपन्यास बच्चो को प्रिय होते है जिनकी कथा या तो रोमाच और साहसिक घटनाओ से भरपूर हो या जिसकी मूल भावना आज के जीवन की समस्याओ से जुड सके । यह प्रकाशन सस्था अभी भी इस प्रकार के उपन्यास प्रकाशन मे प्रवृत्त है ।

स्वातन्त्र्योत्तर काल मे पौराणिक उपन्यास कम लिखे गये । इसका कारण यह है कि बालक पौराणिक आख्यानो को अपने जीवन मे आत्मसात नही कर पाते । स्वतन्त्रतापूर्व इस प्रकार के साहित्य अवश्य लिखे गये थे जिसका कारण यह था कि उस समय हमे प्राचीन गौरव से आत्मबल प्राप्त करने की बडी आवश्यकता थी । किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् इसका स्वर बदल गया और पौराणिक तथा धार्मिक स्रोतो से उन्ही तथ्यो या प्रसगो को ग्रहण किया गया जो सत्य अहिंसा शान्ति आदि समसामयिक धारणाओ के अनुकूल था । गीता प्रेस गोरखपुर ने पौराणिक तथा धार्मिक प्रसगो और पात्रो को लेकर उपन्यासो का प्रकाशन किया । अधिकाश पुस्तक साधारण जनता के लिए प्रकाशित होती रही किन्तु उनमे बालको की आवश्यकताओ की पूर्ति करने वाली भी पुस्तक थी ।

देवता हार गये मे देवराज सिंह ने सत्य हरिश्चन्द्र की प्राचीन गाथा को प्रस्तुत किया है जिससे बालको मे सत्य बोलने तथा दृढ़प्रतिज्ञ होने की भावना जागती है । सुदर्शन चोपडा ने श्रीकृष्ण मे कृष्ण के जीवन चरित्र

का औप यासिक शली मे प्रस्तुत किया है। रामक्र ण शर्मा के उप यास नव कुश मे दोना वीर बालको की जीवन गाथा है जो राम की सेना से टक्कर लेने का साहस करत हैं। नकी कथा से बालको मे यायप्रियता का भान होता है।

भारत पर चीनी आक्रमण तथा पाकिस्तान आक्रमण के पश्चात् रा ट्रीय उप यास लिखने की आवश्यकता अनुभव की गई। देवेश ठाकुर का ममता रा टीय जीवन और जानकारी से भरा पूरा बाल उपन्यास है। र नप्रकाश शील का देश के रक्षक मे भारत पाकिस्तान सघष की साहस पू ा गाथा प्रस्तुत की गई है। आक्रमणकारिया को पकडने मे जनता क धय साहस तथा बलिदान पर आधारित य उप यास छात्रो के लिए एक उपयोगी कृति है।

साहस तथा रहस्य रोमाचपूण उप यासो का अभी अभाव ही है फिर भी इस दिशा मे प्रयाम हुए हैं। ऐतिहासिक वीरो से सम्बन्धित रचनाए बालको मे साहस का सचार करती है कि तु समयानुसार अधिक प्रभावशाली नहा रह जाता अत समसामयिक वातावरण के अनुकूल साहसिक बाल उप यासा की रचना होने लगी। हरिकृष्ण देवसरे का डाकू का बेटा मे डाकू का पुत्र अपने साहस और मनोबल से पिता को सही रास्ते पर लाता है और डाका डालने का कार्य छडा देता है। स य प्रकाश अग्रवाल का एक डर पाँच निडर मे पाँच साहसी बच्चो की कथा दी गई है। मनहर चौहान कृत उप यास सुाह के पछी रोचक रोमाचक एव कौतूहलपूर्ण कथा से भरपूर ० जिसम ब चा की समस्याओ का समाधान भी प्रस्तुत किया गया है। शा ति भटनागर का बालक की खोज (1968) दो भाइयो के प्रेम उनके साहस और सफलता की क ानी पर आधारित रोचक उप यास है। ीश नायक का क ब छ (1962) म भी दो यक्तियो के साहसिक कारनामे उप यास शली म प्रस्तुत किये गये हैं। विमला वर्मा का एक था ाटा सिपाही इसी कोटि का उप यास है।

शिकार से स ब धित रहस्य रोमाच से भरपूर कथाए भी इस युग का देन हैं। भीमसेन यागी का ह्व ल का शिकार तथा मगरम छ का शिकार (1971) मे ह्व ल तथा मगरम छ के शिकार के कौन कौन से तरीके हैं तथा किन परिस्थितियो मे उनका शिकार किया जाता है आदि का रोचक वणन उप यास शली मे प्रस्तुत किया गया है। मनहर चौहान का हाथी का

शिकार (1962) बाघ का शिकार आदि इसी प्रवृत्ति पर आधारित उपन्यास है। इसमे जगल का भी रोचक वर्णन है। रामगगा का शेर (च द्रदत्त इ दु 1978) मे व य जीवो की रोमाचक दुनियाँ का रोचक वणन है। इसमे जगल के अनेक पहलुओ पर प्रकाश डाला गया है। भगवतशरण उपा याय का सागर का घोडा भी रोमाचक साहस कथा है।

बच्चो को ऐसे उपन्यास बहुत पस द आते हैं जिनमे हास्य का पुट हो। ऐसे उप यास उ हे अधिक मनोरजन प्रदान करते हैं। राबिन शा पुष्प का चाचा चदेल और चाँदी का पेड (1963) हास्य प्रधान बाल उप यास है। पराग मे प्रकाशित होने वाले हास्य प्रधान उप यास हैं—आबिद सरती का बहत्तर साल का ब चा के पी सक्सेना का खलीफा तरबूजी तथा देवराज दिनेश का नागराज वासुकि। इन उप यासो को पढ कर बालक अ यधिक आनन्दित हुए। श्रीकृ ण का पहाड के उस पार मनोहर वर्मा का पिलपिली बहादुर तथा ललित सहगल का बीरबल भी हास्य प्रधान मनोरजक उप यास है।

छोटे बच्चो के लिए भी छोटे उप यास प्रकाशित हुए। मनहर चौहान का रूपा और ल ली (1969) दो चीटियो पर आधारित रोचक बाल उपन्यास है। मुद्रा राक्षस कृत चींटीपुरम के भूरेलाल (1978) में आधुनिक जीवन की झाँकी चीटी जगत् के माध्यम से बड रोचक ढग से प्रस्तुत की गई है। इस बाल उप यास से ब चो को यह पता चलता है कि कीड मकोडो का जीवन इतना अनुशासित होता है कि वह मानव समाज के लिए प्रेरणा का विषय बन जाता है। पराग मे धारावाहिक रूप मे प्रकाशित यह उप यास बडा लोकप्रिय हुआ।

जादुई चमत्कारो से परिपूर्ण बाल उप यास की प्रस्तुति धर्मयुग मे धारावाहिक रूप मे हुई। नाक का डाक्टर (मस्तराम कपूर उर्मिल) बाल उप यास छोटे ब चो के लिए लिखा गया एक फतासी है तो जादुई खडिया (मनहर चौहान) बच्चो की जादू भरे चमत्कारो और कारनामो का परिचय देता है। धारावाहिक रूप मे इतनी बडी कथा ब चो मे उ सुकता जगाने के साथ उनमे एकाग्रता का अभाव पदा करती है। एक अक समाप्त होने के बाद बच्चे अगले अक की प्रतीक्षा पूरे सप्ताह करते है और इस अवधि मे उनका धर्य जवाब देने लगता है। इस क्षेत्र मे यह प्रयास सराहनीय है। रामकृ ण शर्मा का बटुक बहादुर (1965) यथित हृदय कृत प्रेत के घर मे अरुण

कृत भूत भाग गा। मोहनलाल नेहरू कृत प्रेत नगर जादुई चमत्कारो तथा रहस्य रोमाच से परिपूर्ण बाल उपन्यास है। जयप्रकाश भारती कृत बर्फ की गुडिया अन्य औपन्यासिक कृति है किन्तु उसका वातावरण विदेशी भावभूमि पर आधारित है।

इस युग मे वैज्ञानिक बाल उपन्यास भी लिखे गये जिनकी विस्तृत चर्चा वैज्ञानिक बाल साहित्य शीर्षक के अन्तर्गत की गई है।

इस युग की सबसे बडी उपलब्धि मनोवैज्ञानिक बाल उपन्यास की है। पिल्ला सुब्बाराव का बाल उपन्यास घर से भागा मटरू (1971) सराहनीय कृति है जिसमे शहरी दुनिया की चमक दमक से प्रभावित होकर घर छोडकर भागने वाले बालक की दुर्दशा का वर्णन है। कथा के नायक को किन किन परिस्थितियो का सामना करना पडा किन किन कठिनाइयो से गुजरना पडा आदि का मनोवैज्ञानिक चित्रण बडा सजीव एव मर्मस्पर्शी बन पडा है। वस्तुत सामाजिक समस्याओ बच्चो के अपने सम्बन्धो उनकी समस्याओ और अपनी अनुभूतियो को अभिव्यक्ति देने वाले उपन्यास भी बाल पाठको को अच्छे लगते हैं। इन उपन्यासो मे वे अपने मन की बातो को पढकर अपने प्रश्नो के उत्तर पाते है अपनी समस्याओ के हल खोज लेते हैं। वस्तुत ऐसे उपन्यासो की कथा मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर आधारित होती है। इन उपन्यासों को बच्चे कई बार पढते हैं और उस कथा की मार्मिकता तथा प्रभाव के बारे मे सोचने के लिए विवश हो जाते है। आज के बालक की मानसिक अवस्था का विकास शारीरिक अवस्था की अपेक्षा अधिक होने के कारण इस प्रकार के बाल उपन्यास की आवश्यकता समझी गई और राजेन्द्र मोहन ने भोर की किरण (1982) की रचना सचित्र बाल उपन्यास के रूप मे की। इस उपन्यास मे बालक अपने मन के अनुरूप विश्वसनीय वातावरण प्राप्त करने मे सक्षम है। जादूगर की खोज मे मे जयव्रत चटर्जी ने एक अनोखे छात्र कणासेन के चरित्र परिवर्तन का मनोवैज्ञानिक चित्रण प्रस्तुत किया है। इसमे नायक मन से भटक जाता है और उसका मन पढने में नही लगता। एक अध्यापक की सूझ बूझ और प्यार से फिर उसका मन पढने मे लगने लगता है।

भौगोलिक और यात्रा सम्बन्धी रचनाए हिन्दी मे अधिकतर अनुवाद के माध्यम से आयी हैं। भौगोलिक तथ्यो पर आधारित बाल उपन्यास अत्यन्त रोचक होते हैं। रुसी भाषा मे इस प्रकार के उपन्यास बहुतायत से लिखे गये हैं किन्तु हिन्दी मे अभी भी इसका अभाव है। प्रेरी के मैदान मे तथा ब्राजील

के वनों मे अंग्रजी से अनुदित उपन्यास है। हिमाचल प्रदेश के जन जीवन की पृष्ठभूमि पर आधारित मस्तराम कपूर उर्मिला का उपन्यास नीली और हीरू उल्लेखनीय कृति है। इसमे बाल रुचि का ध्यान मे रखकर विभिन्न भू भागो की प्राकृतिक बनावट जलवायु पशु पक्षी पदावार आदि की जानकारी औपन्यासिक शली मे रोचक ढग से प्रस्तुत की गई है।

इस प्रकार के हिंदी उपन्यासो के अतिरिक्त विदेशी भाषाओ के उपन्यास तथा लम्बी कहानियाँ भी अनूदित होकर हिन्दी बाल उपन्यास के क्षत्र मे आइ जिनमे राबिन्सन क्रूसो सिन्दबाद गुलिवर आदि की कथाए विश्व विख्यात कृतिया है। ये उपन्यास बालको मे साहस तथा भ्रमण की भावना का सचार करते है। राबिन्सन क्रूसो (डेनियल डिफो के रूपान्तर कार श्रीकान्त व्यास ने एक साहसी कल्पना प्रवण और यात्रा के लिए उत्कंठित किशोर राबिन्सन क्रूसो की सहज शक्तियो का बहुत ही प्रभावोत्पादक वर्णन किया है। नायक घर स भाग कर एक अनजाने सुनसान बीहड प्रदेश मे पहुचता है जहा उसे कई वर्षों तक रहना पडता है। इस समय जीने की लालसा तथा सघष का मनोवज्ञानिक चित्रण बडी खबी से किया गया है। कोरल आइलैण्ड (आर आर बलन्टाइन) का हिंदी रूपान्तर मूंगे का द्वीप नाम से श्रीकान्त व्यास ने किया जिससे पन्द्रह वर्ष के एक बालक तथा उनके दो अन्य साथियो की साहसिक समुद्र यात्रा का विवरण है। टेजर आइलण्ड (स्टीवेन्सन) का अनुवाद खजाने की खोज मे छिपा हुआ खजाना खोजने के लिए की गई साहसपूर्ण यात्रा का चित्रण प्रस्तुत करता है। स्टीवेन्सन के ही उपन्यास किडनैप्ड का हिन्दी रूपान्तर चादी का बटन है जिसमे श्रीकान्त व्यास की लेखनी से डेविड और उसके मित्र के साहसपूण कारनामे प्रस्तुत किए गए है।

हिन्दी मे यात्रासम्बन्धी मौलिक उपन्यासो की भी रचना हुई। किशोर गर्ग का ससार के चिडिया घरो मे तथा हरिकृष्ण देवसरे का चदा मामा दूर के उल्लेखनीय कृति हैं।

अंग्रेजी साहित्य से अन्य अनेक उपन्यास रूपान्तरित होकर हिंदी बाल साहित्य मे आऐ। अंग्रजी का बाल उपन्यास द गोल्डन मिल का हिंदी रूपान्तर सोने की चक्की के नाम से कमला सोधी द्वारा हुआ। कथा घटनाओ और कौतूहल से भरी है साथ ही बालको मे उत्तम गुण—वीरता परोपकार तथा सभ्यता उत्पन्न करने योग्य है। इसी प्रकार का एक जर्मन उपन्यास का अनुवाद द्रोणवीर कोहली की कलम से हुआ फूलों की टोकरी। श्रीकान्त

्यास द्वारा अनुदित कठ पुतला (1961) ब्चो को यह सीख देता है कि बडों की बात माननी चाहिए अ्यथा अनेक मुसीबतो का सामना करना पडता है। किशोर गग द्वारा अनूदित उप यास चालाक खरगोश (मि रबिट एड फाक्स) मनोरजन के साथ साथ खरगोश की चालाकियो पर प्रकाश डालता है। अन्ना सेविल के प्रसिद्ध उप यास ्लैक यूटी का सक्षिप्त हि्दी रूपा तर श्याम है। इसम घोड क मुह से ही उसकी सपूण कहानी कहलाई गई है। बच्चे जो लगनशी ा तथा महनती होते हैं वे अ त मे अपने लक्ष्य पर पहुँचते ही हैं। इस प्रकार की कहानी चा स डिके्स के उप यास डविड कापरफी्ड मे कही गई है जिसके ्दी रूपा तरकार श्रीका त ्यास हैं।

हास्य कथाआ का भी विदशी साहि्य से अनुवाद किया गया। अनाडी राम और उसके साथी (रूपा तरकार—योगे्द्र कुमार ल्ला) रूसी उप यास का अनुवाद है जिसमे अपने को बुद्धिमान समझने वाले अनाडी राम की सगीाज्ञ चित्रकार औ कवि बनने की इ्छा गु्बारे की सैर करने और विचित्र अनुभवो को प्राप्त करने की कहानी है। इसी प्रकार मूर्खतापूण बहादुरी का चित्रण करने वाला उप्यास है तीस मार खाँ। इस अग्रजी बाल उप्यास को रूपा तरित किया है श्रीका त यास ने।

जूलियस सीजर हेमलेट रोमियो जूलियट आदि शेक्सपीयर के नाटको की कथाओ को औप यासिक रूप में शत्र घ्नलाल शुक्ल ने हि्दी मे प्रस्तुत किया। सन् 1982 मे रागय राघव ने फिर से इ हे पुनमुद्रित करवाया।

एलिस इन द वडरनण्ड लई करोल की प्रसिद्ध परी कथा है। शम शेर बहादुर ने आश्चर्य लोक मे एलिस के नाम से अनुवाद किया। विनोद कुमार ने ो प्रसिद्ध उप यास राजा और भिखारी तथा टाम काका की कुटिया का अनुवाद पराग मे प्रकाशित कराया। अग्रजी के अतिरिक्त अरेबियन नाइटस की कहानिया अली बाबा चालीस चोर आदि का हि्दी अनुवाद प्रस्तुत हुआ। विभिन्न भारतीय भाषाओ के प्रसिद्ध उपन्यासो का भी हि दी मे अनुवाद हुआ। गुजराती बाल उप्यास जादूगर कबीर का हि्दी रूपा तर मनह् चौहान द्वारा साप्ताहिक ि्दुस्तान (1959) म प्रकाशित हुआ जिसकी बाल पाठको ने प्रशसा की जिसमे दिलीप और लता भाई बहन तथा एक प्रोफेसर के अद्भत दुनिया की साहसपूण कथा वर्णित है।

बगला उपन्यासो की भी हि्दी मे अनूदित हाकर बाढ सी आ गई बालबकिम कथा माला के अ तर्गत च दशेखर दुर्गेशनदिनी मणालिनी कृ णकात का वसीयतनामा और विष वृक्ष तथा रजनी सीताराम

कपाल कुडला राधारानी इदिरा आदि बकिमचन्द्र के बगला उपन्यासो का किशोरोपयोगी रूपान्तर बहुत सुन्दर ढग से प्रकाशित हुए। पुस्तक के मूलभाव को प्रभावशाली भाषा मे प्रस्तुत किया गया। इनमे भाषा की सरलता का विशेष ध्यान रखा गया जिससे बालको के लिए वह सहज ग्राह्य हो।

हिन्दी मे बाल उपन्यासो की लोकप्रियता बराबर बढती जा रही है। यद्यपि भारत मे बाल उपन्यास इतना समृद्ध नही है जितना विदेशो मे। भारत मे बाल उपन्यासो की आवश्यकता पूर्ति के लिए विदेशी उपन्यासो का पर्याप्त मात्रा मे आयात किया गया। अग्रेजी माध्यम से पढने वाले बच्चे अनजाने ही उन उपन्यासो के प्रति आकर्षित होते गये। क्योकि उन उपन्यासो की सरल भाषा रोमाचक तथा साहसभरी जासूसी कथा ने बाल पाठको को बेहद आकृष्ट किया। किन्तु जैसा कि स्वाभाविक है इन उपन्यासो का परिवेश कथा आचार व्यवहार निस्सन्देह भारतीयता से भिन्न था इसलिए बच्चो ने इन रोचक उपन्यासो का आनन्द लेने के साथ साथ अनजाने ही उनके प्रभाव भी ग्रहण किये। धीरे धीरे वे भारतीयता से कट गये और विदेशी उपन्यासो के प्रभावो को लेकर भारतीय परिवेश से जुडने मे उन्हे असुविधा हुई। इससे विषम परिस्थिति उत्पन्न हुई और हिन्दी बाल उपन्यास के लिए एक चुनौती उपस्थित हो गयी। हिन्दी लेखको ने भारतीय परिवेश से सम्बधित इसी प्रकार की रोमाचक तथा साहसपूर्ण कथा लिखने की आवश्यकता अनुभव की और इस दिशा मे ठोस कार्य होने लगे। इन दस वर्षों के अन्तराल मे जो बाल उपन्यास प्रकाशित हुए उनमे यह अन्तर स्पष्ट दिखाई देता है। अब के उपन्यासो मे बाल पाठक अपने परिवेश से जुडने के अधिक अवसर प्राप्त करते है। अनेक प्रकाशन सस्थाएँ भी इस दिशा मे कार्य करने लगी। विश्व बाल वर्ष मे बच्चो के लिए श्रेष्ठ साहित्य देने के उद्देश्य से शकुन प्रकाशन ने राधश्याम प्रगल्भ के सपादन मे बारह उपन्यासो का एक सग्रह प्रकाशित किया है जिसमे इतिहास विज्ञान शिक्षा रहस्य रोमाच विज्ञान फतासी आदि विविध विषयो से सम्बधित बारह उपन्यास हैं। बाल साहित्य के क्षेत्र मे बच्चो के लिए विविध विषयो से सम्बधित इन उपन्यासो से इस विधा की उपलब्धि और लेखकीय सजगता स्पष्ट हो जाती है। आलोचको का विचार है कि अन्य विषयो के अभाव मे इन्हे बच्चो के प्रतिनिधि उपन्यास नही माना जा सकता क्योकि कुछ बहुत अच्छे बाल उपन्यास इनमे सम्मिलित नही किये गये हैं। हो सकता है कि

प्रकाशक के समक्ष कई एक कठिनाईयाँ हो जिसके कारण अनेक विषय अछते ह गए हो ।

ाल उप यासो की बढती सख्या देखकर इसकी आशाजनक प्रगति की ओर यान जाता है कि तु सा ि य का मूल उद्दश्य बालको मे चरित्र निर्माण करना है । अत सामाजिक ऐति ासिक मनोवज्ञानिक पौराणिक भौगोलिक वज्ञानिक एव चरित्र निर्माण स बधी कथानको के आधार पर ही बालको के लिए उप यासो की रचना की जानी चाहिए । जासूमी मार पीट रोमाचका ी कथानको से भने ही ब चो का कुछ क्षण के लिए मनोरजन हो जाता है पर इस प्रकार व उप यास श्र ठ साहि य नही होते । ब चो की रुचि उनके मनोविज्ञान उनकी समस्याए निर तर बढने हुए उनके परिवेशीय ज्ञान के आ ार पर एकत्रित कथानको पर रचा गया उप यास ही ब चो में लोकप्रिय होते । ब तक किमी उप यास को पढ़ते समय ब चे कथा के पात्र न बन जाय जब तक वे स्वय मुसीबतो से जूझने की स्थितियाँ महसूस न करने लग तब तक उप यास सफल नही होगा । बाल उप यास की सफलता की कसौटी यही है कि पाठक उससे तादा म्य स्थापित कर अपने को उसका एक अग म न । ऐसे उप यास जितने यादा लिखे जाये बा उप यास की विधा उतनी ही समृद्ध और लोकप्रिय बनेगी ।

युग के सातव दशक म बाल उप यास के क्षेत्र मे एक क्रातिकारी कदम लेखको ने उठाया औ है जासूसी बाल उपन्याम लेखन का कार्य । इस विधा की सभी प्रका की क ानियो मे सबसे अधिक बल कार्यों पर दिया जाता है पर जासूमी क ा मे काय के साथ साथ बुद्धिकौशल हस्त लाघव औ कभी कभी तिलिस्म औ ऐयारी त वो को भी समेटना पडता है । अग्रेजी साहि य मे जासूमी और रहस्य ोमाच से भरे कारनामे प्रस्तुत करने वाले बाल उप यासो की स या अधिकाधिक है । एनिड लायटन के उप यासो को ब चे बडे चाव से पढते है । इसका कारण यह है कि इनके कथानक पात्र ालक ही होते टनाए उनकी शक्ति और बौद्धिक चातुय के नुरूप होते हे औ त मे उ हे अपने ही प्रय नो से सफलता प्राप्त ोती है । एनी लायटन के उप यासो की लोकप्रियता ने ही हि दी मे जासू ी बाल उप यास लि ने की प्रे णा दी ।

हि दी मे ालको के लिए स प्रकार के उप यास का लेखन अत्या धुनिक है । आज का समाज तथा जीवन मुसीबतो समस्याओ तथा खतरों से भरा है । बालको की स बुद्धि अक्सर समय पर काम नही आती क्योकि

छोटी छोटी समस्याए भी उन्हे बडी लगती हैं । इनसे निपटने के निए बालको मे क्षमता उत्पन्न करनी प ती है और उनकी तुरत बुद्धि को उनके अनुकूल बनाना पडता है । उनमे चतुराई और पनी दष्टि के गुण लाने क लिए सबसे अधिक उपयुक्त मा यम है कथा साहित्य । बच्चे कथा-साहित्य का पढने मे रुचि लेते ही ने उन कथानका मे उन्हे अधिव आनन्द आता है जिनमे रहस्य रोमाच एव साहस ादि तत्वो का समावेश हो और स प्रकार तिनिस्मी तथा जासूसी बाल उप गासो का ज म हुआ ।

जासूसी बाल उपन्य स का अपना अलग उद्देश्य है । इसका धरातल बाल मस्तिष्क क अनुकूल हाता है । प्रश्न उठता है कि जासूसी क्या है? ज सूसी करने का बच्चो के लिए क्या अथ होता है तो निश्चित रूप से घटनाओ एव उपल ध तथ्यो के मा यम से वास्तविकता का दूरदशन करना ही जासूसी है । जासूसी एक कला है जासूसी के रुप मात्र खन पिस्तौल क्लब या कब्रि तान ही नही है ये सब ासूसी उप यासो के रोचक हिस्से हैं । पर दनिक जीवन मे जासूस हाना ासूसी करना असाधारण बुद्धिमत्ता है । इस उद्देश्य को ध्यान मे रखक पराग ने कई जासूसी उपन्यास और कहा नियां प्रकाशित किये जिनमे बच्चो के जासूसी कारनामे थे । अवध अनुपम कृत शेर का पजा इसी प्रकार का उपन्यास है । अब यह धारणा बनने लगी कि जासूसी कहानी बच्चो के निए अनुपयुक्त नही है वरन् चुनौती है । इसकी परम्परा चल पडी । डा हरिकृष्ण देवसरे शाति भटनागर राजेश कुमार जैन मनोहर वर्मा देवदत्त शर्मा रईसजादा और एस सी बेदी के जासूसी बाल उपन्यासो ने रचना के प्रति एक निश्चित ष्टि अपनाई और स्तरीय सामग्री बालको को दी । खनी हवेली (रईसजादा) ऐतिहासिक और सामता पृष्ठभूमि को लेकर चलता है । इसमे सामती वग की एक नारी का स्वतत्रता के लिए ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सवस्व दाँव पर नगा देने की कथा है । नन्हे जासूस (शान्ति भटनागर) और श्री टाइगस (मनोहर वर्मा) पारिवारिक परिवेश का नेकर लिखा गया जासूसी बाल उप यास है । इन उप यासो मे एक कमी है कि उपदेशात्मकता के कारण ये बोझिल हो गए हैं तथा घटनाचक्र भी धीमी गति से चलता है । वज्ञानिक त यो के अभाव के कारण रोचकता कम है । परन्तु रहस्याय लुटेरे (1982) मे विनोद त्यागी इन्द्र ने राज के हैरत अगेज बहादु ी पूर्ण कारनामो से बालको को आश्चर्यचकित कर दिया । इससे पूर्व भूत महल मे रामकुमार भ्रमर ने भी इसी प्रकार के कारनामे प्रस्तुत किये हैं ।

वैज्ञानिक सूझ बूझ को ध्यान मे रखकर लिखा जाने वाला उपन्यास नकली चाँद (राजेश कुमा जन) तथा बरगद वाली हवेली (देवदत्त शर्मा) है। रोशनी के धमाके मौत का खेल (एस सी बेदी) भी उल्लेखनीय कृतिया ह।

अपराध जगत् मे विज्ञान के दुरुपयोग पर आधारि त उपन्यास लिखने मे अग्रणी डा हरि कृष्ण देवसरे ने ाटन का रहस्य जाली नोट जाली चेक जसे जासूसी बाल उपन्याम लिखे जिनस बच्चो को पर्याप्त वैज्ञानिक जानकारी मिलती है औ जो उनकी कल्पना का यथाथ के धरातल पर लाकर खडा कर देती है। वे वनानिक उपकरणो प्रणालियो की पूरी जान कारी जिरो अप राधी उपयोग मे लेते ह प्राप्त करने के बाद ही इस प्रकार के उपन्यास लिखत । इनकी मह वपूण उपलब्धि है राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के ाप ाो पडयत्रा को पुस्तक मे विषयवस्तु के रूप मे अपनाना। ये दैनिक अपराधो की ओर ध्यान नही देते। इनके जासूसी उपन्यासो के बाल पात्र ाने अदम्य साहस तथा सूझ बूझ से खतरो से जूझते है और समस्या का समाधान करते ह। हथियारो का प्रयोग वे नही करते।

जासूसी बाल उप यास की नीव तो अच्छी पडी लेकिन कालान्तर मे लेखक ाण इसक उद्देश्य को भूलकर मनोरजक जासूसी उपन्यास लिखने लगे। रहस्य रामाच तथा जासूसी को इस ढग से प्रस्तुत करने लगे कि उनकी उप योगिता पर सद किया जाने लगा। बाल पाकेट बुक्स के प्रकाशन के साथ साथ डबल सीक्र एजेन्ट 001/2 जमे उपन्यासो की बाढ सी आ गई। बच्चो को इन उपन्यासो मे ह या मारधाड के अतिरिक्त कुछ नही मिला।

उनके द्वारा चित्रित अपराध जगत् एक समस्या न रहकर प्राय मानसिक विलास बन जाता है। प्राय ही वे एक ऐसे जादुई रहस्यलोक एक ऐसी फ ासी की रचना करते हैं जिसमें यथाथ की किंचित भी झलक नही मि ती। इस प्रकार की पुस्तक लिखने मे एस सी बेदी अग्रणी ह जिन्होने ा ो का हगामा (1981) फटती लाश राजन और भयानक हत्या ा मिस्टेगान की तबाही खौफनाक बन्दर सस्ती मौत (सभी सन् 1982) ादि अनकानेक पुस्तकें राजन इकबाल सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित कराईं। इनकी बढती सख्या देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि बाल उप यास के ऊपर इसी प्रकार के उप यास छाये हुए हैं।

यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र डॉ देवराज भाटी मनोज विकास कृष्णकुमार सक्सेना आदि ऐसे ही परिवेश को लेकर उप यास लिखते है। इन्हे बच्चे

पढते समय कल्पनालोक मे तो विचरते ही है कि्तु उप यास समा त होने के पश्ात् यथाथ के धरातल पर म्ुह के बल गिरते है। यथ थ जगत् की सचाइयो से पलायन करने के अतिरिक्त उनके पास अ य को चारा नही रहता। नागरिक भावना का भी उनमे अभाव रहता है। इससे एक चि तनीय समस्या ख ी ो जाती है। ऐसे लेखको को चाहिए कि पहले वे स्वय यथाथ को देखना सीख—उसकी स पूर्ण सु दरता और विद्रपता मे। वे यह समझने का प्रयास कर कि यथाथ की अपनी फतासी होती है जो बाल कल्पना को जादुई लोक से कही ्यादा और सही विस्तार दे सकती है। इस प्रकार के उप्यास मे स्वस्थ पर परा का निर्वा करते हुए सुखमय भटटाचाय ने जेब कतरा चि बु ट से प्रकाशित कराया।

जासूसी बाल उप्यासो मे ऐसे साथक उप यासो की कमी है तो बालको मे यथाथ जगत् की कठिनाइयो से जूझने की क्षमता प्रदान करे समस्याओ का समाधान प्रस्तुत करने की सूझ बूझ दे तथा भविष्य के प्रति सतक रहे।

ह्दी मे बाल उप्यास प्रचुर मात्रा मे लिखा ा रहा है। इस क्षेत्र मे बाल साहि्य की दिशा मे निर तर प्रगति हो रही है। ब्चो की रुचि के अनुकूल पर्याप्त साहि य लिखा जा रहा है जो आधुनिकता विरोधी है जो ब चो को प्राचीनता से चिपकाये रखना चाहते ह उ्हे ब चे स्वय नकार रहे रहे है क्योकि नई पीढी वतमान मे जीती है और भवि य के सपने देखती । अब ब्चा को ो हम चा ते े वह पढने के लिए नही दे सकते उ्हे तो वह चाहिए िसे वे चाहते है। आज क ई ल यकार इस दिशा मे प्रय्नशील है कि बालको के मानसिक भूख को उनके मन के अनुरूप साहि्य रचकर शा त कर।

विश्व बाल वष के उपलक्ष्य मे शकुन प्रकाशन ने बालको को बारह उप्यासो का एक सकलन दिया। राधश्याम प्रग भ के स पादन मे न केवल विषय विविधता और उप यासो के विभिन्न प्रकारो की दृ ट से अपितु बाल उप्यास के क्षत्र मे हुए शली ात प्रयोगो का दृ ट से यह पुस्तक हि्दी बाल उप यासो का प्रतिनिधि सकलन है। साहस रोमाच जासूसी एव मनोरजन से भरपूर ब्चो को स्वस्थ दिशा देने वाली इस कृति मे ऐसे उप्यास भी सग्रहीत है जो अपनी श्रष्ठता के लिए सरकार द्वारा पुरस्कृत किये जा चुके हैं।

ब धा के बारह उप-यास मे उप य सो के चयन मे इस बात का विशेष ध्यान रखा ाया है कि प्र येक उप यास बालको की रुचि और आवश्यक ाा के अनुर प हो मरल और रोचक हो उससे बाल पाठको को प्ररणा मि े तथा वह उ हें नये जीवन मू ो ी ओर उ-मुख करे। यही बात बा ा उप-यासो की स्वस्थ पर परा को ज-म देती है। बाल उप-यास के क्षत्र मे इस युग म अ ुलनीय विकास को देखन हुए यह मानना पडगा कि थोड ही दिनो म ि- ा साहि-य का बा ा -प-यास विदेशी बाल उप-य सो की बराब ी म आ जायेगा।

(2) **बाल कहानी**—मानव तिहास के आरम्भ के साथ ही कहानी का भी ज-म हआ कि-तु काला तर मे इसमे विविधता विभिन्नता नवीनता आदि का समावेश युगानुरूप होता गया। कि-तु ब-चो के लिए हि-दी मे लिखित रूप मे कहानी का आरभ आधुनिक युग मे हुआ जो दो मुख्य उद्देश्य लेकर विकास के पथ प बढता हा। इसका पहला उद्श्य ब-चो को शिक्षा प्रदान करना तथा दूसरा बच्चो के कौतूहल को शा त करना और मनोरजन प्रदान करना। यह सच है कि कहानियाँ सुनकर ब-चे कुछ सीखते हैं नये नये सपने देखत है उनके सामने सारा ससार होता है उनके मानसिक क्षितिज का विस्तार होता है और उनकी रुचि गहरी होती है। बच्चे कहानियो मे केवल आन-द ही नही पाते ब ि क अपनी अनुभूतियो की अभि -यक्ति भी पात हैं। ब-चो की यह प्रवृत्ति युग-युगो मे एक समान हो रही है।

स्वतन्नता पूव के बा ा कहानी साहि-य मे नीति उपदेश राजा रानी की कहानिया भूत प्रतो की कहानियाँ विदेशी भाषाओ से अनूदित कहानियो की ही पर परा रही। कि तु स्वतन्नता प्राप्ति के पश्चात् इसमे क्रान्तिकारी परिवर्तन आया। यद्यपि आरभ मे त काल कोई नवीनता परिलक्षित नहीं होती कि-तु म ओर लेखकगण गभीरता से सोचने लगे और इस बात की आवश्यकता समझी गई कि जादूगरो और राक्षसो की कहानियाँ अब बच्चो के साहि य म स्थान पाने यो य नही रह गयी है। क ी जादू नही चलता। आज के विषम जीवन की प्रणालियो से बच्चो को भी किसी न किसी प्रकार हमे परिचित कराना होगा। विज्ञान के मूलभूत सिद्धा-तो से परिचित कराने के लिए उनकी कोर्स की पुस्तक ही पर्याप्त नही होती बल्कि विदेशी बच्चो की तरह विज्ञान कथा और अ य प्रकार के साहित्य से भी उनके मनोरजन

का एक साधन प्रस्तुत करना हागा। गत शक क सार्ि यकारो ने इस ओर गहराई से सोचा और साहि य लेखा म प्रवृत्त भी हुए।

सन् 1960 के बाद बाल कथाकारो ने प्राय उन सभी विषयो का अपन साहि य म स्थान दिया है जि ह बानक दखत समझन एव अनु भव करते हैं। बाल मनोविज्ञान के प्रचार प्रसार के कारण ब लत जीवन मू या सामाजिक परिवेश तथा वज्ञानिक वातावरण क अनुकूल साहि य लिखा जान लगा। इस दिशा मे नये भावबोध की कथाए प्रकाशित क ने मे ब चो का पत्रिका पर ग का म वपूण स्थान रहा। अनेक कठिनाइया क बावजूद ी मन र चौ ान म ीप सिंह शीला इ वि णु प्रभाकर मालती जोशी मस्तराम कपूर उर्मिल हरिकृ ण देवसर मनोहर वर्मा ादि विभि कथा कारो ने नये भाव बोध की कहानिया पराग के मा यम से बान पाठको तक पहुचायी। इनकी रचनाओ मे ब चा क मनाविज्ञान को समझ कर उनकी समस्याओ का ारा गया और उनक समाधान भी प्रस्तुत किये गए। विषयो क विविधता आज के समाज का चित्र ब चा क अपन ावन और स ब धो के चित्र तथा लीक से हट कर लिखे जाने क कारण म प्रकार की क ानियाँ बहुत पसद की गइ तथा बाल कथा साहि य के लिए नई भूमि तयार ो गई। व तुत पराग ने आधुनिक बाल साहि य का आधुि जीवन के धरातल पर रची गई अनेकानक कथाएँ देने का गौ व प्राप्त किया है। पराग के अतिरिक्त अनेक प्रकाशन सस्थाओ— स मार्ग प्रकाशन चि ड न बुक टस्ट —नेशनल बुक टस्ट शकुन प्रकाशन आदि—ने भी यथाथ जीवन के धरातल पर आधारित पुस्तक प्रकाशित का।

स 1950 स पहले इस प्रका की पु त अ य प माला मे ी। इसके बाद ामावना चेतन का हानी सग्र सुना फ ना (1955) द्वारा मनो िज्ञान का पुट ोने क कार ा मू यवान कृति हो ई ी दयाल चतुवदी मस्त का वाम न (1959) दवच द्र ागाल का फनबारा (1961) मनारजक कथा है। इसी प रा म लक्ष्मण प्रसा भारद्वाज का कहानी च मेरे मट ट मकटम (1961) एक बूढा आ त की म ारजक क ानी है।

न नावती ा च द्रहास रोचक शिक्षाप्रद क ानी है जिसम एक राजा के लडके का भिखारी बनना फिर अनुकूल परि थति से राजा बनने की कथा दी गई है। विनोदीलाल सक्सेना का तीन मजे (1965) विष्ण प्रभाकर का घमड का फल (1973) सतराम वत्स्य का लाखो मे एक

सीताशरण रनवाल का खिलानो के लाक म मनावज्ञानिक कहानी है। हेमलता का कथा कज तथा कथा मजरी (भाग 2 1964) मनोरजक और शिक्षाप्रद क ानिया का सकलन है। आन कुमार का धोखे मे जान गई जस को तमा उपे द्रनाथ अश्क का मा जयप्रकाश भारती की बफ की गुन्यिा (1963) पूनम अदीब का कहानी सग्रह मुन्ना और राजू (1959) प्रशात का स ची घटनाए दा भाई यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र का सफद बतख बालोपयोगी मनोवज्ञानिक कहानियो का सग्रह है। रमेश भाई का प ना का मुकुट (1965) तथा मुरारीलाल शर्मा की बुढिया की सूझ (1966) सरल भाषा मे लिखी कहानियो का सग्र है। अमृतलाल नागर ने नटखट चाची नामक सग्रह मे तीन बहुत सु दर कहानिया दी है। वि ण प्रभाकर कृत जब दीदी भूत बनी आर दुर्गावती सि कृत पढो आर आगे बढो पुस्तका का स दिशा म मरा नाय प्रयास क ा जा सकता है। चि डन बुक टस्ट से प्रकाशित शकर का पुस्तक ननिहाल म गुजरे दिन तथा चिरजीनाल प ाशर कत पढ िखे मूख और योतिलाल भागव कृत सनी की करामात भी म वग की मु दर पुस्तक ह। आचा ुक्तिदत का बसत धीरे धीर म गरीब परिवार म विधवा माँ के परिश्रमा बेटे की कथा प्रस्तुत की गई है। कमल शुक्ल की पुस्तक सात रग का फल मे एक बालक के साहस और कर्त यो की प्ररणादायी कथा है। कु दनलाल की बोलती चीज (1970) ब चो की कामन भावनाए जगाने वाला कहानी सग्रह है। दीनानाथ सरल की सबसे निराली चीज (1970) बाल मनोविज्ञान के आधार पर लिखी कहानियो का सग्रह है। धर्मपाल शास्त्री का दोनो को उ ल बनाया पृ वी कुमार का ि रन औ राजा शि ाप्रद कहानियो का सग्रह है। प्रशात की मीठी क ानिया ालबधु की रानी घाडी मनो र वर्मा का चदा मामा आर बु ुले (1972) मागरेट किड की शा ाना मरेलिन प का म कगा वनैगा (1972) भावा जीवन की आकाक्षाओ का सु दर णन है। राजे द्र अवस्थी का बाँस के फल मे छ बालोपयो ी कहानिया दी गई ह। योगराज यानी का रवि और देव रामकुमार भ्रमर का ह दिन एक कहानी (1973) स्वरूप कौशल का लोभ का फल लक्ष्मीनारायण लान का बडके भैया (1973) वियोगी हरि का पाव भर आटा शिवनाथ सिंह शाडि य का य मह और मसूर की दाल शिवप्रसाद दुबे का मिटटी का कलश बाल मनोविज्ञान पर आधारित कहानियाँ है। शलेश मटियानी का कहानी सग्रह ईश्वर की मिठाई तथा श्रीकृष्ण का मुफ्त की अकल हास्य रस से परिपूर्ण कहानिया हैं।

इन समस्त कहानियो के पात्र बालक या बालक के आस पास के व्यक्ति ह जिनसे बच्चे परिचित हैं। बाल मनोविज्ञान के अनुरूप मानती जोशी का कथा सग्रह दादी की घडी तथा व्यथित हृदय की दीन्नी ने कहा बच्चो ने सुना बच्चो की समस्याओ पर आधारित हैं। किरण बाल पाकेट बुक्स का कहानी सग्रह अपनी अपनी कहानी मे बाल साहित्य लेखको ने श्रेष्ठ कहानियाँ प्रस्तुत कीं। बाबूजी बारात मे (विष्णु प्रभाकर) लाल रोशनियाँ (राजेन्द्र अवस्थी) ठग नगरी के ठग (मन्मथनाथ गुप्त) अपने आपको सजा (मनहर चौहान) परी बिटिया धरती पर आई (मनोहर वर्मा) नदू (प्रमोद शकर भटट) पखो वाले कपड (प्रयाग शुक्ल) वास्तव मे श्रेष्ठ कहानियाँ हैं जा आधुनिक भावबोध से जुडी हुई हैं और इहे पढकर बच्चे अपनी दुनिया का आनद प्राप्त करने मे समथ होते है। गुब्बार (जयप्रकाश भारती) में नये समाज औ नई दुनिया से बच्चो को जोडने वाली कु सुन्दर कहानिया है तो साथ ही बच्चो मे अधविश्वास जगाने तथा जादू टोने के प्रति भय की भावना उत्पन्न करने वाली कहानियाँ भी हैं। इन कहानियो से बालक तादात्म्य स्थापित करने लगते है क्योकि यथाथ के धरातल से उठे हुए बाल साहित्य को पढकर बच्चे अपने को वास्तविक जीवन से कटा हुआ पाते है। वे अपने परिवेश और वातावरण को समझकर उससे जुडने का प्रयास करते हैं। अधविश्वास और परपरागत विचारधारा के प्रति उनकी कोई आस्था नही रही राजा रानी भूत प्रत आदि की कल्पनाओ का उनके लिए कोई महत्व नही रहा। अब वे इतिहास के पात्र बन गए हैं। हम देखत हैं कि बालक जन जीवन से सम्बंधित साहित्य को पढने मे अधिक रुचि लेते है।

नवीन भावभूमि पर आधारित कथा साहित्य के अतिरिक्त स्वातत्र योत्तर भारत मे लोक कथाए भी पर्याप्त मात्रा मे लिखी गई। इसका कारण यह है कि युग युग से चली आ रही लोक कहानियो की परापरा से छटकारा पाना सभव नही था। साथ ही बालक लोक कथाओ एव परी कथाओ के भाव को अधिक सरलता स ग्रहण करत है। लोक साहित्य लोक की युग युगीन वाणी साधना समाहित हती ह जिसमे लोक मानस प्रतिबिम्बित रहता है। इसी कारण जिसके किसी भी शब्द मे रचना चतन्य नही मिलता जिसका प्रत्येक शब्द प्रत्येक स्वर प्रत्येक लय और प्रत्येक लहजा सहज ही लोक का अपना है और उसके लिए अत्यन्त सहज और स्वाभाविक है।[4] इस बात को ध्यान मे रख कर इस युग मे समस्त भारतीय भाषाओं के

क साहित्य से छोटे ब नो के लिए जो कथाएँ उपयुक्त थी उन्हे निकालकर च्चों के लिए प्रस्तुत किया जाने लगा। रामनारायण उपाध्याय की पुस्तक तुर चिड़िया बालकृष्ण की हम करग दास गौरीशकर की चिड़िया ोती राजा हारा आदि कहानी सग्रह की कहानियाँ सचया मक कथाओ के च्छे उदाहरण है। बाजन रया (जगन्नाथ प्रभाकर) भी रोचक लोक थाओ का सग्रह है। कमन शुक्न की उत्तर प्रदेश की लोक कथाए के ावकुमार का मरता क्या न करता केरल की एक लोक कथा पर आधारित क पुजारी की कहानी है। चार भाई (1973) लोक कथा के माध्यम से कता के महत्व पर बल देता है। छत्तीसगढ की लोक कथाएँ (नारायण ाल परमार 1971) भोजपुर की लोक कथाएँ (शिवमूर्ति सिंह वत्स) शिक्षाप्रद एव मनोरजक हैं। नेफा की लोक कथाए (शिवानन्द नौटियाल) राष्ट्रीय भावनाओ को जगाने मे समथ है। सतराम की पजाब की लोक कहानिया पजाब के लोक कथाओ पर आधारित चमत्कारित घटनाओ से ारपूण चार कहानियो का सग्रह है। आनन्द प्रकाश जन की चार भागो मे तेलगाना की लोक कथाए शिक्षाप्रद है तो आरिग पूडि की आध्र की लोक कथाए (दो भागो मे) के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया है कि मूख अपनी मूखता के कारण कठिनाइयाँ झलते हैं तो बुद्धिमान उन कठिनाइयो को अपनी बुद्धि के बल पर जीत लेते हैं।

विभिन्न प्रान्तो की अलग अलग लोक कथाओ की शृखला मे कृष्ण लाल हस का आकाशदानी दे पानी मे गढ ाल की लोक कथाओ के माध्यम से बालको को उपदेश देने का प्रयास किया गया है। कश्मीर उज्जन विदर्भ बिहार बगाल सौराष्ट आदि प्रान्तो की लोककथाओ का भी चयन विभिन्न सन् मे किया गया। इन लोक कथाओ मे विभिन्न प्रदेशो के जन जीवन की झाँकी उन प्र गो के रीति रिवाज तथा त्याग साहस वीरता जसे आदर्श गुण प्राकृतिक बनावट आदि का परिचय प्रस्तुत किया गया है।

इसके अतिरिक्त विदेशी लोककथाओं का भी अनुवाद प्रस्तुत किया गया। जमनी (जगन्नाथ शर्मा) आयरलण्ड (शुभा शर्मा) बल्गेरिया रूस नार्वे कोरिया आदि देशो की लोक कथाओ के माध्यम से बालको को उन देशो का भौगोलिक परिचय वहा के बालकों के आदर्श गुणो का परिचय पशु पक्षियो की कहानियाँ सास्कृतिक तथा सामाजिक परिचय आदि का ज्ञान प्राप्त होता है। भारत सरकार के सूचना एव प्रसारण मत्रालय ने सावित्री देवी

वर्मा के सम्पादन मे देश विदेश की लोक कथाए (1968) प्रकाशित की। एक ही पुस्तक से बालक देश तथा विदेशो के लोक जीवन का परिचय प्राप्त करते है तथा इसके पठन से उनमे विश्व बधुत्व की भावना जागृत होती है।

श्रीकृष्ण की धार्मिक लोक कथाएँ (1960) मानव-जीवन के शाश्वत सत्य का परिचय देने वाली हैं। व्यथित हृदय की सपूतो की लोक कथाए भारत के महापुरुषो के जीवन की प्रमुख घटनाओ से बालको को अवगत कराती है। रामकृष्ण शर्मा की बापू की लोक कथाए म । मा गाधी के जीवन पर प्रकाश डालने वाली प्ररणादायक घटनाओ का सकलन है। फलो की लोक कथाएँ (मनोहर वर्मा 1960) मे भारतीय फला के जन्म का रोचक परिचय दिया गया है तो प्रकृति की लोक कथाए (शिवशकर लाल शेखर 1960) मे धरती आकाश चाँद सितार सूरज आदि के जन्म उनके रूप गुण आदि से सम्बन्धित बारह लोक कथाए सग्रहीत है। पशुओ की लोक कथाए (1960) रोचक कहानियो का सग्रह है जिसके द्वारा बच्चो को धोखा न देना धोखा न खाना चतुराई से लाभ लेना आदि बातो का ज्ञान लोक कथाओ के माध्यम से कराया गया है।

लोक कथाओ का प्रचलन इतना अधिक हो गया है कि एक ही कथा विभिन्न नामो से विभिन्न लेखको द्वारा प्रकाशित कराई गई। फिर भी लोक कथा साहित्य की लोकप्रियता का कारण यही रहा कि बच्चे इसे रुचि के साथ पढते है। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के दनिक पुस्तक इजरा के आँकडो से पता चलता है कि लोक कथाओ की पुस्तक बच्चो द्वारा सबसे अधिक पढी जाती है और तेरह चौदह वष के लड़के लडकियाँ भी लोक कथाए ही सबसे अधिक प ते हैं। यह बालको का पिछडेपन की ओर ले जाती है न कि भविष्य के लिए दिशा निर्देश देती है। इस शोचनीय स्थिति के लिए लेखक प्रकाशक और पुस्तक क्रेता तीनो उत्तरदायी है। यदि हम लोक कथाओ और नीति कथाओ के अतिरिक्त अन्य प्रकार का साहित्य (अच्छी कोटि का) पर्याप्त मात्रा मे बच्चो को उपलब्ध कराते और उनका सही मार्गदर्शन कराते तो हमारे बालको का मानसिक स्तर इतना पिछडा हुआ नही होता। इसकी उप योगिता को समझते हुए मनमोहन मदारिया ने नई बानी कथा पुरानी की कथाओ को लोक शैली मे लिखी जिसमे आधुनिक जीवन की बातो को समझाने का अच्छा तरीका अपनाया है।

बच्चे परियो की कथाए बड चाव से पढ़ते हैं। बच्चो की इस रुचि के कारण देश तथा विदेशो मे परी कथा का प्रचुर भण्डार पाया जाता है।

हैंस एडरसन विश्व प्रसिद्ध परी कथा लेखक हैं तथा ग्रिम बन्धुओ का भी महत्वपूर्ण योग न इस क्षेत्र मे रहा है। इन लेखको का प्रभाव ही परवर्ती कथा लेखको पर पडा है। बाल साहित्य के आरम्भिक काल मे परी कथाओ तथा नीति कथाओ की बहुतायत थी। बाल मनोविज्ञान के अनुसार नौ दस वर्ष की उम्र तक बालको को परी कथा से बाहर आ जाना चाहिए किन्तु होता यह है कि हमारे यहा तेर चौदह वर्ष के बच्चे भी परी कथा बडी रुचि लेकर पढते । ऐसा इसलिए होता है कि अभी तक बाल साहित्य को पुरानी कहानियो और लोक कथाओ से छटकारा नही मिल पाया है किन्तु आज तो हमे आवश्यकता है ऐसे साहित्य की जो बच्चो को बदलते हुए युग की बातो मे प रचित कराये। उन्हे राकेट चाद नागरिकता तथा सच रित्रता की जानकारी दे सके। इन परी कथाओ मे रुचि लेने का कारण बच्चो की कल्पनाशीलता ही माना जा सकता है।

भारत मे अभी भी अच्छ बाल साहित्य का अभाव है। जो उच्च कोटि के साहित्य है भी वे बालको तक पहुच नही पाते। परी-कथाओ का प्रचलन एक समस्या भी बन गई है। अनेक वर्षों से परी कथाओ को लेकर बडा ऊहापोह मचा रहता है। विशेष आयु वर्ग के बच्चो के लिए उनका महत्व है। उनकी कल्पनाशक्ति के विकास मे वे कथाए सहायक हो सकती है। ऐसी कथाओ की रोचकता और कौतूहल बनाये रखने की प्रवृत्ति मे एक गहरा आकर्षण होता है पर क्या विज्ञान के क्षेत्र मे निरन्तर हो रहे प्रयोगो और उनके परिणामो के द्वारा वही रोचकता और कौतूहल नही पैदा किया जा सकता ? किया जा सकता है। जादू-कथाएँ विज्ञान के जादू से अधिक रोचक और आकर्षक नही होती। विज्ञान का जादू कल्पना का नही वास्तविक होता है। प्रश्न उसके प्रयोग का है। थोडी सी कल्पनाशक्ति से उसकी सप्रेषणीयता मे जादू पैदा किया जा सकता है। आज भी हिन्दी की कुछ बाल पत्रिकाए झूठी काल्पनिक तथा बच्चो को पीछे ढकेलने वाली कहानिया दे रही है। नदन चन्दामामा जसी पत्रिकाएँ जादूगरो राक्षसो की कहानियाँ देने मे नही हिचकती। बालक जादूगरो तथा जादूगरनियो की जादूगरी उनके कारनामो जादू का घोडा जादू की अगूठी के चमत्कारो को पढकर चमत्कृत होते हैं किन्तु बच्चो को टिकिया भाती है इसलिए उन्हे केवल टिकिया खिलाना क्या ठीक होगा ? अगर जादू देना चाहते ही हैं तो उनके सामने एक नया जादू भी क्यो न रखा जाय ? बच्चो को यह क्यो न बता दिया जाय कि परमेश्वर एक जादूगर है सृष्टिकर्त्ता महान् जादूगर परमेश्वर से मानव ने जो जादू सीखा है उसका प्रकट आविष्कार है

विज्ञान । इस जादू से हम यादा परिचित होगे तो हम पुराने क पित और मायावी जादू से मिलने वाले आन द की अपेक्षा यादा आन द प्राप्त कर सकत है । भूत प्रत तथा जादूगरो की कहानियाँ बालको के मन मस्ति क को जकड लेती हैं । बालक का मन अ छ के प्रति सहज आकृष्ट होता है ।

इस दृष्टि से भी इस प्रकार की कहानियाँ बालको को अधिक मात्रा मे देना उचित नही माना जाता । होता यह है कि भूतप्रेतो के डरावने चित्र तथा राजा रानी की साम ती प्रवृत्ति की अधिकता होने के कारण ये कहानियाँ बालको की क पना को तो सजाती सवारती हैं कि तु यथाथ के धरातल पर उनका कोई मह व नही रह जाता । फिर भी ब चो को मनोरजन देने के उद्दश्य से अनेकानेक पुस्तक लिखी गइ जिनमे भगतसिह की चाँदनी रात मे जादू तथा आश्चर्यजनक घटनाओ का प्राधा य है । मनमोहन सरल और योगे द्र कुमार ल ला के सम्पादन मे प्रस्तुत परियो की कहानियाँ पर परागत परी-कथा ही थी । बशीलाल गुप्त की शेर का दिल मे कुछ परियो की कहानियाँ सकलित है ।

परी कथा के वातावरण मे नई कहानियाँ (फ टेसी) प्रस्तुत करने का प्रयास जिन लेखको ने किया उनमे शारदा मिश्र कृत नीलम और मसहरी की देवी (1963) कैरम बोड की परिया दयाशकर मिश्र दद्दा कृत मुन्नी का छाँप काका तथा रजिया का शेरदादा शिवमूर्ति सिह व स कृत सुनहरी मछली लाल हाथी उ लेखनीय परी कथाएँ हैं ।

आधुनिक युग के अनुरूप जबकि यथार्थ जगत् की कहानियाँ लिखी जा रही हैं परी कथा के सदर्भ मे भी नये प्रयोग किये गये । हरिकृष्ण देवसरे की कृति नये परी लोक मे वे ही परी कथाए सग्रहीत की गव जो ब चो को ऐसे क पना लोक की सैर कराती है जिसका वास्तविक आधार धरती है । क पना की रगीनियो के साथ कथा मे रोचकता रहस्य तथा रोमाच भी दिये गये । कुल मिलाकर इन कथाओ को एक ऐसा वैज्ञानिक आधार दिया गया जो ब चो को भविष्य मे एक वास्तविक धरातल की ओर ले जाने वाला सिद्ध हुआ । मनहर चौहान की रग बिरगी परियाँ भी इसी परम्परा मे लिखी गई कहानियो का सग्रह है ।

वस्तुत बच्चो के लिए ऐसे कथा साहि य की निश्चय ही उपयोगिता है जो उ हे कल्पनाशील बनाने के साथ ही उनका मनोरजन करे कि तु यह अधिक मात्रा मे न होकर जीवन के शाश्वत मू यो को परिचित कराने वाली भी हो ।

परी कथाओ के अतिरिक्त आज की कहानियो पर सबसे अधिक जो प्रभाव है वह है राजा रानी की कहानियो का। इस प्रकार की कहानियो को प्रस्तुत करना सबसे अधिक सरल काम बाल कथा लेखको को लगा। आलोचको का मत है कि इस प्रकार की कहानियो के अभाव मे बालक प्राचीन भारतीय सस्कृति इतिहास और जीवन मे उदासीन हो जायगे लेकिन अ-यधिक मात्रा मे इस प्रकार की कहानियाँ बालको को वर्तमान बोध से काट देती हैं। देवसरे जी के तीन पत्रिकाओ के सवक्षण (जिसका विस्तृत वणन अगले अध्याय में होगा) से पता चलता है कि कुल पाँच सौ कहानियो मे से एक सौ सोलह कहानियाँ राजा रानी की होती हैं। जब राजा रानी का अस्ति-व ही नही रहा तो उनकी कहानियाँ सुनाकर हम बच्चो को आधनिक जीवन बोध कैसे दे पायगे? कितना अजीब लगता है यह सोचकर कि आज भी ब चो के दिमाग मे सामतवादी विचारधारा के अकुर बोते जा रहे हैं और चाहते हैं कि वे बड होकर प्रजातत्रवादी समाज के नागरिक बने। नदन बाल भारती जसी पत्रिकाए भी प्रचुर मात्रा मे राजा रानी की कहानियो ब-चो को देती हैं। ब-चो मे इन पत्रिकाओ की लोक प्रियता का प्रमुख कारण एक यह भी है। पर-तु आज के इस वज्ञानिक युग मे इस प्रकार की कहानियो से उबरना होगा। आज के युग के राजा रानी को मात्र इतिहास का विषय बना देना ही काफी रह गया है। यदि इस सदर्भ मे ब-चो को एकदम काटना सभव नही है तो उनके सही रूप को प्रस्तुत करना अनिवार्य है। किस तरह वे गरीबो का शोषण करते थे विलासिता ऐश्वय स्वे छाचारिता निरकुशता आदि का कितना बोलबाला था—इन तथ्यो को उजागर करना उनकी कथाओ को कही अधिक रोचक बना देगा। कुछ कथाए ऐमी हैं जो बालको मे शासक के गुण प्रखर बुद्धि तेजस्विता आदि का परिचय देता है और बालक उनको अपने आचरण मे स्वत उतार लेते है। शकर सुलतानपुरी का कहानी सग्रह कृष्ण देव राय और अप्पा जी (सन् 1981) मे आध्र के शासक कृ णदेव राय के बाल मित्र अप्पाजी की हाजिर जवाबी के कुछ प्रसग के साथ राजा की वीरता विद्वता तथा कर्त- व के गुण भी उजागर होते हैं।

पचतत्र एव नीति कथाएँ भी बहुतायत रूप मे बाल साहि-य पर छाई रहीं। इनका मुख्य उद्दश्य रहा बालको को नीति की शिक्षा देना। इन नीति कथाओ की विशेषता यही है कि इनमें मनुष्य के स्थान पर पशु पक्षी वृक्ष पात्र के रूप मे ग्रहीत हुए हैं। वे मानवीय स्वभाव गुणो से युक्त हैं।

इनका उद्देश्य राजनीतिक एव नतिक शिक्षा देना तथा दनिक जीवन के द्विविध पक्षो का प्रतिपादन करना है। नीतिशास्त्र का सर्वाधिक मह व पूण ग्र थ पचतत्र का ऋणी तो देश तथा विदेश दोनो ह। इसीलिए बच्चो मे इस प्रकार के साहि य की लोकप्रियता के कारण बोलते पशु पक्षियो की कहानियाँ सदियो से चली आ रही हैं।

हि दी साहि य मे बालको के लिए स्वतत्रता के पूव तथा स्वतत्रता के पश्चात् भी इस प्रकार की कथाए बडी प्रचलित रही। द्विवेदी युग मे पचतत्र तथा हितोपदेश के बाल सस्करण प्रकाशित हुए थे। सुदशन कृत ब चो का हितोपदेश निरकार देव सेवक का ईसप की नीति कथाएँ (भाग) सूचना एव प्रसारण मत्रालय द्वारा प्रकाशित मे पशु पक्षियो के मा यम से जीवन मू यो एव नीतियो कर प्रकाश डाला गया है। योगराज थानी कृत पशु पक्षियो की कहानियाँ (1967) राममूर्ति मेहरोत्रा की पशु पक्षियो की शिक्षाप्रद कहानिया (1963) विद्या म गलिक की नीति कथाएँ (1971) उ लेखनीय कृतियाँ हैं। विष्णु प्रभाकर का सरल पचतत्र (197) सूचना एव प्रसारण मत्रालय द्वारा प्रकाशित पचतत्र की कहानियो का सरल हि दी मे बालोपयोगी रूपा तर है।

इसके अतिरिक्त समय समय पर पचतत्र की कहानियो का हि दी रूपा तर प्रकाशित होता रहा है। हेमलता का पचतत्र की कहानियाँ (1965) तथा मित्र की परख (1961) चि डेन बुक टस्ट से प्रकाशित हुआ है। इसी ट्रस्ट से शिवकुमार की पचतत्र की कहानियाँ चार भागो मे प्रकाशित हुईं। पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का भोला (1960) तथा जगन्नाथ शर्मा प्रभाकर की झलकिया (1966) नीति कथाओ का सु दर सग्रह है। व्यथित हृदय की नई नीति कथाए (1970) दो भागो मे प्रकाशित हुईं तो शकु तला देवी की पुस्तक पचतत्र की कहानियाँ तीन भागो मे प्रस्तुत की गई। धमपाल शास्त्री कृत सरल पचतत्र मे पचतत्र की प्रचलित कहानियो मे से बालको के लिए आठ कहानिया चुनी गई है। इनकी पुस्तक स ल हितोपदेश छोटे ब चो क लिए उपयोगी है। सुदशन की नीति कहानियो की शैली मे नवीनता परिलक्षित होती है। रामस्वरूप कौशल वि णदत्त विकल तथा आन दकुमार ने प्रचुर मात्रा मे नीति-कथाए ब चो को उपल ध कराई। अनुदीदी की बुराई की खोज (1973) भी सु दर नीति कथा सग्रह है।

इस क्षत्र मे आधुनिक बोध की कहानियो को ध्यान मे रखकर नया पचतत्र (1978) शीर्षक से एक नया कथा प्रयोग डॉ देवसरे ने किया।

पचतत्न की कथा जहा समाप्त होती है वही से नई कथा इसमे आरम्भ होती है ।

बालको मे पशु पक्षियो के लिए बाल सुलभ स्नेह का भाव रहता है । इसे ध्यान मे रखकर पशु पक्षियो से सम्बधित अनेकानेक कथाए बालको के लिए लिखी ग । ब चो की पत्रिका चम्पक इस प्रकार की कहानियाँ प्रकाशित करता है । वस्तुत छोटे बच्चो के लिए इस प्रकार की कहानियाँ अधिक उपयुक्त होती है । स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् इस ओर अधिक ध्यान दिया गया और रामनारायण उपाध्याय की चतुर चिडिया (1962) बाल बधु की बहादुर दमकल वाले और मोती (1965) कुदसिया जैदी की अलबेली बछिया (1959) कुलभूषण की मु नू के मित्र (1963) आदि कहानियाँ मनोवज्ञानिक दृष्टिकोण को ध्यान मे रख कर लिखी गई ।

इसके अतिरिक्त जे भरतदास का बदर और भाल दयाशकर मिश्र दद्दा का बकरी माँ अ छी पुस्तकें हैं । चि ड्रेन बुक ट्रस्ट से प्रकाशित गौरैया (चिजा जफा) तीन मछलियाँ बोलने वाली गुफा (1966) बि ली और कछआ तीन मित्र (प्रेमा रामकृष्णन) 1971 72 तितली का जीवन चक्र (मनोरमा जफा 1971) न हे मुन्ने चूहे चुहिया और भारी भरकम हाथी (मेरेलिन हर्ष) सुजाता और जगली हाथी (शकर) उ लेखनीय पुस्तकें हैं ।

मनोहर वर्मा का डाक्टर च पक और मचलू लम्बी शिक्षाप्रद चित्र मय कहानी है । रामकृष्ण शर्मा का चूहे राजा चालाक लोमडी विष्णुकात पाडेय का जगल मे मगल (1965) हरिकृष्ण देवसरे का बदरो का नाटक रामवृक्ष बेनीपुरी का बगुला भगत आदि अनेकानेक कहानियाँ ब चो को नीति की शिक्षा सदाचार मित्रता तथा कठिन परिश्रम आदि की शिक्षा देने के लिए लिखी गइ । सुरजीत का बर्फ से झाँकती आँख (1972) में युद्ध एव साहस सम्ब धी कहानियाँ बि ली शेरनी और कुत्ता आदि के प्रसग के कारण रोचक हो गई हैं । भरोसा (सन् 1981) म भी रत्नलाल शर्मा ने सात कहानियो के माध्यम से जीवन की स चाइयो को उजागर किया है । बालको को सघर्षों से जूझने एव आगे बढने का भरोसा दिया है ।

सिंहासन ब तीसी तथा बेताल पचीसी का भी अनुवाद इस युग मे हुआ । यशपाल जन का सिंहासन बत्तीसी (1957) हि दी मे अनूदित है । जातक कथाओ का सकलन भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा जातक

कथाएँ के नाम से प्रकाशित हुई । इसमे कई कथाए ऐसी है जो धार्मिक दृष्टि से उचित होते हुए भी बाल साहि य मे स्थान पाने के योग्य नही है । बालको के कोमल मन पर इसका बुरा प्रभाव पडता है । भगवान् बुद्ध के पूव ज म की विभिन्न कथाएँ इस कथा के अ तगत आती हे । काता डोगरा का वीर बौना रोचक जातक कथाओ का रूपा तर है । वासुदेव गोस्वामी तथा प्रभ दयाल गोस्वामी का जातक की क ानिया बुद्ध के पूर्व ज म स स बधित सोने का हिरन माया की छाया आदि बारह शिक्षाप्रद कहानिया का सग्रह है । प्रभदयाल अ निहात्री की कहानी लोक गगातीर मे जातक कथा पर आधारित कहानिया है । रोन्त और नदिया (रूपा तर—कृ ण चत य) भगवान बुद्ध के पूव ज म से सम्बधित जातक कथाआ म से एक का हि दी रूपा तर है । रोहत हिरण और नदिया ब दर इस कथा के प्रमुख पात्र है ।

भारतीय सस्कृति तथा धम की शिक्षा देने के लिए पौराणिक कथाओ की भी परम्परा बाल साहि य मे रही है । स्वतत्रता पूव के बाल साहि य में इस प्रकार के साहित्य की प्रचुरता रही किंतु स्वातत्र्योत्तर काल मे पुराणो तथा धार्मिक स्रोतो से उ ही कथानको को चुना गया जो स य अहिंसा शान्ति आदि सामयिक धारणाओ के अनुकूल था । राजबहादुर कृत तपस्वियो की कहानियाँ देवताओ की कहानियाँ विश्व भर सहाय प्रमीकृत रामायण के प्रसगो की कहानिया विराज कृत गाय और बाघ शभुदयाल सक्सेना कृत ऋषियो की कहानियाँ हिमाशु श्रीवास्तव कृत ज्ञान सरोव स य काम विद्यालकार कृत सरल रामायण जगन्नाथ प्रसाद मिश्र कृत सरल महाभारत आदि उ लेखनीय कृतिया है ।

रघुवीर दयाल मित्र का भक्त बालक ध्रुव वीरे द्र का द्वारका यथित हृदय का फल जो सदा महकाते रहेगे तुलसी राम त्रिपाठी का ब चो का रामायण (दो भागो मे) र नचद धीर का भगवान् श्रीकृष्ण (1972) तथा विश्व भर सहाय प्रमी का लक्ष्मण शक्ति लका दहन भरत भेंट आदि रामायण पर आधारित कहानिया है । सतराम व स्य का देवताओ का धम ड पौराणिक कहानियो का सग्रह है । वि णु प्रभाकर की तपोभूमि की कहानिया प्राचीन महर्षियो के याग और तप की कहामियाँ प्रस्तुत करती है ।

चि ड्रन बुक ट्रस्ट ने भी पौराणिक कहानियो के सकलन प्रकाशित कराये हैं । कृष्ण सुदामा (के शिवकुमार) पौराणिक कहानियाँ (चलपति राव) सावित्री स यवान नागमती सावित्री राजा हरिश्च द्र (हेमलता)

आदि मह वपूर्ण कहानिया है । राधश्याम प्रग भ की पुस्तक सीता सूरदास कृष्ण सुदामा आदि इस युग की पौराणिक कहानियो की मह वपूण देन हैं ।

ऐतिहासिक रा ट्रीय कहानियाँ स्वत त्रता पूर्व पर्याप्त मात्रा मे लिखी गई क्योकि त कालीन लेखको मे प्राचीनता के मोह जातीय गौरव राष्ट्र प्रम आदश स्थापना एव वीर पूजा की भावना का प्राधा य था । कि तु स्वतत्रता के पश्चात् इसके लेखन मे कमी आ गई । इसका कारण सभवत यह था कि त कालीन वातावरण समाज तथा युग के अनुरूप लिखी गई कहानिया ब चो को अधिक पस द आई । बीते हुए युगो की होने के कारण ऐतिहासिक कहानियाँ नीरस लगने लगी । भारत पर चीनी तथा पाकिस्तानी आक्रमण के परिणामस्वरूप भारतीय जनता मे वीरता तथा ओज के भाव भरने के निए ऐतिहासिक तथा राष्ट्रीय चरित्रो की आवश्यकता ममझी गई और उन वीर योद्धाओ को कहानी तथा कविता के मा यम से याद किया गया जो देश के लिए मर मिटे थे । गोकुल च द्र कृत वीरता की अमर कहा निया या वे द्र शर्मा च द्र कृत झूठी आन नरसिंह राम शुक्ल कृत हमारे पुरखे मनोहरलाल वर्मा कृत जीवन निर्माण की कहानियाँ रमेश नारायण तिवा ी की साहस की कहानिया (1973) हिमाशु श्रीवास्तव कृत पूर्वजो की सीख प्रशा त कृत इतिहास के प ने और बलिदान की कहानियाँ मनोहर वर्मा कृत बचन का मोल वृ दावन लाल वर्मा की र मि समूह आदि उ लेखनीय कृतियाँ हैं । अन त का इतिहास नही भूलेगा (1973) भारत के प्राचीन इतिहास से लेकर अब तक के महान् यक्तियो की छोटी छोटी कथाए है जो पुरातन को आधुनिकता से जोडने की मह वपूण कडी का निर्वाह करती है । अक्षयकुमार जन की हमारे परम वीर सेनानी (1973) चीन तथा पाकिस्तान के साथ युद्ध मे अपूव साहस और शौर्य का परिचय देने वाले वीरो की गाथाएँ हैं तो देश प्रम की कहानियाँ (1973) राणा प्रताप आ हा ऊदल आदि देशभक्त वीरो की कहानिया हैं । गुरुशरण की जननी ज मभूमि (1963) चीनी आक्रमण तथा वीरो की वीरता और शौय की कहानी है । कृष्ण श्रीवास्तव का आचाय द्रोण (1972) राधश्याम प्रग भ का अभिम यु (1973) ल लन प्रसाद यास का च द्रशेखर आजाद (1972) सतराम वत्स्य का राजा भोज मनहर चौहान की ह ी घाटी धर्मपाल शास्त्री का साहसी वीरो की गाथाए (1972) नप्रकाश शील का हि दुस्तान हमारा है (1973) देश भक्ति की भावना से भरी आजादी की लडाई मे जूझने वालो के कार्यों का वर्णन है । शिवकुमार गोयल का हिमालय

के प्रहरी (1973) चीनी आक्रमणकारियो का सामना करने वाले भारतीय वीर सैनिको की साहस भरी कहानियाँ ह । ए के घोष की ऐतिहासिक गाथाए (1973) मध्यकालीन ऐतिहासिक कहानियो का सग्रह है । राधश्याम प्रग भ की एक कटोरा पानी (1974) अमरसिंह राठौर एव उनकी प नी हाडी रानी के अमर बलिदान की कहानी है । लक्ष्मीनारायण लाल की हरी घाटी मे एक चौदह वर्षीय बालक के साहस की कहानी है जो कश्मीर मे पाकिस्तानी घुसपठियो की सूचना पुलिस को देता है । ्यथित हृदय ने रा ट्रीय एकता की प्ररक कहानियो मे धर्म प्रा तवाद जातिवाद आदि पर कुठाराघात किया है । टकराती लहर (सुशील कुमार 1971) मे एक देशभक्त बालक की राष्ट्रीय भावनाओ से भरपूर शौय-गाथा दी गई है ।

त्याग बलिदान भाईचारा करुणा दया आदि के भाव जगाने वाली तथा योग्य नागरिक बनने की शिक्षा देने वाली भी कुछ कहानियो का निर्माण हुआ । मस्तराम कपूर की सहेली (1972) एकता की भावना छआछत का ्याग आदि गुणों को प्रकट करती है । इसी भावभूमि पर आधारि त राजे्द्र अस्थाना की अ छ नागरिक बनो (1973) मे कहानियो के माध्यम से रुचिकर एव सरन भाषा मे नागरिकता के गुण बताये गये है । यथित हृ्य बद जो मोती बनेगी (1971) परि श्रम दया स्वावल बन सद्भाव आदि सद्गुणो के मोती उ पन्न करने वाली कहानियो का सग्रह है । स्नेह अग्रवाल का रोशनी की लकीर (1972) ह्िमाशु श्रीवास्तव की चरित्र निर्माण की कथाएँ (1973) सुदशनकृत पारस डा हरि कृष्ण देवसरे की हम पछी एक डाल के विविध देशो की पार परिक एव आधुनिक सामाजिक वज्ञानिक शक्षिक प्रवृत्तियो एव विशेषताओं का सिंहावलोकन है ।

ऐतिहासिक तथा राष्टीय कहानियो की प्रगति को देखने से ज्ञात होता है कि सन् 1970 के बाद अधिकाधिक कहानियाँ इसी सदर्भ मे लिखी गइ । परी कथाओ तथा राजा रानी की भी बहुतायत मात्रा रही जो उचित नही है । क्योकि हम ब्चो की नीव को खोखला नही बनाना चाहते । उ्हे राजा रानी की चमक दमक भ ी गुलामी से मुक्त कर आजादी की खुली हवा मे साँस लेने की प्ररणा देना चाहते है । ब्चो को नये समाज का नागरिक और नई दुनिया का इसान बनाना चाहते हैं । इसलिए वीरता का आदर्श (1981) मे राजेश भारती ने वीरता दया धर्म रक्षा दान कमशीलता सहनशीलता आदि का वर्णन कहानी के माध्यम से किया है ।

स्वात्य काल के बाल कथा साहि्य की चार सौ अस्सी पुस्तको का

सवक्षण मस्तराम कपूर उर्मिल ने किया। इन कथा साहि यो मे कहानी तथा उप यास को चुना जिनमे लोक कथा माला के कतिपय पुस्तको को ही लिया गया था और साधारण ज्ञान विज्ञान की पुस्तको को नही लिया गया। इस सवक्षण के आधार पर उनकी धारणा बनी कि स्वात य काल के कथा साहि य मे 35 प्रतिशत परी कथाए 10 प्रतिशत हितोपदेश पचतत्र आदि की नीति कथाएँ 20 प्रतिशत ऐतिहासिक पौराणिक कथाए 5 प्रतिशत बौद्ध जन धार्मिक साहि य तथा अ य स्रोतो से ली गई कथाए और 20 प्रतिशत अनुवाद रूपा तरण है। इस प्रकार 90 प्रतिशत साहित्य पुनकथन अनुवाद रूपा तरण स ाया है और शेष 10 प्रतिशत पुस्तको मे विविध प्रकार का अ य साहि य है। कि तु इसमे से भी अधिकाश साहि य शिक्षा आदश तथा उ च भावनाओ को लादने के आग्रह के कारण बि कुल मामूली स्तर का है। फि भी इस प्रकार की कहानियो को बा नक ब ी रुचि के साथ पढ़ते हैं। सका मह वपूर्ण कारण यह है कि आज भी बालको के लिए आधुनिकता बो ा की कथाओ का अभाव है जिनके पात्र ब चे हो तथा जिनमे बालको की अपनी समस्याएँ चित्रित हो जो बालको द्वा ा लिखी गई हो या बालको के मनोरा य के अनुरूप लिखी हो। आज जिन लोक कथाओ परी कथाओ पौराणिक कथाओं का सामा यत बच्चो का साहि य माना जाता है वे अधिकतर उस साम ती या पौ ाणिक जीवन के चित्र उपस्थित करती है जो शाय ही आज के इस अ य त गतिशील अणु युग के लिए ब चो को भीतर बाहर से तैयार कर सक। इसलिये हमे मनोवज्ञानिक एव यावहारिक पृष्ठभूमि पर ऐसी कथाएँ चाहि जो आज के ध ातल पर आज के बाल पात्रो को लेकर उनके स्वस्थ तथा सुखी जीवन के निर्माण के लिए सुगमता से ग्राह्य हो इतनी मनोरजक हो कि वे राक्षसो और जादूगरो की कहानियाँ भूल जाएँ और वे उनके दनिक जीवन से सामजस्य भी स्थापित करती हो।

बालको के जीवन मे हास्य का मह वपूर्ण स्थान है म दष्टि से बाल साहि य के अ तगत हास्य कथाओ का स्थान मह वपूर्ण म न गया है। फिर भी इस ओर बाल साहि यकारो का ध्यान कम गया है ारम्भ मे बीरब ा तथा तेनालीराम की कथाओं द्वारा इस अभाव की पूर्ति की गई। कमला मेहरोत्रा का बीरबल का अजब तमाशा ओम प्रकाश बेरी का बीरबल का ज्ञान ध्यान (1963) आन द कुमार का चार दिन की चाँदनी (1960) गुरुजी बुरे फँसे (1960) जगदीश च द्र मिश्र कृत मिटटी के आदमी

(1966) आदि कतिपय हास्य-कथा बच्चो के लिए प्रस्तुत की गई। मिट्टी के आदमी व्यग्यात्मक लघु कथाओ का सग्रह है। इसी परम्परा मे मनोरमा मालवीय कृत बीरबल का बेटा तथा तेनालीराम की कहानियो की अच्छी पुस्तक प्रकाश मे आइ। शल कुमारी ने मिथिला के गोनू झा की हास्य कथाएँ पराग द्वारा बच्चो को दी।

सोने की गुडिया (गिरिराज किशोर) लाल बुझक्कड (जगन्नाथ प्रसाद प्रभाकर) चाचा की चमत्कारी पगडी (जे भरत दास) मूर्खों की दुनिया (नारायणदत्त पाडेय) माँ बाप गए वाराणसी तथा बढ़िया सौदा (बालकृष्ण) काका खरबूजा (भगत सिंह) कौआ चला हस की चाल (शिवनाथ सिंह शाडिल्य) हा – हा ही – ही – (सरयू पडा गौड) तमाशे मे तमाशा (मनोहर वर्मा) झनझन मटका (महेन्द्र मित्तल) बाल हास्य कथाओ के अच्छ उदाहरण है।

रुद्रदत्त मिश्र का घनचक्कर हास्य लघु कथाओ का सग्रह है। लक्ष्मणप्रसाद भारद्वाज की हास्य कथा चल मेरे मटके टम्मकटम अवतार सिंह का दादाजी बच्चो को हसाने गुदगुदाने मे सफल रचना है। अवतार सिंह ने अपनी कहानियो मे हास्य के साथ साथ बच्चों के परिवेश की मनोरजक स्थितियो के चित्र ही प्रस्तुत नही किये वरन् उनकी समस्याओ के समाधान भी प्रस्तुत किये हैं। चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट ने भी बाल साहित्य के अन्तगत हास्य कथाओ का प्रकाशन किया। के शिवकुमार का फिर गध मे गधा (1970) सचित्र हास्य कथा है। मनोरमा जफा द्वारा अनूदित अडियल गधा (1971) सुधा गोयल का रुमाल का रहस्य (1971) उल्लेखनीय पुस्तक है।

भारत सरकार के सूचना एव प्रसारण मन्त्रालय द्वारा प्रकाशित नकल का नतीजा (1967) तथा रऊफ चाचा का गदहा (1973) अच्छी पुस्तक है।

बच्चो मे समस्याओ से निबटने कठिनाइयो से जूझने तथा कठिन परिस्थितियो म सूझ बूझ का परिचय देने और उनमे साहस और वीरता के भाव भरने के उद्देश्य से साहसिक तथा जासूसी कहानियो का भी लेखन कार्य हुआ। आरम्भ मे तो विदेशी साहित्य के अनुवाद ही हिन्दी साहित्य की क्षति पूर्ति करते रहे। कालान्तर मे मौलिक साहित्य का सृजन होने लगा जो भारतीय परिवेश तथा वातावरण के अनरूप लिखा गया। आज के समाज को दूषित करने मे तस्करो का भी महत्वपूण हाथ है। तस्करो के रहस्योद्घाटन की साहसपूण कथा बजरगी स्मगलरो के फदे में (1971) प्रस्तुत

की है अमृत ाा न नागर ने । इसके अतिरिक्त जासूसी तथा साहसिक यात्राओ का वणन भतहा मन्दिर (1970) मे है लेखक है—न तीमक । रमेश नारायण तिवारी की साहस की कहानिया (1973) राजेश कुमार जन का रहस्यो का सौदागर (1970) जासूसी की रोमाचकारी कहानियाँ आदि भी अ छी कृतियाँ है । हरिकृष्ण देवसरे का गहरे जल की गहरी कह नी (1973) समुद्री यात्रा का साहसी वणन है । बाल उपहार माला के अ त र्गत मनमो न सर न एव योगे द्र कुमार ल ला द्वारा स पादित साहस की कहानियाँ (1961) मे कोलम्बस ह्व नसांग मार्कोपोलो आदि की साहस भरी कहानिया दी गई है । बफ से झाँकती आँख (सुरजीत) मे किशोरो तथा न हे मु नो के लिए साहसपूण वीरता भरी और रोमाचकारी कहानियाँ प्रस्तुत की गई है । शा ति भटनागर के न हे जासूस ने ब चो की अनुभूतियो को छआ और उनकी कोमल क पना को नया आयाम दिया ।

वीरता और साहस से पूर्ण दो रोचक कथाओ का सकलन अशोक का समुद्र परी (1963) शिवमूर्ति सिंह व स की पिटपिट (1959) है । मुसीबत के समय सूझ बूझ से काम लेने की शिक्षा देने वाली कहानी है सयाना सरू (नारायणदत्त पाडे) राकेश कुमार जन ने दनिक जीवन म बच्चो की समस्याओ पर मार्मिक और जासूसी भरी कहानिया लिखी हैं । दयाशकर मिश्र का साहसी शेख बलवन्त सिंह का फल खिल उठ फली यशपाल जन का साहस की यात्राएँ योगे द्र कुमार ल ला का टिंग टिंग विष्णु प्रभाकर की जब दीदी भूत बनी यथित हृदय का समुद्र का विजेता (1973) सीताशरण सिंह का निर्जन टापू का विजयी शेखर आदि वीरता तथा साहस की भावना का सचार करने वाली कहानियाँ हैं । श्रीका त यास का नई दुनियाँ की खोज कोलम्बस की कहानी है और मनमोहन सरल का मनुज साहसी (1971) विभि न देशो के लोगो की साहसिक खोज का प्रेरणाप्रद वर्णन है ।

शिकार कथाएँ भी बालको में लोकप्रिय रही हैं । वनो तथा वहाँ के ानवरो के बिषय मे जानने को वे सदा उ सुक रहते हैं । यथित हृदय कृत हाथियो के वन मे रामानुजलाल श्रीवास्तव कृत जगल की स ची कहानियाँ (1962) रमेश नारायण तिवारी कृत एक गोली दो शिकार और शिवनाथ शाण्डि य कृत जान जोखिम की कहानिया आदि उ लेखनीय कृतियाँ है । शकर कृत हाथियो की कहानियाँ (1970) तथा लीला मजूमदार कृत शेरो की कहानियाँ (1971) मजेदार शिकार कथाए हैं ।

शिकार कथा अत्य्त मात्रा म लिखी गई हैं। पराग बाल पत्रिका कभी-कभी शिकार कथा से ब्चो को आनन्दित कराती है। अंग्रेजी से भी अनेक शिकार कथाए अनूदित होकर हि दी बाल साहि य मे आयी।

पद्य कथाओ का लेखन कार्य भी हि्दी बा्न साहि य मे हुआ पर्तु इसकी मख्या भी नग य रही। मैथिलीशरण गुप्त ने इमका आरम्भ किया था। इनकी बाल पद्य कथा रगा सियार बाल सखा मे प्रकाशित हुआ है जो ब्चो मे सबसे अधिक लोकप्रिय हुआ था। स्वत्त्रता प्राप्ति के पश्चात् निरकार देव सेवक शकु्तला सिरोठिया मयक हरि कृ ण देवसरे विनोद आदि ने इस प्रकार का साहि्य लिखा। देवसरे का नकली बदर निरकार देव सेवक की जर्मनी की लोक कथाए मह्वपूण हैं। पद्य कथाए छोटे ब्चो के लिए अधिक उपयोगी हैं। रामगोपाल रुद्र की अनाखी गाडी मे मनो रजक पद्य कथाए है। रुद्रनाथ पाडेय रुद्र की पुस्तक स चा सुख (1970) छदोबद्ध भाषा मे दो मित्रो की कहानी कहती है। चिरजीत का एक था राजा एक थी रानी दस पद्यमय कहानियो का सग्रह है अग्रजी से अनेक पद्य कथाए अनुवाद रूप मे हि्दी बाल साहित्य मे आयी।

कहावतो तथा मुहावरो पर आधारित कहानियो का प्रचलन बहुत पुराना है। लोक प्रचलित कहावतो तथा मुहावरो को आधार बनाकर कहा नियाँ कहने सुनने की परम्परा अति प्राचीन काल से चली आ रही है। यह अ य्त मनोरजक तरीका है। इसकी उपयोगिता को ध्यान मे रखकर ब्चो के यो य मुहावरो तथा कहावतो पर आधारित कहानियाँ लिखी गइ। न्द लाल चत्ता का अनोखी कहानियाँ (1966) सग्रह रूप मे है जिसमे विभिन्न देशो मे प्रचलित जनश्रुतियो कहावतो आदि पर आधारित चौदह कहानियाँ हैं।

मुहावरो की कथाओ का नया प्रयोग डॉ हरिकृष्ण देवसरे ने प्रस्तुत किया। इनके पहले इस प्रकार का जो कहानियाँ लिखो गई उनमे पात्र तथा कथावस्तु पृथक होते थ कि तु नये प्रयोग के अनुसार कहानी का भावाथ ही अ्त मे मुहावरे के रूप मे रखा जाता था। मुहावरे के अदर से ही पात्र तथा कथानक लेकर कहानियाँ लिखी गइ। अक्ल बडी या भस मे अकलू ब्दर और एक भस की प्रतियोगिता की चर्चा है तो सूत न कपास जुलाहो मे लटठमलटठ मे जुलाहो की शेख चि ली जसी बात और फिर झगडे की स्थिति का वर्णन है। साच को आच क्या आदि कहानियो मे ब्चो को मुहावरो के ज म की स्थिति के साथ उसका अर्थ और प्रयोग भी समझाया

गया है। प्रभुदयाल अग्निहोत्री की कहानी लोक गगा तीर (1971) लोकोक्तियो पर अ धारित कहानियाँ है। जैसी करनी वसी भरनी (सन् 1982) भी 17 मुहावरे की कथाओ का सग्रह है जिसके लेखक श्रीच-द्र जन हैं।

किसी विषय को अधिक अच्छी तरह समझाने के लिए लेखको ने आ-मकथा रूप मे कहानी लिखने की परम्परा अपनाई। निर्जीव वस्तु या जीव ज-तुओ की कहानी उनके ही मुख से सुनकर ब-चे प्रस-नता का अनुभव करते है। पसे की आ-म कथा मे पसा अपने मुँह से विभि-न कालो की अपने स्वरूप आकार एव महत्ता का वणन करता है। भाल वाला (राध श्याम झीगन 1960) मे भाल अपने ज म से लेकर चिडियाघर तक पहुचने की कहानी आ म कथा रूप मे प्रस्तुत करता है। प्रमोद जोशी की कीडो की कहानी कीडो की जबानी (1970) मे मधुमक्खी चीटी आदि के ज-म गुण कार्य उपयोगिता आदि का वणन है। कौवा और कोयल की लडाई मे दोनों अपने अपने गुणो का वर्णन मुह से करते है। स-जियो फलो की भी आ-मकथाए प्रकाशित हो चुकी है।

पूर्व स्वात-य काल मे बालको के लिए विदेशी साहित्य से अनुवाद की जो परम्परा चली वह स्वात योत्तर काल मे भी अबाध गति से चलती रही। नोक कथाओ परी कथाओ और के अनुवाद के अतिरिक्त विश्व बाल साहित्य की कुछ उ-कृष्ट कृतिया अनूदित होकर हि दी के ब-चो के लिए उपल-ध हुई। राजपाल एण्ड म-स दि-ली ने बाल क्लासिक माला के अ तर्गत अग्रेजी की प्रसिद्ध बाल पुस्तको के अनुवाद प्रस्तुत किए। रानी प्रकाशन दि-ली ने भी इस दिशा मे कदम उठाए। रस्किन की प्रसिद्ध बाल कहानी द किंग एण्ड गो-डन रीवर का हि दी अनुवाद योगे-द्र कुमार भटनागर ने प्रस्तुत किया स्वर्ण नदी का राजा के नाम से। इसके अतिरिक्त अ-य सस्थाए इस दिशा मे सक्रिय रही। लेखकगण भी इनके ऋणी रहे। उमराव की सोने की खाल पुरानी कहानियो का रूपा-तर है। जैने-द्र कुमार द्वारा रूपा-तरित कितनी जमीन टा-सटाय की एक प्रसिद्ध कृति पर आधारित है। जोनाथन स्विफ्ट की पुस्तक गुलिवर ट्रावेल का हि-दा अनुवाद कृष्ण विकल ने प्रस्तुत किया— बौनो के देश म नाम स। सी पुस्तक का अनुवाद श्रीका-त व्यास ने गुलिवर की यात्राएँ नाम से की। राबि सन क्रूसो (डनियल डिफो) का हि-दी अनुवाद जगल मे मगल (अनु भगवान भाई प्रभदास देसाई) है। मारिन ई फारेस्टर की दो बालोपयोगी कहानियो का हि-दी अनुवाद शकर सु-तानपुरी ने प्रस्तुत की नटखट ब-चो की पार्टी (1963) द्वारा। विक्टर

ह्यूगो का दा मि रेब्स दण्ड और दया के नाम से अनूदित हुआ (निर्माता परलोकर) अरेबियन नाइटस की चुनी हुई सात कहानिया का सग्रह जादू का दीपक (श्रीका त यास) आस्कर वा ड की दो कहानियो का हि दी रूपा तर न हा अबाबील (श्रीकृष्ण) एजिजाबेथ गौवा की एक कहानी का अनुवाद तीमारपर का घम डी मोतीलाल (राजे द्र कुमार) के नाम से हुआ। रूसी बाल साहि य का भी अनुवाद हि दी मे पर्याप्त मात्रा मे हुआ। अलेक्जे द्र रस्किन का पापा जब बच्चे थे चर्चित पुस्तक है। चि ड्रन बुक टस्ट की अधिकाश पुस्तक अग्रजी साहि य का अनुवाद ही है।

विदेशी पुस्तको के हि दी मे अनुवाद से यह लाभ हुआ कि विश्व प्रसिद्ध बाल साहि यकारो का परिचय बालको को मिला और उनकी पुस्तको से मनोरजन प्राप्त करने का अवसर मिला।

हि दीतर भारतीय भाषाओ से हि दी मे ब चो के साहि य का अनुवाद भी समय सयय पर होता रहा। बगला मराठी गुजराती से कुछ अ छी पुस्तक अनूदित अवश्य हुई। बगना से सुकुमार राय की पुस्तक ऊटपटाग (कचन कुमार) मलयालम से पी नरे द्रनाथ की पुस्तक रामू मौत से खेला (सुधाशु चतुवदी) अ छी पुस्तक हैं। राजपाल ए ड स स की सहायक सस्था शिक्षा भारती से ज्ञान विज्ञान माला सिरीज के अ तगत उपयोगी अनुदित साहि य प्रकाशित हुई।

फिर भी मौलिक कृतिया जितना अधिक प्रभावशाली होती है उतनी अनूदित कृतिया नही।

सन् 1979 का वष विश्व बाल वर्ष के रूप मे मनाया गया। बालको के मानसिक विकास तथा उ थान की सभावनाओ पर अनेक सभाए विभिन्न स्थानो पर आयोजित की गई परिचर्चाए हुई और अनेक समारोहो का आयोजन हुआ फिर भी बहुत कम लोगो का ध्यान इस गभीर समस्या की ओर गया कि स्वतत्रता के बत्तीस वर्ष बाद भी हमारे देश मे ब चो के लिए अ छी पुस्तको का नितान्त अभाव है। ब चो के लिए समर्पित सस्था शकुन प्रकाशन ने इस वष मह वपूण काय किया। नाटक उप यास तथा कविता सग्रह की पुस्तको के अतिरिक्त बच्चो की सौ कहानिया सग्रह रूप मे प्रकाशित किया। बच्चो को सुनने के लिए कहानियो का हमारे यहाँ कभी अभाव नही रहा कि तु सन् 60 के आस पास ब चो को अभी तक चली जाने वाली कहानियाँ घिसी पिटी लगने लगी और उ होने नये नये विषयो तथा पात्रो मे अपनी रुचि दिखाई। इसका प्रभाव यह पडा कि बाल

कथाओ के पात्र तथा घटनाए यथाथपरक हो गई और ब चो ने एक बार फिर से कहानियो मे पहने जसी रुचि लेना आरम्भ कर दिया। इस दृ सेब चो की 100 क ानियो मे बाल कथा साहि य के क्रमबद्ध विकास को यान मे रखते हुए ही कहानियो का चुनाव किया गया है जो सुरुचि पूर्ण और रोचक है। बाल कथा साहि य के यो य कथाकारो ने इस कहानी सग्रह को सजाया तथा सवारा है। स सग्र का उद्देश्य ही यह है कि इतिहास पुराण सा म रोम स विज्ञान और चम कार शिक्षा और नीति तथा आधुनिक जीवन के जुडी तथा मन को छने वाली हैं। यह सकलन ब-चो के क पना जगत् को विकसित करेगा उसका मनोरजन करेगा और उ-हे भत प्रत की प्राचीन कहानियो जादू भरे रहस्यो और झठ क पनालोक से बचायेगा। ब-चो को सजग नागरिक बनाने और उ-हे सामाजिक जीवन की ओर उ-मुख करने के लिए सौ कहानियो का सग्रह प्रस्तुत है। इस उद्देश्य को यान मे रखकर मध्य प्रदेश सरकार ने इन कहानियो का सग्रह प्र येक विद्यालयो मे रखना अनिवाय कर दिया है और बाल बुक बक की ओर से उसका नि शु-क वितरण भी विद्यालयो को किया गया है।

अनेक प्रकाशक इस दिशा मे प्रय नशील है और अब ब-चो को स्वस्थ साहि-य देने की ओर प्रगतिशील है। व्यावसायिकता का मोह -याग देने पर और शुद्ध साहि-यिक सेवा का व्रत लेने पर इस परम्परा मे निखार आ सकता है।

सदभ सूची

1 क-हैयालाल न दन—पराग जून 1981 पृ 2।
2 हरिकृ ण देवसरे—बाल साहि य रचना और समीक्षा पृ 46।
3 वही—पृ 34।
4 क-हैयालाल न दन—बाल साहि-य रचना और समीक्षा पृ 22।

5 जयप्रकाश भारती— सा ताि क हि दुस्तान (22 अप्रल 1979) पृष्ठ 59।
6 श्यामसिंह शशि — साप्ताहिक हि् दुस्तान (22 अप्रल 1979) पृष्ठ 59।
7 क हैयालाल न दन बाल साहि् य रचना और समीक्षा पृ ठ 23।
8 लक्ष्मीनारायण दुबे— साहि्य परिचय (1980) पृ ठ 161।
9 श्मामसिंह शशि — बनवासी व च कितने स चे —भूमिका।
10 श्यामसिंह शशि — साहि् य परिचय (1980) पृ 180।
11 हरिकृ ण न्वसरे— बाल साि य रचना और समीक्षा पृ 85।
12 गिरीश रस्तोगी — नटरग —अक 29 पृ ठ 45।
13 नरे द्र शर्मा— नटरग —अक 29 पृष्ठ 37।
14 गिरीश रस्तोगी— नटरग अक 29 पृ 45।
15 केसरी कुमार—अध्यक्षीय भाषण —बाल साहि् य अकादमी की गो ठी बिहार शाखा।
16 सूयनारायण सक्सेना—विश्व बाल वर्ष क उपलक्ष्य मे विचार गोष्ठी मथुरा।
17 रा ट्र बधु—वही।
18 श्री हिदायतु ला—बाल साहि्य का विमोचन 15 अक्टूबर 1979।
19 अमृतलाल नागर—बाल साहि् य का विमोचन 15 अक्टूबर 1979।
20 हरिकृ ण देवस े—शि क— क्टूबर 1980 पृ 42।
21 ह रिकृ ण देवसरे— बाल साहि् य रचना और समीक्षा पृ 7।
22 अशोव — हि्दी प्रकाशक पृ 39।
23 हरिकृ ण देवसरे— बाल साहि् य रचना और समीक्षा पृ 84
24 ह ि कृ ण देवसरे— बाल साहि्य रचना और समीक्षा पृ 84 85।
25 हरिकृष्ण देवसरे— बाल साहि् य रचना और समीक्षा पृ 85।
26 विनय—बाल साहि् य का विमोचन समारोह—15 अक्न्बर 79।
27 आलोक मेहरोत्रा— धमयुग (9 दिस बर 1979) पृ 55।
28 अशाक—हि्दी प्रकाशक (1979) पृ 39।
29 हरिकृ ण देवसरे— बाल साहि् य रचना और समीक्षा पृ 86।
30 धीरेन्द्र वर्मा— हि्दी साहि्य कोश पृ 221।
31 नरेन्द्र वशि ठ— बाल साहि्य रचना और समीक्षा पृ 88।
32 नरे द्र वशिष्ठ— बाल साहि्य रचना और समीक्षा पृ 90।

33 नर-द्र वशि ठ— बाल साहि-य रचना और समीक्षा पृ 90।

34 हरिकृष्ण देवसर— शिक (अक्टूबर 1980) पृ 43।

35 राधश्याम प्रगल— ब-चो के 12 उप-यास पृ 7

37 आन द प्रकाश जन— शृगार जुलाई (1962)

38 नरे-द्र वशि ठ— बाल साहि-य रचना और समीक्षा पृ 73।

39 हरिकृष्ण देवसर– दिनमान –14 नवम्बर 1976।

40 धीर-द्र वर्मा— हि दी साहि-य कोश पृ 692।

41 मस्तराम कपूर उर्मिल —मधुमती जुलाई अगस्त 67 पृ 102।

42 मस्तराम कपूर उर्मिल —मधुमती जुलाई अगस्त 67 पृ 102

43 हरिक्रु ण देवसरे— धर्मयुग नवम्बर 1962

45 वि णु प्रभाकर— बाल साहि-य रचना और समीक्षा पृ 113।

45 भा रा भागवत—मधुमती जुलाई अगस्त 1967 पृ 264 65।

46 नरे-द्र वशि ठ— बाल साहि-य रचना और समीक्षा पृ 74।

47 हरिकृष्ण देवसरे— रविवार 16 अप्रल 1978 पृ 23।

48 हरिक्रु ण देवसरे— रविवार 16 अप्रैल 1978 पृ 23।

49 धीरे-द्र वर्मा— हि दी साहि-य कोश पृ 214।

50 धीरे-द्र वर्मा— हि दी साहित्य कोश पृ 217।

51 क-हैयालाल न-दन— पराग जून 1981 (स पादकीय)।

52 मस्तराम कपूर उर्मिला — मधुमती जुलाई अगस्त 67 पृ 102।

53 आलोक मेहरोत्रा— धमयुग 9 दिसम्बर 1979 पृ 55।

54 हरिकृष्ण देवसरे— ब-चो की कहानियाँ सम्पादकीय।

षष्ठम खण्ड

स्वातंत्र्योत्तर बाल साहित्य

(सन 1948 से 1982 तक)

स्वातन्त्र्योत्तर बाल साहित्य
(सन् 1948 से 1982 तक)

पिछले अध्याय मे स्वात योत्तर बाल साहि य के अ तगत बाल उप यास तथा बाल कहानियो का विश्लेषण किया गया है। इस अध्याय मे बाल नाटक बाल रगमच बाल गीत कविता तथा बाल जीवनी पर विचार किया जा रहा है।

बाल नाटक—अपने कार्यों को स्वय करके देखने की जिज्ञासा ब चो मे तब से आ जाती है जब वे अपने आस पास की दुनिया को देखने लगते है समझने लगते है तथा उनकी नकल करने लगते हैं। अनुकरण की यही प्रवृत्ति बालको मे अभिनय क्षमता उ पन्न करती है। इस क्षमता को विकसित करने के लिए बाल नाटको की आवश्यकता समझी गई और इस बात पर विचार किया गया कि इससे बालक मानव स्वभाव तथा मानव चरित्र का अध्ययन करना सीख जाते हैं भावो को व्यक्त करने की क्षमता उनमे आ जाती है तथा श दो का उ चारण सम्यक रीति से करने लगत हैं और स्वतन्त्र होकर अभिनय करना सीख जात हैं। इससे बालको के यक्ति व का विकास भी सही दिशा मे होना अपेक्षित रहता है।

इस दष्टि से साहि य के क्षेत्र मे सबसे अधिक उपयोगी एव सक्षम विधा होने के बावजूद बालको का नाटक ही सबसे अधिक अपेक्षित रहा। उपेक्षा का कारण लेखको उप यासकारो नाटककारो का यह विचार था कि बालको के लिए लिखना बडा सरल काय है और यह उ च कोटि का तथा सम्मानजनक काय भी नही है। बालको के लिए लिखना समय का अप यय ही है। साथ ही प्रकाशक बालको के लिए नाटक साहि य छापने मे यावसायिक हानि का ही अनुमान लगाते थे। बाल कहानी कविता तथा जीवनी तो कुछ आर्थिक लाभ दे देत थे लेकिन बाल नाटको के साथ यह बात नही थी। अधिकतर नौसिखिए लेखको तथा छात्र अतिरिक्त धनोपार्जन के लिए बालको के लिए कहानी या कविता लिख देत थे तथा यदाकदा ऐसे बाल नाटको की भी रचना कर लेत थे जि हे न तो रंगमच का अनुभव था और न नाटक का ज्ञान। ऐसे मे बाल नाटको की सफलता सदिग्ध हो गई थी।

स्वात योत्तर भा त मे नाटको की उपयोगिता आलोचको तथा साहि्यकारो ने समझी कि परिवार मे और समाज मे सबसे बडी आवश्यकता नाटको की बच्चो के लिए है। इसलिए कि बच्चे कुतू लप्रिय होत है इसलिए कि ब चे जो नई ची देखत हैं उसम उनकी रागा म प्रवृत्ति रमण करने लगती है। जिस समय ब ने कुछ ज्ञान सच य करने की प्रवृत्त होत है उस समय जितनी रगीनी जितनी विचित्रता जितना कौतुक आप बाह्य जीवन मे उनके समक्ष प्रस्तुत करगे उतना ही अधिक वे अपने भविष्य जीवन के निर्माण के लिए सामग्री प्राप्त कर सकेगे। यह काय नाटको के मा यम से सर्वाधिक प्रभावशाली ढग से किया जा सकता है।

बाल नाटको के लेखन की उपेक्षा का एक कारण रगमच का अभाव भी है जबकि बाल रगमच ब चो का अपना खुला हुआ समा होता है जिसमे उन्हे अपनी पस द और इच्छानुसा अभिनय करने बोलने और गाने नाचने की पूरी छट मिलनी चाहिए। कि तु ब चो के लिए रगमच की समस्या का पूर्ण निराकरण अभी तक नही हो पाया है क्योकि उनके रचना सिद्धा तो या रचना की कसौटी का स्वरूप अभी तक निश्चित नही हो पाया है। यह बात विचारणीय है कि जब तक ब चो का रगमच सक्रिय न हो तब तक बाल नाटक या तो लिखे ही नही जायगे और लिखे भी जाय तो बहुत काम के नही हो सकत। अब इस दिशा मे उल्लेखनीय विकास हुआ है। रगमच के स ब ध मे विशद चर्चा अगले पृ ठो मे की जायेगी।

स्वत त्रता पूर्व के साहि्य मे बाल नाटको की जो स्थिति थी वह कोई म वपूण उपलब्धि नही मानी जा सकती। अग्रजी तथा बगला नाटको के अनुवाद हुए और पौ ाणिक ऐतिहासिक नाटक छिट पुट मे लिखे गये। जो नाटक प्रकाश मे आये वे बालको को न तो नई दिशा प्रदान कर सके और न उनकी क पना शक्ति को उवर ही बना सके।

स्वातत्रोत्तर काल मे इस दिशा मे कुछ प्रगति हुई और मासिक पत्र पत्रिकाओ मे सामाजिक पौराणिक तथा ऐतिहासिक नाटक लिखे जाने लगे जो ब चो के लिए मच पर अभिनीत किये जाने योग्य थे। इस समय बाल नाटककारो ने तीन प्रयोजन को ध्यान मे रखकर नाटक लिखे—पहला है—पाठ्य पुस्तको के लिए दूसरा—विद्यालय के समारोहो या रा ट्रीय पर्वों पर खेले जाने के लिए और तीसरा—रेडियो प्रसारणों के लिए। पाठ्य पुस्तको को ध्यान मे रखकर जो नाटक लिखे गये उनमे न तो नाटकीय त व है और न

रगमच की पर परा को यान मे रखा गया है । शालिग्राम यास कृत बाल रगमच   गणशदत्त इ द्र कृत रगमच के खेल रामज म सिह् कृत इतिहास के चार फत्र वि णुदत्त कवि र न कृत दो प्यारे मित्र तथा यथित हृ य कृत अ रो की आँख इसी काटि के बाल नाटक है ।

विद्या नयो के समारो ो तथा रा ट्रीय पर्वों के अवस पर एस नाटक बालको द्वारा अभिनीत कराये जाते है जो आमत्रिता को प्रभावित कर सक । ग्राम सुधार रा ट्रीय एकता अथवा किसी राजनीतिक या सामाजिक समस्या को लेकर अनेक नाटक लिख गए जिनकी सम या भी वय को की है और पात्र भी वयस्क होते हैं जि हें ब चो द्वारा मचित रा दिया जाता है । च द्रपाल ओझा कृत ये खट्टे बेर इ द्र सेन सिह् कृत दो लाडने और नबाब औ खराब एस लाल कृत शाति की वि ाय इसी कोटि क नाटक ह । राधश्याम प्रग भ का नाटक राह् अनेक मा ज न एक मुहावरो का चम कार दिखाने के लिए लिखा गया इसी कोटि का नाटक है ।

रेडियो प्रसारणो के लिए रा ट्रीय आदश वाले ना को की आवश्यकता होती है । इसकी आवश्यकता पूर्ति की ब चो का देश बुद्धि के ही ो भारत माता (रघ ो श ण मित्र) कमलेश्वर के वाल नाटक तथा प ो का पेड (कमलेश्वर) सितारा और ना मेरा चने का दाना (कुदसिया जदी) गध (हबीब तनवीर) स्पर्धा (मस्तराम कपूर उर्मिल) ब चो की सरकार (मोहन लाल गुप्त) बाबू जी जि दाबाद (कशवदेव वर्मा) आदि अनेक नाटको ने ।

इसके अतिरिक्त अनेक रगमचीय नाटक उच्च काटि के प्रस्तुत हुए जो बाल मनोविज्ञान को ध्यान मे रखकर लिखे गये । ऐसे नाटको को मचित करना भी सरल काय था । डा रामकुमार वर्मा के नाटक तमूर की हार तथा प्रतिशोध इसी प्रकार के नाटक हैं । तमूर की हार नाटक का नायक बा नकरण का विकास मनोवज्ञानिक प्रक्रिया के अनुसार हुआ है । यह् अब तक के बाल नाटक मे नवीन प्रयोग था । इसी प्रकार प्रतिशोध के नायक भरवि के अहकार का विनाश भी मनोवैज्ञानिक ढग से हुआ है ।

धीर धीर नाटय पुस्तको के विकास के लिए लेखकगण कटिबद्ध हुए और आन द प्रकाश जन मगल सक्सेना (च दा मामा की जय) वेद राही (नीलमपरी और उडन खटोला) आदि नाटकक र नाटक की कमी को पूरा करने लगे । नर्मदा प्रसाद खर ने मिश्रब धु कार्या नय से सामाजिक

ऐतिहासिक तथा शिक्षाप्रद एकाकियो का एक सग्रह नवीन बाल नाटक माला के नाम से सन् 1955 मे प्रकाशित करायी थी। इन नाटको को अभिनीत करने मे बालको को परशानी नही होती थी क्योकि इसमे अधिक साज सज्जा वाले मच की आवश्यकता नही थी। इसी विशेपता को लेकर श्रीकृ ण का ईश्वर का मदिर केश च द्र वर्मा का ब चो की कचहरी (1956) वि ण प्रभाकर का दादा की कचहरी (1957) तथा राम की होली (1955) रोचक नाटक लिखे गये। ये नाटक शिक्षाप्रद होने के साथ साथ मनोरजक भी हैं। सबसे बडी बात यह है कि इन नाटको के विषय वस्तु ब चो के आस पास से लिये गये जि हे ब चे रोज देखते तथा अनुभव करते हैं। नाटक के लिए यह अ य त आव यक भी है कि ब चो के नाटको मे जो कुछ चित्रित किया जाय वह अधिक मे अधिक ऐसा हो जो उनके पास पास घटित होता है और उ हे जीवन दिशा मे बढने के लिए सहायक होता है। अभिनेय नाटको मे कुदेसि या जदी कृत चाचा छक्कन के डामे (1957) उ लेखनीय एकाकी सग्रह है जिसकी कथावस्तु घरनू परिवेश की है और बोल चाल की भाषा का प्रयोग हुआ है। सितारा भी ब चो की रुचि के अनुकूल अभिनेय मनोरजक तथा शिक्षाप्रद नाटक है।

प्रशात का नाटक ाडले का ब ान ऐतिहासिक कथा पर आधारित है तो होरी और हीरा सामाजिक भा भूमि को चित्रित करने वाला नाटक है। पहली नाटय कृति मे चित्तौड के प ना धाय के याग की कहानी है तो दूसरी मे प्रमच द के उप यास गोदान के एक अश पर आधारित कथा है। इसी परम्परा मे च द्रप्रकाश सिंह का ाच एकाकी (1958) पाँच ऐतिहासिक एकाकियो का सकलन है तो नटखट नद्दू घरल परिवेश पर आधारित नाटक है। इसमे बाल मनोविज्ञान के इस त य को स्वीकार किया गया है कि ब चे डर से नही प्यार से सुधरते है। रामच द्र तिवारी तथा सिद्धि तिवारी के नाटक बूड ब चे मानवीय भावनाओ चारित्रिक बल सहि णुता तथा क्षमाशीलता आदि गुणो को प्रतिपादित करता है। रामकृष्ण शर्मा की एकाकी चालाक लोमडी (1960) मे बुद्धि के बल पर कठिन समस्याए भी हल हो जाती हैं का चित्रण है। लोमडी अपनी बुद्धि चातुर्य से शेर को पिंजड मे ब द कर अपनी तथा पडित जी की जीवन रक्षा करती है।

इसी भाव भूमि पर आधारित या शकर मिश्र दद् ा का नाटक लुवको मौसी (1960) है जिसमे यही दिखाया गया है कि बल की अपेक्षा बुद्धि का प्रयोग करने से अपनी या अ य किसी की भी रक्षा की जा

सकती है। इस नाटक मे दो चूहे लोमडी से अपनी जान बचाने के लिए उसे कुए के जल मे चद्रमा की परछाइ को पनीर का टुकडा बता कर गिरा देते हैं।

छोटे ब-चो के लिए मुन्नू किसान की दुनिया प हरीश ने लिखी। इस सचित्र प्रह न के मा यम से छोटे ब-चो को दिनचर्या तथा कुत्ता भाल् गाय बल बक ी आदि का प चय क ा ा गया। रखा जैन ने छोटे ब-चो के लि काकी लिखने मे विशेष सफलता पाई है। उनके एकाकी अ सरा का तोता काक भगोडा उद्यम धीरज बडी चीज और थप्प रोटी थप्प दाल हैं। ये सफलतापूवक मचित भी किए जा चुके है।

सन् 1960 के ाद ब-चो के लिए नाटक लेखन के कार्य मे प्रगति हुई। सिद्ध कुमार ने ऐतिहासिक एव प राणिक नाटको की रचना की। इनकी दो पुस्तके आओ नाटक खेल (1962) तथा दो बाल एकाकी ऐतिहासिक— देश का कानूनी महा ाणा प्रताप और बीर बालक अभि मन्यु —नाटको के अतिरिक्त एक पौ ाणिक नाटक एकल-य है। वि णु प्रभाकर का कती के बेटे क-हैया लाल मानिकलाल मुशी का विश्वामित्र पौराणिक भावभूमि पर आधारित नाटक है।

श्रीकृ ण तथा योगे द्रकुमार ल ला द्वारा स पादित प्रतिनिधि बाल एकाकी सन् 1962 मे प्रकाशित हुआ जिसमे बाईस एकाकी सकलित किये गये हैं तथा इनकी विषयवस्तु बालको के परिवेश से सम्बधित है। इसमे भाषा पात्रो की सख्या आदि पर भी विशेष रूप से यान रखा गया है। ये एकाकी मनोरजक शिक्षाप्रद तथा अभिनेय है। कुछ एकाकी तो हास्य प्रधान भी हे। इस पुस्तक मे सकलित बाल एकाकी ब चो को सीख और मनोरजन प्रदान करने के साथ साथ उनका सास्कृतिक विकास करने मे सहायक होगे। इन नाटको में सबसे बडी विशेषता इनका अभिनेय होना है। अ-य त साधारण परिस्थितियो और सामान द्वारा इ हे रगमच पर खेला जा सकता है। इस पुस्तक मे सग्रहीत एकाकियों के लेखन मे वि ण प्रभाकर आन-द प्रकाश जैन मगल सक्सेना श्रीकृ ण मनोहर वर्मा कमलेश्वर शाति भटनागर जय प्रकाश भारती जसे प्रभत विद्वानो ने सहयोग दिया। कुछ लेखको से तो अनुरोध करके भी लिखवाया गया। बाल नाटक के क्षेत्र मे यह एक क्रातिकारी कदम था और साथ ही इतनी बडी सख्या में एक स्थान पर एकाकियो का सकलन मह वपूर्ण घटना थी।

एकाकी तथा नाटको को ाब सग्रह रूप मे प्रकाशि ा करने की पर परा सी चल पडी। कमलेश्वर के पाच एकाकियो का सग्रह समुद्र का पानी तथा छ एकाकियो का सकलन प ो का पेड रोचक तथा शिक्षाप्रद सग है। इनमे बालको को रोचक त्था के म यम से वीरता साहस सचाई तथा ईमानदारी की शिक्षा ा प्रकार दा गई हे कि बालको को वे महज ग्राह्य हो गई है। शिक्षा नी र सा भा स्वभ्य न ी ा पायी है इसी मनोवज्ञानिक आधार पर ग्रथित ह्र र का मन्त्र कारि यो का सकल सबेरे का फल है।

बालको की समस्याओ को लेकर उमे रोचक ढग से प्रस्तुत क ने का श्रेय परीक्षा नाटक को है। श्रीकृ ण निवित इस नाटक मे बालको के तीन नाटक है। चुने हुए एकाकी (1965) भा त सरकार के प्रकाशन विभाग से प्रकाशित हुआ जिसमे अठारह एकाकी है और जो ब चो के परिवेश से जुडे हुए है तथा मनोरजक और शिक्षाप्र भी ह। इसा क्रम मे चिरजीत का चु नू मु नू और पु पा (1967) पाँच नाटको का सकलन न द ना ा चत्ता का शिक्षाप्रद एकाकी ग्रथित ह्र य ा ा ची मिलता तथा मि ी के गुड श्रीकृ ण का न हे सप प आदि उ लेखनीय काकी सग्रह हैं।

ब चो के दनिक जीवन की कथावस्तु पर आधारित एकाकी सग्रह राह अनेक मजिल एक (1964) राव ग्राम प्रग भ की लेखनी से प्रस्तुत हुई। इस सग्रह म नाटको के क्षेत्र मे एक नया प्रयोग किया गया। इसमे पाँच एकाकी हैं तथा प्र येक का शीपक किसी प्रसिद्ध कहावत या प्रचलित दोहे को पर्ि से प्रार ा हुआ है। इन एकाकियो के मा यम से बालको को कहावतो का अधिकाधिक प्रयोग करन के अवसर प्रा त होते है।

मनोरजक शिक्षाप्र तथा मनोविज्ञान की भावभूमि पर आधारित इन नाटको तथा एकाकियो के अतिरिक्त हास्यप्रधान नाटको की भी रचना इस दशक मे हुई। भानु मेहता का वे सपनो के देश से लौट आये (1964) इसी प्रकार की हास्यप्रधान रचना है। दो अको के इस नाटक मे माता पिता एव विद्यालय के अ यापक के डर से भागे हुए तीन बच्चो की हास्य से परि पूर्ण कथा दी गई है जो परीलोक की सर करने के बाद घर की याद सताने पर वहा से भी भाग खड होते है। आन द प्रकाश जैन चिरजीत मगल सक्सेना मनोहर वर्मा वि ण प्रभाकर जसे नाटककारो द्वारा लिखित हास्य एकाकी (1965) का सग्रह योगे द्र कुमार ल ला के सम्पादन मे निकला

जिसमे य रह एकाकी सकलित थ । ब चो के आस पास के विषयवस्तु को लेकर लिखे गये ये एकाकी बालको को स्व थ मनारजन प्रदान करने मे पूणत सक्षम है । सन् 1966 मे हरि कृ ण दास गुप्त का निरीक्षण ा य नाटक प्रकाशित हुआ । अ यापको की क त यहीनता पर यग्य तथा बालका की स य निष्ठा चित्रित किया गया है । अधिकार का रक्षक (1965) मे उपे नाथ अश्क न नेताओ पर यग्य प्रस्तुत किया है । के पी सक्सेना के ह स्य नाटक समय समय पर पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित होते हे । नालटेन की वापसी चोच नवाब दस पसे के तानसेन आदि उल्लेखनीय इनकी नाटय कृतियाँ हैं । जून 80 के धमयुग मे इनकी नई हास्य एकाकी मछ घडी है । इसके अतिरिक्त डा चुनचुन (गोवि द शर्मा) नाटक जो न ी हो सका और जादूगर (केशव दुबे) तलाश अजन का (के पी सक्सना) आदि रोचक हास्य एकाकी हैं ।

भारत के इतिहास तथा ऐतिहासिक विभूतियो से परिचित कराने के लिए बालको के लिए इस दशक मे एतिहासिक नाटक भी लिखे गये यद्यपि ये अ पसख्या मे ही है । नाटकका ो ने इस बात को समझा कि एक विशेष आयु वग के ब चो के मैं को तृप्त करने और सवेदन को जगाने को बहुत से अवसर ऐतिहासिक नाटको मे मिलेंगे । निमला देशपाडे का नाटक बुद्ध देव की शरण मे (1963) राजा अशोक और उनके पुत्र तथा पुत्री की बुद्ध धर्म मे दीक्षा लेने की कथा है । विमला लूथरा का नाटक मोटे मिया (1962) मे भी ऐतिहासिक कथाओ पर आधारित कुछ अभिनेय नाटक हैं । दुमलाल पुन्नालाल बख्शी का नाटक मातृ मूर्ति (1972) मे पौराणिक काल से लेकर आज तक की सामाजिक एव ऐतिहासिक झाकी चित्रित है ।

सन् 1962 मे हुए चीनी आक्रमण ने जन मानस को झकझोर दिया । परिणामस्वरूप देश की अखडता देशप्रम बलिदान आदि का ज्ञान कराने के लिए राष्ट्रीय नाटको की रचना की आवश्यकता अनुभूत की गई । इसके मह व को समझते हुए राष्टीय एकाकी (1964) का प्रणयन किया गया जिसमे ग्यारह एकाकी हैं और सभी राष्ट्रीयता के भाव जगाने वाले है और कुछ भारत चीनी सघष की कहानी कहने वाले हैं । योगे द्रकुमार ल ला के सम्पादन मे इस पुस्तक के लेखक आनद कुमार जैन चिरजीत देवराज दिनेश मगल सक्सेना आदि हैं । इसी परम्परा मे कृष्णकुमार नूतन की सोना और आजादी और शकर बाम का गुलाब के फल (1968) है । इसमे बीस नाटको का सग्रह है और प्रत्येक नाटक देशभक्ति याग एकता

सहयोग और साहस की कहानी कहने वाले हे। मोनहर वर्मा कृत हम सब एक हैं मे गुडडे और गुडिया की शादी के बहाने विभिन्न प्रान्तो के विभिन्न भाषा भाषियो के बीच एकता स्थापित की गई है। न हे सक प (श्रीकृष्ण) एकाकी सकलन मे एक चीनी हमले की पृ ठभूमि पर लिखा गया है। हम एक है (कमलेश्वर, राह अनेक मजिल एक (राधश्याम प्रग भ) बाल निकेतन (सरस्वती कुमार दीपक) भी ऐसे ही एकाकी जिनमे रा ट्रीय समस्याओ से ब चो को परिचित कराने के साथ उनके समाधान मे ब चो की सभावित भूमिका क्या हो सकती है इसे भी सुझाया गया है। ग्राम विकास योजनाओ पर आधारित पाच एकाकी नाटको का सग्रह रगीन शबत देवीदयाल चतुर्वेदी द्वारा लिखा गया।

भारतीय सस्कृति तथा धर्म के प्रति आस्था जगाने के उद्देश्य से पौरागिक तथा धार्मिक नाटको की भी सृ टि हुई। ये नाटक ब चो को देश की सास्कृतिक आ यात्मिक और वीरता की परपराओ मे जोडते है वही सामयिक सदभ मे उनके अर्थों को भी स्प ट करते है। ि ि ाथ का गह याग (नरश मेहता) बाल वीर कृष्ण (रघुवीर शरण मिश्र) प्रहलाद (कृष्णदत्त भारद्वाज) इसी कोटि के नाटक है। भरत (देवराज दिनेश) म रामायण के विभिन्न प्रसगो को प्रस्तुत किया गया है। श्रवण कुमार (विश्वनाथ टडन) मे चार शिक्षाप्रद नाटक सग्रहीत हैं। ये श्रवणकुमार के मातृ पितृ सेवा पन्ना धाय के मम व बलिदान तथा भगवान के प्रति विश्वास आदि भावो को प्रदर्शित करते है। रामप्रसाद यास का पौराणिक नाटक बाल रामायण नाटक (1971) है जो सचित्र है। य तो पौराणिक नाटक अनेक लिखे गये क्योकि पौराणिक साहि य हर देश का खूब समद्ध है। बहुत कुछ लिया जा सकता है वहाँ से। पर चुनाव और रूपान्तर ऐसा होना चाहिए कि वह जिनके लिए है उनके अनुभवो से स बधित हो और वज्ञानिक युग मे अविश्व सनीय न लगे अर्थात् प्रामाणिक हो। उस युग मे बहुधा प्रतीको के माध्यम से क य को उजागर किया जाता था। उनके सही अथ आज की रचना मे स्प ट होने चाहिये। जिसको आज के सदभ मे अथ न दिये जा सके उसे छोड देना होगा। इस दृ टि से श्रीकृष्ण का चार एकाकियो का सग्रह तोता राम (1971) मे हिर य कश्यप मर्डर केस एक रोचक एकाको है। पौरा णिक कथा को आधुनिक युग के अनुरूप यथाथ जगत् के धरातल पर प्रस्तुत किया गया है। हिरण्यकशिपु को मारने वाले भगवान विष्णु पर मुकदमा चलता है और खूनी सिद्ध होने पर उन्हे न्यायाधीश सजा भी देता है। शेष तीन एकाकी भी सरल भाषा मे रोचक ढग से प्रस्तुत किये गये हैं।

शिक्षाप्रद नाटको का सग्र तीन भागो मे आओ ब चो नाटक खे न (1971) अनिल कुमार ने प्रस्तुत किया तो प्रभदयाल अग्निहोत्री का नौ नाटको का सग्रह ऋतुआ की सभा (1971) भी नीति इतिहास तथा कत्त य की शिक्षा बालको को देता है। उमा आन द का आओ बच्चो नाटक खेल इसी भावभूमि पर आधारित है।

घर के स न्स्यो अर्थात् भाई ब न्नो के आपस मे बालोचित झगड होते रहते हैं। इन झगडो के विभि न भाव के चित्रण किये हैं देवराज दिनश ने झठ का दान मे रमेश भाई न पानी और रसगु ले मे पारिवारिक मनो रजक स्थितियो का चित्रण है मजेदार मामाजी (स य द्र शरत्) चकमा शोर और उपवास (मस्तराम कपूर उर्मिल) मे।

ब चो की आदतो को सुधारने के उद्दश्य से कई नाटका मे ब चा की आदतो के विषय बनाकर रोचक एव सहज स्थितिया प्रस्तुत की गई हैं। आदत सुधार दवाखाना (मगल सक्सेना) झूठ का अलार्म (वेद राही) ऐ रोने वालो (स्वदेश कुमार) अनुशासन (महे द्रनाथ झा) तथा डर (श्याम यास) ऐसे ही अ य त सशक्त एकाकी हैं।

आधुनिक समाज और प्रजातान्त्रिक व्यवस्था के प्रति ब चे सचेत एव जागरुक हो गये हैं। अपने अधिकार एव कर्त य के प्रति जागरूक हो गए हैं और इस स्थिति का सशक्त चित्रण है ये धरती के बटे हैं (ओमप्रकाश आदि य) बाल ससद हरिकष्ण (देवसरे) मे।

आज की एक वल त समस्या बालको के छात्रावास मे रहने की है। सम्पन्न माता पिता अपने बालको को प लिक स्कूलो के छात्रावास मे रखकर पढ़ाना गव की बात समझत है। वहा उ हे अनेक समस्याओं का समना करना है। इसके निराकरण का उपाय सतराम व स्य के नाटक ब चो के नाटक (1971) मे नाटकीय विधाओ मे सरल ढग से प्रस्तुत किया गया है। साथ ही बालको के चारित्रिक पतन को रोकने के लिए स लाल ने शा ति की विजय लिखा जो चार एकाकी नाटको का सग्रह है।

आज विभिन्न मागो को लेकर हडताल भूख हडताल करने का प्रच नन हर क्षेत्र मे हो गया है। बा नको पर भी इसका प्रभाव यापक रूप से पडता है। वे अपनी बात मनवाने के लिए जिद् करते है। इस समस्या को लेकर विष्णु प्रभाकर का नाटक हडताल लिखा गया जिसमे ब चो की जिद् अपनी मागो के लिए तर्क भूख हडताल करने पर भूख की परेशानी हेड मास्टर का भय आदि मनोवज्ञानिक ढग से सरल एव बोधमय भाषा में प्रस्तुत

किया गया है। भूगोल के मास्टर एव काबुली वाला दो अन्य नाटक इस सग्रह मे है। इसमे सामाजिक ज्ञान की बात बताई गई है। भूगोल के मास्टर मे भूगोल के मास्टर को उखाड फकने के प्रयास मे ब चे स्वय ही अपनी जाल मे फस जाते है। काबुलीवाला रवीन्द्र नाथ ठाकुर की कहानी पर आधारित है। बच्चा की कल्पनाशक्ति और सजनात्मकता जगाने लिए ऐसे नाटक अधिक उपयुक्त है जो सुदरता अनोखेपन और चमत्कार से भरे हो तथा बच्चो के दनिक जीवन से सम्बधित खेलकूद पर आधारित हो। इस तरह की नाटको मे उन्हे आनन्द भी मिलता है और साथ ही सीधे सीधे उपदेश के बिना ही उनम भले बुरे की पहचान भी पदा होती है। रेखा जन अपने स उद्देश्य की पूर्ति के लिए बाल रगमच को अधिकाधिक विकसित करने मे अपना सहयोग दे रही है।

गीतो के माध्यम से बच्चे किसी बात को आसानी से समझ लेते है। इस बात की उपयोगिता को समझते हुए मोहनलाल गुप्ता ने बच्चो की सरकार लघु एकाकी लिखी इसमे पद्य के माध्यम से सरकार की रचना प्रणाली समझाई गई है। चन्द्रशेखर की कमल और केतकी (1971) उल्लेखनीय नाटय काव्य है।

अनुवाद की दिशा मे नाटक भी पीछे नही रहा। जान गा स वर्दी के प्रसिद्ध नाटक द लिटिल मैन का हिन्दी अनुवाद श्रीकृष्ण ने किया। इस नाटक के माध्यम से आधुनिक सभ्यता के ढोगियो को कर्त्तव्य पालन की शिक्षा दी गई है।

बच्चो के लिए नाटक लिखना वस्तुत दुरूह कार्य है। उनकी अभिनय रुचि कल्पना तथा विषय वस्तु और उनका मचन सभी का ध्यान रखना पडता है। इसका भविष्य उज्जवल है और इस विधा मे तरह तरह के प्रयोग हो रहे है। रेखा जन ने प्रयोगात्मक नाटक खेल खिलोनो का ससार (1973) लिखा। स सग्रह मे सात एकाकी प्रस्तुत किये गये। सभी अभिनय की दृष्टि से सफल हुए है। बच्चो को काल्पनिक उडान के साथ साथ यथार्थ जगत् के तथ्यो को सहज ग्राह्य बना दिया गया है। इनकी दूसरी कृति दीवाली के पटाखे (1977) है।

एकाकी लेखक को प्रोत्साहित करने के लि पराग पत्रिका ने दो एकाकी प्रतियोगिताए आयोजित की थी जिनमे छ पुरस्कृत बाल एकाकी प्रकाश मे आये। जासूसी का शौक (राजकमल चौहरी) झगडालू लडका तथा पुस्तकालय (श्रीकृष्ण) उल्लेखनीय एकाकियाँ हैं। इनमे भी आज के जीवन

की समस्याओ को बाल सुलभ कथानक सवाद और भाषा के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। भाषाई झगड यात्रा की ज-दी गुडिया का ब्याह जैसे विषयो पर लिखे गए ये रोचक एकाकी है।

इसके अतिरिक्त ब-चो की अपनी समस्याओ समसामयिक परि िथतियो आर बदलते समाज की स्थितियो पर आधारित विषयो को लेकर एकाकी लेखन की पर परा का विकास करने मे पराग का मह वपूण सहयोग है।

आज का जीवन विभिन्न समस्याओ से उलझा हुआ है। इन सम स्याओ का तथा लोगो की अपनी जागरुकता का ज्ञान कराने के लिए सव श्वर दयाल का नाटक भो भो खो खो उपयुक्त रचना है जिसमे मदारी बदर तथा कु ते को नचाता है और उनका शोषण करता है। अपनी शक्ति का अनुभव होने ही वे मदारी के विरोध मे क्राति कर देत है। इसके द्वारा लिखित लाख की नाक मे सामतवादी आड बर और खोखलेपन को चित्रित किया गया है तथा उ-हे उखाड फकने का काय भी किया गया है।

बाल नाटक की परम्परा मे नि-य नये प्रयोग और उपल-धियो को देखने से प्रतीत होता है कि इसका भवि य उ--वल है। नाटको के लिए विषय सामग्री जीवन के चारो ओर बिखरी पडी है। उनमे से उपयुक्त सामग्री का चयन बडो की क पना पर निर्भर करता है कि वे किस हद तक बच्चो को इससे जुडने की छट देते है। एक बार ब चो की क पना का ससार खोल देने पर बडो को कुछ करने की जरूरत नही रह जाती सिवा उनसे सीखने की। ब चो को सिखाने से -यादा उनसे सीखने का सिलसिला शुरू होना चाहिए। हमारे आपके सबके सहयोग से ही ब-चे अपनी सही दुनिया पहचान सकेगे। इन सब बातो को पूरा करने के लिए बडो को ब चा बनना होगा और उनके अनुसार उनके समक्ष आचरण करना होगा।

विश्व बाल वर्ष मे शकुन प्रकाशन ने ब-चो के 100 नाटक को लेकर एक सग्रह प्रकाशित किया। बाल साहि-य की नाटक विधा की यह सबसे बडी उपलब्धि मानी जा सकती है। इस सग्रह के सभी नाटक रोचक है मचन के लिए उपयुक्त है और साथ ही साथ पठनीय भी है। इस सग्रह के एकाकियो के चयन में विषयो की विविधता शैलीगत प्रयोगो और बच्चो के लिए इनकी उपयोगिता को तो ध्यान में रखा ही गया है साथ ही यह

भी देखा गया है कि ब्चो के लिए ये किस सीमा तक अभिनेय है। इस एकाकी सग्रह को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि अभी भी कई नाटक ऐसे है जो बालको के लिए उपयोगी हैं परन्तु उनको इसमे स्थान प्राप्त नही हो पाया है। अलग से उनका चयन कर सग्रहीत कर प्रकाशित करने की पहल की आवश्यकता है।

यह सर्वविदित है कि ब चो के नाटक हि्दी मे अभी भी कम लिखे जा रहे हैं और जो लिखे जा रहे हैं। वे समसामयिक परिवेश से जुड हुए होते हैं। उनमे ब्चो की अनुभूतियो की पकड होती है और वे बच्चो मे कला्मक अभिरुचि जगाने मे सक्षम होते है। ऐसे नाटक यदि प्रचुर मात्रा मे उपल ध हो जाय तो साठ वर्ष पुरानी शिकायत बि्कुल दूर हो जायेगी। इसलिए इस दिशा मे अभी काफी अपेक्षाएँ हैं। इसके लिए लेखक स पादक समीक्षक निदशक सभी को मिल कर एक निश्चित मानदण्ड अपनाना होगा। इसके अभाव मे बाल नाटको का सही मू याकन नही हो पाता और वे मचन मे भी असफल रहते हैं।

(2) **बाल रग मंच**—भारत मे नाटक नृ्य तथा सगीत की समृद्ध परम्परा रही है कि्तु यहाँ ब्चो के रगमच की कोई पर परा न्ही रही। इसका मुख्य कारण यह है कि हमारे देश मे छोटे ब्चो के मानसिक भावा मक एव बोधमूलक विकास की ओर कोई ध्यान नही दिया गया। स्वतत्र भारत मे सुधी जनो का यान इस ओर गया और बालको के साहि्य की विभि्न विधाओ मे इस प्रकार की रचना होने लगी जो बालको पर थोपी हुई न होकर उनके लिए सह्ज रूप से अपनाने यो य थी। इसी पर परा मे बाल नाटको की सख्या मे भी वृद्धि हुई जो सबसे अधिक अपेक्षित विधा थी। अब यह समझा जाने लगा कि नाटक ब चो के विकास का बहुत ही सशक्त और कारगर साधन हो सकता है। क्योकि ब चो की यह आदिम प्रवृत्ति रही है कि वे सब कुछ स्वय करके देखना चाहते हैं। उनमे नसर्गिक रूप से ही तरह तरह की गतियो की क्षमता साथ ही एक लय के प्रति एक स्वाभाविक समझ बहुत अधिक होती है। ये ही ब चे अपने नसर्गिक गुणो को बड होने पर भूलने लगते हैं। बालको मे इस नैसर्गिक क्षमता को जगाये रखने और उसे सही दिशा देने का कार्य बाल नाटक बाल रगमच के माध्यम से करता है। बाल रगमच अपनी रचना प्रक्रिया में वयस्क रगमच से भिन्न होती है। इस पर अभिनय प्रस्तुत करने का उद्देश्य बालको को

सीधे सादे ढंग से ऐसी दुनिया मे ले जाना है जो उनकी अपनी है जिसे उनकी बुद्धि समझ सकती है।

बाल रंगमंच की रचना मे दो बातो का ध्यान रखना पडता है। एक तो बालक खेल-खेल मे स्वयं रंगमंच बना सकते हैं। कमरे मे या कक्षा के अन्दर अभिनय प्रस्तुत कर सकते है और अभिनय के लिए आवश्यक सामान घर मे ही प्राप्त कर सकते हैं। दूसरे प्रकार का रंगमंच वह है जिसे बडो की सहायता से बच्चे बनाते हैं किन्तु सारी व्यवस्था उनकी अपनी रहती है। इसके लिए भी आवश्यकता इस बात की है कि बाल रंगमंच का गठन ऐसा हो जिस पर बाल बुद्धि सरलता से अभिनय कर सके। आवश्यक सामान बच्चो की परिचित वेश भूषा उपयुक्त रंग सज्जा मंच निर्देश आदि बातो पर सतर्कता से विचार कर बाल रंगमंच का निर्माण होगा तभी यह बच्चो को अभिनय की प्रेरणा दे सकेगा और उनमे नाटक के प्रति रुचि जागृत होगी।

इस आवश्यकता को समझते हुए तथा पं जवाहरलाल नेहरू के प्रेरणास्वरूप सन् 1954 मे दिल्ली मे चिल्ड्रन थिएटर का जन्म हुआ। अनेक कठिनाइयो के होते हुए भी यह थिएटर दिनोदिन विकास की दिशा मे अग्रसर होता रहा। आरम्भ मे सात से बारह वर्ष के बच्चो को लेकर कार्य करने वाली यह संस्था कुछ दिनो बाद माध्यमिक शिक्षा के सभी स्तरो के बच्चो को लेकर अपने उद्देश्य की पूर्ति करने लगा। इस थिएटर का मुख्य उद्देश्य है—बाल रंगमंच तथा सृजनात्मक नाट्य को विकसित करना। इसकी पूर्ति के लिए इस थिएटर ने दिल्ली के विभिन्न भागो मे प्रशिक्षण केन्द्रो की स्थापना की। इन केन्द्रो मे प्रत्येक वर्ष प्राथमिक से माध्यमिक स्तर तक के लगभग तीन सौ विद्यालयीन बच्चे नाट्य कला और नृत्य नाट्य का प्रशिक्षण प्राप्त करते है। इस शिक्षा से बालको के व्यक्तित्व के विकास मे बहुत सहायता मिलती है।

रेखा जैन सुजाता दिनेश छबि सेन जसी निर्देशिकाओ के सहयोग के कारण दिल्ली चिल्ड्रन थिएटर कठिनाइयो के बावजूद भी सफलतापूर्वक अपना कार्य कर रहा है। बाल रंगमंच की आवश्यकता के अनुरूप रेखा जैन का नाटक खेल खिलौनो का संसार महत्वपूर्ण कृति है।

इन नाटको को पढ़ने तथा अभिनीत करने के बाद बच्चे काल्पनिक उडान के साथ साथ यथार्थ जगत् के तथ्यो को भी सहज ही अपना लेते हैं।

उ हे अभिनय के पूर्ण अवसर प्राप्त होते हैं और विभिन्न पात्रो के माध्यम से वे अपने को अभि यक्त करने मे समथ पात हे । इन सजना मक नाटको मे सभी प्रकार के ब चो का प्रवेश समान रूप से होता है । किसी भी नाटक की तयारी के लिए प्रतिभावान बच्चो को ही नही लिया जाता अ पतु सभी प्रकार के बच्चे इसमे भाग ले सकत हैं क्योकि सजना मक बाल रगमच यह मान कर चलता है कि सभी ब चो मे सर्जना मकता और क्षमता होती है उनमे अनुभूति के लिए ललक होती है यही नही वे हसी और आवेग चाहते है। बठना सीखत ही वे क पना लोक मे विचरने लगत हैं मगर उनमे व स्को की जटिलताए और उलझन नही होती ।

दि ली थिएटर के प्रभावस्वरूप महारा ट बगाल गुजरात आदि प्रा तो के अतिरिक्त हि दी भाषी नगरो मे भी बाल रगमच के प्रयोग हो रहे है। उत्तर प्रदेश मे प्रयाग वाराणसी गोरखपुर लखनऊ आदि नगरो मे बाल रगमच पर छटपुट काम हुआ है । इस दिशा मे सुषमा सेठ गिरीश रस्तोगी बधु कुशावर्ती आदि का मह वपू । सहयोग है । उत्तर प्रदेश सगीत नाटक अकादमी ने पिछले चार वर्षों से बाल रगमच के दो प्रशिक्षण शिविर लगाए उ जन मे प्रभात कुमार भटटाचाय और प्रोनाति भटटाचार्य बच्चो के ि ए नाटक करती हैं । कि तु अभी इनकी स्थिति दयनीय ही है । वस्तुत बाल रगमच के सम्पूर्ण विकास के लिए बाल नाटको के अभावो को दूर करना और अ छ तथा साथक बाल नाटको की रचना करना आवश्यक है । ब पमाने पर मौलिक बाल नाटको की रचना विभि न देशी विदेशी भापाओ से अनुवाद कहानी और उप यासो का नाटया तर अपेक्षित है तथा इस बात की भी अपेक्षा है कि बालको को भी नाटक लिखने के लिए प्रो साहित किया जाय ।

रगमच सम्ब धी पत्रिकाओ की भी आवश्यकता समझी गई । यद्यपि इस दिशा मे पहला प्रयास लखनऊ के बधु कुशावर्ती ने किया । उनके सम्पादन मे बाल रगमच नामक पत्रिका निकलने लगी । बधु कुशावर्ती का यह मह वपूर्ण कदम था क्योकि यावसायिक दष्टि से तो इसमे हानि ही थी । इसके अतिरिक्त नटरग का बाल रगमच विशेषाक (अप्रल सित बर 77) रंग दशन मे नेमिच द्र जैन की टिप्पणियाँ मधुमती के बाल साहि य विशेषाक (जुलाई-अगस्त 1967) मे देवसरे के निब ध तथा पृथ्वीराज कपूर अभिनदन ग्र थ में देवीशकर अवस्थी के निब ध के अतिरिक्त बाल रगमच साहित्य का अभाव है ।

अभी भी स्थिति यह है कि बाल रगमच के प्रति प्राय सभी उदा सीन है। उचित स मान और प्रो साहन के अभाव मे इस क्षेत्र मे कार्य करने वाले अधिक सक्रिय नही हो पात। साथ ही नाटक को मचित करने के लिए उ हे विभि न सस्थाओ से आग्रह करना पडता है—स्थान या कमरे की यवस्था करने के लिए। अधिकतर उ हे इस दिशा से निराश ही होना पडता है।

बाल रगमच मनोरजन तथा कला मक रुचि के विकास के अतिरिक्त शिक्षा का भी एक सहज और प्रभावशाली माध्यम है। क्योकि अभिनय द्वारा बालक के मनोवज्ञानिक सवेगो को एक नई गति मिलती है और वह महसूस करता है कि वह कुछ बन रहा है जिसमे उसके काय कलापो का प्रतिबिम्ब मौजूद है। ऐसा बालक बडा होकर जीवन के किसी भी क्षेत्र मे सफलता अर्जित करने मे सक्षम हो जाता है क्योकि अपने को यक्त करने की कला मे वह पारगत हो जाता है। साथ ही उसके जीवन को मनोरजन का अश स्वत स्फर्ति प्रदान करता रहता है। अतएव बाल रगमच का केवल बचपन से ही नही पूरी जि दगी से जीव त सम्ब ध है।

नई शिक्षा पद्धति मे दो वर्षीय शिक्षा काल में अभिनय की अनेक विषयो मे एक है। लेकिन देखा यह गया है कि वाल नाटको मे बडो की शिक्षा नतिक उपदेश तथा वर्जनाओ का चित्रण रहता है। इस कुरीति को दूर करने के लिए अब नि य नये प्रयोग हो रहे हैं। इस दिशा मे रेखा जन के अति रिक्त कृ णगोपाल (परी और गु बारे वाला) तथा सवश्वर दयाल सक्सेना (भो भो खो-खो) कार्यरत है।

फिर भी आज यह स्थिति है कि बाल रगमच की गतिविधियाँ विद्यालयो मे वार्षिको सव या अ य अवसरो पर अभिनीत किए गए एकाकियो तक ही सीमित है। गाँवो और कस्बो मे बसने वाले ब चो के लिए स्वस्थ मनोरजन का कोई साधन आज भी नही है। शहरो मे भी कुछ सस्थागत तथा कुछ यक्तिगत प्रयासो के अतिरिक्त बाल रगमच का विशेष उपयोग नही है।

इसलिए बाल रगमच को अधिक सक्षम और लोकप्रिय बनाने के लिए पाठशालाओ के पाठ्य क्रमो मे नाटक के विभिन्न आयामो का समावेश होना बहुत आवश्यक है। केवल स्कूलो के वार्षिको सव के अवसर पर नाटय प्रदर्शन से कुछ होने का नही। जब तक स्कूलो में इसके लिए नियमित अभ्यास नही

कराया जायेगा जब तक इसे बालको के जीवन का एक विशेष अग नहीं बनाया जायेगा तब तक बाल रगमच का भवि य अधकारमय ही रहेगा।

(3) **बाल गीत–कविता**—स्वतत्रता के पश्चात् इस विधा मे पर्याप्त उन्नति हुई। इससे पूव बालगीत एव कविताए उप्यास तथा कहानी की अपेक्षा अधिक समृद्ध रही। कि तु कविता के विषय सीमित रहे। प्राथना चिडिया सूरज तारे रेल आदि विषयो पर ही कविताए लिखी जाती रही जिनमे अधिकाशत इनसे सम्ब धित सामा य बातो का ही परिचय दिया जाता था। साथ ही रा ट्रीय भावना से परिपूर्ण सद्गुणो का विकास करने वाली उपदेशा्मक कविताएँ अधिक लिखी गइ।

स्वात्योत्तर बाल कविताओ का स्वर बदला स्वरूप बदला एव विषयो की विविधता को लेकर यह बाल साहि य को अधिक सपन्न एव समृद्ध करने मे जुट गया। अब ब्चो के प्रिय पात्रो—खिलौनो पशु पक्षियो वस्तुओ आदि के प्रति उनके सामयिक प्रिवेश से जुड विचारो को कविताओ के द्वारा अभि यक्ति प्रदान करने के कई प्रयोग कवियो ने किये। आलोचको का यह कहना कि स्वात य काल मे गद्य साहि य की तुलना मे कविता बहुत कम लिखी गई। जो लिखी गई उसमे से भी अधिकतर नसरी कक्षाओ पाठ्य पुस्तको और स्कूल के समारोहो आदि की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए लिखी गई— * पूर्वाग्रह से प्रेरित प्रतीत होता है। इस युग का बाल गीत मनोवैज्ञानिक दृष्टि से ब चो के मन के अधिक पास और उनकी भावनाओं और क्पनाओं के अपेक्षाकृत अधिक निकट है। इनमे बच्चो को अपने मन के अनुकूल विषय मिलता है तथा वे जबरन थोपी हुई प्रतीत नहीं होती वरन् बच्चे स्वत उसके प्रति आकर्षित होते है।

सोहनलाल द्विवेदी निरकारदेव सेवक शकुतला सिरोठिया श्री प्रसाद सूर्यभानु गुप्त मयक आदि लोकप्रिय कवियो ने श्र ठ बाल गीतो की रचना की तथा अनेक अ्छे बाल गीत सग्रह प्रकाशित कराये। सेवकजी की कविताओ मे बच्चो का ससार बडे ही सुन्दर ढग से चित्रित है। रा ट्र ब धु ने बच्चो के लिए आधुनिक भावबोध की कविताएँ लिखी।

पशु पक्षी से सम्ब्धित गीत बालको को अधिक प्रभावित करते हैं क्योंकि मनुष्य-जैसा आचरण करने की क पना उ्होने उनमे कर ली है। सोहनलाल द्विवेदी के शिशु भारती (1949) मे पक्षी ऋतु आदि विषयो पर कविताएँ सग्रहीत है। इसमे कविता के माध्यम से समान पक्षियों मे

अन्तर स्पष्ट किया है। इनकी कविताओ मे बाल अनुभूतियो की सशक्तता है तो किसी वस्तु के प्रति जिज्ञासा भी है।

पुरुषोत्तमदास कृत चिडियो की बात निरकारदेव सेवक कृत पप्पू के बाल गीत रिमझिम दूध जलेबी बि-लो के गीत शेखर के गीत आदि सग्रह रूप मे हैं। इनके अतिरिक्त अगर मगर दो भाई थे तुम बनो किताबो के कीड लाल टमाटर लाल टमाटर आदि कुछ गीत बच्चो द्वारा बहुत पसन्द किए गए। धर्मपाल शास्त्री के गाओ ब-चो अवधेश कृत वण गीत कमला ओबेराय कृत बाल तरग दयाशकर मिश्र दद्दा कृत मेरे गीत माधव शर्मा कृत पढ़ लो बेटा पढ लो भी उ-लेखनीय बाल गीत हैं।

स्वतलता के पश्चात् भी राष्टीय भावना से परिपूण कविताएँ पर्याप्त माल्ला मे लिखी गइ। इसका कारण यह है कि स्वतलता प्राप्ति के लिए जो प्रय-न किए गए उनमे सफलता मिली और स्वतलता मिलने पर सम्पूर्ण भारतीय जीवन मे एक नया मोड आया। आन-द उ-लास और सतोष की भावना उमडी जनता का आ मविश्वास जागा और उसके रगो मे नये खन का सचार होने लगा। विश्व बधु-व और विश्व क-याण की अमूर्त भावनाए जो पहले स्वप्न माल थी उ-हे सार्थक करने का अवसर मिला। अनेक कवियो ने अ तर्राष्ट्रीय और सास्कृतिक कविताओ की रचना की। कुल कविता साहि-य का 35 प्रतिशत भाग राष्टीय भावनाओ से आच्छादित है। वस्तुत हि दी साहि-य की जिस विधा मे स्वतलता सर्वाधिक प्रति फलित हुई है वह है हिंदी कविता। इस दशक के राष्ट्रीय बाल गीतो मे नेताओ के चरित्नगीत देश महिमा वर्णन अभिनेय गीतो प्रयाण गीतो झडा गीतो की रचना पर्याप्त माला मे हुई। गाधी और नेहरू तो ब-चो और बाल गीतकारो के प्ररणा के मुख्य आधार रहे है। निरकार देव सेवक के चाचा नेहरू के गीत (1957) जो ब-चो की ओर से उनके लिए लिखे गए है विष्णकात पाडेय कृत चाचा नेहरू मे उ-हे विश्व शान्ति का दूत भारत का कर्णधार -याग तथा तपस्या की प्रतिमा कह कर सम्बोधित किया गया है साथ ही बालको को भी नेहरू जैसा बनने का उपदेश दिया गया है। प्रत्येक वर्ष नेहरूजी का ज-म दिवस विश्व भर में बाल दिवस के रूप मे मनाया जाता है और अनेक गीत कविता रचे जाते हैं जो वसुधव कुट बकम् की भारत के प्राचीन आदर्श का स्वप्न साकार करने वाले भी होते हैं। मेरा ज-म दिवस (दिवाकर) जय जवाहर (वीरे-द्र मिश्र) अपना देश देश महान (वीरे-द्र मिश्र) गीतो का झला (वीरे-द्र मिश्र) बाल भारती

कराया जायेगा जब तक इसे बालको के जीवन का एक विशेष अग नहीं बनाया जायेगा तब तक बाल रगमच का भवि य अधकारमय ही रहेगा।

(3) **बाल गीत–कविता**—स्वतत्रता के पश्चात् इस विधा मे पर्याप्त उन्नति हुई। इससे पूर्व बालगीत एव कविताए उप यास तथा कहानी की अपेक्षा अधिक समृद्ध रही। कि तु कविता के विषय सीमित रहे। प्राथना चिडिया सूरज तारे रेल आदि विषयो पर ही कविताए लिखी जाती रही जिनमे अधिकाशत इनसे सम्बधित सामा य बातो का ही परिचय दिया जाता था। साथ ही रा ट्रीय भावना से परिपूर्ण सद्गुणो का विकास करने वाली उपदेशा मक कविताएँ अधिक लिखी गइ।

स्वातत्र्योत्तर बाल कविताओ का स्वर बदला स्वरूप बदला एव विषयो की विविधता को लेकर यह बाल साहि य को अधिक सपन्न एव समृद्ध करने मे जुट गया। अब बच्चो के प्रिय पात्रो—खिलौनो पशु पक्षियो वस्तुओ आदि के प्रति उनके सामयिक परिवेश से जुड विचारो को कविताओ के द्वारा अभि यक्ति प्रदान करने के कई प्रयोग कवियो ने किये। आलोचको का यह कहना कि स्वात य काल मे गद्य साहि य की तुलना मे कविता बहुत कम लिखी गई। जो लिखी गई उसमे से भी अधिकतर नसरी कक्षाओ पाठ्य पुस्तको और स्कूल के समारोहो आदि की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए लिखी गइ— पूर्वाग्रह से प्रेरित प्रतीत होता है। इस युग का बाल गीत मनोविज्ञानिक दृष्टि से ब चो के मन के अधिक पास और उनकी भावनाओ और क पनाओं के अपेक्षाकृत अधिक निकट है। इनमे बच्चो को अपने मन के अनुकूल विषय मिलता है तथा वे जबरन थोपी हुई प्रतीत नहीं होती वरन् बच्चे स्वत उसके प्रति आकर्षित होते है।

सोहनलाल द्विवेदी निरकारदेव सेवक शकुतला सिरोठिया श्री प्रसाद सूयभानु गुप्त मयक आदि लोकप्रिय कवियो ने श्रे ठ बाल गीतो की रचना की तथा अनेक अ छ बाल गीत सग्रह प्रकाशित कराये। सेवकजी की कविताओ मे ब चों का ससार बड ही सु दर ढग से चित्रित है। रा ट्र ब धु ने ब चो के लिए आधुनिक भावबोध की कविताएँ लिखी।

पशु पक्षी से सम्बन्धित गीत बालको को अधिक प्रभावित करते हैं क्योंकि मनुष्य-जसा आचरण करने की क पना उ होने उनमे कर ली है। सोहनलाल द्विवेदी के शिशु भारती (1949) मे पक्षी ऋतु आदि विषयो पर कविताएँ सग्रहीत है। इसमे कविता के माध्यम से समान पक्षियो मे

अ तर स्पष्ट किया है। इनकी कविताओ मे बाल अनुभूतियो की सशक्तता है तो किसी वस्तु के प्रति जिज्ञासा भी है।

पुरुषोत्तमदास कृत चिडियो की बात निरकारदेव सेवक कृत प पू के बाल गीत रिमझिम दूध जलेबी बि लो के गीत शेखर के गात आदि सग्रह रूप मे है। इनके अतिरिक्त अगर मगर दो भाई थे तुम बनो किताबो के कीड लाल टमाटर लाल टमाटर आदि कुछ गीत बच्चो द्वारा बहुत पसन्द किए गए। धर्मपाल शास्त्री के गाओ बच्चो अवधेश कृत वण गीत कमला ओबेराय कृत बाल तरग दयाशकर मिश्र दद्दा कृत मेरे गीत माधव शर्मा कृत पढ़ लो बेटा पढ लो भी उ लेखनीय बाल गीत हैं।

स्वतत्रता के पश्चात् भी राष्टीय भावना से परिपूण कविताएँ पर्याप्त मात्रा मे लिखी गइ। इसका कारण यह है कि स्वतत्रता प्राप्ति के लिए जो प्रय न किए गए उनमे सफलता मिली और स्वतत्रता मिलने पर सम्पूर्ण भारतीय जीवन मे एक नया मोड आया। आन द उ लास और सतोष की भावना उमडी जनता का आ मविश्वास जागा और उसके रगो मे नये खन का सचार होने लगा। विश्व बधु व और विश्व क याण की अमूर्त भावनाए जो पहले स्वप्न मात्र थी उ हे सार्थक करने का अवसर मिला। अनेक कवियो ने अ तर्राष्ट्रीय और सास्कृतिक कविताओ की रचना की। कुल कविता साहि य का 35 प्रतिशत भाग राष्ट्रीय भावनाओ से आ छादित है। वस्तुत हि दी साहि य की जिस विधा मे स्वतत्रता सर्वाधिक प्रति फलित हुई है वह है हिंदी कविता। इस दशक के राष्ट्रीय बाल गीतो मे नेताओ के चरित्रगीत देश महिमा वर्णन अभिनेय गीतो प्रयाण गीतो झडा गीतो की रचना पर्याप्त मात्रा में हुई। गाधी और नेहरू तो बच्चों और बाल गीतकारो के प्ररणा के मुख्य आधार रहे है। निरकार देव सेवक के चाचा नेहरू के गीत (1957) जो ब चो की ओर से उनके लिए लिखे गए हैं विष्णकात पाडेय कृत चाचा नेहरू मे उ हे विश्व शा ति का दूत भारत का कणधार याग तथा तपस्या की प्रतिमा कह कर सम्बोधित किया गया है साथ ही बालको को भी नेहरू जैसा बनने का उपदेश दिया गया है। प्र येक वर्ष नेहरूजी का ज म दिवस विश्व भर मे बाल दिवस के रूप मे मनाया जाता है और अनेक गीत कविता रचे जाते हैं जो वसुधव कुट बकम् की भारत के प्राचीन आदर्श का स्वप्न साकार करने वाले भी होते हैं। मेरा ज म दिवस (दिवाकर) जय जवाहर (वीरे द्र मिश्र) अपना देश देश महान (वीरे द्र मिश्र) गीतो का झला (वीरे द्र मिश्र) बाल भारती

बिगुल यह मेरा हि-दुस्तान है (सोहनलाल द्विवेदी) आदि गीत नेहरू जी की लोकप्रियता तथा देशभ-क की भावना को प्रकाशित करते हैं।

बापू के चरित्र चित्रण के लिए सोहनलाल द्विवेदी ने ब चो के बापू लिखा जिसमे बापू के सु-दर श दचित्र हैं। ब चो का भोलापन भी इस पुस्तक मे झलकता है जो अ य त स्वाभाविक बन पडा है। ब-चो की दृ ट मे भले ही यह महापुरुषो की हसी उडाने की बात हो पर तु बाल स्वभाव के अनुसार यह उचित ही है। इसके अतिरिक्त महा-मा गाधी पर धमपाल शास्त्री कृत ब-चो के बापू भी उ-लेखनीय कृति है।

राष्ट्रीय भावनाओ से पूर्ण बाल गीतो के विषय मे विचार क ते समय इस बात को भुलाया नही जा सकता कि देश और समाज की परिस्थितियो मे परिवर्तन होने पर रा ट्रीय भावना के आधार विषय और अभि यक्ति के स्वरूप मे भी परिवतन हो जाता है। हि-दी बाल गीतो मे भी इसका स्वर बदला। अब भारत की महिमा का वणन होता है अतीत के प्रति मोह के स्थान पर विजयो-लास का भाव होता है तथा झडा की महत्ता का वणन होता है। पर राष्ट्र प्रेम की भावना ब चो मे स्वाभाविक रूप से नही होती वे उसे सामाजिक परिवेश की समझ से अर्जित करते है। बच्चो को कुछ न कुछ शिक्षा और उपदेश देने की प्रवृत्ति भी बहुत से बाल गीतो मे दिखाई देती है। गाधी और नेहरू के आदर्श जीवन मे अपनाने के उपदेश तो बालको को दिये ही जाते थे चीन और पकिस्तान के साथ युद्ध छिडने पर शत्रुओ को मार भगाने तथा कश्मीर और ति बत को मुक्त कराने के लिए ब चो को तयार करने मे भी कवियो ने उ-साह दिखाया इस बात का विचार किए बिना कि राष्ट्रीयता अथवा देश प्रम एक अमूर्त सक-पना है और ब-च माध्यमिक कक्षाओ मे जाकर ही इसे कुछ कुछ समझने लगते हैं। अनेक कविताएँ प्रकाशित हुइ।

कुछ श्र ठ राष्ट्रीय कविताए भी प्रकाश मे आई हैं जिनमे दूध मलाई (च-द्रपाल सिंह यादव मयक) लहरें (द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी) कितना सु-दर देश हमारा (भगवतशरण उपाध्याय) नाम उजागर करो देश का (नर्मदा प्रसाद खरे) भावी रक्षक देश के (बाल कवि बरागी) एक किरण एक सुमन (विद्यावती मिश्र) प्रभाती (शिवमगल सिंह सुमन) तथा कदम मिला के चल (हरिश्चरण सिंह परवाना) उ लेखनीय कृतियाँ हैं।

बाल गीत के अ तगत भावगीत की अ प मात्रा देखकर यही कहा जा सकता है कि भावगीत लिखना वह भी ब‍्चो के लिए दु कर काय है। फिर भी इस क्षेत्र मे जो पुस्तक दिखाई प‍्ती ैं ‍नमे मह‍्वपूण है— नटखट के गीत (चिरजीत) मीठ गीत (देवीदयाल चतुर्वेदी मस्त) प पू के बाल गीत (निरकारदेव सेवक) छक छक छक (बालकराम नागर) अगूर का गुच्छा (रमापति शुक्ल) मटरू सेठ (राधश्याम) आदि।

स्वात योत्तर बाल गीत के भावगीतो मे भी परिवतन आया है। पुरानी परम्परा पीछे छट गई है। आज की पर परा विज्ञान युग से गुजर रही है। बालक अब च‍्द्रमा को देखकर मामा नही कहता और न तो उसे उस पर सूत कातती बुढिया दिखाई देती है। वह अब तो च‍्द्रमा से सम्ब‍्धित राकेट और अतरिक्ष की बात करता है।

सदा बदलते हुए सामाजिक परिवेश का प्रभाव साहि य पर पडने के कारण बाल मन को भी उस विशष परिस्थिति मे रख कर कवि को देखना पडता है तभी समयानुकूल श्र ठ माहि‍्य की रचना सभव है। आज बालक के चारो ओर विविधता ै उसे अपने आस पास की वस्तुओ घटनाओ और स्थितियो के प्रति जिज्ञासा है और यही उनकी समस्या को ज म देती है। वे इसका समाधान या तो कहानी म ढूढते है या फिर गीतो मे। तद्नुरूप आज नये नये शि‍्प मे गढकर बाल गीतो की रचना हो रही है जो विभिन्न पत्र पत्रिकाओ के माध्यम से प्रकाश मे आ रही है। धमयुग न दन पराग साप्ताहिक हि‍्दुस्तान तथा लोकप्रिय दनिक पत्र भी अपने सा ताहिक अक मे उन बाल गीतो को प्रस्तुत करते हैं जो नये युग के अनुरूप ब‍्चो को प्रभावित करने मे सक्षम है। इस प्रकार की कविताओ मे सूयभानु गुप्त की कविता ब चो के मन को अधिक मोहती है। ब‍्चे इन दिनो विभिन्न हडताल की बात सुनते हैं और उनसे प्रभावित भी होते हैं।

बच्चे पारिवारिक परिवेश मे अनगिनत कार्य देखने हैं। वे पशु पक्षियो के द्वारा भी उस काय को करने की क पना करके अधिक आनन्दित हाते हैं।

इस क्षत्र मे कथा गीत भी लिखे गये। इस प्रकार की कविता की रचना करना वसे तो बहुत सरल होता है किन्तु उनमे साहि‍्यिक गुण लाना बहुत कठिन होता है। सफल कथा गीतो मे निरकार‍्व सेवक कृत टेसू के गीत च‍्द्रपाल सिंह यादव मयक कृत सर सपाटा तथा परियो का

नाच रामावतार चेतन कृत दूब के मोती रा ट बधु कृत बाल भूषण तथा सरस्वती कुमार दीपक कृत चु नू मु नू के नाम उ लेखनीय है। प्रकाश पडित का चिडियाघर मे ब चो को एक कथानक के माध्यम से विभिन प्रकार के जीव ज तुओ के जीवन और उनके स्वभाव से परिचित कराया गया है। रघुवीरशरण सिंह की कहानियाँ अमर है मे चरित्र निर्माण सम्ब धी कथा मक कविताए है। इसके अतिरिक्त शुभा वर्मा का नीशू और चाँद च द्रशेखर का कमल और केतकी भी अ छी कृति है। आबिद सुरती का हलुआ पूरी खाने दे (शिक अक्टूबर 80) मनोरजक कथा गीत है जिसमे एक बुढिया अपनी बिटिया के घर जगल के उस पार जा रही है। रास्ते मे शेर भेडिया सिंह साप भाल से मुठभेड होती है और अपने बुद्धि चातुर्य के बल पर बिटिया के घर जाकर फिर सुरक्षित लौट भी आई। इसी परम्परा मे इ ने इशा का कथा गीत किस्सा एक कवारे का धारावाहिक रूप से धर्मयुग 1978 के अको मे प्रकाशित हुआ जो अ य त मनोरजक था।

सातव दशक मे ब चो के लिए नये गीत लिखने का नया प्रयोग हुआ। इन गीतो मे भाषा छद और प्रतीको तथा उपमानो सबधी प्रयोग किए गए। साथ ही उनमे सामयिक परिवेश तथा जीवन मू यो को भी प्रति बिम्बित किया गया। ब चो मे नये जीवनादर्शों को स्थापित करने का प्रयास किया गया और आधुनिकता बोध से उ हे जोडा गया। अपने आधुनिक जीवन के प्रति ब चो की जिज्ञासाओ समस्याओ और विचारो का भी इन कविताओ मे स्थान दिया गया। सूर्यभानु गुप्त दमोदर अग्रवाल विश्वनाथ गुप्त सवश्वर दयाल सक्सेना रा ट्र ब धु निरकार देव सेवक सूय कुमार पाडेय आदि कवियो ने अपने गीतो मे ब चो की प्रिय वस्तुओ जीव ज तुओ पारिवारिक सामाजिक स ब धो मौसम और खेल कूद की बातो को नये स दभ मे प्रस्तुत किया।

बालको को अब सीध सादे ढग से कही बात अ छी नही लगती। गीतो मे लाक्षणिक ढग से क पना को उभारने वाली कोई बात कही गई हो तो वे अधिक रुचि के साथ ग्रहण करते है। आज के गीतकार इस प्रकार की कविताएँ पर्याप्त मात्रा मे लिख रहे हैं। सवश्वरदयाल का बाल प्रम बतूता का जूता मे मिलता है जिसमे अपनी बिटिया के लिए शीर्षक मे खिलौने के माध्यम से सूर्योदय के साथ जागती धरती का एक रमणीय चित्र प्रस्तुत किया है।

इन गीतो को देखने से सही निष्कर्ष निकलता है कि आज की कविता मे अनुभूति और रागात्मकता के स्थान पर बौद्धिकता का प्राधान्य है। नया कवि पाठक के हृदय को तरगित और उद्वलित न कर उसे कुरेदता है। आज का युग ही बौद्धिक जागति का युग है। जीवन के साधारण से साधारण भी तत्व की उपेक्षा नही की गई है। यह ही इस युग की कविता का मुख्य स्वर है।

हास्य रस से परिपूर्ण कविता लिखने के क्षेत्र मे चतुरेश का महत्वपूर्ण स्थान है। इसका कविता सग्रह रसगुल्ला (1962) मनोरजक कृति है जो बालको को गुदगुदाती है। राधश्याम झिगन का मटरू सेठ रामधारी सिंह दिनकर का मिर्च का मजा ललिता गोस्वामी का पापा जी दिल्ली आए सोहनलाल द्विवेदी का हसो हँसाओ बौडम लखनवी का बौडम बसन्त आदि अच्छी हास्य कृतियाँ है। हरिकृष्ण देवसरे की कविता कविवर तोदूराम बुदक्कड बालको को अतिरिक्त मनोरजन प्रदान करती हैं।

शिशु गीत लिखने की जो परम्परा सोहनलाल द्विवेदी ने डाली थी वह निर्बाध गति से चली आ रही है। पूर्व स्वातन्त्र्य काल में इसमे अल्प व्यवधान आ गया था और अधिकाश जो शिशु गीत अग्रजी के नसरी गीतो की छाया मात्र होते थे वे अब मौलिक रूप से लिखे जाने लगे। फिर भी इन्हे जैसा प्रचार प्रसार मिलना चाहिए था वसा नही मिल सका। शुद्ध शिशु गीत लिखना उतना आसान नही है जितना समझा जाता है। ये गीत ऐसे होने चाहिए कि इन्हें चार से छ साल तक के बच्चे आसानी से जबानी याद कर ल और हर भाषा भाषी बडे बच्चे भी इनका आनन्द ले सकें। इनसे मुहावरेदार हिन्दी सरलता से उनकी जबान पर चढती है। शिशु गीतो मे नाटकीयता एव गेयता अनिवार्य रूप से होती हैं। माता द्वारा सुने गीतो से बच्चो का आरभिक विकास मे सहायता तो मिलती ही है साथ ही साथ उसके पोषण का भी काय यह करता है। सरल गीतो को सुनकर बच्चों का आह्लादित होना उनका स्वाभाविक गुण है। फिर भी गिने चुने कवि ही इस ओर ध्यान दे पाए जिनमे हरिऔध रामनरेश त्रिपाठी सुभद्राकुमारी चौहान सोहनलाल द्विवेदी श्रीनाथ सिंह श्रीप्रसाद[4] स्वर्ण सहोदर आदि कवियों के नाम उल्लेखनीय हैं। स्वर्ण सहोदर ने इस क्षेत्र मे कुछ सुन्दर प्रयोग किए हैं। उनके चगन मगन के सारे बाल गीत मात्रारहित शब्दो में लिखे गए हैं। विद्या भूषण विभु ने छोटे बच्चों के लिए विशेष रूप से सरल तुकबदियाँ लिखी।

हिन्दी मे शिशु गीतो का व्यवस्थित विकास सन् 1960 के बाद ही आरंभ होता है जब शिशु गीतो के लिए पराग ने एक विशेष स्तंभ ही आरंभ किया था। पराग की प्ररणा से अन्य अनेक पत्र पत्रिकाए शिशु गीत प्रकाशित करने लगी। कालान्तर मे हिन्दी के शिशु गीतो के सकलन भी प्रकाशित हुए। दगी तुझ बताशा (स मनोहर वर्मा) शिशु गीत (सोहन लाल द्विवेदी) शिशु गीत स योगेन्द्र कुमार लला) फलो के गीत (श्रीप्रसाद) गीत तुम्हारे (सूय कुमार पाडेय) सारे गीत तुम्हारे गीत (विष्णुकात पाडेय) अच्छ सकलन है। इन गीतो मे मनोरजकता कल्पना का अतिरेक सुन्दर भाषा आदि गुण तो हैं ही क्योकि बालक सरल भाषा मे कल्पना प्रधान हास्यपूर्ण मनोरजक काव्य से परितृप्त होता है।

आठवें दशक मे शिशु गीतो का विकास तीव्रता से हुआ और शिशु गीत प्रचुर मात्रा मे रचे जा चुके है। कवियो ने इस बात को समझा कि इन गीतो के माध्यम से उनमे साहित्यिक सस्कार जन्म लेते है का यरुचि का विकास होता है वे गीत और सगीत से परिचित होते है तथा भाषा का रचनागत सौन्दर्य ग्रहण करते। शिशु गीतो की सगीतात्मकता से शिशुओ का उच्चस्तरीय मनोरजन होता है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए श्रीप्रसाद हरीश निगम सूय भानु गुप्त गगा सहाय प्रमी चन्द्रपाल सिंह यादव मयक राष्ट्र बधु बालकृष्ण गर्ग सूय कुमार पाडेय विष्णुकात पाडेय आदि शिशु गीतकार अपनी रचना से इस सपदा को अधिकाधिक सम्पन्न करने मे कटिबद्ध हो गये। आज हिंदी मे शिशु गीतो को जितना प्रचार प्रसार मिला उतना किसी अन्य समय मे नही मिला था। अग्रजी टाइम्स का ऋणी हिंदी शिशु गीत ने अब उससे भी आगे बढने मे सफलता प्राप्त कर ली है।

छोटे बच्चो को रगो का ज्ञान कविता के माध्यम से कराने का सफल प्रयास किया है—प्रभाकर माचवे ने। लाल नीला पीला हरा आदि रगो का ज्ञान बालको के आस पास की बिखरी वस्तुओ से तुलना करके गीतो के माध्यम से प्रस्तुत किया गया।

कविता के माध्यम से महापुरुषो का जीवन चरित्र प्रकाशित करने का श्रेय निरकारदेव सेवक को है। गीतो के माध्यम से बालक किसी बात को शीघ्र याद कर लेते हैं अत महापुरुषो के आदश चरित्र को बालको के समक्ष कविता के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया। इस विषय को अधिक आकर्षक बनाने के लिए चित्रो की भी सहायता ली गई। निरकार

देव ॐ क का महा मा गाधी शकर सु तानपुरी का लोकमा य तिलक मुक् देव शर्मा का नन्हो के नेता आदि जीवनी गीत बड सु दर बन पड हैं।

विज्ञान के बढत चरण के साथ साथ विज्ञान सब धी गीतो का भी प्रचलन पर्याप्त मात्रा मे होने लगा। आज के वज्ञानिक वातावरण अनुसधानो औ प्रमुख घटनाओ को भी ब चो की कविता मे स्थान मिला। इसके अति क्त विभिन्न वज्ञानिक उपकरणो और उनके आवि कारकर्त्ता का सम्ब ध दर्शा गया है। शिवप्रसाद कोष्टा ने अत क्ष उपकरणो राकेट राडार चा उपग्रह आदि की गूढ वज्ञानिक बातो को सरल रूप मे ब चो के लि प्र तुत करने का प्रयास किया है जा स्तु य है। इसके अतिरिक्त घरेल वज्ञानि उपकरणो को विषय बनाकर समय समय पर गीत तथा कविताए f भिन्न पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित होते रहे।

खलकूद के गीत पहाड तथा गिनती के गीत मनोवज्ञानिक भावभूमि पर आधारित होते । इसके माध्यम से खलो के पीछ छिपे हुए बाल अ तमन की अनुभूतियो को समझने का प्रयास किया जाता है और उसके अनुकूल कवित एँ लिखी जाती है। ब चे खल खेल मे अनेक कविताओ (जो अलिखित भी ह ती है) को स्मरण कर लेते है। हाथी घोडा पालकी बरसो राम धडाके से अक्कड बक्कड बम्बे भो चल कबडडी आल ताल जैसे गीतो का ब चो के मुख से उस समय सुना जा सकता है जब वे खेल मे मगन रहते है। अ य अनेक अलिखित बालगीत ब चे सदा दोहराते रहते ह। आवश्य कता ह है कि हम उस अतिरिक्त बाल गीत साहि्य का उसी प्रकार से सकलन अ ययन कर जसे हमने लोक गीत साहि्य का किया है। बिना इसके हमारा बाल गीत साहि्य अधरा हेगा। इस क्षेत्र मे कुछ कवियो ने सहयोग अवश्य दिया है। रमाशकर मिश्र का खेल नाच और गाने सरस्वती कुमार दीपक का गुडियो का देश आदि।

पहाडे के गीतो के मा यम से सरलता से पहाडा याद करने की नई नी त अपनायी गई। बा कवि बरागी ने इस दिशा मे एक नया प्रयोग किया और नेहरूजी शास्त्रीजी तथा इ दिरा गाधी का परिचय पहाड के माध्यम से दिया। गिनती के गीतो की रचना का उद्देश्य भी यही रहा कि बालको को गिनती का ज्ञान इस प्रकार कराया जाय कि उसे याद करने में उ हे प्रयास नही करना पडे और न नीरस हो जाय। गीतो के माध्यम से खेल-खेल में कठस्थ कराना सबसे सरल तरीका है।

बाल गीतो की रचना मे आठव दशक के उत्तरार्द्ध मे बहुत विकास हुआ। बच्च सीधे स्पष्ट श‍ब्दो मे लिखे गीतो के प्रति उदासीन हो गए थ। उनकी उदासीनता को दूर करने के लिए इस दशक मे नि‍त्य नये प्रयोग होने लगे। इन नये बाल गीतो की रचना के पीछ कवि एक निश्चित चिन्तन और विचारधारा को लेकर चल रहे है। इनमे श दो की आवृत्ति ध्व‍न्या ‍त्मकता और बाल सुलभ क‍ल्पना के छोटे छोटे चित्रो को जोडने का प्रयास होता है। इनमे नये समाज की सरचना और समस्याओ को भी बडी कुशलता से अभि यक्त किया जाता है। ब‍च्चो के नये बाल गी‍त उनकी जिज्ञासाओ के समाधान प्रस्तुत करने म सफल है। इसके अतिरिक्त आधुनिक परि वेश पर अनेकानेक नये गीत लिख गए और विभिन्न पात्र पत्रिकाए इनके प्रचार प्रसार मे सक्रिय रहती हैं। हा सग्रह रूप मे अभी अभाव ही है फिर भी इस अभाव को दूर करने के प्रयास हो रहे हैं। इस प्रकार के गीत नेखन मे इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता हे कि ब‍च्चो के अपने गीत तो वही कहे जा सकत है जो उनकी मनोभावो व क पनाओ का साकार करने वाले हो और जो ब‍च्चो के परिचित विषया पर लिखे गये हो। ऐसे बाल गीतो का हि दी मे अपार भडार अब है। उनमे कछ तो ऐस हैं जि हे हम विश्व के श्र ठ बाल गीतो के समकक्ष रख सकते है। बाल मन के अनुरूप लिखा च द्र पाल सिह यादव मयक का का‍य सग्रह सैर सपाटा मह‍त्वपूण कृति है। शीला गुजराल का मेरा परिवार देवी दयाल चतुवदी मस्त कृत मीठ गीत नि कारदेव सेवक कृत दूध जलेबी रा ट्र बधु कृत राजू के गीत हरिकृष्ण देवसरे कृत पानी के गीत मोहन प्रभाकर कृत एक था बालक च‍द्रपाल सिह मयक कृत जगल का राजा हरिकृ ण देवसरे कृत नकलची ब‍न्दर वीरे द्र मिश्र कृत काले मेघा पानी दे आदि अ‍च्छी कविताएँ है। इनके अ तरिक्त सूयभानु गुप्त दामोदर अग्रवाल क हैयालाल मस्त श्री प्रसा बालस्वरूप राही शेरजग गर्ग राष्ट्रब‍न्धु निरकार देव सेवक ने अनेकानेक प्रयोग किए। इनकी रचनाओ मे ब‍च्चो की प्रिय वस्तुओ जीव ज तुओ पारिवारिक एव सामाजिक स ब धो और खेलकूद की बाता को नये सदर्भ तथा नई परिभाषा देकर प्रस्तुत किया। गिनती तथा पहाड के गीत भी नये स दर्भ मे लिखे गए। छठे दशक मे प्राचीन परिपाटी मे लिखे गए गीतो के प्रति जो उदासीनता आ गई थी वह सातवें दशक के अ त से तथा आठवें दशक से दूर हो गई। सन् 60 के बाद ब‍च्चे कविताओ से दूर हुए हैं या यो कहे कि कविताओ के प्रति बच्चो की रुचि कम हुई है। पुरानी कविताओ और विशेषकर नीति और सीख वाली कवि

-ताओ तथा सामा-य विचार वाली कविताओ को बच्चो ने अस्वीकार किया है। इसका स्पष्ट कारण यही था कि वे वास्तव मे उन कविताओ मे जिस वास्तविक अभि-यक्ति की तलाश मे थ वह उ-हे नही मिली। अब ब-चो की कविताओ मे भी सपाट बयानी न होकर बौद्धिक चम-कार दिखाई देता है जिससे बच्चे फिर से उनसे जुडने लगे। आज की कविताएँ ब-चो के अधिक निकट हो गई।

विभिन्न प्रकाशन सस्थाओ ने पिछले दो दशको मे कविता सग्र प्रकाशित करने का साहस दिखाया है। यावसायिक दृष्टि से कहानी तथा उप-यास की पुस्तको से प्रकाशको को जितना अथ लाभ होता है उतना कविता सग्रह प्रकाशित करने मे नही। फलस्वरूप प्रकाशकगण इस कार्य को हाथ मे लेने मे कतरात हैं। फिर भी कछ मह-वपूण पुस्तक कबिता का उपहार लेकर प्रकाश मे आयी है। ब चन की ज-म दिन की भट नीरव की आजू राजू देवे-द्र दत्त तिवारी की फनझडी सवश्वर दयाल सक्सेना की महगू की टाई बालस्वरूप राही की हम जब बड होगे दादी अम्मा मुझ बताओ आदि कुछ पुस्तक बालगीत साहि-य की विशेष उपल-धिया है।

विष्णुकात पाडेय की अर्थहीन तुकब-दियो की चार छोटी छोटी पुस्तक सारे गीत तुम्हारे गीत गाओ प्यारे यारे गीत वीणा गाए हसे विनोद सब गीतो से -यारे गीत सदर और सचित्र होने के कारण बा- पाठको के लिए आकर्षण के के-द्र है।

ब चों मे समूह भावना जागत करने और प्रगति के पथ पर आगे बढने की प्ररणा देने वाले बाल गीतो का एक सग्रह प्रतिनिधि बाल सामूहिक गान योगे-द्रकुमार ल-ला ने स पादित किया जो बाल कविता के क्षत्र मे इस प्रकार का प्रथम सग्रह है। इन कविताओ मे देशभक्ति उमडती है। आशा विश्वास साहस और स्वाभिमान का ये कविताएँ सदेश देती हैं। अनेक प्रसिद्ध गीतकारो ने सु-दर सु-दर फलो से यह गुलदस्ता सजोया है। इस गुल दस्ते मे बसत का कलरव है और जीवन निर्माण की सुगधि भी। यह सुगधि उड उड कर बालको का मन मोह लेने मे सक्षम है।

आ-मकथा के रूप मे फलो का झोला (मोहन लहरी) है जिसमे बालकों को अपना परिचय देने के लिए प्रत्येक फल अपनी विशेषता बतलाता है।

बालको के लिए लिखे आधुनिक गीतो मे ब चो के परिवेश और जीवन से जुडी बातो का प्रस्तुत करने का सफल प्रयास इस युग मे हुआ है। सग्रह रूप मे कविताओ को प्रकाशित करने का काय अधिक सफल नही माना जाता। बाल वर्ष के उपलक्ष्य मे शकुन प्रकाशन ने 100 कविताओ का एक सग्रह ब चो के लिए दिया जिसमे आधुनिक सामयिक जीवन तथा घटनाओ से स बधित रचनाए एकत्रित की ग । ब चो के जिन कवियो ने इस विधा को समृद्ध बनाया है उनकी वे रचनाएँ सकलन मे ली गई है जिन्हें ब चो ने सराहा है आर जिनमे उस कवि की रचना धर्मिता और का यगत विशेषताओ का परिचय मिलता है। अपने सपूर्ण रूप मे यह सकलन ब चो की कविताओ के विकासक्रम की कहानी प्रस्तुत करने मे सफल होगा । हि दी मे ब चो के लिए जो श्र ठ का य ससार निर्मित हुआ है उसे भी इस सकलन मे देखा जा सकता है। इन सग्रह गीतो के अतिरिक्त बाल गीतो के प्रचार प्रसार के अधिकाश साधन सामयिक पत्र पत्रिकाए हैं जो समय समय पर बालको को उनके परिवेशीय ज्ञान से परिपूरि त करती है और उनका मनोरजन तो करती ही हे।

(4) **बाल जीवनी**--हि दी मे बालको के लिए जीवन चरित लिखने की परपरा द्विवेदी युग मे आरभ हुई जिसकी विस्तृत चर्चा पिछले अ याय मे हो चुकी है। स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् इस दिशा मे पर्याप्त प्रगति हुई। आरभ मे ऐतिहासिक पौराणिक चरित्रो को लेकर जो जीवनी कथा लिखी गई उनमे उप देशा मकता का पुट अधिक होने के कारण शु कता आ गयी थी। पर तु अब इस दिशा में विशेष यान दिया जाने लगा कि बालको को जो जीवनी साहि य दिया जाय वह एक ऐसी स य कथा हो जिसे पढने और आ म सात करने के लिए बच्चे सहज ही विवश हो जायँ। इसके लिए उप देशा मकता का पुट छोड कर कहानी के द्वारा सरल ढग से जीवनी कथा प्रस्तुत करना एक मात्र उद्देश्य माना गया।

किसी यक्ति के सम्पूर्ण जीवन मे किए गए कार्यों का वणन ही जीवन चरित्र होता है। मृ युपय त लिखे गए किसी यक्ति के जीवन की सम्पूर्ण घटनाए जीवनी मे आ जाती हैं पर तु जब किसी के जीवन-काल मे ही जीवनी कथा लिखी जाती है तब यह स भव नही होता कि उनके सम्पूर्ण कार्यों का वर्णन किया जाय। वस्तुत जीवन चरित्र मे निहित दोनो शब्दो को अलग करे तो जीवन के अ तर्गत स्थूल बाह्य घटनाओ को और

चरित्र के अन्तर्गत चरितनायक की आन्तरिक विशेषताओ को ले सकते है। इस प्रकार जीवन चरित्र अथवा जीवनी मे किसी मनुष्य के अन्तर्बाह्य दोनो ही जीवनो का लेखा होता है।

इस बात को ध्यान मे रखकर जीवनी लेखक कुछ विशेष बातो की ओर दृष्टिपात करता है। वास्तविक जीवन वही है जिसमे तथ्यो के अन्वेषण मे और उन्हे प्रस्तुत करने मे विशेष ध्यान रखा जाय और जीवनी प्रामाणिक तथा सम्यक जानकारी पर आधारित रहे। साथ ही जीवनी लेखक को चरित्र नायक के जीवन की घटनाओ को उसी क्रम मे प्रस्तुत करना चाहिए जिसमे वे घटित हुई थी। तभी बालक आसानी से उसे अपने चरित्र मे उतार सकगे।

बच्चो मे अनुकरण की प्रवृत्ति सहज होती है अत वे किसी बात का प्रभाव तुरन्त ग्रहण कर लेते है। वे जसा देखते हैं वसा ही बनने की कल्पना करते है। डाक्टर इन्जीनियर वज्ञानिक पायलट साहित्यिक कुछ भा बनने को वे तैयार रहते हैं। समय समय पर उनकी रुचि मे परिवर्तन भी होता है अवस्था के अनुकूल मानसिकता भी बदलती जाती है। देश की सामयिक परिस्थितियो का प्रभाव उन पर अधिक पडता है। अत बच्चो के लिए लिखी गई जीवनियाँ उन्हे हाथ मे देते समय इस बात पर पूरा विचार कर लेना होंता है कि वे बाल मन पर जो प्रभाव डालगी उसका दूरगामी परिणाम क्या होगा। बच्चे जब कोई जीवन कथा पढत है तब उससे तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं। उसे अपने परिवेश से मिलाकर देत हैं और कई बार उस पात्र के स्थान पर अपने को खडा पाते हैं। ऐसे पात्रो के प्रति बच्चो के मन मे सहज सम्मान आकर्षण और सवेदनशीलता रहती है। इसलिए बच्चो को जीवन चरित्रो के बारे मे बतात समय जहाँ उससे पडने वाले प्रभावो के प्रति सजग रहना अनिवार्य होता है वही इस बात की पूरी छानबीन कर लेनी चाहिए कि उस कथा के किन अशो के प्रति बालक के कोमल मन पर कैसी प्रतिक्रिया होगी। अन्यथा विपरीत प्रभाव पडने की पूरी सभावना रहती है।

प्रत्येक देश की सामाजिक राजनीतिक आर्थिक परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं वातावरण परिवर्तित होता रहता है। इस आधार पर जीवन चरित्र के अनेक पहलू समय-समय पर या तो महत्वपूर्ण हो जाते हैं या महत्वहीन। जीवनी लेखक को इस बात का निर्णय लेना पडता है कि बालको की रुचि के

अनुकूल जीवन निर्माण के लिए किस प्रकार की जीवनी दी जाय और भवि य मे उसके क्या परिणाम होगे ।

परिणाम की दृष्टि से देखा जाय तो बाल कथा साहि य के वाद बाल जीवनी साहि य का स्थान आता है । जीवनी लिखना लेखको के लिए आसान था तथा प्रकाशको को भी आर्थिक लाभ होता था क्योकि कम मू य होने के कारण इसकी बिक्री भी अधिक होती थी ।

राजकमल प्रकाशन राजपाल ए ड स स सर्वोदय प्रकाशन मदिर हि दी प्रकाशन मदिर पुस्तक भडार अज ता प्रस जैसी सस्थाओ ने बाल जीवनी प्रचुर मात्रा मे प्रकाशित की । इसका कारण मुख्य रूप से यह था कि स्वतन्त्रता सग्राम म अभूतपूव सफलता मिलने के पश्चात् देशवासियो का हृदय उन नेताओ के प्रति श्रद्धा से भर उठा था जि होने स्वतन्त्रता के लिए अनेक वलिदान किये थे । परिणामस्वरूप रा ट्रीय नेताओ की जीवनियो की बहुत माँग हुई ।

जीवनी कथा दो प्रकार से लिखी जाती है—आ मकथा के रूप मे लिखी जीवनी तथा दूसरो के द्वारा लिखी जीवनी । आ मकथा के रूप मे जीवनी का लेखन अ पसख्या में हुआ । इसको लिखते समय लेखक को अपनी बात ईमानदारी से कहने की क्षमता होनी चाहिए । डा राजे द्र प्रसाद महा मा गाधी प जवाहरलाल नेहरू जसे महापुरुषो ने आ मकथा लिखी है । इन पुस्तको से बालको की रुचि तथा योग्यता के अनुकूल प्रसगो और घटनाओ को लेकर पुस्तक रूप मे प्रकाशित किया गया । दिवाकर का बापू की कहानी उ ही की जबानी पद्या मक शैली मे बापू की जीवनी वर्णित है । सतीश का प थर बोलते हैं मे आ मकथा की शैली मे विभिन्न धार्मिक व ऐतिहासिक स्थानो की बनावट निर्माण का कारण तथा कला का वर्णन है । राजे द्र बाबू का बचपन (डा राजे द्र प्रसाद) मे लेखक की आ मकथा से बचपन की घटनाए उ लिखित की गई है ।

अ य यक्तियो द्वारा लिखे जीवनी साहि य मे यक्ति की चारित्रिक विशेषताओ को उभारने के साथ साथ रोचक सस्मरणो का भी समावेश किया जाता है । इस प्रकार के जीवन चरित्र ऐतिहासिक धार्मिक पौराणिक राष्टीय साहि यिक वज्ञानिक एव सामाजिक यक्तियों के होते हैं ।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद छठ दशक मे बालको के लिए जो जीवनी साहि य प्रकाश में आई वे इससे पूर्व के साहित्य की पुनरावृत्ति ही थी ।

पौराणिक तथा ऐतिहासिक चरित्रों को सीधे सपाट शब्दों में वर्णन कर दिया जाता था। राजेन्द्र सिंह कृत संत कबीर दर्शन (1955) जयचन्द विद्यालंकार कृत पुरखों का चरित (1955) मुकुन्ददेव शर्मा कृत कृष्ण द्वैपायन व्यास (1955) बलदेव प्रसाद शुक्ल कृत देश दीपक (1956) आदि ऐसी ही कृतियाँ हैं। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि इन पौराणिक चरित्रों के बारे में भी बच्चों को जानना चाहिए किंतु आधुनिक युग में बदलते हुए समाज और जीवन मूल्यों के अनुरूप इस महान् विभूतियों का जीवन प्रस्तुत करना अधिक अपेक्षित है न कि उनका पिष्ट पेषण। इसलिए ऐसी जीवनियाँ बड़ी संख्या में प्रकाशित होने के बावजूद भी बच्चों की उस बुनियादी आवश्यकता को पूरा करने में समर्थ नहीं हुई जो उनसे अपेक्षित था।

सातवें दशक के आरंभ में इस दिशा में मूलभूत परिवर्तन हुआ। अब जीवन चरित्र में महापुरुषों के संस्मरणों रोचक प्रसंगों तथा बचपन की घटनाओं का वर्णन होने लगा जिनसे बालक स्वयं प्रेरणा ग्रहण करने लगे। वस्तुतः जीवन चरित्रों का प्रभाव बाल मन पर इतनी गहराई तक पड़ता है कि उसे बाद में मिटाना सरल नहीं होता। इसलिए कई बार यह पहले ही निर्णय कर लिया जाता है कि बच्चों को किस विचारधारा के अनुरूप तैयार करना है। उन्हें कैसा नागरिक बनाना है और उन्हें किन प्रभावों से वंचित रखना है।

सातवें दशक में जीवनी के सभी प्रकारों पर जीवनीकारों ने कलम चलायी है। बालकृष्ण ने जब ये बच्चे थे (1959) में महापुरुषों के बचपन की उन घटनाओं का वर्णन किया है जिनमें उनके महापुरुष बनने की झलक मिलती है। जगदेव पांडेय कृत महापुरुषों के बीच (1963) में बत्तीस भारतीय नेताओं का परिचय प्रति पृष्ठ आठ पंक्तियों के माध्यम से दिया गया है साथ ही उन सभी नामों के छः चक्र बनाकर एक शैक्षिक खेल भी दिया गया है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पर अनेक लेखकों ने लिखा है। विष्णु प्रभाकर कृत बापू की बातें (1960) गांधीजी के जीवन की वे घटनाएं बताती हैं जो मितव्ययिता साहस निर्भयता आदि गुणों का परिचय देती हैं। जय प्रकाश भारती कृत ऐसे थे हमारे बापू रामप्रकाश कपूर कृत बच्चों के प्यारे बापू (1960) सुदर्शन सिंह कृत गांधी दर्शन बापू के जीवन की प्रमुख घटनाओं का चित्रण करती है और सत्य त्याग ईमानदारी अहिंसा आदि गुणों का प्रस्फुटन करती है।

नेशनल बुकट्रस्ट से प्रकाशित बापू (दो भागो) मे फ्रीटस ने बापू का परिचय प्ररणादायक सस्मरणो द्वारा दिया है तथा नमक सत्याग्रह से मृत्युपर्यन्त बाप की जीवनी प्रस्तुत की है। सूचना एव प्रसारण मन्त्रालय न भी बाप पर सन् 1970 मे जीवनी कथा प्रस्तुत की है। इसी प्रकाशन सस्था ने गुरु नानक (महीपसिंह 1969) नेता जी सुभाषचन्द्र (मन्मथनाथ गुप्त 1968) झासी की रानी लक्ष्मीबाई (1970) के जीवन पर भी प्रकाश डाला है।

भारत की स्वतन्त्रता के लिए मर मिटने वाले महापुरुषो क्राति कारियो का जीवन चरित्र बालको मे त्याग साहस तथा बलिदान की भावना भरने के लिए लिखा गया। शकुन्तला अग्रवाल का डा राजेन्द्र प्रस (1961) वीरेन्द्र मोहन रतूडी का हमारे प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री (1967) जयप्रकाश भारती का सरदार भगत सिंह (1973) उनका बचपन यँ बीता (1973) (मे गाधी नेहरू सुभाष तिलक रवीन्द्रनाथ सरदार पटेल मदनमोहन मालवीय विनोबा और सावरकर के बचपन की घटनाए दी गई है जिनमे विवरणात्मकता से भी बचने का प्रयास किया गया है) अशोक कुमार सहगल का पूज्य चाचा नेहरू ईश्वर प्रसाद शर्मा का अमर शहीद गणश शकर विद्यार्थी (1972) देवराज दिनेश का लाला लाजपत राय (1961) मनहर चौहान का एक थे नाना (1971) यथित हृदय का शहीद जो देवता बन गए (1966) आदि कछ अच्छी कृतियाँ हैं।

स्नेह अग्रवाल के ऐसे थे चाचा नेहरू मे नेहरूजी के जीवन की वे घटनाएँ दी गई हैं जो उनके यक्तित्व को उद्घाटित करती है। ये स न भाषा तथा रोचक शली के कारण बाल पाठको की रुचि के अनुकूल सिद्ध हुई है।

बाल साहित्य के लिए समर्पित शकुन प्रकाशन ने सवप्रथम कस्तूर बा (राधेश्याम प्रग भ) प्रकाशित की जो बाल पाठको मे लोकप्रिय तो हुई ही भारत सरकार द्वारा परस्कृत भी हुई। अन्य पस्तक हिन्दी साहित्य के सितारे (अनन्त) मे कबीर मीरा सूर तुलसी भूषण भारतेन्दु द्विवेदी प्रेमचन्द निराला रहीम रसखान सुभद्रा कमारी चौहान मैथिलीशरण गुप्त का जीवन परिचय और उनका साहित्यिक मूल्याकन प्रस्तुत किया है। इन कवियो की रचनाएँ और जीवनी बालक पाठय पुस्तको मे भी पढते हैं। इन पुस्तको से प्राप्त जानकारी से उनका ज्ञानवर्धन तो होता ही है साथ ही

यह कवियो साहित्यकारो के विषय मे जानने का अवसर देता है। ये कहानी वाले (हरिकृष्ण दवसरे) महान् लेखको तथा बच्चो के लेखको से बालको को परिचित कराने के उद्देश्य से लिखी गई। इसके द्वारा बालको को सभी विश्व प्रसिद्ध कथाकारो की जीवनी से परिचय प्राप्त होता है। प्रतिभा के पत्र में वेदमित्र ने विभिन्न क्षेत्रो मे उल्लेखनीय काय करने वाली विभूतियो का जीवन परिचय कहानी शली म प्रस्तुत किया है जो रोचक और बोधगम्य है। ये विभूतियाँ है—आइजक न्यूटन एडिसन फराड जाज बर्नार्ड शा अब्राहम लिंकन हेनरी फोड आदि। इन सभी कहानियो के आरभ मे चरितनायक के बारे म सक्षिप्त टिप्पणी देकर उनकी महानता का परिचय दिया गया है। इस शली मे लिखित चरित्र निर्माण की कहानियाँ (ल लन प्रसाद व्यास) अनेक महापुरुषो के प्ररक जीवन प्रसगो पर आधारित कथा है जिसके प्रस्तुतीकरण मे बाल रुचि और मनोविज्ञान का ध्यान विशेष रूप स रखा गया है। इसके अतिरिक्त जयप्रकाश भारती की विज्ञान की विभूतिया मे विश्व के दस वज्ञानिको के प्ररक जीवन प्रसगो की चर्चा है। वार्त्तालाप शली मे नेहरूजी की जीवनपय त कथा जय जवाहर (वीरेन्द्र मिश्र) म है। हिमालय के प्रहरी (शिवकमार गोयल) चीनी आक्रमण के समय देश की रक्षा करने वाले सनिको की साहस भरी कथा है।

औपन्यासिक शली मे महापुरुषो के जीवन चरित्र को प्रस्तुत करने का शुभारभ सन् 1963 मे उमेश प्रकाशन दिल्ली ने किया। इस माला मे जो पुस्तक प्रकाशित हुइ उनमे कथावस्तु को विवरणात्मकता और तथ्य विवेचन से बचाया गया। हालाँकि घटनाओ के क्रम मे और तथ्यो पर आधारित बातो की प्रस्तुति मे कोई परिवर्तन नही किया गया। इससे प्रत्येक पुस्तक प्रामाणिकता के साथ एक रोचक उपन्यास सिद्ध हो सकी।

जय भवानी खब लडी मर्दानी (मनहर चौहान) कर्ण अजुन (सुदशन चोपडा) परशुराम (कुणाल श्रीवास्तव) राम का अश्वमेध (शत्रुघ्नलाल शुक्ल) गुरु नानक देव (राजेश शर्मा) अजातशत्रु (जीतेन्द्र ठाकुर) रवि बाबू (लोकेन्द्र शर्मा) बीरबल (ललित सहगल) आदि इसी प्रकार के जीवनी साहित्य है। इसके अतिरिक्त सवप ल्ली डा राधाकृष्णन चक्रवर्ती राजगोपालाचारी (शिवशकर) महाबली छत्रसाल (हरिकृष्ण देवसरे) आदि पुस्तक भी उल्लेखनीय हैं।

छदाबद्ध कविता मे भी जीवन चरित्र लिखने का कार्य हुआ। नन्हो के नेता (1960) मे मुकुन्ददेव शर्मा ने इस शली मे अपने देश के नेताओ

के प्रति छोटे बच्चो की जिज्ञासा उभार कर उनकी जीवनी से परिचित कराया है। बिले भया (1964) मे विद्या गुप्त ने स्वामी विवेकानन्द के जीवन के प्ररक प्रसगो को पद्य कथा के रूप मे वर्णित किया है। माँ यह कौन (1963) मे रामेश्वर दयाल दुबे ने सरल कविताओ मे कबीर सूर तुलसी शिवाजी महाराणा प्रताप गाधीजी आदि भारत के सामाजिक और राजनीतिक यक्तियो की महानता तथा उनकी जीवन झाँकी बेटी की जिज्ञासा और मा के उत्तर के रूप मे प्रस्तुत किया है। बाबू की कहानी उन्ही की जबानी (दिवाकर) मे बाबू की जीवनी पद्या मक शली मे वर्णित है।

बाल जीवनी माला के अ तगत पिपुल्स पब्लिशिंग हाउस दिल्ली द्वारा डारविन एडिसन (शकरलाल) शरत्‌च द्र (वि णु प्रभाकर) मिर्जा गालिब (रजिया सज्जाद जहीर) एलबट आइन्स्टीन (युग जीत नवलपुरी) राहुल साकृत्यायन (भद त आन द कौसल्यायन) आदि साहित्य कार वज्ञानिक गणितज्ञ आदि अनेक विभूतियो पर जीवन कथा स ब धी सचित्र पुस्तक प्रकाशित की। इनमे प्रत्येक चरित्र के जीवन के विविध पहलुओ तथा उसकी उपलब्धियो को उभारा गया।

विश्वप्रसिद्ध लेखको की बालोपयोगी जीवनियाँ उपेन्द्रनाथ अश्क ने नीलाभ प्रकाशन से सन् 1964 में प्रकाशित की। सभी के विषय मे अलग अलग पुस्तकें थीं। हैमिंग्वे ह्विटमैन ओहेनरी मार्कटवेन सिंकलेयर ल्यूइस थोरो आदि विश्वप्रसिद्ध उपन्यासकार विचारक तथा कवि की जीवनगाथा को रोचक प्रसगों के साथ सरल श दो में दिया गया।

स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् वैज्ञानिको की जीवनिया प्रचुर मात्रा मे प्रकाश मे आइ। अपनी धरती अपने लोग विज्ञान की बातें खोज के पथ पर टेलीग्राफ के आवि कार (सभी कालिमोहन) महान् वज्ञानिक बेंजमामिन फ्रकलिन (श्रीकान्त व्यास) च द्रशेखर वकट रमन (शिवशकर) महान् वज्ञानिक (गुणाकर मूले) ससार के प्रसिद्ध वज्ञानिक (हिमाशु श्रीवास्तव) विश्वप्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक (हरिकृष्ण देवसरे) आदि ज्ञान वर्धक रोचक पुस्तक प्रकाश मे आईं।

स्वतत्रता के पूर्व और बाद के कुछ वर्षों मे बालको के लिए जीवनी लेखन का क्षत्र सत महा माओ इतिहास पुरुषो और रा ट्रीय नेताओ तक ही सीमित रहा। किन्तु सातव दशक के आरभ से इस सम्बन्ध मे योजनाबद्ध ढग से काम हुआ और समाज के सभी क्षेत्रो के वर्गों के साहित्यिक समाज

सुधारक वैज्ञानिक कलाकार इतिहासकार आदि व्यक्तियों की जीवनी लेखन पर परा का आरम्भ हुआ । रामविलास शर्मा कृत सूयकान्त त्रिपाठी निराला राजीव सक्सेना कृत प्रफु लच द्र राय तथा यशपाल जैन द्वारा स पादित पाँच विभूतियो मे सगीत नीति समाज-सुधार साहि य ■ मल्न विद्या के सुप्रसिद्ध पाँच यक्तियो के जीवन की सफलता तथा उनके योगदान का परिचय प्रस्तुत किया । तुलसीदास (अमरनाथ शुक्ल) स्वामी विवेका न द (ओम प्रकाश शर्मा) रा ा राममोहन राय (कश्यप उपे द्र) नोबुल पुरस्कार विजेता (कृष्ण जनसेवी) पुरखो का चरित (जयच द्र विद्यालकार) श्री अरवि द (नारायण प्रसाद विभु) ऐसे थे सरदार (वि णु प्रभाकर) आदि उ लेखनीय जीवनी पुस्तक हैं । इन पुस्तको मे वणना मक बोझिलता को दूर किया गया है और पाठको के मन मे साहि यिक राष्ट्रप्रमी इन विभूतियो के प्रति आदर का भाव जगाया गया है ।

चि ड्रेन बुक ट्रस्ट ने भी कथा कहानी प्रकाशित करने की लीक से हटकर जीवनियाँ प्रकाशित की हैं । तेनसिंह नोक (राजे द्र सिंह भडारी) मे भारतीय पर्वतारोही तेनसिंह की सचित्र जीवनी प्रस्तुत हुई है । डॉ जाकिर हुसेन (बी के अहलूवालिया) जवाहरलाल नेहरू (म चेलापति राव) जसे राजनीतिक नेताओ के विषय मे भी जीवनी प्रकाशित की है । लीक से अलग हटकर ननिहाल मे गुजरे दिन (शकर) का प्रकाशन किया जिसमें एक बालक की उसके ननिहाल मे यतीत किये हुए दिनों की भाव भीनी घटनाए चित्रित हैं जो बालको को अपने जीवन की घटनाए लगती हैं ।

सस्ता साहि य मडल नई दि ली तथा स मार्ग प्रकाशन मे जीवनी प्रकाशित करने की होड सी लगी है और इ होने राष्टीय पौराणिक धार्मिक तथा ऐतिहासिक चरित्रो की जीवनी कथा की ढर लगा दी । पौराणिक चरित्र पर जीवनी प्रकाशित करने का श्रेय गीता प्रेस गोरखपुर को है । भगवान कृष्ण आदर्श चरितावली (सुदर्शन सिंह) के अतिरिक्त सच्चे और ईमानदार बालक (सुदर्शन सिंह) भी प्रकाशित किया ।

हि दी प्रकाशन मदिर के नानाभाई भटट ने पौराणिक एव धार्मिक चरित्रो को नई दृष्टिकोण अपनाकर प्रस्तुत किया । पुस्तक भंडार एव अजता प्रेस पटना भी इस दिशा में अपने प्रयास करते रहे ।

बच्चों की आवश्यकता को ध्यान मे रख कर छोटी छोटी जीवनियाँ प्रकाशित करने के क्षेत्र मे रा यपाल एण्ड सन्स दि ली नें बहुत काम किया ।

के प्रति छोटे बच्चो की जिज्ञासा उभार कर उनकी जीवनी से परिचित कराया है। बिले भया (1964) मे विद्या गुप्त ने स्वामी विवेकानन्द के जीवन के प्रेरक प्रसगो को पद्य कथा के रूप मे वर्णित किया है। माँ यह कौन (1963) मे रामेश्वर दयाल दुबे ने सरल कविताओ मे कबीर सूर तुलसी शिवाजी महाराणा प्रताप गाधीजी आदि भारत के सामाजिक और राजनीतिक यक्तियो की महानता तथा उनकी जीवन झाँकी बेटी की जिज्ञासा और माँ के उत्तर के रूप मे प्रस्तुत किया है। बाबू की कहानी उन्ही की जबानी (दिवाकर) मे बाबू की जीवनी पद्या मक शली मे वर्णित है।

बाल जीवनी माला के अन्तगत पिपुल्स पब्लिशिग हाउस दिल्ली द्वारा डारविन एडिसन (शकरलाल) शरत्चन्द्र (विष्णु प्रभाकर) मिर्जा गालिब (रजिया सज्जाद जहीर) एलबट आइन्स्टीन (युग जीत नवलपुरी) राहुल साकृत्यायन (भदन्त आनन्द कौसल्यायन) आदि साहित्य कार वज्ञानिक गणितज्ञ आदि अनेक विभूतियो पर जीवन कथा सम्बधी सजिल्द पुस्तक प्रकाशित की। इनमे प्रत्येक चरित्र के जीवन के विविध पहलुओ तथा उसकी उपलब्धियो को उभारा गया।

विश्वप्रसिद्ध लेखको की बालोपयोगी जीवनियाँ उपेन्द्रनाथ अश्क ने नीलाभ प्रकाशन से सन् 1964 में प्रकाशित की। सभी के विषय मे अलग अलग पुस्तकें थी। हैमिंग्वे ह्विटमैन ओहेनरी मार्कटवेन सिंकलेयर ल्यूइस थोरो आदि विश्वप्रसिद्ध उपन्यासकार विचारक तथा कवि की जीवनगाथा को रोचक प्रसगों के साथ सरल शब्दो मे दिया गया।

स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् वैज्ञानिको की जीवनिया प्रचुर मात्रा में प्रकाश मे आइ। अपनी धरती अपने लोग विज्ञान की बात खोज के पथ पर टेलीग्राफ के आविष्कार (सभी कातिमोहन) महान् वज्ञानिक बेंजमामिन फ्रकलिन (श्रीकान्त यास) चन्द्रशेखर वकट रमन (शिवशकर) महान् वज्ञानिक (गुणाकर मूले) ससार के प्रसिद्ध वैज्ञानिक (हिमाशु श्रीवास्तव) विश्वप्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक (हरिकृष्ण देवसरे) आदि ज्ञान वर्धक राचक पुस्तकें प्रकाश में आईं।

स्वतत्रता के पूर्व और बाद के कुछ वर्षों में बालको के लिए जीवनी लेखन का क्षेत्र सत महात्माओ इतिहास पुरुषो और राष्ट्रीय नेताओ तक ही सीमित रहा। किन्तु सातव दशक के आरभ से इस सम्बन्ध मे योजनाबद्ध ढग से काम हुआ और समाज के सभी क्षेत्रो के वर्गों के साहित्यिक समाज

सुधारक वज्ञानिक कलाकार इतिहासकार आदि व्यक्तियों की जीवनी लेखन परम्परा का आरम्भ हुआ। रामविलास शर्मा कृत सूयकान्त त्रिपाठी निराला राजीव सक्सेना कृत प्रफुल्लचन्द्र राय तथा यशपाल जैन द्वारा सम्पादित पाँच विभूतियो मे सगीत नीति समाज सुधार साहित्य म न विद्या के सुप्रसिद्ध पाँच व्यक्तियो के जीवन की सफलता तथा उनके योगदान का परिचय प्रस्तुत किया। तुलसीदास (अमरनाथ शुक्ल) स्वामी विवेकानन्द (ओम प्रकाश शर्मा) राजा राममोहन राय (कश्यप उपेन्द्र) नोबुल पुरस्कार विजेता (कृष्ण जनसेवी) पुरखो का चरित्र (जयचन्द्र विद्यालकार) श्री अरविन्द (नारायण प्रसाद विभु) ऐसे थे सरदार (वि णु प्रभाकर) आदि उ लेखनीय जीवनी पुस्तक हैं। इन पुस्तको मे वणनात्मक बोझिलता को दूर किया गया है और पाठको के मन में साहित्यिक राष्ट्रप्रमी इन विभूतियों के प्रति आदर का भाव जगाया गया है।

चिल्ड्रेन बुक ट्रस्ट ने भी कथा कहानी प्रकाशित करने की लीक से हटकर जीवनियाँ प्रकाशित की है। तेनसिंह नोक (राजेन्द्र सिंह भडारी) में भारतीय पर्वतारोही तेनसिंह की सचित्र जीवनी प्रस्तुत हुई है। डा जाकिर हुसेन (बी के अहलवालिया) जवाहरलाल नेहरू (म चेलापति राव) जसे राजनीतिक नेताओ के विषय मे भी जीवनी प्रकाशित की है। लीक से अलग हटकर ननिहाल मे गुजरे दिन (शकर) का प्रकाशन किया जिसमें एक बालक की उसके ननिहाल मे व्यतीत किये हुए दिनों की भाव भीनी घटनाए चित्रित हैं जो बालको को अपने जीवन की घटनाए लगती हैं।

सस्ता साहित्य मडल नई दिल्ली तथा सन्मार्ग प्रकाशन मे जीवनी प्रकाशित करने की होड-सी लगी है और इन्होंने राष्ट्रीय पौराणिक धार्मिक तथा ऐतिहासिक चरित्रो की जीवनी कथा की ढेर लगा दी। पौराणिक चरित्र पर जीवनी प्रकाशित करने का श्रेय गीता प्रेस गोरखपुर को है। भगवान कृष्ण आदर्श चरितावली (सुदर्शन सिंह) के अतिरिक्त सच्चे और ईमानदार बालक (सुदर्शन सिंह) भी प्रकाशित किया।

हिन्दी प्रकाशन मदिर के नानाभाई भट्ट ने पौराणिक एव धार्मिक चरित्रों को नई दृष्टिकोण अपनाकर प्रस्तुत किया। पुस्तक भंडार एवं अजता प्रेस पटना भी इस दिशा में अपने प्रयास करते रहे।

बच्चों की आवश्यकता को ध्यान मे रख कर छोटी छोटी जीवनियाँ प्रकाशित करने के क्षेत्र में राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली ने बहुत काम किया।

झाँसी की रानी रवी द्रनाथ टगोर साहसी बालक गुरु गोवि द सिंह च द्रशेखर आजाद भारत के महान ऋषि (सभी प्राणनाथ वानप्रस्थी) महा मा गाधी सरदार पटेल (स यकाम विद्यालकार) आदि अनेकानेक पुस्तक प्रकाश मे आ । सभी का मू य पचास पसे से नेकर एक रुपये तक है । वि णु प्रभाकर ने भी सस्ता साहि य मडल से अनेक छोटी जीवनियाँ प्रकाशित कराइ । बाल भारती इलाहाबाद से प्रकाशित म मथनाथ गुप्त द्वारा लिखित क्रातिकारियो की छोटी छोटी जीवनियाँ विविधता की दष्टि से उ लेखनीय हैं । हि दी विश्व भारती लखनऊ से प्रकाशित भारत निर्माता माला के अ तर्गत न हे मुन्नो के विवेकान द बालको के विवेकान द आदि पुस्तकें छोटे बालको के यो य है । आचाय चतुरसेन शास्त्री कृत आदर्श बालक तथा बा और बापू मनुबेन गाधीकृत बापू के सस्मरण कृ णा हथी सिंह कृत बापू की कहानी आचाय शिवपूजन सहाय कृत भी म तथा मेरा बचपन सुदशन कृत धमवीर दयान द आदि जीवनियाँ छोटे बालको को अ त प्ररणा देने वाली है ।

महिलाओ की जीवनियो की ओर अभी अधिक यान नही दिया गया है । भारत की महान् नारियो की जीवनियो का अभाव ही है । फिर भी कुछ प्रयास इस दिशा मे हुए हैं । शकु तला वर्मा कृत राजस्थान की वीरागनाए तथा भारत की वीर नारिया प्राणनाथ वानप्रस्थी कृत वीर पुत्रियाँ सावित्री देवी वर्मा कृत भारत की महान् नारियाँ मदनगोपाल सिंह कृत हमारी बालिकाएँ ओकारनाथ श्रीवास्तव कृत झाँसी की रानी नर्मदा प्रसाद खरे तथा जहूर बख्श कृत ध य ये बेटिया बाबूराव जोशी कृत रा ट्र माना कस्तूर बा माया कृत प्रधानमत्री इ दिरा गाधी आदि कुछ गिनी चुनी कृतियाँ ही हैं ।

विपयो की विविधता एव उपेक्षित कि तु मह वपूर्ण यक्तियो के जीवन चरित्र लिखने की दिशा मे भी कुछ मह वपूण उपल धिया हुइ । आजादी की पहरेदारी मे (स यदेव नारायण सि हा) मे स्वत त्रता बाद के जल थल और वायुसेना के भारतीय अध्यक्षो का परिचय दिया गया है । हरिमोहन शर्मा ने भारतीय क्रिकेट के नवर न मे भारतीय क्रिकेट खिलाडियो का जीवन चरित रोचक श दो मे प्रस्तुत किया है तो योगराज थानी ने संसार के प्रसिद्ध खिलाडी मे विश्वप्रसिद्ध खिलाडियो की जीवन कथाएँ उनके रोचक प्रसगो के साथ प्रस्तुत की है । हमारे बहादुर जनरल (सर्वदमन

सन् 1975 के बाद जीवनी कथा लिखने मे नवीन शली अपनाई गई उसे अधिक रोचक बोधग य एव सरल बनाने के लिए। राधश्याम प्रग-भ ने कथा मक शली मे जीवनिया लिखने का प्रयाग किया। अभिम यु और सीता जैसे चरित्रो के बारे मे प्रेरणादायक रचनाएँ दी तो एक कटारा पानी मे इतिहास के चरित्रो को प्रस्तुत किया। जयहि-द मे नेताजी सुभाषच-द्र बोस तथा उप-यास सम्राट प्रमच द मे प्रमच द के जीवन चरित्र को प्रभावशाली भाषा मे रोचक प्रसगो के साथ प्रस्तुत किया। इस पुस्तक मे प्रग-भ जी ने विषय वस्तु को आधुनिक स दभ मे प्रस्तुत किया और उसे आज के बाल पाठको के लिए लिखा है। इससे उनकी रचनाओ मे ताजगी ह।

इस काल की कुछ अन्य मह-वपूर्ण जीवनी पुस्तक है—डा हरिकृ ण देवसरे कृत रहीम अकबर के नवर न और अ ीर खसरो र-नप्रकाश शील कृत तेनाली राम बाँके बिहारी भटनागर कृत महाराणा प्रताप तथा वीरे-द्र गुप्त कृत कूटनीति के पडित–चाणक्य।

ब-चो के लिए अ यधिक मात्रा मे जीवनी साहि य उपल-ध होने के बावजूद अभी भी कुछ क्षत्र अधरे हैं। हमारे देश मे सगीत की शि प की एव चित्रकला की समृद्ध परा परा रही है। इस द टकोण से प्रसिद्ध सगीत कारो श पकारो एव चित्रकारो का जीवनी सा-हि-य अभी अपेक्षित है। आज ब-चो के सामने उनके भवि य के विविध आयाम खले हुए हैं। इनमे से अपने मनपस चरित्र का चुनाव करने तथा जीवन ि-शा निर्धारित करने के लिए प्ररणा ग्रहण करने मे ऐसा जीवनी साहि-य अधिक उपयोगी होगी जिसमे नये चरित्रो और महान् कायकर्त्ताओ की चर्चा हो।

(क) भावपक्ष और स्वात ोत्तर बाल साहि-य–परिस्थितियाँ ब ली। स्वत-त्र वातावरण मे भारतीय जनता सास लेने लगी। सा-ि-य के विविध विधाओ के स्वर बदले। बाल साहि-य भी इसी धाराप्रवाह मे बहने लगा। यद्यपि छठ दशक तक बाल साहि-य मे विशेष परिवर्नन परिलक्षित नही हुआ। अब तक जो भी बालसाहि-य रचा गया उसका मुख्य उद्दश्य था बालको को स्वतत्र भारत के लिए चरित्रवान तथा यो य नागरिक बनाना। फलत गाधी और नेहरू के गुणगान भारतमाता की जयकार बाल साहि-य के मुख्य विषय थे। पर-तु सातव दशक से बाल सा-ि-यकारो ने मनोविज्ञान मम्मत साहि-य की रचना का मह-व समझा और इसके आधार पर जो बाल साहि-य

ज्ञानलर्धियो का जितना मह्व इस युग मे समझा गया उतना इससे पूर्व नही ।

बाल साहि्य की विभिन्न विधाओ का उद्दश्य अब मात्र उपदेश देना नही रह गया वरन् वे बाल अनुभूतियो को अधिक छने लगे । बालको की तार्किक वृत्ति को शा्त करने लगे उनके अधिक निकट आने का प्रयास करने लगे तथा जीवन मू्यो की रक्षा करने लगे । प्राचीन धार्मिक पौराणिक कथाओ को आधुनिक सदभ मे रख कर देखा जाने लगा । कहानी के पात्र बालको के आस पास की वस्तु यक्ति या जीव ज तु होने लगे अत बालक उनके साथ अधिक आ मीय हो उठ ।

बालको मे कुतूहल का भाव जगाने के लिए आधुनिक सामाजिक जीवन की अनेकानेक कठिनाइयो एव विषमताओ से जूझने के लिए उनमे प्र्यु पन्नमति्व का गुण उ पन्न करने के उद्देश्य से जासूसी रोमाचकारी एव साहसिक कारनामो से भरी कहानियाँ तथा उप्यासो की रचना इस युग की एक बडी उपलर्धि है ।

विज्ञान के बढते चरण ने भी बालको मे उ सुकता ग्व आश्चय के भाव भरे । उनको शा्त करने के उद्देश्य से वज्ञानिक उप्यासो कविताओ कहानियो की रचना ने बाल साहि्य के क्षत्र मे एक नया मोड लिया ।

बालको मे अभिनया मक रुचि एव अनुकरण की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए बाल रगमच का विकास और उसी के अनुरूप बा्न नाटको का निर्माण बालको मे मनोरजन के साथ ही किसी न किसी प्रकार की शिक्षा देने तथा उनके यक्ति्व का विकास करने के उद्देश्य से हुआ ।

तत्कालीन समस्यामूलक यथाथ जीवन का चित्रण उप्यास तथा कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया । बालको के लिए हास्यसाहि्य के अभाव की भी पूर्ति इस युग मे हुई ।

(ख) कलापक्ष और स्वात योत्तर बाल साहित्य

भाषा—बालक की भाषा का विकास क्रमिक होता है । उसकी आयु के अनुसार ही उसका श द भ डार वाक्य सरचना और अथ की सूक्ष्मता का विकास होता चलता है । इसका प्रभाव परिवार समाज तथा विद्यालय के वातावरण के अनुकूल पडता है । उसे चारो ओर के वातावरण से भाषा स बधी अनुभव प्राप्त होते हैं । जितना समृद्ध यह अनुभव का भ डार होगा उतना समृद्ध होगा—बालक का श द भण्डार अभिव्यक्ति और

शली । आरम्भ मे तो बालक अपनी माता तथा परिवार के अन्य सदस्यो से शब्द ज्ञान प्राप्त करता है फिर विद्यालय मे पाठय-पुस्तको के माध्यम से उसे यह लाभ मिलता है ।

पाठय-पुस्तको के अतिरिक्त बालको का भाषायी विकास कहानी कविता नाटक आदि के माध्यम से होता है । इस प्रकार के साहित्य की जसी भाषा होगी बालक उसी का प्रभाव ग्रहण करेगा । भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा साहित्यकार बालक के स्तर पर पहुचकर वह बात कह सकता है जो बालक के विकास के लिए अपेक्षित है ।

बीसवी शताब्दी के बाद साहित्यकारो का ध्यान इस ओर गया है कितु आरभिक अवस्था मे भाषा मे सुधार व्याकरणसम्मत शब्दो का प्रयोग आदि पर प्रयोगात्मक साहित्य ही रचे जाते रहे । महावीर प्रसाद द्विवेदी के अथक प्रयास से भाषा का सुस्थिर स्वरूप स्थापित हो पाया है जिसमे लेखको ने अपना अमूल्य योगदान दिया था । आरभ मे बाल पत्र पत्रिकाएँ इस क्षेत्र मे विकास का कार्य करती रही धीरे धीरे स्वतत्र रूप से प्रकाशित बाल पुस्तको के द्वारा भी भाषा विकास को दिशा मिलती गई ।

बाल साहित्य की भाषा की सरलता तो अपेक्षित है ही साथ ही लेखको को इस बात का भी ध्यान रखना पडता है कि रचना किस आयु वग के बालक के लिए है तथा उसकी रुचि क्या है । स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् लेखकगण इस दिशा म अधिक सचेत हो गए । बाल मनोविज्ञान की बढती लोकप्रियता ने लेखकों को इस बात के लिए प्ररित किया कि वे बालको की आदतो रुचियो तथा स्वभावो के अनुकूल साहित्य मे भाषा का प्रयोग करें । छठ दशक तक किसी बात को कहने के लिए सीधे सरल ढग को अपनाया जाता था । कविता कहानी सपाट बयानी ही उनमें हुआ करती थी ।

छठ दशक के बाद बालको की रुचि के अनुकूल भाषा मे लाक्षणिकता का प्रयोग आरभ हुआ ।

बालक एक ही प्रकार की भाषा शली का साहित्य पढ कर ऊब उठे थे और उनके लिए जो साहित्य प्रकाशित होता था वे उसके प्रति उदासीन हो उठे थे । लेखकों ने इस गभीर स्थिति को समझा और अनुभव किया कि साहित्य रचना का मूलाधार मनोभाव है और उन्हें दूसरो तक पहुचाने के लिए साहित्यकार के पास भाषा ही एकमैव साधन है । अपने मनोभावो और अनुभूतियो को व्यक्त करने के लिए वह कही शब्दचित्रो की

ज्ञानलब्धियो का जितना मह्व इस युग मे समझा गया उतना इससे पूर्व नही।

बाल साहि्य की विभिन्न विधाओ का उद्दश्य अब मात्र उपदेश देना नही रह गया वरन् वे बाल अनुभूतियो को अधिक छने नगे। बालको की तार्किक बृत्ति को शा्त करने लगे उनके अधिव निकट आने का प्रयास करने लगे तथा जीवन मू्यो की रक्षा करने लगे। प्राचीन धार्मिक पौराणिक कथाओ को आधुनिक सदर्भ मे रख कर देखा जाने लगा। कहानी के पात्र बालको के आस पास की वस्तु ्यक्ति या जीव ज तु होने लगे अत बालक उनके साथ अधिक आ मीय हो उठ।

बालको मे कुतूहल का भाव जगाने के लिए आधुनिक सामाजिक जीवन की अनेकानेक कठिनाइयो एव विषमताओ से जूझने के लिए उनमे प्र यु पन्नमति्व का गुण उ पन्न करने के उद्देश्य से जासूसी रोमाचकारी एव साहसिक कारनामो से भरी कहानियाँ तथा उप यासो की रचना इस युग की एक बडी उपलब्धि है।

विज्ञान के बढते चरण ने भी बालको मे उ सुकता व आश्चर्य के भाव भरे। उनको शा्त करने के उद्दश्य से वैज्ञानिक उप्यासो कविताओ कहानियो की रचना ने बाल साहि्य के क्षत्र मे एक नया मोड लिया।

बालको मे अभिनया मक रुचि एव अनुकरण की प्रवृत्ति को बढावा देने के लिए बाल रगमच का विकास और उसी के अनुरूप बा्न नाटको का निर्माण बालको मे मनोरजन के साथ ही किसी न किसी प्रकार की शिक्षा देने तथा उनके यक्ति व का विकास करने के उद्दश्य से हुआ।

तत्कालीन समस्यामूलक यथाथ जीवन का चित्रण उप्यास तथा कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। बालको के लिए हास्यसाहि्य के अभाव की भी पूर्ति इस युग मे हुई।

(ख) कलापक्ष और स्वात योत्तर बाल साहित्य

भाषा—बालक की भाषा का विकास क्रमिक होता है। उसकी आयु के अनुसार ही उसका श द भ डार वाक्य सरचना और अथ की सूक्ष्मता का विकास होता चलता है। इसका प्रभाव परिवार समाज तथा विद्यालय के वातावरण के अनुकूल पडता है। उसे चारो ओर के वातावरण से भाषा सम्बन्धी अनुभव प्राप्त होते हैं। जितना समृद्ध यह अनुभव का भण्डार होगा उतना समृद्ध होगा—बालक का श्द भण्डार अभिव्यक्ति और

शली । आरम्भ मे तो बालक अपनी माता तथा परिवार के अन्य सदस्यो से श-द ज्ञान प्राप्त करता है फिर विद्यालय मे पाठय-पुस्तको के माध्यम से उसे यह लाभ मिलता है ।

पाठय पुस्तको के अतिरिक्त बालको का भाषायी विकास कहानी कविता नाटक आदि के माध्यम से होता है । इस प्रकार के साहित्य की जसी भाषा होगी बालक उसी का प्रभाव ग्रहण करेगा । भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा साहि यकार बालक के स्तर पर पहुचकर वह बात कह सकता है जो बालक के विकास के लिए अपेक्षित है ।

बीसवी शता-दी के बाद साहि-कारो का -यान इस ओर गया है कि-तु आरभिक अवस्था मे भाषा मे सुधार -याकरणसम्मत श-दो का प्रयोग आदि पर प्रयोगा मक साहि य ही रचे जाते रहे । महावीर प्रसाद द्विवेदी के अथक प्रयास से भाषा का सुस्थिर स्वरूप स्थापित हो पाया है जिसमे लेखको ने अपना अमू-य योगदान दिया था । आरभ मे बाल पत्र-पत्रिकाएँ इस क्ष त्र मे विकास का काय करती रही धीरे धीरे स्वतत्र रूप से प्रकाशित बाल पुस्तको के द्वारा भी भाषा विकास को दिशा मिलती गई ।

बाल साहित्य की भाषा की सरलता तो अपेक्षित है ही साथ ही लेखको को इस बात का भी ध्यान रखना पडता है कि रचना किस आयु वग के बालक के लिए है तथा उसकी रुचि क्या है । स्वतत्रता प्राप्ति के प-चात् लेखकगण इस दिशा मे अधिक सचेत हो गए । बाल मनोविज्ञान की बढती लोकप्रियता ने लेखको को इस बात के लिए प्ररित किया कि वे बालको की आदतो रुचियो तथा स्वभावो के अनुकूल साहि-य मे भाषा का प्रयोग कर । छठ दशक तक किसी बात को कहने के लिए सीधे सरल ढग को अपनाया जाता था । कविता कहानी सपाट बयानी ही उनमे हुआ करती थी ।

छठ दशक के बाद बालको की रुचि के अनुकूल भाषा मे लाक्षक्षिकता का प्रयोग आरभ हुआ ।

बालक एक ही प्रकार की भाषा शली का साहि-य पढ कर ऊब उठ थे और उनके लिए जो साहि-य प्रकाशित होता था वे उसके प्रति उदासीन हो उठ थे । लेखकों ने इस गभीर स्थिति को समझा और अनुभव किया कि साहि-य रचना का मूलाधार मनोभाव है और उ-हें दूसरो तक पहुँचाने के लिए साहित्यकार के पास भाषा ही एकमैव साधन है । अपने मनोभावो और अनुभूतियो को व्यक्त करने के लिए वह कही श-दचित्रो की

कही लययुक्त श द योजना की और कही गभीर और समथ भाषा की सहायता लेता है । उसके मनोभाव साहि य के बाहरी रूप द्वारा ही दूसरो तक पहुचाये जाते है । इसलिए साहि य के बाहरी रूप अथवा भाषागत परिधान का बहुत मह व है यहा तक कि साहि यिक रचना का बाहरी रूप जितना सु दर होगा उसमे मनोभावो को दूसरो तक पहुचाने की उतनी ही अधिक क्षमता हो जायेगी । इसी आधार पर अब बाल साहि य मे भाषागत परिवतन परिलक्षित होने लगा और भाषा मे त भव श दो की अपेक्षा त सम श दो का प्रयोग होने लगा । सातव आठव दशक मे इसमे और भी सुधार हुआ तथा श दो को प्रयोग करने के नय नये ढग अपनाये गए ।

इस युग की एक सबसे बडी उपलब्धि यह है कि भाषा का प्रयोग करते समय लेखक यह सोचने लगे कि किस आयु वर्ग के लिए रचना कर रहे है । प्र येक आयु वर्ग के लिए उपयुक्त श दावली विषय वस्तु मानसिक प्रक्रिया मूल प्रवृत्तिया उनके स्वभाव उनकी रुचि आदि का भी यान रखने लगे । विभिन्न पत्र पत्रिकाओ का प्रकाशन इन समस्याओ को यान मे रखकर होने लगा । बाल पत्रिका चम्पक की भाषा न दन तथा पराग की अपेक्षा अधिक सरल तथा छोटे ब चो के लिए बोधग य हैं । बालक भी ।ाषा की सरलता का एक उदाहरण प्रस्तुत करता है । छोटे ब चो के लिए मात्रा रहित शिशु गीत लिखने के प्रयास हुए । इस प्रकार बालको के लिए रचना प्रस्तुत करके हर कुशल लेखक बालक की भाषा मे समाये अर्थों को तक रुचि और उ सुकता के माध्यम से ताजगी देता है और उसके ज्ञान को स्थायी बनाता है और तभी इस प्रकार के साहि य से बालको का मनोरजन भी होता है । यदि लेखक बालको की स्मृति मे न आने वाले श दो का प्रयोग करता है तो वह रचना बालस मत नही रह जाती । लेखको को इतना ध्यान रखना होता है कि बालको के उनके द्वारा प्रयुक्त भाषा के माध्यम मे वातावरण मे समाए ज्ञान का ही विस्तार हो । रूढ़िगत सस्कारो विचित्र और क पित सदर्भों का नामो लेख न होना ही उ च कोटि के बाल साहि य की विशेषता है । भूत प्रतो की कह नियो से बालको की क पना शक्ति तथा जिज्ञासा का विकास नही हो सकता वरन् ऐसे विषय से स बधित भाषा जो असम्भावित स दर्भों का ज्ञान कराते है बालको का ह्रास ही करते है । वर्तमान परिवेश से जुड सदर्भ ही बाल साहि य की भाषा मे अभि यक्त होने चाहिये । स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् सातव आठवें दशक से बाल साहि य मे इसी प्रकार की भाषा का प्रयोग हो रहा है ।

शली और शि ग — हि नी साहित्य के विभिन्न युगो म साहित्य की समस्त विधाओ मे शलीगत प्रयोग हुए हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात् बाल साहित्य मे ब नको को समस्याए जिज्ञासाए उभरकर सामने आयी है। उनक समाधान के ि ए विविध शलियो के प्रयोग किये गये है। स्वात योत्तर बाल साहि य मे स ाद शली का प्रयोग गद्य की अपेक्षा कविताओ मे अधिक ग्क्त रूप मे हुआ है। दिनकर मयक विभ परमार निरकारदेव सेवक इस प्रकार की कविताए लिखने लगे।

आ मकथा मक शली का भी प्रयोग इस युग मे पर्याप्त मात्रा मे हुआ है। अपने गुण दोषो का वर्णन कोई भी वस्तु या जीव अपने मुख से करता है।

अपोलो च दा के देश मे (श्याम सु दर शर्मा) पुस्तक मे अपोलो अपने मुख से अपनी बडाई करता है ौर आदमा की चाँद पर पहुचने तथा वहाँ मे ग पम लाने तक की कहानी सुनाता है तथा चाद तक पहुचने मे कितना प्रय न करना पडता है वह उसके विपय मे आ म कथा मक शली मे बतात है।

पदुमलाल पुन्नालाल की मकडी मे मकडी की आ मकथा रोचक शली मे दी गई है। प्रमोद जोशी की कीडो की कहानी कीडो की जब नी मे मधु मक्खी चीटी आदि कीडो के गुण स्वभाव तथा विशेषताओ का वणन इसी शली मे है। आ मकथा शली से बालको को क पना लोक मे विचरने का अवसर मिलता है क्योकि उनकी कथा उनके ही मुख मे सुनकर वे अ यधिक आनन्दित होते ह और जीव जतुओ स्थानो वस्तुओ का परिचय अति सहजता से प्रा त कर लेते है।

पत्र शली का आरम्भ स्वतन्त्रता पूव ही बाल साहि य मे हो गया था। सातव दशक मे उसको विकास की ओर भी दिशा मि नी। अपने चारो ओर बिखरी समस्याओ घटनाओ मह वपूण स्थानो योहारो महापुरुषो आदि का चित्रण पत्रा मक शली मे रोचक ढग से प्रस्तुत किया जा सकता है। इसक अतिरिक्त ब चो की अपनी चि ता इ छा आदि की अभि यक्ति भी इस शैली मे रोचक ढग से प्रस्तुत की जाती है। सामयिक बाल पत्रिकाए पराग बाल भारती मे इस शली की रचनाए प्रचुर मात्रा में प्रकाशित हु जिनमे चिडियो के खत बच्चो के नाम (मनोहर वर्मा) एक उ लेखनीय कृति है। जिसमे विभिन्न प्रकार की भारतीय एव विदेशी चिडियाँ बच्चो को अपना परिचय रोचक ढग से देती हैं। यह पुस्तक बच्चो का ज्ञान वर्धन तो करती ही है कहानी पढने जैसा भी आन द पहुँचाती है। लेखक ने जिस प्रकार बच्चो से सहज सम्पक करने का प्रयास किया है उसी तरह उनको अपने परिवेश से जुडने के अवसर भी दिये है। स्वतन्त्र्योत्तर बाल

साहित्य मे डायरी शली का भी प्रचलन हो गया। इस शैली का प्रयोग अधिकतर मनोवैज्ञानिक कहानियो के लिए किया गया है। वास्तव मे जिन मनोवज्ञानिक समस्याओ का समाधान बच्चे स्वय प्राप्त कर सकते हैं उन पर आधारित कहानियो के लिए यह एक सशक्त शली है। यह आत्मकथा शली के निकट अवश्य होती है किन्तु उसमे घटनाओ के क्रमिक विकास द्वारा समस्या का पूरा रूप उभरता है और फिर उसका समाधान भी क्रमश ही होता है।

डायरी शली एक प्रकार से आत्मकथा ही है। इसलिए आत्म स्वीकृति के अवसर भी अप्रत्यक्ष रूप से रहते हैं। फलस्वरूप इस शली मे कहानी लिखना जितना अधिक कठिन होता है उसका प्रभाव भी उतना ही सशक्त रहता है। गदी आदत नकल की (सूयबाला 1977) इसी प्रकार की कृति है।

इन्टरव्यू शली मे भी कुछ पुस्तको का प्रकाशन हुआ है। जानवरो से इन्टरव्यू (मनोहर वर्मा) अनोखी मुलाकात (डा हरिकृष्ण देवसरे) उल्लेखनीय पुस्तक है। इस शली मे दो या दो से अधिक लोगो का बातचीत रहती है। इसमे सीधे सादे प्रश्न तो रहते ही है हँसी मजाक के भी अवसर होते हैं। जीवनी लेखन के लिए भी इस शली का प्रयोग होता है। वास्तविक इन्टरव्यू के आधार पर प्रकाशित जीवनी रचना अधिक प्रभावशाली रोचक और प्रामाणिक होती है। इन्टरव्यू शली की रचनाओ मे सहजता आधुनिक परिवेश और यथाथ चित्रण का होना अनिवाय होता है। यदा कदा बुद्धि चातुय के अवसर भी दिखाई देते हैं।

सातवे दशक से शली के विभिन्न प्रकारो मे एक और प्रकार जुड गया—जीवनोपन्यास लेखन शैली इसमे प्राय समस्त क्षत्रो के महापुरुषो नारियो की जीवनी तथा कथा उपन्यास शली मे प्रस्तुत किया जाता है जिसम सम्बन्धित पात्र के जीवन की रोचक घटनाओ परिस्थितियो तथा सस्मरणो को चित्रित किया जाता है। इसके प्रचार प्रसार के लिए उमश प्रकाशन ने जीवनोपन्यास माला और शकुन प्रकाशन ने भी उनका बचपन य बीता (जयप्रकाश भारती) माला के अन्तर्गत अनेक पुस्तक प्रकाशित की। ऐसे थे चाचा नेहरू (स्नेह अग्रवाल) आदि पुस्तक इसी कोटि म आती है।

पराग मे यात्रा सस्मरण तथा साहसिक यात्रा वृत्तान्त भी समय समय पर प्रकाशित होती रही हैं। इस प्रकार के लेखन के लिए कल्पना का आधार

छोड वास्तविकता तथा आ-मानुभव द्वारा स-चा वणन अपेक्षित होता है। देशी मन विदेशी धरती (क-हैया लाल न-दन) एक रोचक एव प्रभावशाली पुस्तक है। लेखक ने भूगोल इतिहास तथा आदमियो के रहन सहन की चर्चा बा-ा मन के अनुरूप की है।

इस विज्ञान के युग मे बच्चे जिन चुनौतियो का सामना कर रहे हैं उनके सामने इलेक्ट्रानिक युग का जो भवि य तेजी से निर्मित हो रहा है वह सब आज के बाल सा हि य मे प्रतिबिम्बित होना अनिवाय है और इसके लिए निश्चित ही बाल साहि य लेखको को नई नई शलियाँ अपनानी होंगी।

स्वतन्त्रता पश्चात् के बाल साहित्य मे शि पगत प्रयोग भी प्रचुर परि माण मे होने लगा। कहानी हो या उप यास इस प्रकार के प्रयोग उनमे परि लक्षित होने लगा। क्योकि यो-ज्यो मनोरजन की वत्तिया बढ़ती गयी और आधुनिक जीवन मे द्रुतगामिता आती गई यो -यो कहानी के निश्चित शि-प विधि का विकास होता गया। इसकी सवेदना मे पहले जीवन का एक लम्बी कथा आयी। फिर धीरे धीरे सीमा सकुचित हुई और इसमे केवल जीवन की कुछ विशिष्ट घटनाए आइ और उनके प्रकाश मे मानव जावन की याख्या हुई। इसके उपरा-त नि-य प्रति के जीवन और उसकी अलग अलग समस्याओ मे से केवल एक समस्या समस्या का भी एक अग और मूल घटना के आधार पर कहानी का निर्माण होन लगा। फिर शीघ्र ही विकासक्रम से इसमे मनोविज्ञान का प्रवेश हुआ और इसके सविधान मे अनुभूतियो की प्रेरणा प्रधान हुई। इनका अथ यह है कि सही बात को उपयुक्त समय पर सही ढग से कहना ही शि-प है। जो स्वय को अ-छा लगे वही विषय चुनो तब ऐसी टक्नीक ढूँढो जिसके सहारे वह प्रिय पाठको तक पहुचाया जा सके। हि-दी साहि-य के आर-भिक युग मे बाल पुस्तको मे शिल्पगत प्रयोग नही के बराबर हुए हैं पर तु अब इसका स्वरूप अति विकसित तथा वयक्तिक हो गया है।

प्र-येक युग की अपनी अपनी समस्याएँ रहती है और युग परिवर्तन के साथ ही साथ साहि-य के स्वरूप मे भी परिवर्तन होता रहता है फलस्वरूप विभिन्न युगो मे कला के नये नये रूप द -टगोचर होते है। कला के ये नये रूप प्र-येक युग की परिस्थितियों की भिन्नता के कारण विकसित होकर भी नवीन रूप धारण कर लेते हैं और यही नये नये शि-प के प्रयोग का कारण बनते है। भारतीय साहि-य की शि-प परम्परा अधिक पुरानी नही है और न ही उसे पाश्चा-य साहि-य के समकक्ष अभी रखा जा सकता है। हि-दी का

साहि य या कहे उप यास साहि य अधिक पुराना नही है फिर भी उप यासो की बढती लोकप्रियता के कारण शि प विधि ने आश्चयजनक प्रगति की है। इसमे आधुनिक नवीनता परिलक्षित होती है तो पिछले कुछ वर्षों मे स्थापित विभिन्न विचारधाराओ का प्रभाव भी उसमे है।

आज जीवन के मापद ड बदल गये हैं और प रवर्तन के कारण बाल लेखको को इस समस्या का सामना करना प रहा है कि अपनी कृतियो को वर्तमान बालको के जीवन के अनुरूप कसे बनाएँ। इसके लि तरह तरह के प्रयोग हो रहे है। समे भी वे ही लेखक सफ हो सके जि हे युग की समस्याओ का गहन तथा तीव्र अनु भव हुआ। इन लोगो ने शि प के नये नये प्रयोग कर उसे विकास की दिशा दी। राधश्याम प्रग भ मनहर चौहान अन तराम व स्य यथित हृदय हरिकृ ण देवसरे—जसे अनेकानेक लेखक आधुनिक युग के बाल साहि य मे शि प के विभिन्न प्रयोग कर रहे है।

सदभ-सूची

1 रामकुमार वर्मा— मधमती जुलाई अगस्त 67 पृ 224 25।
2 हरिकृ ण देवसरे— बाल साहि य रचना और समीक्षा पृ 100।
3 नेमिच द्र जन— बाल साहि य रचना और समीक्षा पृ 105।
4 रामकुमार वर्मा— मधुमती जुलाई अगस्त 67 पृ 229।
5 योगे द्र कुमार ल ला— प्रतिनिधि बाल एकाकी –सम्पादकीय।
6 वि ण प्रभाकर बाल साहि य रचना और समीक्षा पृ ठ 113।
7 वि ण प्रभाकर— बाल साहि य रचना और समीक्षा पृ 113।
8 रेखा जन— खेल खिलौनो का ससार —सम्पादकीय।
9 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना— भो भो खो खो भूमिका।
10 हरिकृ ण देवसरे— ब चो के 100 नाटक आमुख।
11 हरिकृ ण देवसरे— नटरग अक 29 पृ ठ 55।
12 नेमिच द्र जन— बाल साहि य रचना और समीक्षा पृ 105।
13 नरेन्द्र शर्मा— नटरग अक 29 पृ 36।
14 मस्तराम कपूर उर्मिल — मधुमती जुलाई अगस्त 67 पृ 99
15 निरकारदेव सेवक— बाल गीत साहित्य पृ 167

16 कहा गिद्ध ने चलो बाज की
कर आएँ बारात।
अगर मगर मत करो काक जी
आओ मेरे साथ।
—मगरूराम मिश्र पराग दिसंबर 1969।

17 कौवा कडवे बोल सुनाता
कोयल मीठ बोल सुनाती।
कौआ को सब मार भगाते
कोयल को दुनिया अपनाती।
— शिशु भारती – पृ 12।

18 जो होता चिडिया बन जाऊँ
मैं नभ मे उड कर सुख पाऊँ।
— शिशु भारती पृ 35।

19 किसने बटन हमारे कुतरे
किसने स्याही को बिखराया।
है सदूक बना दी कानी
घर भर मे अनाज बिखराया।
बच्चो उसका नाम बताओ
कौन शरारत यह कर जाता।
— शिशु भारती पृ 30।

20 क्रान्ति कुमार शर्मा– हिन्दी साहित्य मे राष्टीय भावना का विकास
पृ 293।

21 रामसागर त्रिपाठी
शान्ति स्वरूप गुप्त
— वृहत् साहित्यिक निबंध पृ 601।

22 बच्चो तुम भी बचपन से
अनुशासन अपनाओ।
और जवाहर बन जाने की
मन मे लगन लगाओ।
—बाल गीत साहित्य निरकारदेव सेवक पृ 61।

23 सिर पर घर खादी का टकडा
कसकर कमर लगोटी ।
बापू कहाँ चल पड बोलो
लिए लकुटिया छोटी ।

—बाल गीत साहित्य निरकार देव सेवक पृ 63 ।

24 बापू काम कर चुके आओ चल कर पतग उडाय ।
मैं ले लूगा रील चलो कनकइयाँ कही लडाय ।।
बापू लो मैं रील लिए हू देते जाओ ढील ।
खूब पतग बढाओ कम से कम दो मील ।

—वही—पृ 63 ।

25 कितनी पीडा के बाद
हो सका यह भारत आजाद
आज तो सबको है आह्लाद
आज सब अपना
फलो फसलो का देश
कई रगो का इसका वेश
रात दिन दो जगमग भेष
देश सुख सपना ।
– श्रीप्रसाद –साप्ताहिक हिन्दुस्तान 15 अगस्त 1976 पृ 62 ।

26 निरकारदेव सेवक—बाल साहित्य रचना और समीक्षा पृ 57 ।

27 मस्त राम कपूर उामन्न—मधुमती —जुलाई अगस्त 67 पृ 101 ।

28 घोडा है डतान पर
अपनी जिद पर डटा अटल
पहले लाओ घास हरी
फिर कहना तुम तिक तिक चल ।

सूर्य भानु गुप्त (बाल गीत रचना और समीक्षा पृ 58)

बन्दर की गुम हुई बतीसी
जागी उसकी नकल नवासी

लगा भटकने ताल ताल पर
हँसी मेढकी इस कमाल पर।

—कन्हैयालाल मत्त (धर्मयुग 29 अगस्त 1982)।

30 मस्तराम कपूर उर्मिल— मधुमती जुलाई अगस्त 67 पृ 100।

31 हरिकृष्ण देबसरे— बच्चो की 100 कविताएँ आमुख।

32 हम भी होते काश कबूतर
मजे उडाते दिर भर उडकर
न होता स्कूल का चक्चर

—(बच्चो की सौ कविताएँ पृ 117)

33 खिडकी योही खली कि आकर
अ र झाँकी धप
आकर बठ गई सोफे पर
बाकी बाँकी धूप

—(बच्चो की सौ कविताएँ पृ 109)

34 एक बार बिल्ली ने रक्खा
दो दिन का उपवास
हुआ तीसरा दिन जब उसको
लगी भूख और प्यास

—धर्मयुग 20 फरवरी 1983 पृ 55।

35 वह शक्ति हमे दो परम पिता
लिख सक एक अच्छी कविता।
ऐसी कविता जिसको सुनकर
माँ अपना गुस्सा भूल जाय
ऐसी कविता जिसको सुनकर
पापा का मन भी फल जाय।

—(बच्चो की सौ कविताए पृ 99)

36 गधा बोला—सुनो धोबी
हमारे हक बराबर हैं
हमे महगाई भत्ता दो

बढ खच सरासर हैं ।

—बच्चो की सौ कविताए पृ 72 ।

37 घ य घ य टेसू महाराज बहु त दिनो मे आए आ त
तुम्हे देख कर आए लाज बिगड बने बनाए का त (गसू वे गीत) ।

38 दाना लेने चिडिया निकली
मह ाई के दौर मे
घर का राशन ख म हो गया
खाना बहुत जरूरी है
बच्चो का है पेट पालना
यह कसी मजबूरी है ?

—धमयुग 8 अगस्त 1982 पृ 54 ।

39 गरमी के ल बे हो जाते जाडो वाले बौने दिन
मौसम के हाथो मे जसे रखे हुए खिलौने दिन ।

—(बाल साहि य रचना और समीक्षा पृ 58)

40 पेडो के झनझने
बजने लगे
लुढ़कती आ रही है
सूरज की लाल गद
उठ मेरी बेटी सुबह हो गई ।

—(अपनी बिटिया के लिए — बा त भा ती—8 पृ 164)

41 रामसागर त्रिपाठी एव शा तस्वरूप गु त— वृहद् साहि यिक निब ध पृ 603 ।

42 रसगु ले तेरी क्या कहना है मि ठानो मे राजा तू
मेरी रूखी रोटी के सग कर कृपा कोर नित आ जा तू ।

—(चतुरेश रसगु ला पृ 24) ।

43 आन द प्रकाश जन— पराग (सितम्बर 1964) पृ 52 ।

44 देखो लडको ब दर आया
एक मदारी उसको लाया

—(हि दी के श्र ठ बाल गीत पृ 17) ।

45 बि नू की गाडी
चि-नू अनाडी
ले चला अगाडी
आ गई पहाडी
—(मनमोहन —बाल गीत सा‍ि य— नरकारदेव सेवक पृ 31)

46 फदक फुदक कर आती चिडिया
चह चू चह चू गाती चिडिया
—(शिशु भारती पृ 7)

47 हुआ सबेरा मुर्गा बोला
घर से चला टहलने भोला
मिला राह मे उसको भालू
लगा माँगने रोटी आल
—(ब-चो की सौ कविताए पृ 28) ।

48 अक्कड बक्कड ब बे बो
अस्सी नब्बे पूरे सौ
सौ मे लगा धागा
चोर निकल के भागा
—(बाल गीत सग्रह पृ 29)

49 गली गली मे भो भो भो भो
बिगुल बजाता भोला
भडकी गैया भो भो भो भो
उडी चिरैया भो भो भो भो
चौंका भया भो भो भो भो
कुत्ता भो भो बोल ।
– (बाल गीत साहि-य—निरकार देव से क पृ 33 ।)

50 फोन उठाकर कुत्ता बोला
सुनिये थानेदार
घर मे चोर घुसे हैं बाहर
सोया पहरेदार
घरवाले सब डर के मारे

पड़े हुए चुपचाप
मुझको भी अब डर लगता है
ज दी आए आप

—बाल साहि य रचना और समीक्षा पृ 63।

51 श्रीप्रसाद— बाल साहि य रचना और समीक्षा पृ 65।

52 कहती है नानी
सुन बिटिया रानी
गर्मी मे
शहद हुआ
मटके का रानी

—(धमयुग 23 मई 1982)

53 एक था राजा एक थी रानी
बात हो गई बडी पुरानी।

—(ब चो की सौ कविताए पृ 115)

54 मिस्टर म छर रात रात भर
गाना गाते मन मन मन
उनका गाना बडा सुहाना
लेकिन उनसे डरते हम।

—बच्चो की सौ कविताए पृ 67।

55 सूरज दादा
जाडो मे
वर्षों बाद आते है
पानी मे भीग भीग
ठडे हो जाते हैं।

—धर्मयुग 10 जनवरी 1982।

56 तितली जी तितली जी
तुम हो कितनी पतली जी

—धमयुग 27 जून 1982।

57 घोडा नाचे हाथी नाचे
नाचे सोन चिरया
किलक किलककर ब दर नाचे
भाल ता ता थथा।
—ब च्चो की सौ कविताए पृ 88।

58 नीला जैसे मोर
समु दर आसमान
बि ली की आँख
या पतग स्याही समान
—धमयुग 2 मार्च 1969।

60 जेम्सवाट इजन के दाता स्टीफसन रेल प्रदाता।
मोस तार को लेकर आए पु ट ने जलयान चलाए।
—र न प्रकाश शील (बच्चो की सौ कविताएँ पृ 125)।

61 मैं राडार हूँ राडार
तकनीकी अचभा
विज्ञान रचना मेरा गोरखधधा
मैं राडा हूँ
—धर्मयुग 20 माच 1977।

ग) ये उपग्रह सचार के
मानव के उद्धार के
अद्भुत ये वरदान है
अ तरिक्ष विज्ञान के।
—धमयुग 3 माच 1977।

62 निरकारदेव सेवक— बाल गीत साहि य —पृ 29।

63 नेहरू एकम नेहरू नेहरू दूना खादी
नेहरू तिया आजादी नेहरू चौका खशहाली
और
शास्त्री एकम शास्त्री शास्त्री दूना विजयी नैट
शास्त्री तिया जलता जट
शास्त्री चौका जय जवान

शास्त्री पजे जय किसान
और
इन्दिरा एकम इन्दिरा इन्दिरा दूना गाधी
इन्दिरा तिया आधी इन्दिरा चौका चमत्कार
इन्दिरा पजे जय जयकार

—धर्मयुग 23 जनवरी 1977।

64 एक राजा का बेटा
दो दिन खाट पर लेटा
तीन साधु दौडकर आए
चार दवा की पुडिया लाए
पाँचवे दिन घी गर्म कराई
छ छ घटे बाद पिलाई
सातवें दिन को लोचन खोले
आठ मिनट रानी से बोले
नौवे दिन को हुई बधाई
दसवे दिन को कूद लगाई।

—बाल गीत सग्रह पृ 33 34

65 बिना डोर के उडता नभ मे सूरज है कन कौवा
शाम हुई लेकर उड जाये इसको काला कौवा।

—सूर्य कमार पाडेय—बच्चो की सौ कविताए पृ 123)

66 निरकारदेव सेवक—बाल साहित्य रचना और समीक्षा पृ 58 59।

67 हरिकृष्ण देवसरे—बच्चो की 100 कविताएँ—आमुख।

68 योगेन्द्रकुमार लल्ला—प्रतिनिधि बाल सामूहिक गान—भूमिका।

69 हरिकृष्ण देवसरे—बच्चो की 100 कविताएँ पृ 11।

70 शुकदेव दुबे—बाल साहित्य रचना और समीक्षा पृ 123

71 धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी साहित्य कोश पृ 305

72 वही—पृ 305।

73 शुकदेव दुबे—बाल साहित्य रचना और समीक्षा पृ 119।

74 शुकदेव दुबे—बाल साहित्य रचना और समीक्षा पृ 123।

75 फादर फकलिन डिसोजा—साहित्य परिचय पृ 95।

76 कोकिल अति सु दर चिडिया
सच कहते हैं अति बढिया है ।
—कोकिल—महावीर प्रसाद द्विवेदी–ब चो की सौ कविताए
पृ 17 ।

77 और यह सुनकर पाडव लोग ब्राह्मणो के साथ हो लिए । वे शीघ्र ही पाचाल नगर मे जा पहुचे । देश देशा तर से आए हुए राजा लोग जहाँ उतरे थे वे सब स्थान और नगर अ छी तरह देख कर पाडव ब्राह्मणो के साथ एक कुम्हार के घर मे जाकर उतरे ।

— पाडवो का विवाह —महावीर प्रसाद द्विवेदी
—ब चो की सौ कहानियाँ पृ 51 ।

78 ओम शुक्ल— हि दी उप यास की शिल्प विधि का विकास पृ 19 ।
आ मकथा शली का भी प्रयोग इस युग मे पर्याप्त मात्रा मे हुआ है । अपने गुण-दोषो का वर्णन कोई भी वस्तु या जीव अपने मुख से करता है ।

79 च दन के पास एक कुत्ता था । उसका नाम था शेरा । शेरा बडा गुणी था । वह बोलना भले ही न जानता हो पर काम सारे आदमियो जैसे कर लेता था । चदन ने उसे बहुत [illegible] । चदन कुएँ मे छोटी बा टी लटकाकर उसे पानी मे डबो देता । रस्सी शेरा के मुह मे पकडा देता । बात की बात मे शेरा रस्सी खीच ले जाता । पानी भरी बा टी कए से ऊपर आ जाती ।

— डाकुओ के बीच —राम कुमार भ्रमर ब चो के बारह उप यास
पृ 179 ।

80 नटखट हम हा नटखट हम करने निकले खटपट हम ।
—स्वर्ण सहोदर—ब चो की सौ कविताए पृ 31 ।

81 बोलो सब टोली मे जाओ
नाचो गाओ गाने
नही चलगे आज तुम्हारे
कर लो लाख बहाने ।
हार मानकर भालू दादा
मुस्काकर यूँ बोले—

सप्तम खण्ड

बाल साहित्य की भविष्योन्मुख दिशाएँ

बाल साहित्य की भविष्योन्मुख दिशाए

(क) **बाल पाकेट बुक्स**—ब चो की बदलती रुचियो औ सामयिक परिस्थितियो से स बन्धित बाल साहित्य पढने की इ छा ने बाल पाकेट बुक्स को ज म दिया। आज का जीवन दिनो दिन व्यस्त होता जा रहा है। गाँव टट कर महानगर बन रहे हैं। औद्योगिक के द्रो मे प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। मशीनो की अधिकता के कारण मनुष्य का जीवन भी मशीनी हो रहा है। परिणामस्वरूप मनु य के पास समय का अभाव हो गया है। दिन भर के यस्त समय के बाद आराम के क्षणो मे वह कुछ ह की फ की चीज पढना चाहता है जो उसके मस्ति क पर अधिक बोझ न डाले साथ ही उसका पर्याप्त मनोरजन भी करे। क्योकि न तो उसक पास इतना समय है कि वह मोटे मोटे उप यासो को पढे और न उनकी कीमत अदा करने की सामर्थ्य।

भारत मे यह प्रवत्ति यूरोप से आयी है और यूरोप से ही अग्रेजी के पाकेट बुक्स भी आए है। पाठको मे इसकी बढती माँग एव लोकप्रियता ने हि दी मे भी पाकेट बुक्स छापने की प्ररणा दी। कम मू य एव आकार मे छोटी होने के कारण इसे लोग आसानी से खरीद सकते थे। बच्चो के लिए भी अग्रजी के पाकेट बुक्स का चलन भारत मे बहुत था। कि तु अग्रजी भाषा के प्रमी और अपने को स पन्न समझने वाले माता पिता ही इस प्रकार की पुस्तक अपने बच्चो के लिए खरीद सकते थे। यद्यपि इन पाकेट बुक्स से ब चो का मनोरजन तो अवश्य होता था कि तु विदेशी परिवेश होने के कारण ब चे उसे आ मसात नही कर पाते थे। भारतीय प्रकाशक बाल पाकेट बुक्स छापने का साहस इसलिए नही क पाते थे कि सभवत पुस्तको की बिक्री न हो और व्यापारिक दृष्टि से हानि उठानी पड। फलत अग्रेजी के बाल पाकेट बुक्स पढना ब चो के लिए मजबूरी थी। काला तर मे बालको का पुस्तक व्यसन देखकर तथा ब चो की बदलती रुचियो और उनमे आज के जीवन से जु हुए बाल साहि य को पढने की लालसा देखकर बाल पाकेट बुक्स प्रकाशन के अवसर काफी अ छे हो गये। इस अनुकूल वातावरण को देखते हुए सन् 1969 के अक्टूबर महीने मे किरण बाल पाकेट बुक्स ने रमेशच द्र प्रम के निर्देशन में सर्वप्रथम चार पुस्तको का सेट

प्रकाशित किया जिनमे अतरिक्ष के जादूगर (च द्रदत्त इ दु) जो एक वैज्ञानिक फतासी है तथा पून मे तरते लो ा (उर्गाप्रसाद शुक्ल) जो एक अग्रेजी वज्ञानिक उप यास का सार सक्षेप मे है बहुर्चाचत हुई। महल का जादू (भारत प्रकाश भाटिया) भी उल्लेखनीय कृति है। सन् 1973 तक इस प्रकाशन से लगभग 56 पुस्तक बालको को मि नी जिनमे वज्ञानिक फतासी के अलावा उप यास कहानी सग्रह चरित्र कथाएँ हास्य कथाए आदि सभी प्रकार के मसाले थे।

इसके एक महीने के बाद ही नव बर मे लखनऊ मे ज्ञान भारती प्रकाशन ने भी बाल पाकेट बुक्स प्रकाशन की योजना बनाई और इसका लक्ष्य था कि किरण बाल पाकेट बुक्स से अलग हटकर काम किया जाय। इसके लिए उ होने धुआँधार प्रचार किया तथा विभिन्न पत्रिकाओ तथा शहरो के के द्र स्थलो मे विज्ञापन दिए। पहला सेट जो इनका प्रकाशित हुआ उसमे छ पुस्तक थी— तेनाली राम के चुटकुले गधा चला गधव देश को चाद जादा जगल का आदमी पुतली कथा और सम्राट की कहानी। उपयुक्त आकार के साथ ही इन सभी पुस्तको के कवर आकर्षक तथा रग बिरगे थे। प्रचार के कारण ज्ञान भारती प्रकाशन की साख जम गई और बालक तथा अभिभावक बाल पाकेट बुक्स खरीदने लगे।

बाल पाकेट बुक्स के प्रकाशन का काम तो शुरू हो गया कि तु बच्चो की रुचि की ओर अभी न लेखक का यान था और न प्रकाशक का। इसीलिए वह ब चो के साहि य के नाम पर पुरानी पिटी पिटाई थीम यानी तोता मैना के किस्से से लेकर बेताल तेनाली राम अकबर बीरबल टाइप अथवा कथा सरि सागर आदि प्राचीन क ा साहि्य से बाल पाकेट बुक्स का मामना तैयार करने लगा। परिणाम यह हुआ कि बाल पाकेट बुक्स की सख्या मे वृद्धि ोती गई ले कि न मौलिक लेखन अपर्या त ो रहा। बाल पाठक किसी न किसी रूप मे जो कुछ पढ चुके थे वही उ हे फिर से पढने को मिला। इससे प्रकाशको को तो निराशा हुई ी बाल साहि य का भी विशेष भला नही हो सका। ज्ञान भारती का ी यही हाल हुआ।

फिर भी इन प्रकाशनो के कारण बाल पाकेट बुक्स का अपना स्थान बन गया। सन् 1971 मे कानपुर से न ही पुस्तक योजना शुरू हुई। नाम से ऐसा प्रतीत होता है कि यह पाकेट बुक्स का भारतीयकरण करने का बचकाना प्रयास था। यहाँ तक कि विषय वस्तु भी ब चो के यो य नही थी। कुछ पुस्तको के नाम है — असाधारण कहानियाँ कालजयी दोहे आदि।

सन् 1971 मे सुबोध बाल पाकेट बुक्स का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसका लक्ष्य था प्रतिवष दस पुस्तको का प्रकाशन। अब तक प्रकाशित सभी पुस्तको की अपेक्षा इसकी साज स जा अ छी थी तथा प्रस्तुतीकरण और विषय वस्तु के चयन के बारे मे भी यह सतक रहा। इस कारण इसे अपने व्यावसायिक क्षेत्र मे भी सफलता मिली। इस प्रकाशन सस्था से कई मौलिक उप यास के साथ शरत्‌च द्र चटटोपा याय तथा माकटवेन के उप यासो के सक्षिप्त रूपा तर भी प्रस्तुत किए गए। छोटा भाई मझली दीदी बचपन की कहानियाँ भिखारी और राजकुमार आदि उ लेखनीय कृति हैं। विज्ञान के खेल विज्ञान के पहिये अतारक्ष ी आदि सामा य ज्ञान से सम्बन्धित पुस्तक हैं। शिवानी की रचना अलविदा ब चो के आधुनिक युग के अनुरूप कृति है।

दि ली से सन् 1972 के सितम्बर महीने मे शकुन बाल पाकेट बुक्स का प्रकाशन शुरू हुआ और अब तक लगभग 130 पुस्तक बाजार मे आ गई हैं। इस प्रकाशन को सहयोग देने वाले हि दी के सुपरिचित लोकप्रिय बाल लेखक थे जिनमे अक्षयकुमार जन सतराम वत्स्य डा हरिकृ ण देवसरे रामकुमार भ्रमर जयप्रकाश भारती राधश्याम प्रग य यादवद्र शर्मा च द्र र नप्रकाश शील आदि ने प्रमुख रूप से अपनी प्रतिभा प्रदर्शित की है। यही कारण है कि अब तक के प्रकाशित समस्त बाल पाकेट बुक्स की तुलना मे शकुन प्रकाशन की पुस्तक अधिक अ छी है। इन पुस्तको मे विषयो की विविधता के साथ ही बाल मनोविज्ञान के अनुकूल सामग्री रहती है। इसकी लोकप्रियता का इसी बात से ज्ञान हो जाता है कि अब तक प्रकाशित समस्त पुस्तको के कम से कम तीन-तीन सस्करण निकल चुके हैं।

इस योजना के अ तर्गत ब चो के बौद्धिक और शारीरिक विकास के अनुरूप न हे जासूस नीली गुफा के रहस्य जाली नोट तीन तिकट जसे जासूसी उप यास सोने का गोला शनिलोक हरे दानवो का देश आदि वज्ञानिक उप यासिकाए तथा चाणक्य जय सोमनाथ पृ वीराज चौहान आ हा ऊदल आदि इतिहास कथाएँ बहुचर्चित रचनाएँ हैं। जासूसी उप यासो की ज ली सीरीज डाकुओ के घेरे मे उल्लेखनीय कृति हैं। इन रचनाओ के अध्ययन के पश्चात ऐसा ज्ञात होता है कि इनमे प्रकाशकीय सजगता को विशेष रूप से द ष्टिगत रखा गया है तथा पुस्तको के विषय ब चो को आधुनिकता से जोडने वाले और उ हें ज्ञान के नये क्षेत्र

से परिचित कराने वाले हे। इस प्रकार शकुन बाल पाकेट बुक्स की सुलिखित सुसम्पादित और सचित्र पुस्तको से बाल साहि य के भडार को भरने मे अभूतपूव सहयोग मिला।

सर्वप्रथम उत्तर प्रदेश सरकार ने बाल साहि य पुरस्कार योजना तगत शकुन बाल पाकेट बुक्स की रचना समद्र पर सात दिन (वीरे द्र गुप्त) को पुरस्कृत किया। लेखका को गो गा ि त करने का यह पहला अवसर है।

राजू प लिकश स कनकत्ता अलका बा ा पाकेट बुक्स इ ाहाबाद तथा सुमन बा ा पाकेट बुक्स दि ली के नाम भी उ लेखनीय है। फिर भी शकुन बाल पाकेट बुक्स अब तक प्रकाशित सभी बाल पाकेट बुक्स की तुलना मे सबसे अ ी सिद्ध हुई और इसी का ण ये इतनी ोकप्रिय हुई कि दस दस हजार के सस्करणो मे छपने वाली लगभग सभी पुस्तको के तीन तीन सस्करण प्रकाशित हो चुके ह। इन पाकेट बुक्स की बिक्री बढाने के उद्दे य से अनेक प्रकाशनो ने घरो मे लाइब्र री बनाने की योजना आरम्भ की। इसकी सफलता से आकर्षित होकर दि ली मे सन् 1969 मे बाल बुक बक की स्थापना हुई जिसका उद्दश्य था घर घर मे बाल पुस्तकालय योजना। इस योजना के अ तर्गत हर दो महीने मे आठ पुस्तको के प्रकाशन का लक्ष्य रखा गया। कि तु ये पाकेट बुक्स के आकार की नही थी। किशोरो के लिए क्राउन आकार म तथा छोटे ब चो के लिए कापी साइज मे छपती थी। ये पुस्तक विषयो की विविधता के साथ साथ रोचक तथा सु दर थी। किशारो के िए वज्ञानिक उप यास आओ चदा के देश चल शुक्र ग्रह के मेहमान रोमाचक उप यास— रहस्यो के सौदागर शिकार की तलाश घर से भागा मटरू हास्य कथा— तमाशे मे तमाशा मूर्खों का नगर तथा सामा य ज्ञान की पुस्तक— भारतीय टिकटो की कहानी सिक्को की कहानी खेन खेल म विज्ञान और छोटे ब चो के लिए न हें साथी टीनू खरगोश मदारी का खल लेट लतीफ चिडियाघर भाल आदि मह वपूर्ण कृतियाँ है। कि तु पुस्तको की खपत नही हो पाई और अनेक प्रयास के बाद भी दो वर्ष के बाद इस योजना का पटाक्षेप हो गया।

बाल पाकेट बुक्स का दस वर्षों का उथल पुथल से भरा इतिहास बताता है कि ब चो को इस युग मे वह सब नही पढ़ाया जा सकता जो बडे

चाहते हैं ब क वे वही पढना चाहते हैं पढते हैं जो उनकी रुचि के अनुकूल होता है। रहस्य रोमाच से भरपूर कहानिया हो या उप यास ब चो की रुचि ग सबसे ऊपर है—रोमाच। मगर बेसिर पर की घटनाओ का रोमाच न ी अपितु उनके देखे परखे वातावरण के आस पास का रोमाच। ऐसे घटनाक्रम मे ब चे भी उप यास या कहानी के पात्रो के साथ साथ एकागी होकर चलते हैं। उनमे बच्चो का मन रमता भी है और जोखिम उठाने का साहस भी पदा होता है।

यही कारण है कि बाल पाकेट बुक्स के यवसाय में हानि हुई।

(ख) वज्ञानिक बाल साहित्य—बालको के लि रचित साहि य की विभिन्न विधाओ पर हम द टपात करते हैं तो पाते है कि इस क्षेत्र मे पर्याप्त लेखन काय हुआ है और लगातार हो रहा है। अब यह कथन पुराना हो गया है कि बालको के लिए अ छ साहि य का स जन नही हो रहा है घटिया नेखक और प्रकाशक ही बाल साहि य का लेखन और प्रकाशन करते हैं बाल साहि य के नेखको के समक्ष कोई दिशा नही है आदि। आज लेखको और प्रकाशको मे जागरूकता आ गई है। यह समझा जाने लगा है कि बाल साहि य को यदि प्रगति करनी है और समृद्ध होना है तो कुछ विशिष्ट सुरुचिपूण परी कथाओ को छोडकर शेष परी कथाओ की जगह वज्ञानिक कथा साहि य को लेनी चाहिए और इस ओर बाल साहि य के लेखको व प्रकाशको दोनो को ही समुचित ध्यान देना चाहिए। इससे हमारे ब चो की बुद्धि अतीतगामी अथवा अतिक पनागामी न बनकर भ वि यगामी और यथाथगामी बनेगी। इस विचारधारा का स्थान साहि य मे सुरक्षित होने के कारण अब आज का बाल साहि य परियो और जादूगरो की क पना लोक से निकलकर यावहारिक जगत् मे आ गया है और जब यह राजा रानियों की सामतशाही प्रवृत्ति से उभरकर यथाथ के धरातल पर लिखा जा रहा है जो बच्चो का पना साहि य है और जिस वे आ मसात कर रहे हैं। आज ब चो द्वारा अधिकाशत वही साहि य पढा जा रहा है जो उनके व्रतमान से जुडा है जो उनकी भवि य की क पना का आधार है और जो उनकी समस्याओ का समाधान प्रस्तुत करता है।

बीसवी शता दी के इस युग मे विज्ञान के नये नये आविष्कारो ने बालको मे आश्चर्य और जिज्ञासा की प्रवृत्ति कूट कूट कर भर दी है। आज का बालक यह जानना चाहता है कि बेतार के तार कैसे काय करते हैं भारत

ने कौन कौन से अ तरिक्ष यान छोड इन यानो की विशेषता क्या है विदेशो मे विज्ञान ने कितनी प्रगति की है आदि ।

माहि य की विधाओ मे बालको के निग आरभ मे क ानियाँ और कविताएँ ही निखी जाती रही । क्योकि ऐसा समझा ाता था कि बालक कविता और कहानी अधिक रुचि के साथ आ मसात प रता है और उसका मनोरजन इ ही मा यमो से होता है । कि तु विज्ञान की प्रगति के साथ साथ यह अनिवाय समझा गया कि ब चे भी विनान की बनियादी बातो को समझ और आगे चलकर वज्ञानिक युग के सामाजिक इ सान बन या कुशल वज्ञानिक बन । विज्ञान की नीरस गूढ और रहस्या मक त यो की जानकारी बालको के लि सरल भाषा मे प्रस्तुत करना बाल साहि यका ो के समक्ष एक चुनौतीपूण काय था । इसकी उपयोगिता को समझते हु स्वतत्रता पूव ही इस दिशा मे काय होने लगा । सन् 1930 मे प्रयाग से पकाशित बालसखा मे लकडी तथा कागज के खिलौनो तथा उनका वज्ञानिक प्रयोग प्रस्तुत करने स ब धी लेख लिखने का श्रय डॉ गोरख प्रसाद को है ।

इस युग मे डा गोरख प्रसाद शुक्ल तथा च द्रमौलि शम्ने जमे लेखको का योगदान मह वपूण रहा । इन दिनो विज्ञान सम्ब धी जो भी पु तक प्रकाशित हुइ उनमे विषय को मनोरजक बनाने पर अधिक बल दिया गया तकनीकी बातो की बा ीकिया पर निगाह नही रखी गई वरन् इससे बचकर वभिन्न वस्तुओ का आवि कार और उनके निर्माण की कहानी सरल और रोचक शैली मे प्रस्तुत की गई । कहानी के रूप मे बिजली के चम कार (1939) मे बिजली की विशेषताएँ बताने के कारण यह विषय मनोरजक अवश्य हो गया । सच ही बिजली का विज्ञान की प्रगति में म वपूण स्थान है । हमारे चारो ओर आज बिजली है । रेलो से चलाने से लेकर खाना पकाने तक का काम बिजली से होता है । यह विज्ञान की सभ्यता का आधार स्त भ है । इसके अतिरिक्त अ य पुस्तक भी विज्ञान की बातो को सरल ढग से बताने के लिए लिखी गइ ।

इ ही दिनो बाल मित्र मासिक ग्रथमाला के अ तगत विज्ञान की सरल बात प्रकाशित हुइ जिसके यारह सस्करण निकल चुके । इसमे वे ही विषय रखे गए हैं जिनकी आजकल बडी धम धाम है । प्रचलित विज्ञानो की मोटी मोटी बात बडी सीधी सादी भाषा मे लिखी गई हैं । इनके पढने से लडको का जरा भी जी न ऊबेगा और ऐसी नीरस ब तो को म ेदार मजमूनो मे पढकर लडके लोट-पोट हो जायेंगे । उनको इसको पढने से वैसा ही आन द

मिलेगा जसा कहानियो को पढने में । कहानियो से तो अक्सर मनोरजन ही नोता है पर इसके प ने से मनारजन के अलावा जानकारी भी खब बढती है । उपयक्त दोनो पुस्तको म विज्ञान की तकनीकी बातो को कथारूप मे मरल और रोचक शली मे प्रस्तुत की गई है । त या मक भूलो के न रहने के कारण पुस्तको की उपयोगिता बढ गई है । सवप्रथम वज्ञानिक कहानी सन् 1900 मे प्रकाशित हुई— च द्रलोक की यात्रा जिसके लेखक हैं केशव प्रसाद सिंह । सरस्वती मे यह कहानी प्रकाशित हुई थी ।

यो यो विज्ञान के चरण आगे बढते गए बालको की उसके प्रति जिज्ञासा ा बढती गई फलस्वरूप विज्ञान के विभिन्न रूपो का जानकारी देने के लिए अनेक नखक प्रय नशीन हुए । स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् इस दिशा मे अधिक प्रगति हु२ । इडियन प्रम इलाहाबाद पुस्तक भ डार पटना एव रामनारायण लाल इलाहाबाद ने बालको के लिए वज्ञानिको की जीवनियाँ विभिन्न वस्तुओ क आवि कारो की कहानी और बुनियादी तकनीकी जानकारी स ब धी पुस्तक प्रकाशित की । सन् 1954 मे दनिक पत्र भारत ने बाल विशेषाक प्रकाशित किया जिसमे माइकेल फराड और आइजेक यूटन के स ब ध मे निब ध सूरज चाँद सितारे जसे विषयो की सचित्र जानकारी नकली चाद के निर्माण तथा उसकी सहायता से अ तरिक्ष यात्राओ की सभा नाओ का अ ययन जब गगा जमुना के मैदान मे समुद्र लहराता था निब ध मे भ विज्ञान स ब धी जानकारी प्रस्तुत की गई थ ।

सन् 1951 मे वज्ञानिक और औद्योगिक अनुसधान परिषद नई दि ली से प्रकाशित विज्ञान को प्रगति मे ब चो के लिए भी कुछ पृ ठो पर विज्ञान की सरल बात पती थी । इसके अतिरिक्त त कालीन बाल पत्रो बाल सखा बालक किशोर मे भी विज्ञान सम्ब धी सरल रचनाए प्रका शित होती थी । आगरा से प्रकाशित होने वाला विज्ञान लोक भी इसी प्रकार की रचनाए छापता था । कि तु ये अधिकतर सूचना मक है । कुछ पुस्तको मे वैज्ञानिक त यो को कहानी के मिठास मे लपेट कर बच्चो के गले उतारने का प्रय न किया गया है जो काफी दकियानूसी तरीका है । वज्ञानिक क पना की कहानियो मे चाद तथा अ य ग्रहो की यात्राओ की कई पुस्तक छपी है कि तु एक तो उनकी मौलिकता सदिग्ध है और दूसरे उनमे क पना की प्रखरता तथा वज्ञानिक दृष्टि दोनो का अभाव है । जबकि ये दोनो हा बात वैज्ञानिक साहि य के लिए अवश्य होनी चाहिए ।

इन दिनो कुछ मह वपूण वज्ञानिक पुस्तक बालको के लिए प्रकाशित हुइ जो बाल साहि य की वृद्धि म मह वपूण कडी है। हिमाशु श्रीवास्तव कृत मछली रानी का देश देवकुमार मि त्र कृत बीमार चना धमपाल शास्त्री कृत नकली चाद रमेश वर्मा कृत सिदुरी ग्रह की यात्रा मनोहर चौहान कृत पू पू स्वदेश कुमार कृत चीटो का बदला तथा ाप्रकाश शील कृत समुद्र मे सौ दिन मह वपूण कृतियाँ है। अब देश मे वज्ञानिक उन्नति के लिए वातावरण निर्मित होने लगा था। विज्ञान की प्रगति के ति ब ती हुई जिज्ञासाओ तथा विज्ञान के अ ययन की बढती हुई आवश्यकताओ तथा सभावनाओ से भी वज्ञानिक वातावरण तेजी से निर्मित हुआ। इस कारण विज्ञान स ब धी अधिकाधिक पुस्तक रोचक और सरल भाशा म सु दर चित्रो के साथ प्रस्तुत करना आर भ हुआ।

पीपु स पब्लिशिग हाउस राजपाल ए ड स स राजकमल जैसी प्रकाशन सस्थाओ ने क्रमश बाल जीवनी माला (डारविन एडिसन मैडम क्यूरी जगदीश वसु की रोचक जीवनिया) आवि का कथा (भगवती प्रसाद श्रीवास्तव) तथा विज्ञान की अनोखी दुनिया और जानने की बात प्रकाशित की।

सन् 1960 के बाद विज्ञान साहि य के प्रकाशन मे उ लेखनीय प्रगति हुई। विदेशी पुस्तको के अनुवाद ज्ञान विज्ञान पुस्तकमाला के अ तर्गत राजपाल ए ड स स ने अठारह पुस्तको मे प्रकाशित की जिनमे समुद्र की कहानी आवि कारो की कहानी ऐटम की कहानी आदि प्रमख है। इस विषय मे मौलिक पुस्तको का भी कम प्रकाशन नही हुआ। श्री केशवसाग मिश्र ने पानी मे पानी के उपयोग तथा उसकी वज्ञानिक जानकारी प्रस्तुत की। रामच द्र तिवारी की पुस्तक अपना देश भारत की नदियो फसलो एव प्रदेशो की जानकारी प्रस्तुत करती हे तो विज्ञान का अद्भुत ससार मे अनुवादक नरेश बेदी पृ वी तथा ब्रह्मा ड के निर्माण की कहानी सरल एव सुबोध भाषा मे कहते है।

जीवविज्ञान स ब धी जानकारी देने वाली पुस्तक हमारे व य पशु (रामेश्वर प्रसाद नारायणसिंह) म जगली जानवरो के बारे मे सरल और सचित्र जानकारी उसकी शारीरिक बनावट रग रूप रहन सहन आदतो और उनकी उपयोगिता के बारे मे जानकारी दी गई है। इसी प्रकार की दूसरी पुस्तक जानवरो का जगत् (सुरेश सिंह) तथा कीडा की विचित्र दुनिया (रमेश प्रभाकर) है।

मौलिक रूप से वज्ञानिक बाल साहि य प्रणयन मे ब चो की पत्रिकाओ पराग बाल भारती एव बाल सखा का मह वपूर्ण योगदान रहा। पराग मे सन् 1962 मे हरिकृ ण देवसरे का धारावाहिक उप यास चदा मामा दूर के प्रकाशित हुआ था। बाल भारती का सन् 1965 का विज्ञान अक एक मह वपूर्ण अक था। इसी समय वज्ञानिको की जीवनियाँ भी महान वैज्ञानिक परिचय माला (श्यामनारायण कपूर) विज्ञान की विभूतियाँ (जयप्रकाश भारती) प्रकाशित हुई जो बालको मे प्ररणा साहस तथा कर्मठ जीवन की ओर अग्रसर होने का सदश दती है।

शकुन प्रकाशन ने 1963 मे विज्ञान के विभि न विषयो पर कई पुस्तक प्रकाशित की। पानी और हमारा जीवन (व्यथित हृदय) आवाज की कहानी (यथित हृदय) आवाज का ज म आवाज का घोडा आवाज की बेटियाँ बाजो की दुकान आदि पुस्तको मे आवाज के सभी वज्ञानिक पहलू और उपयोगिता पर प्रकाश डाला गया है। अधरे का शत्रु—प्रकाश (यथित हृदय) तुम कसे दखते हो छाया के खेल आइन के खेल किरणो के तमाशे आदि शीषको के अ तगत प्रकाश के विविध रूपो को स्प ट किया गया है।

बालको के मन मे सहज ही यह जिज्ञासा होती है कि किसी कार्य को करने के वज्ञानिक कारण क्या हो सकते हैं। उनकी जिज्ञासा को दूर करने के लिए भी कुछ पुस्तको का निर्माण किया गया जिनमे श्रीकृष्ण लिखित पुस्तक तुम पूछो हम बताए उ लेखनीय है।

अग्रेजी से अनूदित विज्ञान कथाए तथा विज्ञान फतासियो की भी कमी नही है। च द्रलोक की परिक्रमा भूगर्भ की यात्रा आकाश मे युद्ध अस्सी दिन मे दुनिया की सैर मह वपूण कृतियाँ है। मौलिक कृतियो मे विज्ञान कथा शारदा मिश्र कृत मगल ग्रह में रजिया और लोब क या हैं। ये वज्ञानिक त यो पर आधारित हैं।

साहि य निकेतन कानपुर द्वारा (1965) प्रकाशित महान् वज्ञानिक परिचय माला के अन्तर्गत श्यामनारायण कपूर की पाँच पुस्तक प्रकाश मे आई जो च द्रशेखर वकट रमन आचार्य जगदीश च द्र बसु आचार्य प्रफु लचन्द्र राय रामानुजन और डा गणश प्रसाद तथा मेघनाथ साहा के जीवन वृत्त तथा वैज्ञानिक अनुसधानो मे उनके योगदान का वर्णन प्रस्तुत करती है। इसके अतिरिक्त जय प्रकाश भारती कृत विज्ञान की विभतिया (1966) मे दश विदश के दस प्रसिद्ध वज्ञानिको की जीवनियाँ प्रस्तुत की

गई हैं। इनमे वर्णित वज्ञानिको की जीवन कथाओ मे इस बात को मुख्य रूप से उभारा गया है कि साधारण परिस्थितिया म ज म नेकर तथा कठिन परिश्रम करके ये विभूतिया महान् बन सकी ने।

सन् 1966 की वज्ञानिक पुस्तको मे सर्वाधिक प्रशसनीय पस्तक द्रुम की कहानी है जिसके लेखक ा हरि शरण विश्नोइ ने रोचक ढग से सुदर चित्रो की सहायता नेकर विभिन्न जानत ो व ुमो का उनके द्वारा उपयोग की क ानी कही है। ा विश्नोई यदि स दिशा मे त प ता से बाल साहि य की रचना कर तो हि दी बाल सा ि य को उनकी बहुत बडी दन होगी। इसके अतिरिक्त रामजी मिश्र निखिल ब चा क लिए ध्वनि वेदमित्र कृत धरती की दौलत डी न मिश्र की गुफा स महन तथा पेड मारे जीवनदाता सुरेशसिंह कृत रगन वाले जीव तिभान सिंह नाहर की म ग्रता की सीढियाँ हेमच जोशी की तना सारा ाकाश मह वपूण कृतिया । इनके द्वारा वज्ञानिक बाल साहि य का विकास की गति मिली है।

कृषि विज्ञान की जानकारी ने के उद्दश्य ग आओ क्यारी नगाए (डा गोवि द चातक) मे मिटटी की पहचान सका उपा ा बनाने के तरीके बाग लगाने का ज्ञानिक तरीका फ नवा ी बनाना रा जयाँ उगाना तथा पौधो की क्षा क ना बताया गया है। फल कैस ब्र म (ामेद्र कुमार बाजपेयी) स जी और फना के स क्षण के उपाय बता । फिर भी कृषि प्रधान श मे कृषि से स ब धित बीज की कहानी मिट ी की कहानी दुनियाँ कसे बनी ऐसे विषया पर बहुत कम बाल सा ि ।
इसके पश्चात् राजकमल ए ड स स की सहायक सस्था शिक्षा भा ती ने ज्ञान विज्ञान माला सि ीज मे कइ सु पु तक निकानी । सन् 1970 के आस पास छोटे ब चो के निए कई रोचक वज्ञानिक पुस्तक प्रकाशित हुई। न हे साथी मे ब चो के साथी—प सिल पेन स्याही घ ी माचिस के विषय मे डा हरेकृ ण देवसरे ने सरल भाषा मे जानकारी दी है।

योगेन्द्र कुमार ल ला ने खेल भी विज्ञान भी मे मोमबत्तियो पर चित्र बनाया पानी मे लटकता अडा जस बहुत से खलो की विधि चित्रो के साथ समझाई है। विज्ञान के जादू मे मनोहर वर्मा ने ि बा पिचका क्यो पानी नही गिरा क्यो जादू का तार आदि विज्ञान के चम कार दिए ने। इसी पर परा मे स तराम व स्य की लगभग प द्रह पुस्तक— हमारा शरीर सूरज तारे चाँद पानी की कहानी हवा की कहानी पौधो की

कहानी आदि बाल मित्र ज्ञान विज्ञान माला के अन्तर्गत सन् 1971 मे प्रकाशित हुई। छोटे बच्चो को विज्ञान की प्रारम्भिक जानकारी देने के उद्देश्य से इस पुस्तक की लोकप्रियता बहुत बढ जाती है।

विश्व प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक म ा हरि कृष्ण जराये ने भारत के ख्यातिनामा वैज्ञानिकों का जीवन परिचय सुन्दर चित्रो के साथ प्रस्तुत किया और शुकदेव दुबे ने हमारे वैज्ञानिक मे प्राचीन काल से लेकर अब तक के समस्त वैज्ञानिको के जीवन चरित्र उपलब्धियां आदि की चर्चा की है। बच्चो का सामान्य ज्ञान बढाने तथा सफल भावी नागरिक बनाने के उद्देश्य से मनुज साहसी किसन पगतर से नापी दुनियाँ सारी जैसी पुस्तक मनमोहन सरल ने लिखी।

विज्ञान प्रगति का ज्ञान विशेषांक सन् 1970 मे प्रकाशित हुआ जिसमे चुम्बक टेलिफोन जिराफ अंतरिक्ष में हम और हमारी धरती माइक्रोफोन की कार्य प्रणाली रेडियो तरंग दीमक व ा ी का रहस्य जैसे विषयो पर सरल और रोचक लेख ज्ञानियों का सम्मेलन कविताएं विज्ञान पहेलियाँ प्रकाशित हुई।

कीडो की कहानी कीडो की जबानी (1972) मे प्रमोद जोशी ने कीडो की निराली दुनियाँ का परिचय साँपो का संसार (1974) मे शुकदेव दुबे ने साँपो के बारे मे प्रचलित दंत कथाएँ धार्मिक कथाएं तथा साहित्य मे साँपो का विवरण समुद्र पर विजय मे प्रभाशंकर भट्ट ने समुद्र की गहराई चौडाई तथा उसके खारेपन के स्वरूप का ज्ञान सरल प्रश्नो का उत्तर तथा पनडुब्बी मे निर्माण तथा बनाने की कहानी युद्ध काल की उपयोगिता आशा कर रेल की सैर मे मना० ज्ञान वर्मा ने रेलो के विषय मे आवश्यक जानकारी सौर मण्डल मे गुणाकार मुले ने सूर्य और उसके परिवार के सदस्यो की जानकारी तकनीकी ज्ञान तथा उपयोगिता का वर्णन जड की बात मे शकुन जैन ने पौधे की जन्म कहानी कंप्यूटर मे प्रवीण कुमार गुप्त ने कंप्यूटर के इतिहास प्रकार तथा रचना की जानकारी तथा परमाणु शक्ति मे परमाणु की रचना विखंडन विस्फोट प्रक्रिया और बम परमाणु ऊर्जा के साथ आदि का वर्णन बडी ही रोचक तथा सरल भाषा मे प्रस्तुत किए है। ये उल्लेखनीय पुस्तके इस दशक की महत्वपूर्ण देन है जिनके माध्यम से बच्चो को विज्ञान की तकनीकी जानकारी वस्तुओ की विशेषताएं आदि का वर्णन रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

इसके अतिरिक्त प्रयोगो की कहानिया मे रा ट्र ब ध ने उन होनहार साधनहीन वज्ञानिको के ीवन पर प्रकाश डाला है जि्होने घोर अभाव की स्थिति मे अपनी प्रब ्च्छा शक्ति द्वारा विज्ञान े नये प्रयोगो द्वारा विश्व को लाभावित किया है।

विज्ञान की बात भी समझाई जाए पर फिक्शन के रूप मे इस बात की महत्ता को समझ कर ब्चो के लि विज्ञान कथाए भी विभिन्न पत्र पत्रिकाओ के माध्यम से प्रकाश मे आइ। किशोर मे जगपति चतुवदी का धारावाहिक उप यास उडन तश्तरी का जासूस प्रकाशित हुआ। पराग ने सन् 1975 मे विज्ञान कथा अक मे यारह विज्ञान कथाओ का सग्रह प्रकाशित किया। ब्चो के लिए वज्ञानिक उप्यास की रचना भी इस युग मे हुई। मगल ग्रह मे राजू उडन तश्तरियाँ ला वेनी (डा हरिकृ ण देवसरे) शुक्र ग्रह के मेहमान (विनोद अग्रवाल) अतरिक्ष के जादूगर (च द्रदत्त इ दु) शनि लोक (विभा देवसरे) होटल का रहस्य (हरिकृष्ण देवसरे) आदि मह्वपूर्ण वैज्ञानिक बाल उप्याम है।

वज्ञानिक कथा उप्यास तथा ीवनी माला के अतिरिक्त व ानिक कविताएँ भी लिखी गई हैं कि तु इनकी सख्या अ य प है। राडार राकेट टेलिविजन आदि पर ब चो के लिए कुछ कविताए धमयुग के विभिन्न अको मे प्रकाशित हुई है। डा शिवप्रसाद कोष्टा का योगदान इस दिशा मे अभूतपूव कहा जायगा जि होने जटिल वैज्ञानिक बातो को सरल रूप से कविता के माध्यम से प्रस्तुत करने मे सफलता प्रा त की है। शिशु गीत लिखने मे सूयभानु गु त को अ यत सफलता मिली है। वैज्ञानिक उपकरणो को शिशुओ यो य लिखा।

वज्ञानिक बाल साहि्य की विकास यात्रा अधिक पुरानी नही है। लगभग बीस वर्षों मे इस विधा ने उ्लेखनीय प्रगति की है फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि ब्चो के लिए विज्ञान साहि्य लिखते समय लेखकगण स्पष्ट विचार नही रखते। अभी भी वे ब चो को पीछ की ओर ले जाना चाहते हैं। जबकि ब्चो की रुचियो मे दिन ब दिन परिवतन आ रहा है। वज्ञानिक युग की अनेक बातो से परिचित होते हुए भी उनकी जिज्ञासा और क्पना की ऊचाइयाँ बढती जा रही हैं। इसलिए उनके लिए विज्ञान स ब धी जो भी साहि्य लखी जाय वह अनिवायत ऐसा हो जो ब्चो के वतमान ज्ञान और उनकी जिज्ञासा तथा क पना को आगे बढ़ाए न कि उ्हे पीछ की ओर ले जाये। इसके लिए आवश्यकता इस बात की है कि

वज्ञानिक ही इस दिशा मे आगे आए। जब तक वज्ञानिक रहस्यो से साक्षात् करने वाले यक्ति स्वय लेखन के क्षेत्र मे न ी आयगे त त क ब चो के लिए अच्छा व ानिक साहित्य नही मिल सकेगा। इसके लिए उ हे हि दी मा यम अपनाना होगा।

अत लेखको का कत्त य है कि भाषा की अ त ता एव पर परागत शु कता से अपने को मुक्त कर और बालको की विकासशील वज्ञानिक अभिरुचियो परिवेश एव उनकी जिज्ञासाओ को यान म रखकर वज्ञानिक बाल साहित्य की रचना कर। उनका यह भी कत य है कि अपनी चना के मा यम से मनोरजन के साथ बालक मन म उठने वाले प्रश्नो का समाधान कर जो बोझिल न होकर बालको मे वज्ञानिक अभिरुचि का विकास क ने म स ायक हो। आज वज्ञानिक युग के अनुरूप मानसिकता तयार करना भी क अनिवायता है। इस वज्ञानिक मानसिकता को जागृत करने का उत्तर ायि य बाल साहित्य का है और इसे पूरा करना ही उसकी रचना मक साथकता होगी। उपयुक्त उद्दश्य से जिस वज्ञानिक बाल साहि य का निर्माण होता है उससे प्रभावित होकर बालक सामाजिक और यक्तिगत जीवन मे वैज्ञानिक दष्टिकोण अपनाते हैं। साथ ही विज्ञान से मानवता के लिए खतरो से भी उतना ही सजग रहते हैं जितना सजग उसकी उपयोगिता के बारे मे जानकर होते हैं।

(ग) **पहेलिया**— किसी भी यक्ति की बुद्धि परीक्षा के लिए पहेलियो का उपयोग किया जाता है। ये पहेलियाँ ज्ञानवद्धन भी करती हैं और मनोरजन भी। पहेलियाँ हमारे समाज मे किसी न किसी रूप मे व हर भाषा मे उपल ध हैं जो मानव मस्तिष्क की उस विधा की ओर सकेत करती हैं जिसे मनोवज्ञानिक भाषा मे बिम्ब निर्माण कहते है। अर्थात् मनु य हर वस्तु की एक विशेष इमेज के आधार पर ढर सारी वस्तुओ मे से उस विशेष वस्तु को पहचान लेता है। कहने का ता पर्य यह है कि पहेलियाँ यथार्थ मे किसी वस्तु का वणन है। यह ऐसा वणन है जिसमे अप्रकृत के द्वारा प्रकृत का सकेत होता है। अप्रकृत इन पहेलियो मे बहुधा वस्तु उपमान के रूप मे आता है। इसलिए पहेलियाँ बालका की क पना शक्ति को बढाती है—तक शक्ति को विकसित करती हैं तथ रुचि जगाती ।

पहेलियो का इतिहास अति प्राचीन है। वेदो में भी इसका स्वरूप विद्यमान है। सस्कृत साहि य मे यत्र तत्र इसके दशन होते हैं। वास्तव मे पुराने समय मे भी बुद्धि परीक्षा के कई तरीके थे जिनमे पहेलियाँ भी है। एक देश का राजा दूसरे देश के राजा के पास पहेलियो के द्वारा सदेश भेजता

था और दूसरी ओर से आने वाला उत्तर ही राजा की बुद्धि परीक्षा का द्योतक माना जाता था। स तरह की पहेलिया म कुछ सार्थक श दों के साथ कुछ निरथक अद्भत श द होते हे। ये श द निरथक होते हुए भी अर्थ द्योतक की भाति प्रस्तुत किए जाते ह। य श द किसी वस्तु के भाव मात्र की ओर सकेत करते हे। भाव को समझकर उसका अथ ग्रहण करना और उसका उत्तर पहेलियो के मा यम स देना क ना तथा बुद्धिमत्ता का सगम है।

ऐसा समझा जाता है कि प्राचीन का न मे जब मनोरजन का कोई साधन नही था तब दिन भर के श्रम क्ला त कृषक तथा मजदूर रात्र के समय अलाव के आस पास बठ हुए एक दूसरे से प हेलिया बूझा करते थे। इसमे उन्हे आन द तो आता ही था श ी तथा मस्तिक का आराम भी मिलता था। लेकिन अब तो पहेलियाँ साधा ण मनारजन का मा यम है अथवा ठाले बुद्धि िलास अथवा बुद्धि परीक्षा का काम देती ह।

हि दी साहित्य मे पहेलिया लिखन वाले अनेक यक्ति ह जिनमे अधि काश के नाम अज्ञ त ही है। अमीर खुसरो लाल बुझक्कड तथा घाघ कवि की प हेलिया लोक साहित्य मे अ यधिक प्रचलित हैं और आज भी उनका मह व कम नही है। पहलिया म ो न कविया के नाम की छाप रहती है।

मनोवज्ञानिक दृ टि से पहेलिया ब चा की बुद्धि प ीक्षा के लिए अ य त लाभदायक एव मनोर क मा यम ह। ब च आपस मे क दूसर से पहेली बूझते हैं बुझाते है लेकिन उ ह धिक ा। द उस समय आता है जब बड उनसे पहेलियाँ बुझाते हे। ब ा की पह ि ा का उत्तर दते समय वे अधिक सजग ह ते कि उत्त कही गलत न हो जाय। सही उत्तर बताते समय वे अ यधिक उत्तेजित भी हो ज त हे और तु त उत्तर नही सूझने पर अपने मस्ति क पर जोर देकर उत्तर निकालने का य न भा क ते हैं।

इन पहेलियो के—सूरज चाँद तारे आसमान कुआँ नारियल दीया सुई धागा गाय भस घोडा हिरन भट्टा मिर्च मूली वष महीना ताला छाता वर्षा पुस्तक लाठी रस्सी आदि अनेकानेक विपय होते है। ये पहे लिया ब चो को ज्ञान की बात सिखाती हैं तथा उनमे भावो का ऐसा चम कार देखने को मिलता है कि बच्चे उ हे सुनकर एकाएक खिल उठते है। साथ ही उ हे याद कर तुरत उत्तर देने को त पर हो जाते हैं।

रूप गुण के आधार पर पहेलियाँ कई प्रकार की होती हैं। कुछ पहे लियाँ ऐसी होती है जिनका उत्तर पहेली मे ही छिपा रहता है तो कुछ पहेलियाँ श द विशेष पर आधारित होती ह। कुछ पहेलियो मे वस्तु के गुण इस प्रकार वर्णित हाते है कि अथ ढढने मे बालको को देर लगती है और जितना ही वे क पना के घोड दौडाते हैं तना ही उ हे आन द आता है।

किसा वस्तु वा रूपक देकर भी पहेलिया प्रस्तुत की जाती हैं। साथ ही गणित शिक्षा देने के लिए भी पहेलियो का निर्माण हुआ है। बच्चो के ज्ञानबद्धन के लिए तो अनेकानेक पहेलियो का निर्माण हुआ है। कुछ पहेलिया बाल गीत का भी आनन्द देने वाली होती हैं। बच्चे इन्हे सुनकर शीघ्र या कर लेते है। ऐसी भी पहेलियाँ है जिनमे दो या दो से अधिक प्रश्न पूछ जाते हैं कि तु उत्तर सभी का एक ही होता है। अमीर खसरो की इस प्रकार की अनेक पहेलिया बडी प्रसिद्ध हैं।

कुछ पहेलिया खेल मे स बन्धित हैं जो ब चो को अधिक आकर्षित करती हं तथा कुछ पहेलियो के प्रथम अक्षर को जोडकर उसका उत्तर निकाला जाता है। विज्ञान के युग मे विज्ञान सामग्री पर भी पहेलियाँ बनी हैं जो आज की सबसे बडी देन है।

पहेलियो का अपार भ डार हि दी साहित्य मे भरा पडा है। फिर भी स्वतन्त्र पुस्तक के रूप मे पहेलियो का सग्रह प्रकाश मे नही आया। यत्र तत्र पत्रिकाओ मे चार पाच पहेलिया छप जाती है। पराग म तुम कितने बुद्धिमान हो चित्र पहेली बालको के बुद्धि परीक्षण का अ छा विषय है। नि कर्षत पहेलियाँ ब चो के ज्ञानवधन का सबस सरल मनोरजक और उत्तम माध्यम है। इस विधा का भरपूर उपयोग किया जाना चाहिए। प्रसन्नता की बात है कि समसामयिक विषयो समस्याओ नये आविष्कारो आदि पर भी पहेलियाँ गढी जा रही है। वस्तुत यह क्रम कभी टटने वाला है भी नही। यह युग युगा तर तक जीवित रहेगा और बच्चे बूढे सभी इससे आनन्दित हाते रहेगे।

(घ) चटकुल—ब चो को मनोर न प्रदान करने वाली विधाओ मे चटकुला का भी महत्वपूण स्थान है। चुटकुले बच्चे बहुत पस द करत है क्योकि वह उ हें हसाता है गुदगुदाता है तथा उनका मनोरजन भी करता है। साथ ही वह बच्चो मे प्र यु पन्नमति के गुण को भी विकसित करता है।

चटकुला मप्रयाजन औ सप्रयास न ा ग ा जाता । य तो अवसर के अनुकूल तुर त बुि के कारण गढ नया जाता । गा ज म विद्वान नही दे पाते । उनका ज्ञान गरिमा इसमे नाधक हाता है । मूख नोग भी चटकुले नही गढ पाते क्योकि यह उनके वश की बात ही न ी । वास्तव मे चटकुनो को ज म देते है वे बुद्धिमान नाग ो प्र य प नमति स पन्न होते है । चटकुना नोक स पत्ति होने के कारण देश विदेश की यात्रा आसानी से कर लेता है और हर जगह नोकप्रिय हा जाता हे ।

च कुला एक ऐसी कला है नो गहरे विषाद मे ब ु यक्ति को भी हसा दे गुदगुदा दे उ लसित क । चु का अ है च की । ब चो मे एक दूसरे की चु की काटने की आदत होती है प यहा इसका अर्थ उस चु की काटने से नही है जिससे दद हाता है—ब ि उस मुहावरे से है जिसे चटकी नेना कहते हैं । यह चटकी का अ है—म ाक बनाना या हसना । दूसरा श कुला कुलेल से बना है । कुनेल मानी गु गु ी । इस तरह चुट कुला का अथ हुआ गु गु ाने वाली चु की । अपनी इसी साथकता के कारण चुटकुला सभी को पर्याप्त मनोरजन प्रदान करता है ।

बालको के चटकुले मे चार त व अनिवाय होते है—श भोनापन हाजिर जवाबी और गति । चुटकुला जितने कम से कम श ा मे कहा जाय और जितना ज दी हो सके चोट करे वही सफल चुटकुना माना जाता है । लोक मानस मे नित नये चटकुले ज म लेते है अत नाखो की सख्या मे ये उपल ध है ।

सबसे पहले चुटकुला का स्वरूप कथा सरि सागर म देखने को मिलता है । काला तर मे राजा महाराजाओ के दरबार म वि ूषक या कोई बुद्धिमान दरबारी द्वारा समय समय पर चुटकुना गढकर राजा तथा द बारियो को हसाने की पर परा सी चल पडी । प्राय सभी राजा अपने दरबार मे ऐसे यक्ति की नियुक्ति करते थे । उत्तर मे बीरबल दक्षिण म तेलानी राम तथा पूरब मे गोनू झा आदि चतुर और बुद्धिमान चटकुनेबाजो के नाम युग युगा तर तक लोगो को याद रहेगे । इन चटकुलेबाजा के ऊपर पुस्तको का भी प्रकाशन हो चुका है । स यदेव चतुवदी कमला मेहरोत्रा ओम प्रकाश बरी आन द कुमार आदि कुछ लेखको ने बीरबल की कहानियो का ब चो के लिए प्रस्तुत किया । मनोरमा मालवीय कृत बीरबल का बटा अच्छी कृति है । अकबर और बीरबल के किस्से तो प्रसिद्ध ही है । बीरबल और तेनाली राम केवल लोगो को हसाते गुदगुदाते हो नही थे समय आने पर

अपनी बुद्धि चातुय से शासन की अनेक समस्याए भी सुलझा देते थे। अकबर बीरबल विनो तथा टी कृ णास्वामी के तेनाली राम की कहानियाँ अनमोल कृति हैं। शल कुमारी ने अपने प ाग के मा यम से मिथिला के गोनू गया की कहानियाँ प्रकाशित कराई।

चुटकुला की अनिवार्यता को समझते हुए आज प्राय सभी पत्र पत्रिकाओ मे बालको के लिए चुटकुले प्रकाशित होते हैं। रेडियो और टेली विजन पर भी चुटकुलो के कायक्रम आते हैं।

रूप गण आकार आदि के आधार पर चटकुलो के कई भेद किये जा सकते हैं यथा उपमा पर आधारित चटकुने चतुराई भरे चुटकुले शाब्दिक चम कार वाले चटकुले आि । इस प्रकार के चटकुल जीवन के सभी क्षेत्रो मे या त हैं। शिक्षा रा ानीति यापा समाज रीति रिवाज दनिक क्रिया कलापो पर अनेक चुटकुले प्रकाशित हो चके है।

एक अभाव खटकता है कि बालको के लिए चटकुलो का सग्रह पुस्तकाकार रूप मे अ पसख्या मे है। स्नेह अग्रवाल की हसिए हसाइये की सराहना की जा सकती है। ब चो मे हाजिर जवाबी के गुणो का विकास करने के ्दृश्य से लिखी हुई अजीत की पुस्तक बीरबल की बातें बीरबल की बुद्धिमता से सम्बधित विविध चुटकुलो का सकलन है। इसी परम्परा मे कमला मेहरोत्रा की बीरबल की खिचडी तथा बीरबल का अजब तमाशा बीरबल का परिचय देने वाली कतिपय घटनाओ से सम् ाधित कटकुलो का सग्रह है।

आज आवश्यकता है—वज्ञानिक रीति से उनके सकलन की। सबसे बडी बात यह है कि उचित के साथ साथ चटकुलो में वाणी के उतार चढाव का भी अ य त मह वपूर्ण स्थान है। कोई यक्ति जितने रोचक ढग से चुटकुला कहता है वह उतना ही सफल होता है। आकाशवाणी से जो चट कुले प्रसारित होते हैं वे पुस्तक मे पढने की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली होते हैं। अत यह अनिवाय है कि बालको के योग्य चटकुलो को टेप करके उनका सग्रह किया जाय।

———

सदभ सूची

1 हरिकृष्ण देवसरे धर्मयुग 16 नव बर 1957 पृ 16।

2 च द्रदत्त २ दु बान साहि य रचना और समीक्षा पृ 93।

3 हरिकृ ण दवसरे धर्मयुग 16 नव बर 1975 पृ 16।

4 आन द प्रकाश जन– मधुमती जुनाई अ स्त 67 पृ 373।

5 विद्याभूपण ग्रवाल— बिज ली के चम कार —भूमिका।

6 रामदहिन मिश्र— विज्ञान की सरन बात —भूमिका।

7 मस्तराम कपूर उर्मिन मधुमती जनाई अगस्त 67 पृ 109।

8 योगे द्र कुमार न ला— मधुमती जुनाई अगस्त 1967 पृ 190।

9 कृ णच द्र बेरी— साि त्य परिचय पृ 172।

10 माया शर्मा— सा ताि क हि दुस्तान —22 अप्रन 1979 पृ 61।

11 मै राकेट हू

राकेट वज्ञानिक करिश्मा
सुनो हाल मेरा अनोखी कला हूँ
मुझ ज म द के बडा खश है मानव
मगर मरा उपयोग करना सभल के
ढहा दू जहाँ को मैं ऐसी बला हूँ।

—शिव प्रसाद कोष्टा धमयुग 27 फरवरी 1977।

12 टी वी पर आ रही एक थी

मस्त कहानी चूहो की
धीगा मस्ती धमा चौकडी
बडी सुहानी चूहो की ।

—धर्मयुग 2 नवम्बर 1980।

13 हरिकृ ण देवसरे – बाल साहि य रचमा और समीक्षा पृ 136।

14 मस्तराम कपूर उर्मिल —मधुमती जुलाई अगस्त 67 पृ 110।

15 हरिकृ ण देवसरे— वाल साहि य रचना और समीक्षा पृ 137।

16 स ये द्र— लोक साहि य विज्ञान पृष्ठ 463।

17 स ये द्र— लोक साहि य विज्ञान पृ 463।

18 बाला था जब सब को भाया बढ़ा हुआ कुछ काम न आया।
खसरो कह दिया इसका नाम अथ करो या छोडो गाव ।। (दीया)
— हितवाद 29 मार्च 1981।

19 लाल बुझक्कड बूझते वह तो है गुरु ज्ञानी।
पुरानी होकर गिर पडी खदा की सु मादानी ।।
(काई लगे पुराने को ़ को देखकर यह उक्ति कही गई)।
—बाल गीत साहि़य पृ 135।

20 फटे से बहि जातु है ढोल गवार अगार।
फट से बनि जातु है फ कपास अनार।
—घाघ और भडारी पृ 30।

21 निरकारदेव सेवक— बाल गीत साहि़ य पृ 199।

22 श्याम वरन और दाँत अनेक लचकत जसे नारी।
दोनो हाथ से खुसरो खीचे और कहे तू आरी ।। (आरी)
— हितवाद 29 मार्च 1981।

23 तीन अक्षर का नाम पडा प्रथम काटे तो रह पडा।
कटे मध्य हो जाऊ कडा अ त कटे कप लिए खडा ।। (कपडा)
— हितवाद 29 माच 1981।

24 (क) खेत मे उपजा सब कोई खाय।
घर मे उपजे घर खा जाय ।। (फट)
— हितवाद 29 माच 1981।

(ख) एक थाल मोती से भरा सब के सिरे पर औधा धरा।
चारो ओर वह थाली फिरे मोती उससे एक न गिरे ।। (आकाश)
—बाल साहि़य रचना और समीक्षा पृ 147।

25 आवे तो अधरी आवे जावे तो सब सुख ले जावे।
क्या जानें वह कैसा है जैसा देखो वैसा है ।। (आख)
— हितवाद 29 मार्च 1981।

26 तीतर के दो आगे तीतर
तीतर के दो पीछ तीतर
आगे तीतर पीछ तीतर
बोलो कितने तीतर ।। (3)
—बाल साहि़ य रचना और समीक्षा पृ 147।

सदभ सूची

1 हरिकृष्ण देवसरे धमयुग 16 नवम्बर 1957 पृ 16।
2 च्द्रदत्त २ दु बा्न साहि्य रचना और समीक्षा पृ 93।
3 हरिकृ ण दवसरे धमयुग 16 नव बर 1975 पृ 16।
4 आन्द प्रकाश जन– मधुमती ्जुनाई अगरत 67 पृ 373।
5 विद्याभूषण ाग्रवाल— बिज ी के चम कार —भूमिका।
6 रामदहि्न मि्र— विज्ञान की सर्न बात —भूमिका।
7 मस्तराम कपूर उर्मिल मधुमती जु्नाइ अगस्त 67 पृ 109।
8 योगे द्र कुमार ल ला— मधुमती जु्नाई अगस्त 1967 पृ 190।
9 कृ णच द्र बेरी— सा्हित्य परिचय पृ 172।
10 माया शर्मा— सा ता िक हि दुस्ता्न —22 अप्र्न 1979 पृ 61।

11 में राकेट हू

राकेट वज्ञानिक करिश्मा
सुनो हाल मेरा अनोखी कला हू
मुझ ज्म दे के बडा खश है मानव
मगर मेरा उपयोग करना सभ्न के
ढहा दू जहाँ को मैं ऐसी बला ह्।

—शिव प्रसाद कोष्टा धमयुग 27 फरवरी 1977।

12 टी वी पर आ रही एक थी
मस्त कहानी चूहो की
धीगा मस्ती धमा चौकडी
बडी सहानी चूहो की।

—धमयुग 2 नव बर 1980।

13 हरिकृ ण देवसरे बाल साहि य रचना और समीक्षा पृ 136।
14 मस्तराम कपूर उर्मिल —मधुमती जुलाई अगस्त 67 पृ 110।
15 हरिकृष्ण देवसरे— बाल साहि य रचना और समीक्षा पृ 137।
16 स ये्द्र— लोक साहि्य विज्ञान पृ ठ 463।
17 स्ये्द्र— लोक साहि य विज्ञान पृ 463।

18 बाला था जब सब को भाया बढा हुआ कुछ काम न आया।
खसरो कह दिया इसका नाम अथ करो या छोडो गाँव ।। (दीया)
— हितवाद 29 माच 1981।

19 लाल बुझक्कड बूझते वह तो है गुरु ज्ञानी।
पुरानी होकर गिर पडी खदा की सु मादानी ।।
(काई लगे पुराने को ८ को देखकर यह उक्ति कही गई)।
—बाल गीत साहि य पृ 135।

20 फटे से बहि जातु है ढोल गवार अगार।
फट से बनि ाातु है फट कपास अनार।
—घाघ और भडारी पृ 30।

21 निरकारदेव सेवक— बाल गीत साहि य पृ 199।

22 श्याम वरन और दात अनेक लचकत जसे नारी।
दोनो हाथ से खसरो खीचे और क ेतू आरी ।। (आरी)
— हितवाद 29 माच 1981।

23 तीन अक्षर का नाम पडा प्रथम काटे तो रह पडा।
कटे म य हो जाऊ कडा अ त कटे कप लिए खडा ।। (कपडा)
— हितवाद 29 मार्च 1981।

24 (क) खेत मे उपजा सब कोई खाय।
घर मे उपजे घर खा जाय ।। (फट)
— हितवाद 29 मार्च 1981।

(ख) एक थाल मोती से भरा सब के सिरे पर औधा धरा।
चारो ओर वह थाली फिरे मोती उससे एक न गिरे ।। (आकाश)
—बाल साहि य रचना और समीक्षा पृ 147।

25 आवे तो अधरी आवे जावे तो सब सुख ले जावे।
क्या जानें वह कैसा है जैसा देखो वैसा है ।। (आँख)
— हितवाद 29 मार्च 1981।

26 तीतर के ो आगे तीतर
तीतर के दो पीछ तीतर
आगे तीतर पीछे तीतर
बोलो कितने तीतर ।। (3)
—ब्राल साहि य रचना और समीक्षा पृ 147।

27 (क) हरी थी मन भ ी थो लाख मोती ज ी थी।
राजा जी क बाग मे 3शाना आ खन्ी थी ॥ (भुटटा)
(ख) कटोरे पे कटोरा बेटा बाप से भी गोरा। (नारियल)
हितवाद 29 मार्च 1981।

28 आि कटे से सबको पाने
म य कटे से सबको मारे
अ त कटे स सबको मीठा
खुसरो वाको आँखो ीठा ॥ (कागज)
—बाल साि य रचना औ समीक्षा पृ 147।

29 रोटी जली क्यो घोडा अडा क्या पान सडा क्या ?
(फरा न था)
—हितवाद 29 ाच 181।

30 चार खटे का नगर बसा हे चार कुआ बिन पानी।
चोर अठारह उसम हते लिए सग इक रानी ॥
उनमे आध गोरे है और आध हि्दुस्तानी।
रानी को घरे बठ सब करते कुछ मनमानी ॥
अब उन सबको मजा चखाने एक दरोगा आया।
पीट पीट रानी सग उनको कुओ के बीच गिराया ॥
खेल खेल मे पा जाओगे कठिन नही यह खल
तुम तो बड चतुर बनत हो कह दो क्या यह खेल ॥ (करम बोर्ड)
—प्रचलित।

31 जनता का प्यारा नेता था
वारिस आ्ादी का
हर ब्चे का चाचा लगता
रक्षक था खादी का।
लाड प्यार मे पला हुआ था
लगा सुखो का मेला
नेक तनय मोती का अनुपम
हर गुण युक्त अकेला।

रूठा मत तम नाम बताओ
प्रथम वर्ण को चुन कर
धाक जमाओ सब ब चो मे
न वर वन को सुन कर।
मत्र उसी का लेकर ब चो पूण करो हर काम।
त्रा का जोड अ त मे उसका बतलाओ तुम नाम।

—(जवाहरलाल नेहरू प्रधानमत्री)

—धर्मयुग 16 नव बर 1975।

32 ाधश्याम प्रग भ— बाल साहि य रचना और समीक्षा प 148।

33 वही प 143

34 हरि कृ ण देवसरे— हि दी बाल साहि य एक अध्ययन पृ 409।

अष्टम खण्ड

बाल साहित्य के विकास में विभिन्न संस्थाओ का ऐतिहासिक महत्व और भविष्य के अन्य विकल्प

बाल साहित्य के विकास में विभि न सस्थाओ का ऐतिहासिक महत्व और भविष्य के अ य विकल्प

हि दी मे बाल साहि य लेखन का कार्य अधिक पुराना नही है फिर भी ि दी साहि य के क्षेत्र मे इसने शीघ्र ही अपना स्थान बना लिया। धीरे धीरे प्रगति के पथ पर अग्रसर होते हुए काना तर मे तीव्र गति से इसका विकास होने गा और अब विभि न साधनो के द्वारा इसका प्रचार तथा प्रसार ो रहा है। अनेक लेखकगण श्रष्ठ बा ल साहि य के निर्माण मे प्रय नशील है तो कुछ प्रकाशक भी मिशनरी भावना से ब चो के लिए उ कृ ट साहि य का प्रकाशन कर रहे है। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसी सस्थाए है जो बाल साहि य को देश के कोने काने तक पहुचाने तथा उसका लाभ ब चो को दिलाने के लिए प्रय नशील है जिनका अपना मह व है।

(क) विभि न सस्थाए

परानी कथाआ को आधुनिक सदभ के अनुकूल ढाल कर तथा विदेशी कथाओ को भारतीय परिवेश के अनुसार प्रस्तुत कर बाल साहि य का प्रकाशन करने का काय विभि न प्रकाशन सस्थाए कर रही है।

(1) चि ड्रेन बुक ट्रस्ट —बालको की पठन सामग्री की रचना हेतु जिससे उनका दो प्रयोजन सिद्ध हो सके—शिक्षा और मनोरजन। शकर नामक सुप्रसिद्ध विद्वान कलाकार तथा य य चित्रकार ने सन् 1964 में ब चो के लिए विभि न भारतीय भाषाओ और अग्रेजी भाषा मे कम मू य पर आकर्षक एव रोचक पस्तक प्रकाशित करने के उद्देश्य से एक बाल पुस्तक यास का स्थापना की जिसने अठारह वष के ैरान विभि न आयु वर्ग के ब चो के लिए अग्रेजी और भारतीय भाषाओ मे सैकडो पस्तक प्रकाशित की। इसके अतिरिक्त 10 से 19 नवम्बर सन् 1979 तक बाल पस्तक यास ने नई दि ली मे एक अ तर्राष्ट्रीय बाल मेला भी आयोजित किया।

के द्रीय सरकार मे आर्थिक सहायता प्राप्त चि ड्रन बुक टस्ट की स्थापना स्वय प्रधानमत्री नेहरू की परिक प ना थी। उ होने इसके सस्थापन मे सहायता भी की और सचालन के लिए उच्च स्तरीय बाल पस्तक यास

का नामाकन किया। पर्तु काला तर मे नेहरू की आशा के विपरीत चि्ड्रन बुक ट्रस्ट अपने मार्ग से भटक गया। हि्दी तथा भा त की अ य प्रा्तीय भाषाओ मे पस्तक प्रकाशित कराने की अपेक्षा इसका झकाव अग्रजी साहि्य की ओर अधिक हो गया। सस्ती और अ छ स्त की साहि्यिक बाल पस्तकें देश के कोने कोने मे पहुचाने की अपेक्षा यह अग्रजी पस्तको का अनुवाद प्रस्तुत करने लगा तथा भारतीय पौराणिक धार्मिक और नीति कथाओ का भी अग्रेजी भाषा मे प्रस्तुत करने लगा। सरकारी आर्थिक अनुदान मिलने के बाद भी इसकी नीति कुछ और ही हो गई और साधारण प्रकाशको की तरह यह भी अपने हानि लाभ वे विषय मे सोचने लगा। इसकी स्थापना के समय इस बात पर बल दिया गया था कि सरकार को इसी शर्त पर ट्रस्ट की स्थापना करनी चाहिए कि वह आम ब्चा के लिए अ्य त स ती किताब छापेगा बाल साहि्य की बढोत्तरी के लिए लेखका को आवश्यक सुविधा प्रो्साहन और मा्दिर्शन देगा और सारी भारतीय भाषाओ के बाल साहि्य का के्द्र बन सकेगा। चि ड न बुक ट्रस्ट के सवसर्वा शकर आज भी यही कहते हैं कि भारतीय भाषाओ म बाल साहि्य लिखना लेखको को नहीं आता। स्वय शकर भा अग्रजी भाषा मे ही बाल साहि्य लिखते हैं। जसे मदर इज मदर लाइफ विथ ग्रैडफा र हरी ए ड अदर एलिफटस आदि अग्रेजी की इन पस्तको का हि दी म अनुवाद अवश्य हुआ। अम्मा सबकी प्या ी अम्मा —म इज मदर का अनुवाद है हमारी रेल आवर रेलवेज का अनुवाद है तो आओ नाटक खेल लेट अस ले का अनुवाद है। अनेकानेक ऐसी पुस्तक हमे पढने को मिलती है।

यह कहना कि भारतीय भाषा मे बा्न साहि्य यावसायिक ि से प्रकाशको को हानि पहुचा रहा है तो इस द ि ट से चि न बुक ट्रस्ट को सफल नही माना जा सकता। क्योकि भारतीय भाषाओ मे बाल साहि्य की स्थिति सुधारने के लिए ही ट्रस्ट की स्थापना हुई थी। यह स दिशा मे प्रय्नशील तो है पर्तु अभी इसके परिणाम अ छ नही हैं। मू्य की अधिकता के कारण भी अभिभावकगण अपने ब चे को इसका लाभ नही दे पा रहे हैं।

(2) नेशनल बुक ट्रस्ट —दूसरी ओर नेशनल बुक ट्रस्ट भी इसी उद्देश्य को ध्यान मे रखकर काय कर रहा है। इसकी स्थापना सन् 1957 मे भारत सरकार के रक्षा म्त्रालय के अधीन स्वाय्त सस्था के रूप मे

हुई। इसका उद्देश्य है— लोगो के मन मे पस्तको के प्रति रुचि जागत करना और पस्तक उ नयन की राह प्रशस्त करना। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रकाशन उद्योग के सर्वाङ्गीण विकास मे यह भी योग दे रहा है। अग्रजी मे बालको के लिए जिस प्रकार का प्रकाशन चि ड्रन बुक ट्रस्ट कर रहा है उसी प्रकार का प्रकाशन नेशनल बुक टस्ट हि दी मे कर रहा है।

इस ट्रस्ट ने सवप्रथम 1970 मे नेहरू बाल पुस्तकालय परियोजना के अ तगत बच्चो की पुस्तको का सेट निकाला और तब किसी ने क पना भी नही की थी कि यह पुस्तकमाला कुछ ही वर्षों में बाल साहि य के क्षेत्र में एक आ दोलन का रूप धारण कर लेगी। इस परियोजना की क पना भूतपूर्व के द्रीय शिक्षामत्री श्री त्रिगुण सेन ने की थी। इसका उद्दश्य यह है कि इस टस्ट के सहयोग से भाषाज य या प्रादेशिक सकीणता से ऊपर उठकर देश के समस्त बालक भावा मक एकता के सूत्र मे बँध जायें। इसी उद्दश्य की पूर्ति के लिए इस पुस्तक माला की प्र येक पुस्तक तेरह भाषाओ मे प्रकाशित की जाती है। कम मू य पर अ छी पुस्तक उपल ध कराना इस परियोजना का दूसरा उद्दश्य है जि हे दृष्टिगत रखते हुए बाल साहि य के विकास तथा प्रचार के निए यह टस्ट देश के मह वपूर्ण के द्र-स्थलो पर रा ट्रीय तथा अ तर्रा ट्रीय पुस्तक मेलो का आयोजन कर रहा है। पहला अ तर्रा टीय पुस्तक मेला सन् 1972 मे, दूसरा 1976 मे तथा तीसरा 1978 मे आयोजित हुआ। इसके अतिरि क भी नौ रा ट्रीय पस्तक मेलो का आयोजन कर चुका है। इन आयोजनो मे बाल साहि य का प्रभावो पादक प्रदशन मुख्य आकर्षण का के द्र रहा। इसके मूल मे एक ही उद्देश्य काम कर रहा है—देश विदेश की पस्तको के विषय म ज्ञान का आदान प्रदान तथा विश्व ब धु व की भावना का विकास।

सन् 1979 को विश्व बाल वष के रूप मे मनाने की घोषणा के साथ ही अनेक प्रकाशक भी इस क्षत्र मे सक्रिय हो गए। नेशनल बुक ट्रस्ट ने इस वर्ष का पहला दिन ही शिशु दिवस के रूप मे मनाया और नवम् रा ट्रीय पस्तक मेले मे स्वय की और अ य भारतीय प्रकाशको द्वारा प्रकाशित ब चो की एक हजार से अधिक पुस्तको की प्रदर्शनी आयोजित की तथा बच्चो का प्रवेश प्रदशनी मे नि शु क कर दिया।

इस मेले के दौरान तीन दिवसीय राष्टीय सगा ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय आगामी दशक मे ब चो का प्रकाशन था। पूरे देश के बाल साहि य प्रकाशन के विशेषज्ञो ने इसमे भाग लेकर बच्चो के

साहित्य से सम्बधित समस्याओ और समाधानो पर विचार किया और अनेक सिफारिशो के साथ सगोष्ठी का समापन हुआ। इसकी प्रमुख सिफारिश थी बाल साहित्य अकादमी की स्थापना जो बाल साहित्य के उन्नयन की दिशा मे एक महत्वपूर्ण सगठन के कार्य के साथ ही प्रकाशको लेखको वितरको पुस्तकालयाध्यक्षो आदि के मध्य सपर्क सूत्र का कार्य करेगी।

दूसरी महत्वपूर्ण सिफारिश यह थी कि बच्चो के प्रकाशन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय स्वत बच्चे ही हैं अत बच्चो को पढने के लिए प्रेरित करने की सयुक्त जिम्मेदारी अभिभावको शिक्षको प्रकाशको पुस्तक विक्रेताओ पुस्तकालयाध्यक्षो तथा लेखको की है। सभी वर्ग इस दिशा मे कार्य करें और देखें कि बच्चो को उनकी वाछित पुस्तकें प्राप्त होती हैं या नही।

इस सिफारिशो का आशाजनक परिणाम दृष्टिगोचर नही हुआ क्योकि अकेला नेशनल बुक ट्रस्ट सारे देश की आवश्यकताओ की पूर्ति करने के लिए न योग्य है न सक्षम। इसमे सदेह नही कि नेहरू बाल पुस्तकालय की पुस्तकें अच्छी हैं सस्ती भी है लेकिन जिस कछुए की चाल से उनका प्रकाशन हो रहा है उससे कोई आशा नही बधती। फिर भी ये प्रकाशन सस्था बाल साहित्य की सेवा लगन से कर रही है।

(3) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान प्रशिक्षण परिषद्—राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली ने चिल्ड्रन मीडिया लेबोरेटरी परियोजना की स्थापना की और इसके अतर्गत बहुत छोटे बच्चो के लिए साहित्य का निर्माण कराया। इसके लिए वित्तीय सहायता यूनीसफ से प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त इस परिषद् के पाठ्य पुस्तक विभाग ने बाल साहित्य निर्माण से सबधित कुछ शोध कार्य की योजना तैयार रखा जिसका उद्देश्य उन क्षेत्रो विषयो तथा कथा वस्तुओ का पता लगाना है जिन पर बाल साहित्य अपेक्षाकृत कम है और उन पर विभिन्न स्तरो पर किस तरह के बाल साहित्य लिखे जा सकते हैं। इसके लिए कई गोष्ठियो का आयोजन किया गया और शिक्षाविदो अध्यापको प्रकाशको के सहयोग से उत्तम बाल साहित्य की तीन प्रकार की सूची प्रकाशित की गई—बाल साहित्य किशोर साहित्य तथा तरुण साहित्य। इसमे बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं में रचित अच्छी पुस्तको का सक्षिप्त परिचय दिया गया है। यह ठीक है कि विभाग का यह प्रयास सागर मे बूद के समान ही है फिर भी एक शुभारभ है तथा लक्ष्य सिद्धि के पश्चात् उत्तम बाल

साहि य के चयन सृजन मे लेखको और प्रकाशको को इससे अभीष्ट दिशा और प्ररणा मिलेगी ऐमी आशा है। बाल वष सन् 1979 के लक्ष्य वष से यह परिषद् बालको के सर्वागीण विकास का ध्यान मे रखते हुए इस िशा मे और भी अधिक प्रय नशील है।

(4) **इंडिया बुक हाउस एजुकेशन ट्रस्ट** —सन् 1969 के आरभ मे इडिया बुक हाउस ट्रस्ट ने अमर चित्र कथा का प्रकाशन आरभ किया जिसकी विषयवस्तु भारत के इति ास और पुराण रामायण और महाभारत की कहानियो स ली हुई है। ऐसा करने का मुख्य कारण यह था कि इस पत्रिका के सम्पादक अन त प यह म सूस करते रहे कि आज के बालक अपने ही परिवेश से अजनबी होते जा रहे है और एक ऐसे परिवेश से जुडते जा रहे हैं जो हमारा अपना नही है। अत उ हे ऐमी भारतीय चित्र कथाओ की कमी म सूस हुई जो इन ब चों को वापस भारतीयता से जोड सके और ये बा न केवल अपने गौरवशाली अतीत को जान सक ब क अपने देश के महापुरुषों और वीरो के जीवन से भी परिचित हो सक। भारत मे प्रचलित विभिन्न भाषाओ को यान मे रखकर अमर चित्र कथा का प्रकाशन हि दी तथा अग्रजी के अतिरिक्त असमी गाली गु राती उडिया तलगु मराठी आि चौ ह भाषाओ मे होता है।

इस प्रकार के चित्र कथा का प्रकाशन ो उद्श्यो को लेकर हुआ—

(1) ब चो का चरित्र निर्माण करना और

(2) बच्चो मे रा ट्रीय एकता की भावना जगाना।

इन उद्श्यो की पूर्ति के लिए इडिया बुक हाउस एक अ य प्रकार का भी बाल साहि य निकालता है। वह है—इको बुक्स (E h Bo ks) जो इस प्रकाशन सस्था के एजूकेशन ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित होता है। इसकी सु दर पुस्तक हैं—तुलसी एण्ड ट सिस्टर्स नाना फडन ीस इ यादि।

इको बुक्स के द्वारा भारतीय स यता तथा सस्कृति का ज्ञान बालको को दिया जाता है। इसकी अब तक लगभग सौ टाइटि स निकल चुकी हैं लेकिन अमर चित्र कथा जसी प्रसिद्धि इसे अभी नही मिल पायी है। इसका प्रमुख कारण इसके प्रचार प्रसार के साधनो का अभाव ही है।

उपयुक्त उद्श्यो को लेकर सन् 1978 से इस सस्थान ने कसेट तथा एल पी रिकाड स का भी प्रकाशन प्रारभ किया। अब तक कई

एल पी रिकाड स प्रकाश मे आ चके हैं जिनमे क्र ण लीला पचतन्त्र राम की कहानी आदि बच्चो मे अधिक लोकप्रिय हुए है ।

इसके अतिरिक्त छोटे ब चो के लिए चि बू सिरिज भी यह ट्रस्ट प्रकाशित करता है। इस सस्था की प लिशिग क द्वारा इसका प्रकाशन नेता है ।

अमर चित्र कथा के अन्तर्गत बालको के लिए अब विभिन्न प्रा तो की लोककथाए भी प्रकाशित हो रही हैं। लोक कथाए साहि य की अमू य धरोहर हैं जो धीरे धीरे लुप्त हो रही है। मौलिक साहि य का अब इतना अधिक सृजन हो चुका है कि बालक कालक्रम से प्राचीन कहानियो को भूलत जा हे हैं। उ हें पुनर्जीवित करने के लिए विभिन्न प्रा तो की लोक कथाओ से सम्बधित अनेक पुस्तक अब प्रकाशित हो रही हैं लेकिन उनका चित्रमय प देकर प्रकाशित करने का इडिया बुक हाउस का यह प्रयास सराह नीय है ।

जनवरी सन् 1982 से व य प्राणियो के जीवन पर आधारित एक अलबम का प्रकाशन बालको मे जगली जानवरों के प्रति रुचि उनकी आदतो की जानका ी उनके खान पान आदि बातो को बताने के लिए आरभ हुआ है ।

सन् 1981 के एक योजना के अ तगत इ डिया बुक हाउस पाच लाख की राशि खच करने का विचार कर रही है जिसके द्वारा प्र येक वद्यालयो मे ये पुस्तक निशु क पहुचाई जायगी ।

(ख) **बाल पुस्तकालय**—विभिन्न पत्र पत्रिकाओ तथा पस्तको के अतिरिक्त बाल पुस्तकालय भी बाल साहि य के विकास मे मह वपूण भूमिका अदा क ता है। सका कारण यह है कि पुस्तक ज्ञान का भडार होती हे और ब चो की शिक्षा सस्कृति तथा स यता का ज्ञान पुस्तको से ही प्रा त हो सकता है। माता के बाद पुस्तक ही बालक की वास्तविक गुरु है। अत बालकाल मे ही बच्चो के चरित्र निर्माण स्वस्थ आदतो के विकास पना शक्ति एव बुद्धि को समृद्ध बनाने के प्रयास के लिए पुस्तक देना अनि वार्य हैं। इसके लिए बालको का वे ही पुस्तक दी जाती हैं जो उपयुक्त आव यकताओ की पूर्ति कर सके। यह तभी सम्भव है जब ब चे पुस्तकालयो का उपयोग करना जाने। विपरीत परिस्थियो के कारण आर भ मे भारत मे बाल पुस्तकालयो के लिए कोई स्थान नही था। अमेरिका और गलैण्ड मे तो

अठारहवी तथा उन्नीसवी शता दी से ही कुछ पुस्तकालय बाल पुस्तकें रखते थे। भारत मे भी अब इसका मह्व समझा गया है। बीसवी शता दी के आरभ मे ब चे पुस्तकालय मे जाकर अ ययन करने लगे कि तु उन दिनो इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता था कि वे विद्यालय मे पढाई जाने वाली पुस्तक वहाँ भी पढें। उप यास कहानी का तो निता त अभाव था। आम लोगो की यह धारणा थी कि ब चे पुस्तकालयो मे अधिक समय नष्ट करगे और पाठय पुस्तक पढने से विमुख हो जायगे।

आज स्थिति बदल गई है। अनगिनत बाल साहि य के प्रकाशन के बाद बच्चो के पुस्तकालयो की आवश्यकता महसूस हुई। भारत मे अधिकाश बालक ऐसे हैं जो आर्थिक अभाव के कारण पुस्तक खराद नही सकते। आर्थिक रूप से स पन्न माता पिता ही बालको के लिए विविध पुस्तक खरीद कर बच्चो को पढने को देते है कि तु इनकी सख्या काफी कम है। बारह वष की अवस्था मे बहुत से बालक विद्यालय की पढाई छोड देते हैं तथा कस्बे और गाँवो मे जो बच्चे विद्यालय जाते हैं वे निर्धारित पाठयक्रम के मायाजाल मे ही फस कर रह जाते हैं। इनमे सामा य ज्ञान कथा कहानी चित्रकला खेलकूद एव देश विदेश के ताजे समाचारो का ज्ञान नही होता। उनकी जिज्ञासाओ की तुष्टि नही होती। इस कमी को बाल पुस्तकालय दूर करता है। इसके द्वारा बालको को पढने की रुचि जागत होती है।

बाल पुस्तकालयो की उपयोगिता को समझते हुए भारत के बड शहरो के सावजनिक पुस्तकालयो मे बाल-कक्ष खोले गए हैं जिनमे नेशनल लाइब्र री (कलकत्ता) से ट्रल लायब्र री (चडीगढ) प नक लाइब्र री (पटियाला) दि ली प नक लायब्र री (दि ली) उ लेखनीय हैं। नेहरू हाउस दि ली मे भी बाल पुस्तकालय तथा वाचनालय का अ छा प्रव ध है। विभिन्न प्रा तों के राजकीय के द्रीय पुस्तकालयों ने भी बालको के लिए अलग से बाल विभाग खोला है जहाँ सावजनिक पुस्तकालय की सुविधा उपल ध है उनमे बालको के अध्ययन मनन का अलग विभाग होना आवश्यक है। ग्राम पचायतो एव नगरपालिका परिषदो विकास खण्डों को चाहिए कि वे साव जनिक पुस्तकालयो मे बाल कक्ष को अलग से विकसित कर। इसके अतिरिक्त हर स्तर पर बाल पुस्तकालय का गठन आवश्यक है।[1]

यावसायिकता के मोह मे बंधे अनेक प्रकाशक बालको के सर्वांगीण विकास को ध्यान मे रखकर पुस्तको का प्रकाशन नही करते वरन् जासूसी तिलिस्म सम्ब धी छोटी छोटी कहानियाँ तथा उप यास प्रकाशित करते हैं।

बाल पुस्तकालय के अभाव मे ब चे इस प्रकार का सा ि य पढने की ओर उ मुख होते हे जिसके कारण उनका भवि य के अधका मय होने की आशका हा जाती है ।

पुस्तकालया यक्ष उचित पुस्तको का चयन करता है आर पुस्तकालय मे उ ी पुस्तको को खरीदता है जिससे बालको का उचित विकास हो और वे या य नागरिक तथा रा निर्माता बने । इसलि पु तकालयो और पुस्तकाध्यक्षा का असल काम यह है कि जनता मे अ छी पुस्तक पढने का शौक पदा कर । शौक प ा तो ब चो से ी हाता है इसलिय ब चो के लिये खोले जाने वाले पुस्तकालय का मह व अधिक है । अब बात पर दढता पूवक सोचा गया और बालको को इसके अनुरप सुविधा देने का प्रय न किया जा रहा है ।

बाल पुस्तकालय के लिये कुशल प्रशिक्षित ग्रथपाल होना आवश्यक है । ग्र थपाल द्वा ा ऐसे बाल साहि य का चयन किया जाये जिससे बालको की स्म णशक्ति वाकपटता ग्राह्यशक्ति एव बौद्धिक चतना पुस्तका को प ने से उतरोत्तर बढती रहे ।

वार्षिक परीक्षा के बाद न बे अवकाश के ि नो मे ब च यथ की पुस्तक पढक अपना समय न ट क ते हे । समे छुटका ा पाने के लिए विद्यालय तथा सावजनिक प तकालय अपनी सवाए स ा प्र ान कर । ब चों के लिये पस्तकालय सेवा का अथ हे उनमे पस्तका क प्रति रुचि उ प न करना तथा पुस्तकालय के माध्यम से त सम्ब धी मामग्री प्रस्तुत करना । इसके लिए परमावश्यक है कि बाल पुस्तकालय अधिकाधिक सख्या म खोले जाय । वे ब चो के लिए अ छी अ छी पुस्तक जुटाएँ और अनुकू ल वातावरण प्रदान कर जिससे उनके मन मे पढने के प्रति प्रम अ छ साहि य का परखने और छाटने की समझ पदा हो और वे पुस्तको का अपने जीवन का क अ यावश्यक अग समझने लग ।

यदि बाल ग्र थालयो की सुविधा व ग्र यो पत्र पत्रिकाओ का स सग ब चो को बचपन से मिले तो वे निश्चय ही कला सस्कृति इतिहास व ज्ञान से जुडेगे तथा आचार विचार रहन सहन तथा परिवार के वातारण को सुसस्कृत बनाने मे मदद करने लगगे ।

(ग) बाल पत्र पत्रिकाए—बाल साहित्य के उ भव विकास एव स्वरूप निर्माण मे हिन्दी बाल पत्र पत्रिकाओ का मह वपूण योगदान रहा । हिन्दी बाल पत्रिका का शुभारभ भारतेन्दु युग से होता है जबकि स्वय

भारतेन्दु ने 1 जून सन्‌ 1874 मे बाल बोधिनी पत्रिका प्रकाशित एव स पादित की। इस पत्रिका के कारण भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की बाल साहित्य सेवाओ को भुलाया नही जा सकता। उन्होने ग तो लिखा ही हि दी रोड रो का निर्माण कराया तथा पाठय पुस्तको के रूप मे हि दी का स्थापित कर जो नीव रखी उस पर ही आज की महान अट्टालिका अ ी कीह। कुछ न क बाल बोधिनी को नारी बोधिनी कहकर महिलाओं की पत्रिका बताते हैं। इन विरोधो के बावजूद इसमे स देह नही कि यह पत्रिका बाल बोधिनी ही है।

वैसे बच्चो के पत्रो का आर भ तो हस्तलिखित पत्रो से हुआ। आज भी बडी सख्या मे विभिन्न स थाओ से तथा प्राय समस्त विद्यालयो से भी वर्ष मे एक बार पत्रिका निकलती है जिसमे विद्यालय से स बन्धित छात्रो द्वारा लिखे गये निब ध कहानी कविता चटकुले पहेलियाँ आदि प्रकाशित होते हैं। इनमे बालको को लिखने के अवसर तो कम ही मिलते हे परन्तु उन्हे लेखन के प्रति प्रो साहन तो मिलता ही है।

भारतेन्दु की प्रेरणा से ही सन्‌ 1876 मे काशी पत्रिका निकली जो आगे चलकर विद्यालयीन बच्चो की पत्रिका बन गई। ा पकाल के नि लखनऊ से सन्‌ 1861 मे बाल हितकर प्रकाशित हुआ तथा इलाहाबाद स सन्‌ 1906 मे शिवचरण लाल के स पादक व मे छात्र हितषी तो किशोरी लाल गोस्वामी के सम्पादकत्व मे बाल प्रभाकर निकला। मेरठ से सन्‌ 1911 मे बाल हितैषी निकला जो पाच वर्ष बाद ब द हो गया। इसी प्रकार चार वर्ष के लिए सन्‌ 1912 मे नरसिंहपुर से मानीटर निकला। ये सब पत्रिकाए बाल साहित्य की सेवा अ प समय के लिए ही कर सकी फिर भी इनसे बाल साहित्य के विकास मे योगदान दिया ही है। इसी परम्परा मे प्रयाग से रामजीलाल शर्मा के स पादक व मे विद्यार्थी का प्रकाशन प्रारभ हुआ जिसमे विद्यार्थियो की रुचि एव ज्ञानवर्धन के लिए रचनाए रहती थी। हितकारी बाल मनोरजन आदि पत्रिकाएँ भी अल्प समय के लिए ही प्रकाश मे आइ।

सन्‌ 1915 मे इलाहाबाद से शिशु का प्रकाशन एक क्रांतिकारी कदम था। पतीस वर्षों तक बच्चो से यह पत्रिका बडी लोकप्रिय रही। छोटे बच्चो के यो य कहानियाँ कविताए तथा चुटकुले पहेलियाँ इस पत्रिका के आकर्षक केन्द्र रहे। परतत्र भारत मे इसके प्रकाशन मे अनेक कठिनाइयाँ आई लेकिन स पादक सुदर्शनाचार्य के अथक प्रयास से यह पत्रिका बाल

साहित्य की श्रीवद्धि करती रही। दुर्भाग्यवश सन् 1950 के आस-पास कतिपय कठिनाइयो के कारण इसे बद करना पडा।

द्विवेदीजी की प्रेरणा से जनवरी सन् 1917 मे इडियन प्रेस इलाहाबाद से बाल सखा का प्रकाशन आरभ हुआ जिसके प्रथम स पादक प बदरीनाथ भट्ट थे। अनेक समथ बाल साहि यकार इस पत्रिका ने पदा किए जिनमे मैथिलीशरण गुप्त कामता प्रसाद गुरु सुखराम चौबे गुणाकर गोपाल शरण सिंह सोहन लाल द्विवेदी श्रीनाथ सिंह विद्याभूषण विभ आदि अनेक कवि तथा कहानीकार थे। साथ ही इस पत्रिका ने निरकार देव सेवक हरिकृ ण देवसरे शकु तला सिरोठिया रा ट्र बधु विष्णुकात पाडेय आदि अनेक आधुनिक बाल साहि यकारो को स्थापित करने का काय किया। इससे पता चलता है कि द्विवेदीजी के पूव हि-दी पत्रकारिता अपनी प्रयोगावस्था मे थी। द्विवेदीजी ने उसे वयस्कता एव प्रौढता प्रदान की। इतना सब होने पर भी अति यावसायिकता के कारण बाल सखा का प्रकाशन काला तर मे ब द करना पडा यद्यपि मिशनरी ढग से इसका प्रकाशन आरभ हुआ था। इसी समय सन् 1917 मे ही ओकार प्रस इलाहाबाद से मनोविनोद का प्रकाशन हुआ जिसके एक भाग बाल विलास मे प श्रीधर पाठक की अनेक बालोपयोगी कविताए सग्रहीत हैं जो आज भी बच्चो को समान रूप से मनोरजन प्रदान करती हैं।

सन् 1926 मे पुस्तक भण्डार पटना से बालक पत्रिका निकली जो आज भी बाल साहि-य की सेवा मे कटिबद्ध है। कि-तु इसमे बाल साहित्य की वर्तमान परिस्थितियो से अलग पर परागत रचनाओ के लिये ही स्थान सुरक्षित है। बाल साहि-य को विकास की गति देने मे इडियन प्रेस इलाहाबाद तथा पुस्तक भण्डार लहेरिया सराय का उ-लेखनीय योगदान है जि-होने मनोरजक तथा रोचक बाल साहि य के साथ साथ पाठय पुस्तक प्रकाशित करने का भी बीडा उठाया था।

सन् 1920 मे जबलपुर से छात्र सहोदर सन् 1924 मे दि-ली स वीर बालक काशी से उ साह तथा कलकत्ता से आशा पत्रिकाए प्रकाशित हुइ जो अ प समय तक ही अपनी छटा बिखेर सकी। सन् 1926 मे सम्पादक रघन दन शर्मा ने खिलौना मासिक पत्र निकाला जो सन् 1960 तक प्रकाशित होता रहा। बालिकाओ के लिए एकमात्र पत्रिका सहेली का प्रकाशन भी इडियन प्रेस लिमिटेड प्रयाग से सन् 1926 मे आरभ हुआ। सन् 1931 म जयपुर से रामनरेश त्रिपाठी का वानर सन्

1932 मे कालाकाकर के सुरेश सिह् का कुमार तथा उदयपुर से श्रीमाली का बालन्ति थोड िनो तक बाल साहि्य की सेवा कर समा त हो गए। इसा पर परा मे बाल शिक्षा समिति पटना से प्रकाशित किशोर और अज ता प्रम पटना से चु नू मु नू भी आता है। माया प्रस इलाहाबाद से मनमोहन प्रया ा से ल्ला और किशोर भारती जसी पत्रिकाए भी काला तर मे काल कवलित हो गइ। यही दशा कालक्रम से अक्षय भैया शेर सखा राजा बेटा रानी बिटिया बाल प्रभात शावक आदि बाल पत्रिकाआ की हुई जो निराशा उपेक्षा विवशता और तिरस्कार की शिकार हुइ। रामकृष्ण शर्मा खद्दर ने एक पत्र हमारे बालक देहली से सन् 1942 मे प्रकाशित किया। इन पत्रिकाओ की दशा देखने से पता चलता है कि किसी उ्साही लेखक सम्पादक या प्रकाशक के मात्र हठ योग से बाल पत्रिका हमारे देश मे नही चल सकती। समाजवादी नारो के बीच कोई सुदढ पजी पति ही यावसायिकता का जामा पहन कर अ्य पत्र-पत्रिकाओ की भाँति बाल पत्रिका भी चला सकता है बाल मानस पर भी एकाधिकार कर सकता है। बाल पत्रिकाओ की दयनीय स्थिति देखकर दु ख तथा आश्चय दोनो होता है। ब चो के योग्य उ्च कोटि की कुछ मनमोहक पत्रिकाए जसी थी वे भी ्यावसायिकता की दौड मे पिछड गइ और उनका अस्ति्व भी लुप्त हो गया।

मद्रास से सन् 1956 मे निकलने वाला मा बच्चो का मासिक पत्र च दा मामा भारत की विभि्न भाषाओ मे छपता है और बडे बूढे तक इसे बड चाव से पढते हैं। इसमें पौराणिक तथा भूतप्रत दानवो रहस्यमय घाटियो जगलो और जीवो की कहानियो की भरमार रहती है। ये कहानियाँ ब्चो का कितना मनोरजन करती हैं और उनसे बच्चो के विकास मे कितनी सहायता मिलती है—इस बात पर सदव प्रश्न चिह्न लगा रहा है। इस पत्रिका के प्रस्तुतीकरण से बालको का मनोरजन भले हो ही उनके लिये यह उपयोगी नही है।

भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रषित बाल भारती अनेक कठिनाइयो के बावजूद प्रकाशित हो रही है जिसमे रचनाओ का झकाव लोक कथाओ पौराणिक कथाओ की ओर विशेष रहता है। साथ ही इसमे विज्ञान खेलकूद पशु पक्षी तथा हास्य ्यग्य का भी समावेश रहता है। इस प्रकार इसमे नये तथा पराने दोनो विषयो का उचित सामजस्य दिखाई पडता

है । साथ ही ब चो द्वारा नित चनाओ । लि ।। उचित स्थान इस पत्रिका मे निर्धारि त । नम्नुत य पत्रिका गामायिकता क मो स ह कर सही अर्थों मे हि ी वाल मा य की रावा म सं न है ।

अब तक हि दी म अनगिनत बाल पत्रिका प्रकाशित ती रही कि तु कुछ आर्थिक कठिनाई कुछ पत्रिका के प्रति ।भि गावको तथा ब चा की उपेक्षा कुछ सरका ी नीति क ।रा ण अगम । ग ी नका प्रकाशन बन्द हो गया । तभी टाइ म आफ ि ।। । । । माच न् 1958 स प ।ग का प्रकाशन आर भ आ ि ।क ।। ।। । स पा । आन द प्रकाश जन ने अपनी नगन तथ नि । मूल तूल ।था ।।नज ।ि ।। के का ण बाल साहि य की दिशा म एक क्रातिकारी मा दिया । ।। स ि य के लिये समर्पित अनेक सा ि यकारो की पहचान पराग ।। मा यम स बनी । शिशु गीत जसी अविकसित विधा ।। भी विकास की ग ि मि ी तथा अनेक प्रति योगिताओ के आयोजन द्वारा बालका की क पनाशक्ति उवरक बनी । इसमे उ कृ ट बाल कविता बाल कहानियाँ बाल उप यास बाल नाटक शिशु गीत आदि प्रकाशित हु । ऐसा समना जा सकता ह कि स समय क ब चो के लिए निकलने वाली पत्रिकाओ म एक मात्र प ।ग ही ब चा की वास्त विक रुचि औ आवश्यकता के अनुरूप बाल सा ि य प्रकाशित कर रहा है । इसके पाठक वे ब चे है जो आधुनिक परिवेश और आधुनिक जगत् की समस्याओं के हल खोजना चाहते है जो आधुनिकता से जुड़ना चाहते है और उसके प्रति जिज्ञासु भी हैं । पराग का आकार आ भ में बड़ा रहा कि तु कालान्तर म इसे छोटा करना है । बीच म कुछ दिनो के लिय इसे किशोर पत्र बनाने का प्रयास किया गया कि तु उसम सफलता नही मिली । हि दी की यही एकमात्र पत्रिका है जो बालका के लिए मनोवैज्ञानिक द ि ट से कहानियाँ उपन्यास आदि प्रकाशित कर रही है ।

हिन्दुस्तान टाइम्स दि ली से न दन का प्रकाशन भी उपयो ी कदम था । पराग की भाँति यह भी देश विदेश की रोचक कहानियाँ तथा आकर्षक साज स जा के कारण बहुचर्चित एव लोकप्रिय है बालका क मनाविज्ञान को ध्यान मे रखकर ही यह पत्रिका भी रचनाए प्रस्तुत करती ह । अब तक सभा इस बात को मानने लगे कि बाल सा ि य के लेखन मे मनोवैज्ञानिक पकड बहुत जरूरी है । हम ब चो को सरल और अत्य त रोचक मनोरजक शैली मे वज्ञानिक आवि कारो तथा देश विदेश म हुई विज्ञान प्रगति के विषयो मे जानकारी अधिकाधिक देनी चाहिए । जाहिर है कि विज्ञान बेहद शु क विषय

है इसलिए हमे विशेषकर बाल साहि यकारो को परम्परित शली की रोच कता को लेकर चलना पडगा। अब न दन इसी साँचे मे ढलकर प्रकाशित हो रहा है।

जुलाई सन् 65 से प्रकाशित होने वाला बाल मासिक— मिलि द शुष्क तथा कठिन विषयो की भी सरल भाषा शली मे प्रस्तुत करने का दावा करता है। उसकी एक रचना मिलि द प्रधानमत्री बना मे ब चो को भारत के प्रधानमत्री का निर्वाचन काय एव दायि व आदि रोचक ढग से बताया गया है और सागर मे सौ दिन रचना मे सागर के वज्ञानिक रहस्य उजागर किए गए थे। इसी विषय से आप अ दाज लगा सकते हैं कि गभीर विषय भी ब चा तक प$_{ठ}$चाए जा सकते हैं बशर्ते लेखक मौलिक शैली मे पूण आ मविश्वास के साथ ऐसी रचनाए लिखे। आज इस पद्धति पर अनेक रचनाएँ प्रकाशित हो रही हैं जो ब चो मे लोकप्रिय हो रही हैं।

बनारस से प्रकाशित होने वाली पत्रिका रानी बिटिया बालिकाओ की अकेली पत्रिका है। सन् 1964 से कलकत्ता से प्रकाशित शेर सखा अपना हर अक विशेषाक निकालता रहा—शहीद अक वेशभूषा अक बाल स्वास्थ्य अक विश्व बालक अक आदि। राजा भया जीवन शिक्षा जसी पत्रिकाएँ अ यन्त सरल कोटि की हैं।

इन बाल मासिक पत्रिकाओ को देखने से पता चलता है कि पराग ही इसमे उ च कोटि का पत्र है जिसमे बालको की आधुनिक मानसिकता के अनुसार रचनाए प्रकाशित होती हैं। न दन पराग तथा बाल भारती इन तीन प्रमुख पत्रो के सर्वेक्षण से डा हरिकृष्ण देवसरे ने यह निष्कर्ष निकाला है जो 1975 76 के दस अको पर आधारित है।

सवक्षण

विषय	पराग	बाल भारती	न दन
पौराणिक कहानियाँ	10	6	44
लोक कथाए	10	14	60
राजा रानी की कथाए	20	9	87
भूत प्रत परियो की कहानियाँ	00	2	5
नीति कथाएँ	2	0	2
इतिहास की कथाए	7	1	2

ब चो की अपनी कथाए	22	9	9
वज्ञानिक कथाए	8	3	2
साहस यात्रा कथाए	25	9	7
जासूसी कथाए	1	3	1
आम आदमी की कथाए	23	7	11
विदेशी कथाए	00	6	4
हास्य कथाए	6	4	10
जावन कथाए	3	20	2
पशु पक्षियो की कथाए	6	8	6

इसस पता चलता है कि पराग मे साहसिक वज्ञानिक कथाए अधिक प्रकाशित होती है तथा परी कथाएँ राजा रानी भूत प्रतो की कथाओ का प्रतिशत शू य है। पराग के द्वारा ब चो को इस प्रकार की शिक्षा दी जाती है कि इतिहास हमारे लिए पिछले दिनो का वह नमूना होता है जिसमे झाक कर हम अपने आज के जीवन को सु दर बना सक अपनी युगो युगो तक होती रही गलतियो को पहचान कर उ च जीवन जीने का सलीका सीख सक। यह आज के बाल साहि य का मूल स्वर है।

ये समस्त बाल मासिक पत्र बडी आयु के बालको के लिए है। शिशुओ की पत्रिका का अभाव ही है। च पक इस आवश्यकता की पूर्ति अवश्य करता है और मासिक के स्थान पर इसका पाक्षिक प्रकाशन भी होता है जो इसकी यावसायिकता का ही परिचायक है। एक कमी अवश्य खटकती है कि इसकी कहानियाँ जानवरो तथा पशु पक्षियो के इद गिद ही चक्कर काटती हैं। नवम्बर सन् 1979 से कलकत्ता के आन द बाजार प लिकेशन ने मेला नामक सु दर बालोपयोगी पत्र का प्रकाशन आर भ किया है। बाल साहि य की समृद्धि मे इसकी भी उपयुक्त भूमिका है।

लोट पोट पजू नम्बू बाल हास्य पत्रिकाए है कि तु इनमे सुरुचिपूर्ण हास्य यग्य की कमी है। बालको के लिए य य लिखने वालो का अभाव है।

उत्तर प्रदेश सरकार के प्रकाशन विभाग से जीवन शिक्षा पत्रिका का प्रकाशन भी उ लेखनीय है। गीता प्रस गोरखपुर रामायण महाभारत आदि की कथा नीति कथा चारित्रिक गुण सुधार सबधी कथा तथा शिक्षाप्रद कहानियो का प्रकाशन कर रहा है।

इन स्वतन्त्र बाल पत्रिकाओ के अतिरिक्त प्रमुख साप्ताहिक पत्र धर्मयुग तथा साप्ताहिक f दुस्तान मे बाल स्तम्भ का निकलना इन पत्रिकाओ की सुरुचि का परिचायक है। धर्मयुग के एक ही पृष्ठ पर बालको के लिए विविधतापूण सामग्री दने का प्रयास स्तु य है।

प्रमुख दनिक पत्रो मे नवभारत टाइम्स आज दनिक जागरण आर्यावर्त स मार्ग प्रदीप विश्वमित्र आदि म ब`चो द्वारा लिखी रचनाओ को स्थान मिलता है। आज प्राय सभी प्रमुख दनिक पत्र अपने रविवासरीय अक मे न चो का रचित रचनाए निकालकर गौरवा`वित होते है। 14 नव बर को प्र`यक वर्ष अनेक साप्ताहिक पत्र बाल विशेषाक निकालते है। स दिशा में इलाहाबाद से प्रकाशित दनिक पत्र भारत ने सन् 1954 मे पहल की। फिर तो अनेक पत्रिकाओ को प्रो साहन मिला।

बाल पत्रिकाओ की पर्या त चर्चा के पश्चात् बाल चित्र कथाओ के विषय मे कुछ कहना भी अनिवाय है वरन् चर्चा अधरी रह जायगी। बच्चे चित्रो द्वारा विषय को कम समय मे आसानी से समझ जाते हैं क्योकि चित्रो द्वारा सम्प्रषण का काय अवचेतन धरातल पर होता है। अत ब चो की रुचि और समझ के अनुसार ही पुस्तको मे चित्र दिये जाते है। ब`चो की पुस्तको का चित्रण करना ब`चा के मनोविज्ञान और उनकी क पनाओ को मूत रूप देना है। निश्चित ही इस काम को वही कलाकार अधिक सफलता से कर सकता है जिसने ब चो की आँखो से ही प्रकृति और अ य वस्तुओ को देखा हो और जिसने बच्चो की क पना को समझने मे सफलता पायी हो। इसनिए ब`चो की पुस्तक चित्रित करना न केवल एक चुनौती भरा काम है ब कि इसमे चित्रकार के लिए प्रयोग के अवसर भी उपस्थित होते है। विदेशो मे बालको के लिए चित्र कथाओ का पर्याप्त भडार है। अमेरिका मे चित्र कथा की जितनी बिक्री होती है भारत मे रगीन चित्रो से भरी कथाओ की उसकी एक प्रतिशत भी नही होती। फेंटम टारजन मिकी माउस डोना ड डक (वा`ट डिस्ने) आदि चित्र-कथाए प्रशसित हैं। भा त मे भी इस ओर प्रयोग हो रहे हैं। सन् 1964 मे टाइम्स आफ इडिया प्रकाशन सस्था से इ`द्रजाल कामिक्स का प्रकाशन आरम्भ हुआ और तब पहली बार चित्र-कथा प्रकाशन को गति मिली। बेताल की वीरता म`ड्र क के जादुई कारनामे तथा बहादुर की बहादुरी पढकर ब`चे उनके जावन से अपना तादा`म्य स्थापित करने लगते हैं। स पुस्तक के अ तर्गत प्रमुख

विदेशी पात्रो स ब धी कहानिया नी जाती । पर तु उन कहानिया को भारतीय परिवेश के अनुसार परिवर्तित किया जाता है और भारतीयकरण के बाद ही उनका प्रकाशन किया जाता है।

इस प्रकार सन् 1976 स इस कामिक्स के अ तर्गत मौलिक एव भारतीय विषयो का समावेश हुआ और दो प्रमुख विशेषाक रामचरि त मानस विशेषाक और जन धम की महान् कथा पर आधारि ा बाहुबलि प्रकाशित हुई। इसी क्रम मे महाभारत की कथा को पर्याप्त लाकप्रियता मिली। इ द्रजाल कामिक्स का कथाओ को प्रमुख रूप से तीन भागो मे बाँटा जाता है—ऐतिहासिक पौराणिक तथा एडवे चरस । आज के बच्चे ऐडवे चरस कामिक्स अधिक पस द करते है अत इसके सम्पादक अभय टी सिंघवी इस प्रकार की कहानिया देने के पक्षपाती है। इस प्रकार की पत्रिकाओ मे नीरस विषय को सरस ढग से प्रस्तुत किया जाता है। इ द्रजाल कामिक्स की लोकप्रियता इसी से ात होती है कि चार प्रा तीय भाषाओ के अतिरिक्त अरबी मे भी इसका प्रकाशन होने लगा। वस्तुत कामिक्स आज के युग की एक सशक्त विधा है िससे ब चो का मनोरजन तो होता ही है साथ ही उ हे ऐसी बातो की भी पता चलती है जो न सिफ उनके अध्ययन मे ब कि उनके जीवन विकास मे भी सहायक होती है। इस सशक्त माध्यम से मनोरजन के दौरान ही ब चो को यह भी बताया जा सकता है कि समाज की विभीषिकाए क्या हैं और उनको कैसे दूर किया जा सकता है।

अभिभावको का यह कहना कि कामिक्स के कारण ब चे अप ी पाठय पुस्तक को नही पढत एक सवक्षण के पश्चात् ज्ञात हुआ कि कामिक्स पढ़ाई के बाद न केवल ब चो की थकान मिटाने मे सहायक हात है बल्कि मानसिक स्तर पर उनकी क पनाओ को साकार होने का अवसर भी देत हैं। सुरुचिपूर्ण कामिक्स बाल मन का एक स्वस्थ दिशा प्रदान करत हैं। इस दिशा मे डिया बुक हाउस द्वारा अमर चित्र कथा के प्रकाशन द्वारा बालको मे भारतीय सस्कृति तथा स यता के प्रति लगाव उ पन्न करना है।

धर्मयुग साप्ताहिक हि दुस्तान ने भी चित्र कथा प्रकाशित कर ब चो को ज्ञान विज्ञान की जानकारियाँ दी। धर्मयुग के 18 सितम्बर 77 के अक से नारद की कहानी 27 जून 77 से च द्रशेखर आजाद की

कहानी के अतिरिक्त पचत त्र की कहानी बीरबल की कहानी जयप्रकाश नारायण की जीवनी आदि चित्र-कथाए धारावाहिक रूप मे निकलती रही। उसी प्रकार सा ताहिक हि दुस्तान भी नूरजहाँ देवी चौधरानी चतुर बीर बल स्वामी विवेकान द तथा सूरदास आदि की कहानी चित्रो के माध्यम से प्रकाशित करता रहा। जानवरो तथा पक्षियो की कहानियो द्वारा नीति शिक्षा देने का भी कार्य ये चित्र कथाएँ करती है।

आबिद सुरती के ढ बूजी बुद्धराम रवी द्र के मुसीबत के बाबू शेहाब के छोटू लम्बू और प्राण के बि ल पी डी चोपडा के चीटू नीटू जसे यग्य चित्रो से बालको का पर्याप्त मनोरजन होता है। नदन मे प्रकाशित चित्र कथा तेनालीराम भी बालको को प्रभावित करती है। इन चित्र कथाओ को पढते समय बालक सुधबुध खो बठते हैं। अमर चित्र कथा तथा इ द्रजाल कामिक्स बालको द्वारा अधिक पढ जाते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि इन चित्र कथाओ मे धार्मिक अधविश्वास रूढिवादिता आदि का लोभ हो एव आधुनिक युग के नये सदर्भों मे इनका प्रणयन था प्रकाशन हो।

ये जितनी भी साप्ताहिक मासिक बाल पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई उनमे एक अभाव खटकता है। वज्ञानिक बाल पत्रिकाओ की वज्ञानिक बालक का प्रकाशन अभी प्रयोगावस्था मे है। विज्ञान लेखको को इस दिशा मे प्रय न करना है तथा इस प्रकार के पत्र पत्रिकाओ को लोकप्रिय बनाने के प्रयास करने हैं।

बालको के लिए एक दनिक समाचारपत्र का भी अभाव है। जिज्ञासु वृत्ति होने के कारण देश विदेश मे घटित होने वाले रोज रोज के ताजे समाचार जानने की इच्छा रखते हैं इसके लिए उ हे अपने घरो मे आने वाले दनिक पत्रो का ही सहारा लेना पडता है। सन् 1977 से नन्दन ने एक नया स्तम्भ आर भ किया न दन बाल समाचार जो बाल समाचारपत्रो की आवश्यकता की पूर्ति करता है। कि तु न दन महीने में एक बार ही प्रकाशित होता है जबकि बालक नि य के समाचारो से वचित रह जाते हैं।

इतनी पत्र पत्रिकाओ के रहते हुए हि दी के बाल पाठको के लिए अनेक बाल पत्र-पत्रिकाएँ अभी और चाहिए जिससे उनकी माँग की पूर्ति हो सके। निर तर प्रगति के पथ पर अग्रसर हि दी बाल साहि य की आकाक्षाओ तथा इस प्रकार का वातावरण निर्मित हो सके कि बालको की आकाक्षाओ

अभिलाषाओ रुचियो तथा प्रवत्तिया क अनुकूल साहित्य का सृजन तीव्र गति से हो। बालको के चरित्र निर्माण पर उनके मा यम से बल दिया जा सके जिसस उनका क याण तो न्ो साथ ही े दश की प्रगति मे भी योग दे सक।

इन पत्र पत्रिकाओ को प्रकाशित करन का श्रय विभि न प्रकाशन सस्थाओ को है निनमे डियन प्रस इलाहाबाद पुस्तक भडार लहेरिया सराय सरस्वती प्रकाशन मथरा राजकमल प्रक शन नाक भारती प्रकाशन स म ग प्रकाशन शिक्षा भारती प्रकाशन टा स आफ इडिया प्रकाशन व बई हि दुस्तान टाइ स प्रकाशन—दि ला िया बुक हाउस प्रकाशन आदि मह वपूण सस्थाए है जि हान अनेक कठिना या के बावजूद बाल साहित्य की दिशा को निरन्तर गति प्रदान की और कुछ प्रकाशन सस्थाए तो अभी भी यह काय नियमित रूप स कर ही ह। इनकी सफलता के लिये लेखक प्रकाशक तथा सम्पा क मे अटूट स ब ध होना चाहिए क्याकि पुस्तक प्रकाशन के यवसाय मे लेखक और प्रकाशक एक गाडी के दो पहियो के समान है। इनके बिना प्रकाशन की यह गा ी ठीक से नही चल सकती। इसलिये हम तो दोनो को एक साझ ार मानने है जो मिलजुलकर पाठको के लिये एक अ छी पुस्तक तैयार करते है और उन तक पहुचाते है। जिस तरह एक लेखक को एक पुस्तक की रचना पर स्वाभाविक आन द मिलता है उसी तरह एक सच्चे प्रकाशक को भी अच्छी पुस्तक के प्रकाशन और वितरण मे रचनात्मक आन द की अनुभूति होती है। लेखक की सवेदनशीलता तो सवविदित है। प्रकाशक भी सवेदनशील होता है इस बात पर बहुत कम लोगो का ध्यान जाता है। ऐसा होने के बाद ही प्रगति के पथ पर अग्रसर बाल साहित्य की आकाक्षाओ अभिलाषाओ के अनुरूप सजन काय तेजी से हो सकेगा और तभी बच्चो का चरित्र निर्माण हो सकेगा और तभी वे देश के यो य नागरिक बनकर देश को सदा विकास का दिशा े ले जान का प्रय न करते रहेगे।

(घ) आकाशवाणी के बाल कायक्रम

बाल साहित्य के विकास मे आकाशवाणी द्वारा प्रसारित बाल कार्यक्रमो की भूमिका भी विचारणीय है। बाल मनोरजन के सीमित साधनो के बावजू आकाशवाणी ने बाल कार्य क्रम प्रसारित कर इस क्षेत्र मे मह वपूण योग दिया है भले ही इसका प्रसारण सप्ताह मे एक बार होता है।

वस्तत आकाशवाणी के बाल कायक्रम बाल साहित्य के लिए विशाल और सदा विकसित होने वाला क्षेत्र तयार करता है। ब चे कहानियाँ गीत अनथक पद्य स्वाग तथा नाटक आदि पस द करते । उनकी इस रुचि को कौशल औ क पना द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है जिसे आकाशवाणी के बाल कार्यक्रमो के मा यम से बालको तक पहुचाने का काय होता है। इस प्रकार के कायक्रम प्रस्तुत करने वाले यदि बाल हृदय को पहचानने की क्षमता रख तो उ हे पर्या त मनोर न प्रदान कर सकते ह और इसके द्वारा ज्ञान प्रदान कर सकते है। सीधे ढग से कही बात को बालक श्रोता अपनाना नही चाहता और इसी कमी की पूर्ति के लिए आज आकाशवाणी के सभी के द्रो पर प्रस्तुत किया जाने वाला बाल कायक्रम बहुत लोकप्रिय होता जा रहा है। बालक भी क कायक्रम सुनने के बाद दूसरे का प्रतीक्षा करते देखे जाते है।

ब चे किसी विषय को पुस्तक मे पढते हैं और उसका आन द ग्रहण करते है। पुस्तक मे विषय से सम्बधित चित्र हो तो वे भी बाल मन पर प्रभाव डालते है। किन्तु यदि बालक उस चित्र को ध्वनि के मा यम से ग्रहण करता है तो उसका प्रभाव दुगुना हो जाता है। चित्र मे ब चे पशु पक्षी आँधी तूफान आदि देखते हैं तो रेडियो के द्वारा पशु पक्षी की आवाज आँधी तूफान की ध्वनि सजीवदृश्य उपस्थित कर लेते हैं। प्राय देखा जाता है कि ब चे रेडियो के पास बठे कायक्रम सुन रहे है गीत या कविता जो भी प्रसारित हो रहा है उसके श दो को ध्वनि और लय के साथ दोहराने भी लगते हैं। प्रश्नोत्तर के कायक्रम मे प्रश्नो के उत्तर स्वय ढढने का प्रयास करते हैं। कायक्रम प्रसारित करने वाले भैया या दीदी उनके अधिक निकट सम्ब धी प्रतीत होते है। इस प्रका बाल श्रोता और आकाशवाणी का यह सम्ब ध यान्त्रिक न ी मानवीय हो जाता है।

आकाशवाणी के ये बाल कार्यक्रम अ य साधनो की अपेक्षा तुर त और ता कालिक प्रतिक्रिया उत्प न करता है क्योकि ब चो के कायक्रम का मू याकन कायक्रम के साथ साथ हो जाता है। आकाशवाणी कक्ष मे बैठे बालको की हसी तालियो की गडगडाहट तथा प्रश्नो के उत्तर देने की उ सुकता आदि इसके साक्षी है। इसका प्रभाव स्टूडिओ से बाहर दूसरे शहरो तथा दूसरे प्रा तो मे रेडियो सेट के पास बठ बच्चो पर भी तत्काल होता है। आकाश वाणी ने ब चो के कायक्रम अपने हाथ मे लेकर ब चे के मानसिक भरण पोषण की जिम्मेदारी उठायी और उसने ब चे मे अपना विश्वास पदा किया।

उसके द्वारा प्रसारि-ा प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम बूझो तो जान क्यो और कसे कहानी और लेख प्रतियोगिता रोचक अनुभव यात्रा वर्णन आदि कई ऐसे कार्यक्रम है जो ब चो को सृ-ाना मक साहि-य की स-ि करने मे योग देते है उ-हें प्ररित करते है तथा उनको मनोरजन और शीघ्र सोचने की शक्ति प्रदान करते हैं।

रेडियो बालको के सामने कहानी लेख कविता जीवनी नाटक आदि को प्रभावशाली ढग से प्रस्तुत करता है। किसी घटना को उचित श द तथा प्रभावशाली ढग से प्रस्तुत कर उसे सजीव बना देता है। बालको को अ या क्षरी कार्यक्रम मे कविता का खेल खेलने का अवसर मिलता है तो पत्नोत्तर कार्यक्रम में नपे तुले श-दो मे बात कहने का ढग मा-ूम होता है। अनेक बाल साहि-यकार रेडियो द्वारा साहि-य की विभि न विधाओ के विकास का प्रयास कर रहे हैं। चुनमुन प्रोग्राम मे कहानी लेखन की कला को विभा देवसरे उर्मिल ठक्कर तथा हृदयनारायण सेठ की कहानियो द्वारा विकसित किया जा रहा है तो भवानीप्रसाद मिश्र की देन जीवनी साहि-य के विकास मे है। रेडियो रूपक को विकास की दिशा मोहिनी राव से मिली है तो यशपा-न पुरग डा विश्नोई आदि विज्ञान साहि-य के प्रचार प्रसार मे योग दे हे है। शेरजग गग क-हैयालाल प त मोह मद यूसुफ आदि कविगण आकाश वाणी प्रसारण के अनुरूप कविता लिखकर इस विधा को विकसित करने का प्रयास कर रहे हैं।

आकाशवाणी के विभिन्न के-द्र प्रतिदिन स्कूल ब्रोडकास्ट भी करते हैं जिसमे पाठ्य पुस्तक से सम्ब धित विषय को रोचक ढग से ि ज्ञान की बारीकियो को सरल ढग से सुलझाने का प्रयास किया जाता है जिससे ब चो के लिए विषय दुरूह न रह जाय।

बाल साहि-य के विकास मे इसकी उपयोगिता को समझते हुए आकाशवाणी के-द्रो ने लगभग समस्त प्रा-तीय भाषाओ मे बाल कायक्रम प्रसारित करने की योजना बनाई है और उस पर अमल कर रहे हे। फिर भी अभी इसमें सुधार की आवश्यकता है। प्रसारित होने वाले कार्यक्रमो मे श दो का उचित प्रयोग उ-चारण की शुद्धता लयबद्धता का ध्यान रखना पडता है अ यथा प्रभावहीन कायक्रम होने पर बा-नक उसे सुनना पस द नही करते और खेलने निकल जाते हैं। एक बडी बात बालको मे यह है कि वे इस प्रकार के कार्यक्रमो की आलोचना भी नही करते और न ही अ-छ कार्यक्रमो की सराहना करते हैं। कार्यक्रम अ छा हुआ तो वे एकाग्रचित होकर

सुनते रहते हैं और उसका प्रभाव सहज रूप से उनके बाल मन पर पडता रहता है। मलिए आवश्यकता इस बात की है कि रेडियो के बाल कार्य क्रमो के लिए यो य प्रशिक्षित कलाकार हो अ छ सयोजक हो देश मे प्रकाशित होने वाले श्रेष्ठ बाल साहि य से प्रेरणा लें तथा बाल लेखको से सहयोग ल। इसके अतिरिक्त आकाशवाणी देश के ल ध प्रतिष्ठित बाल लेखको का सक्रिय सहयोग लेकर भारत के ब चो को भारत ही की सामग्री दे।

(ङ) दूरदशन के कायक्रम

इन दिनो बड शहरो मे दूरदर्शन के कारण बाल साहि य के विकास मे एक अग और जुड गया है। रेडियो के द्वारा बालक आवाज को सुन सकते है और कर्णेन्द्रियो द्वारा उसका प्रभाव ग्र ण कर सकते है। कि तु दूरदर्शन से तो वे कायक्रम को प्र यक्ष देख सकते है जो रेडियो की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली होता है। फि म का भी प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है क्योंकि बालक य देख सकता है कि कहानी के पात्र किस तरह बात करते है रोते हसते हैं खेलते है लडते है आदि। ये सब घटनाएँ मस्तिष्क पर अधिक जोर डाले बिना सहज ही समझमे आने वाली हैं। जहाँ दूरदर्शन की सुविधा नही है वहाँ ब चे फि म की ओर अधिक आकर्षित होते हैं। रेडियो कार्यक्रम फि म की तुलना मे अपेक्षित हो जाते है क्योकि रेडियो के कायक्रम अ य त सीमित अवधि के लिए प्रसारित होते हैं जबकि फि मे ब चो को कम से कम एक घट तक आन द दे सकती और अधिक प्रभावित कर सकती है। इस दिशा मे दूरदशन ने एक क्रांति ही उपस्थित कर दी। फि म देखने के लिए बालकों को दूर जाना पडता है जबकि दूरदशन के द्वारा घर बठ ही कायक्रम का आन द ले सकत हैं।

दूरदर्शन के माध्यम से कहानी, कविता गीत नाटक ऐडवे चर शिक्षा तथा विभिन्न विषयो से स बन्धित कार्यक्रम देखे जाते हैं। इससे प्रसा रित दृश्य साधनो—चाट नक्शा द्वारा विज्ञान गणित जैसे कठिन विषयो को आसान बनाकर समझाया जाता है। इसके लिये लेखको के समक्ष लेखन कला एक चनौती बन गई है क्योकि कहानी सुनना एक अलग कला है दूर दर्शन के लिए लिखना एक अलग चीज है। दरदर्शन की अपनी अलग तकनीक है जिसे सीखे बगैर उसके लिए को भी रचनाकार प्रभावशाली रचना नही लिख सकता। इतना ही नही यहाँ विभि न विषयो के लिए अलग अलग तकनीक अपनानी पडती है। कहानी नाटक कार्टून, पापेट स्कूल पाठ आदि सबके लिए अलग अलग तरीके से लिखना पड़ता है। लेखक जो चाहे नहीं लिख

सकता है। बा ा मनोविज्ञान को ाा ा ो ा न की ा नीक को समझने से उ च कोटि के बा ा सा ि व। ा ा ा ा ा ता है।

दरदशा की तकनीक म अ ा क सुधा ा ी ा ाव यकता है। आ ा कल केवल प द्रह मिनट ा बाल कार्यक्रमा ा ा ा ा दशी विदेशी वस्तुआ की खिडकी प्रस्तुत कर देते है। वि शो म ा ान ा लेखका का मान और स मान है जबकि भारतीय लेखका म ा ी दशा न व लिए लेखन-कार्य की तकनीक का जानकारी का अभाव है। धीरे धी स कमी को दर किया जा रहा है। ा व लेखको ने इस चुनाती का स्वीकार ी किया है। दूर दशन के एक समीक्षक का म त य है कि सम्भावनाए बहुत हैं भवि य बहुत सु दर है। इसी तरह लेखक चुनोतियाँ स्वीकार करते र तो दूरदर्शन प्रथम श्र णी के बाल साहि यकार दे सकेगा—ऐसे बाल साहि यकार बाल साहि य को नई दिशाए देने मे सक्षम हो ा। आज के लिए यह एक सक्षम विधा है जो बाल साहि य क प्रचा प्रसार तथा विकास मे पूणत सह योग दे रही ा।

(च) बाल फिल्म

बा ा साहि य निर्माण के अ य साधना मे बाल फि मे भी अपनी भूमिका अदा करती हैं। बाल फि मो के निर्माण के कारण बालको के मनोरजन के कतिपय साधनो में स एक अ य साधन की वद्धि हुई जो उ हे कुछ घटे तक आन द देने के लिए पर्या त हैं। ा के मा यम से ब चे बाल कलाकारो के अभिनय के साथ अपना ता ा य थापित करने मे अधिक आन द का अनुभव करते है। यह कमी तो नाटक भी पूरी करता है पर तु नाटको को मचित करने मे जो कठिनाइयाँ है उ ह बा ा फि मे दर करने मे सफलता प्राप्त कर रही है। मच के सीमित साधना के कारण नाटक को पू ी त ह स जीव बनाने मे ए क समस्या रहती है जो फि मो मे नही है।

फि मो के द्वारा बालक दश विदश की सर कर लेते हैं विभि न जानवरो की दुनिया म पहुच जाते है उनके स्वभाव आदि के विषय मे जान लेते है और इन सब के अतिरि क्त मनोरजन तो प्राप्त करते ही हैं कहानी सुनने की अपेक्षा बालक फि मो के माध्यम से उसे दखत हैं और अधिक प्रयास के बिना शिक्षा तथा ज्ञान प्राप्त करते है। ऐसा समझा जाता है कि लगभग 87 प्रतिशत ज्ञान आँखो के द्वारा ही प्रा त होता है। फि मो मे कार्टून पपेट आदि के माध्यम से भी कहानी दिखाई जाने की पर परा प्रार भ हुई।

भारत मे सरकार द्वारा बाल फि मो के निर्माण तथा प्रचार का काय आर । किया गया । भारत सरकार की फि म डिवीजन ने बाल फि मो फीचर फि मो तथा काटन फि मो का निर्माण किया । इसके अतिरिक्त गर सरकारी प्रयास भी हुए जिसने फि म डिवोजन की अपेक्षा अधिक सफलता प्रा त की । फि मिस्तान की जागत बावला यू थिएटर्स की छोटा भाई शा ताराम की तूफान और दीया गुनजार की किताब उ लेखनीय फि मे हैं लेकिन इनका सख्या अ प है । सफल फि म होने के बावजूद सरकारी प्रो साहन का अभाव तथा प्रदशन की समस्या के कारण निर्माता इस प्रकार की फि मे बनाने का साहस जुटा न ी पाते । यावसायिकता को प्रमुख स्थान दकर जो निर्माता फि म बना रहे है । उनकी फि मो मे ऐसे त व समाहित रहते हैं जिससे बाल मस्ति क उर्वरक होने की अपेक्षा दूषित अधिक होता है । फि म डिवीजन की नट शरारत और जस को तसा ऐसी फि मे है जो न तो ब चो को स्वस्थ आन द प्रदान करती हैं और न उनमे ऐसा आकषण है जो रोचकता प्रदान करे ।

यही हाल काट न फि मो का है । विदशो की तरह इन फि मो मे न तो आकषक स्वरूप हैं और न इसमे कोई सुधरा रूप दिखाई दता है । वाल्ट डिस्ने तथा नारमन की काटन फि मे भारत मे भी प्रदर्शित की जाती हैं लेकिन अधिकाश ब चे इसे देखने से व चित रह जाते हैं । इन काटन फि मा को हि दी मे रूपा तरित करके भारतीय ब चो को दिखाया जा सकता है । इस ओर चि ड्र न फि म सोसायटी का प्रयास सराहनीय है । अब समय आ गया है जब बाल फि मो की उपयोगिता को नकारा नही जा सकता । बीसवी सदी का यह सबसे लोकप्रिय माध्यम भवि य के निए यो य और सुदढ नागरिक तयार कर सकता है । कभी-कभी बाल फि मे भी व्यावसायिकता की दौड धूप के कारण सफल नही हो पाती । इस सम्ब ध मे आवश्यकता इस बात की है कि अ छ कहानीकारो द्वारा बाल फि म के लिए कहानी लिखवाई जाये तथा प्रमचद जैसे अनेक साहि यकारो के बालोपयोगी साहि य पर बाल फि मे बनाई जाय । इसके अतिरिक्त एक भाषा मे बनी अ छी फि म को अ य भाषाओ मे रूपा तरित किया जाय । बच्चो के विकास और मनोरजन का अपना मह व है जो किसी भी उद्योग से वडी बात है । इस बात का निर तर ध्यान रखना होगा कि फि म उद्योग मे भी बालको का विकास प्रमुख उद्दश्य है उस उद्योग का यावसायिक विकास गौण है ।

बाल चित्र समिति की ओर से निर्मित फिल्म 'रानी मा' के सन्दर्भ मे एक फिल्म समीक्षक की यह टिप्पणी विचारणीय है कि 'व्यावसायिकता की दौड के कारण अधिकांश बच्चे इसे देखने से वंचित रह गए। इस समिति द्वारा निर्मित अन्य फिल्मो की तरह इस फिल्म का भी टिकट मूल्य काफी कम होने के कारण वितरक और सिनेमा घर इसे लेने का साहस नही कर सके। परिणाम यह हुआ कि अच्छी से अच्छी बाल फिल्मे भी अधकार के गर्त मे चली गई। इस कारण बच्चे न सिर्फ मनोरंजन से वंचित रहते है बल्कि बडो की फिल्मे देखकर गलत बाते सीखते है और समय से पहले परिपक्व हो जाते है।' इस दिशा मे सुधार तभी सभव है जब व्यावसायिकता की बात को गौण रखकर फिल्म निर्माण किया जाय। सरकार सहयोग दे और फिल्म निर्माताओ को प्रोत्साहित करे।

सन्दर्भ सूची

1. मोहिनी राव— मधुमती जुलाई अगस्त 67 पृ 309।
2. इन्द्रसेन शर्मा— बाल साहित्य सूची प्रस्तावना।
3. सुरेन्द्र अग्रवाल— बाल साहित्य रचना और समीक्षा पृ 191।
4. गोपीनाथ कालभोर— साहित्य परिचय (अगस्त अक्टूबर) पृ 157।
5. जवाहरलाल नेहरू के विचार— बाल साहित्य—रचना और समीक्षा पृ 186।
6. विष्णुकांत पाडेय— बाल साहित्य रचना और समीक्षा पृ 149।
7. जयप्रकाश भारती— साहित्य परिचय अगस्त अक्टूबर 80 पृ 179।
8. रत्नप्रकाश शील— साहित्य परिचय पृ 180।
9. हरिकृष्ण देवसरे— दिनमान 14 नवम्बर 1976।
10. सम्पादकीय— पराग जनवरी 1976।
11. विजय परमार— बाल साहित्य रचना और समीक्षा पृ 181।
12. स्वदेश कुमार— बाल साहित्य रचना और समीक्षा पृ 199।
13. श्रीप्रसाद— धर्मयुग 17 मई 1981 पृ 5।

उपसहार

उपसहार

ऐसा कहा जा सकता है कि हि दी मे बाल साहि य का मह व बहुत देर से समझा गया जिसका एक कारण सकडो वर्षों तक पराधीन रहना भी माना जा सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि विदेशो मे बहुत पहले से ही बालको के साहि य पर ध्यान किया गया। फलस्वरूप विदेशी बाल साहि य अपेक्षाकृत अधिक स पन्न हुआ। वहा हर युग के अनुरूप एक निश्चित विचा धारा को लेकर बालको के लिए साहि य की रचना होती रही है। क ा जा सकता है कि विदेशी बाल साहि य मे युगानुरूप साहि यिक मानदण्डो एव ीवन के मू यो मे भी परिवर्तन अपेक्षित है जबकि भा तीय बाल सा ि य अब भी एक निश्चित विचारधारा को लेकर नही लिखा जा रहा है। प्राचीनता के मोह को न छाड पाना तथा भारतीय सस्कृति आर सभ्यता एव धम से अटट गतिशील सम्ब ध रखने का प्रय न न करना ही इसका प्रमुख कारण है।

हि दी मे सभवत अपेक्षित गुणवत्ताओ के अभाव मे पहले लेखको ने बाल साहि य की श्रीवृद्धि की ओर यान नही दिया। क्योकि यह आवश्यक है कि किसी भी प्रकार के साहि य रचना के लिए अपेक्षित गुणवत्ताए होनी चाहिए। इसके अभाव मे साहि य साहित्य नही रह जाता।

शुरू शुरू मे हि दी लेखको को बालको की आयु और विषय के अनु रूप रचना करने का ज्ञान कम ही था जो कि बाल साहि य के लिए अ य त आवश्यक होता है। वे जो भी लिखते थे उस साहि य से बालक अपना तादा म्य स्थापित नही कर पाते थे। बाद मे हमारा सम्पर्क अग्रजी साहि य से हुआ तब हमारी समझ मे यह बात आने लगी कि बालको की उ नति ही देश की उन्नति है। यही कारण है कि पाश्चा य साहि य से पेरणा ग्रहण कर ब चो के मानसिक बौद्धिक विकास के लिए हर प्रकार के साहि य की रचना की गई और भवि य मे इसका स्वस्थ परिणाम दष्टिगोचर होने लगा। बाल साहि य रचना का उद्दश्य भी अब पूवापेक्षा अधिक स्प ट होने लगा। विज्ञान तथा मनोविज्ञान के प्रभावस्वरूप बाल साहि य रचना के समग्र इस बात का यान रखा जाने लगा कि बालको का साहि य युगानुरूप हो तथा उससे उनके जीवन की समस्या का समाधान भी हो। वे आज के वज्ञानिक समाज के नागरिक बन सक तथा अ तर्रा ट्रीय क्षेत्रो मे भी भाग ले सक।

ब चो का जो साहि य आरभ मे क पना लोक का दामन पकड था वह अब उपयक्त उद्दश्य की पूर्ति के लिए यथाथ के धरातल पर उतर आया। कथा का आधार अब परियाँ और जादूगर न होकर आस पास की वस्तुए जीव जतु तथा यक्ति होने लगे और वे बालको के मानसिक भूख को शा त करने के साथ साथ उनका मनोरजन भी करने लगे। हालाँकि इस यात्रा क्रम को पार करने के लिए बाल साहि य को अनेक कठिनाइयो का सामना करना पडा। इन सभा बातो पर विचार करते हुए बाल साहि य को विस्तार मे समझना ही विगत अ यायो का मुख्य विषय रहा है।

प्राचीन काल मे रचित सस्कृत ग्र थो यथा श्रीमद्भागवत् उपनिषदो तथा पुराणो मे एक तरफ से आधुनिक बाल साहि य के बीज विद्यमान थे। अनूकूल अवसर पाकर आज जिस रूप मे इसका विस्तार तथा प्रचार बढता जा रहा है वह प्रशसनीय है।

मध्यकाल मे भक्त कवियो द्वारा रचित राम और कृष्ण के बाल लीला विषयक पद बडो के साथ साथ बालको को भी मनोरजन प्रदान करते थे जो वस्तुत उनके लिए नही लिखे गए थे। यह बात एक ओर तो हमारे साहि य मे बाल साहि य की विषय वस्तु को साहि य मे समायोजित होने के लिए प्रस नता देता है लेकिन दूसरी ओर इस बात का दु ख भी होता है कि यह साहि य अपेक्षित रूप से बालको तक प हुचने का या उनके हित मे अनुकूल सवदना के साथ अभि यक्त होने से अलग रहा।

आधुनिक काल के आरभ मे पाठ्य पुस्तको की रचना पर ही यान दिया गया जिसका उद्देश्य धम तथा नीति की शिक्षा देना था। मौलिक साहि य लेखन का सूत्रपात भारते दु हरिश्च द्र के समय से माना जाता है जबकि उ होने बालको के मनोरजनाथ नाटय पुस्तको के साथ बाल पत्रिका बाल बोधिनी का भी प्रकाशन किया। इनके सहयोगी लेखको तथा कवियो ने भी बाल साहि य की विभि न विधाओ मे बालको के मनोरजनार्थ लिखा। प्रतापनारायण मिश्र तथा बालकृष्ण भटट के निब ध प्रमघन और श्रीधर पाठक की कविताए लाला श्रीनिवासदास के नाटक और उप यास राधा कृष्णदास तथा काशीनाथ खत्री के रूपक फ डरिक पिकाट की नीतिपरक पुस्तकें इस युग की मह वपूर्ण देन है जि होने बाल साहि य के विकास में सयहोग दिया। इस युग की भाषा शली तथा शि प को देखने से ज्ञात होता है कि तब भाषा का कोई सुस्थिर रूप नही था। उदू एव अरबी मिश्रित भाषा गद्य एव नाटको मे प्रयुक्त हुई है तो कविता ब्रज भाषा मे ही लिखी जाती रही।

शनी एव शि प का तो कोई स्थान ही तब नही था। भारते दु हरिश्च द्र ने शक्सपीयर के कुछ नाटको का जो अनुवाद प्रस्तुत किए थे उनमें उन नाटको की शैला का स्प ट प्रभाव परिलक्षित होता है। स्वय की कोई भी शली इ होने नही अपनाई। भारते दु के अवसान के पश्चात् हि दी के क्षेत्र मे अराजकता बनी रही क्योकि यह युग बगला अग्रजी मराठी से अनुवाद का युग था और इन भाषाओ से लिए गए श द हि दी को अराजक बना रहे थे। हि दी के अपने याक ण के निर्वाह की ओर किसी का यान नही गया। ऐसी स्थति मे बालको के लिए साहि य लेखन की ओर भी लेखकगण उदासीन ही रहे।

बीसवी शता दी के पहले बीस वर्षों मे हि दी भाषा का एक परि निष्ठित रूप आचाय महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपनी लगन एव नि ठा से पाठको के समक्ष रखा। अब याकरण के नियमो का पालन सतकतापूर्वक होने लगा और बालको के लिए भी दोनो प्रकार के साहि य—पाठ्य पुस्तक सम्ब धी तथा मनोरजनपरक—के लेखन तथा प्रकाशन की आर ध्यान दिया जाने लगा। भाषा की एकरूपता एव प्रौढता इन पुस्तको की विशेषता रही। उ का कलेवर छोड सस्कृत के त सम श दो को सरल बनाकर ज्ञान विज्ञान की गूढ बातो को बोधग य बनाकर अब प्रस्तुत करने का काय किया जाने लगा। इस क्षेत्र मे द्विवेदीजी के समकालीन लेखक तथा कविगण प्रय नशील रहे। विद्यालयो मे हि दी भाषा के माध्यम से शिक्षण काय होने लगा और अग्रजी भाषा के प्रति घृणा का भाव बालको मे उ प न करने का प्रयास होने लगा। बाल कहानियाँ उप यास नाटक तथा गीत और कविता का भी पर्याप्त विकास हुआ।

स्वतन्नता प्रा ि त के लिए किए जा रहे प्रयासो मे साहि य भी एक मह वपूण माध्यम था। इसी के द्वारा बालको के मन मस्तिष्क म स्वतत्र भारत की सु दर छवि उभारने विदेशी सत्ता के प्रति आक्रोश प्रकट करने तथा उनका चारित्रिक और नतिक विकास करने क अवसर प्रदान किए गए।

इस समय की कविताओ का मुख्य स्वर राष्ट्रीय रहा। कहानियो का उद्दश्य बालको म चारित्रिक उ थान तथा देशभक्ति का भाव भरना और स्वतत्र भारत के योग्य नागरिक बनाना था। इसके अतिरिक्त यह युग बाल पत्र पत्रिकाओ का रहा। शिशु बालक विद्यार्थी बाल सखा

खिलौना बाल हितकर छात्र हितषी जैसे पत्र बाल साहि य की अभिवद्धि मे योग देते रहे। कि तु शिशु बालक तथा बाल सखा को छोड अ य पत्र कठिनाइयो के कारण असमय ही ब द हो गए। आचार्य रामलोचन शरण के अथक प्रयास ने हि दी मे बाल साहि य के भडार को भरने का काय किया। वस्तुत रामलोचन शरण ने सवप्रथम बालको के मनोविज्ञान को समझा और तदनुरूप बालको के लिए विभि न साहि य की रचना करना उनके लिए सरल हो गया। बालको की आयु को ध्यान मे रखकर पाठय पुस्तको की रचना उनके लिए विषय का चुनाव एव बहुत छोटे ब चो के लिए चित्रमय बाल पोथी का प्रकाशन इस युग मे बाल साहि य के क्षेत्र मे एक क्रातिकारी घटना है।

प्रमच द की कुछ कहानियो जयशकर प्रसाद तथा नमदा प्रसाद खरे के नाटको के अतिरिक्त इन विधाआ मे अधिक लेखन कार्य नही हो सका। जयशकर प्रसाद के नाटको को मचित करना एक कठिन कार्य था क्योकि मच की उचित व्यवस्था बालको को लम्बे लम्बे सवाद रटने की कठिनाई वेश भषा की अ यवस्था आदि की कुछ कमियाँ थी। दूसरी ओर नर्मदा प्रसाद खरे के बाल नाटक माला ने ब चो को मच पर अभिनय करने के अवसर प्रदान किए थे। इनके नाटको को मचित करने के समय साज स जा पर्दा उठाने गिराने की यवस्था के लिए अधिक कठिनाई नही होती थी। अ प साज स जा के साथ कक्षा मे खेलने यो य इन नाटको के पात्र ऐतिहासिक या पौ ाणिक यक्ति न होकर ब चे ही होते थे और वे ही अभिनेता भी थे। कथावस्तु भी ब चो की दुनिया से स बधित थे। उप यास के क्षेत्र मे अग्रजी साहित्य से अनूदित उप यास ही बालको के उप यास के अभाव की पूर्ति करते रहे। त कालीन लेखकगण महावीरप्रसाद द्विवेदी की छत्र छाया मे इतना साहस नही कर सके कि बालको के साहि य की इन विधाओ पर अपनी विशेष अभिरुचि के अनुरूप अपने यक्ति व की छाप लगा सक। वे कविताओ के माध्यम से बालको मे राष्टीय भाव का सचार प्राचीन भारतीय सस्कृति तथा धम के पुनरु थान के प्रयास तथा उ हे स्वतत्र भारत के भावा नागरिक के रूप मे तयार करन का प्रयास करते रहे। सोहनलाल द्विवेदी मैथिलीशरण गु त कामता प्रसा गुरु म नन द्विवेदी गजपुरी रामनरेश त्रिपाठी जैसे प्रभूत कविगण इस काय के प्रति सचेत रहे। महापुरुषो की जीवनियो के मा यम से बालको को देशप्रमी प्रतापी विद्वान तथा आदर्श यक्ति बनने की प्ररणा देते रहे। इस युग की मह वपूर्ण उपलब्धि यह है कि

कविता की अपेक्षा गद्य लखन पर अधिक यान दिया गया है। परन्तु इसके द्वारा भी उपदेश देन की प्रवृत्ति ही मूल रूप मे काय कर रही थी।

यह पूव स्वात य युग अधिक अराजक र ा। राजनीतिक उथल पुथल महायुद्धो की विभीषिका स्वतत्रता के लिए मर मिटने की अमिट लालसा ने साहि य के क्षेत्र को भी प्रभावि ा किया। यद्यपि साहि य का स्वर स्वतत्रता प्राप्ति के दस वष पूव ही बदलने लगा था परन्तु साथ ही राजनीतिक अभि प्रायो के साि य मे समावेश के साथ ही नई मा यताओ के साथ पु ानी मा यताओं को भी अपनाए रखने का मोह भी द िटगोचर होता है। यो यो स्वतत्रता के लिए आदोलन जोर पकडता गया महायुद्धो की विभीषिका से लोग त्रस्त तथा कठित होते ए ान जीवन मे भी एक प्रकार का ातिरोध आता गया हमारे ाल साहि य की धारा भी अवरुद्ध होती गई। फि भी जो कुछ इन दिनो लिखा गया उनका म व कम नही है। क्योकि विषय क्षत्र के विस्तार के साथ बाल साि य का स्वरूप बदला। प्राचीन धार्मिक सामाजिक तथा सास्कृतिक परम्पराओ के प्रति मोह और भी अधिक उभर कर साहि य के मा यम से प्रकाश मे आया। तत्कालीन ाजनीतिक प ि स्थितियो के प्रभावस्वरूप राष्ट्रीयता का स्वर ही साहि य मे अधिक मख रहा। इसके अतिरिक्त मित्र ब धु कार्यालय द्वारा प्रक ाशित साहि य ने शिशु साहि य तथा बा ा साि य को नई दिशा दी। विभिन्न आयु वग के आधार पर चयन किये गये विषय तथा भाषा के प्रयोग से इन पुस्तको का मह व और भी अधिक बढ गया क्योकि बाल साहि य की य सबसे मह वपूण कसौटी है। सख्या मे अ प हाने के बावजूद इस युग के साहि य ने भविष्य के लिए ठोस ाधार बनाए। इ ा युग के बाल साहि य की भाषा अधिक यवस्थित हा गई। उदू अरबी श दो का बाहु य समाप्त हो गया तथा याकरणबद्ध परिमार्जित भाषा का पयोग हाने लगा। कविता भी खडीबोली हि दी में लिखी जाने लगी

शली एव शि प के क्षत्र मे नए प्रयोग ोने लगे। कथा मक शली आ मकथा मक शली पत्रा मक शली आदि का प्रयोग खलकर हुआ। बालको के साहि य मे किसी निश्चित शि प के विकास का कोई आग्रह इस युग के साहि यकारो मे नही देखा गया।

राष्ट्रीय स्वाधीनता आधुनिक भारतीय इतिहास की सबसे बडी घटना है। हमारे ीवन और साहि य पर इस घटना का प्रभाव पडना स्वाभाविक

ही है। सन् 1947 के बाद के बारह तेरह वर्षों के बाल साहि य मे कोई नवीन उपलब्धि दृष्टिगोचर नहीं होती। इसका कारण यह था कि बदलते युग और जीवन का प्रवाह साहि य मे देर से आता है। अत हमे साहि य और कला मे बराबर अतीत की ओर देखना पडता है। धीरे धीरे त कालीन घटनाओ सामाजिक मा यताओ तथा नवीन उद्भावनाओ का समावेश स्वत इसमे होने लगता है। बाल साहि य भी इससे अछूता नही रहा। अब इस बात का अनुभव तीव्रता से किया जाने लगा कि बाल साहि य के माध्यम से दिया गया ज्ञान पाठ्य पुस्तकीय ज्ञान से भि न होता है अत इसका प्रभाव बालमन पर अनायास होने लगता है और यह अपनी अमिट छाप छोडने मे सक्षम भी होता है।

छठें दशक के बाद ही बाल साहि य की विभिन्न विधाओ में यथेष्ट प्रगति हुई। बाल कहानियाँ और कविताए तो प्रचुर मात्रा मे लिखी ही जा रही थी बाल उप यास और बाल रगमच जसी उपेक्षित विधाए भी अब बाल उप यास और बाल रगमच जसी उपेक्षित विधाएँ भी अब बाल साहि य मे अपना स्थान बनाने लगी। सबसे बडी बात तो यह हुई कि लेखकगण अपनी बात को इस ढग से प्रस्तुत करने लगे कि वह बच्चो पर जबरन थोपा हुआ प्रतीत नही होता था। बच्चो की आदतो रुचियो और इ छाओ के अनुकूल उनकी ही भाषा मे बाल साहि य का लेखन और प्रकाशन इस समय की सबसे बडी उपलब्धि है।

बाल मनोविज्ञान को दृष्टिगत रखते हुए बाल साहित्य की जितनी अ छी प्रस्तुति सातव दशक मे हुई, उतनी पहले कभी नही हुई थी। साहि य मे क पना की प्रखरता के स्थान पर अब स य तथ्य और दनिक जीवन की उलझने आ गईं। विभिन्न समस्याओ के निराकरण के उपाय भी प्रस्तुत किए गए। बाल मनोभूमि पर आधारित कहानी लिखने का जो सूत्रपात प्रमच द ने किया था उसका अ यत निखरा हुआ रूप वि ण प्रभाकर म नू भडारी मोहन राकेश जस कहानीकारो की बाल कहानियो मे चित्रित हुआ है। पर तु इन कहानीकारो ने प्रमचद की उपदेशा मक व त्ति को न अपनाक र अपनी कहानियो मे बालको की सामाजिक मनोवज्ञानिक समस्याओ को प्रस्तुत करते हुए उनका निदान खोजने को विवश किया है।

विज्ञान के बढ़ते हुए चरण के साथ साथ उनकी गूढ़ बातो को कथा तथा कविता के माध्यम से उसे सरल बनाकर प्रस्तुत किया जाने लगा। आठव

दशक मे जो विज्ञान पुस्तके प्रकाशित हुई उनके द्वा । बाल मस्ति क पर बिना अतिरिक्त बोझ डाले बालको के मन मे उठने वाली जिज्ञासाओ का समाधान प्रस्तुत किया गया है ।

बाल साहि य द्वारा आरभ मे उपेक्षित विषय भी अब इस क्षेत्र मे प्रविष्टि पा गए। व य प्राणी उनकी आदत उनके रहन सहन की विस्तृत विवेचना शिकार कथाए साहसी तथा जासूसी कथाए भी लिखी गई । आदि वासी जीवन पर आधारित पुस्तक रोचकता लिए हुए प्रकाशित हुइ ।

सन् 1850 से लेकर सन् 1982 तक के बाल साहि य के विकास क्रम को देखने से प्रतीत होता है कि उ नीसवी शता दी तक तथा बीसवी शता दी के आरभ के पचास वर्षों तक इसकी गति धीमा रही परतु इसके बाद के तीस वर्षो मे इसने अभूतपूव प्रगति की है। इसकी विविध विधाओ मे आरभ के दिनो मे कविता का स्वर ही मुखर रहा। ब चो के समाज मे ऐसे अनेक गीत प्रचलित ह जिनकी न तो चना काल का पता है और न रचयिता का पर तु आज भी वे ब चो को कठस्थ हैं। हिंदी मे जब लिखित बाल गीतो की परम्परा आरभ हुई उस समय स प्रकार के गीतो का पर्याप्त प्रभाव था। शिशु गीत बाल गीत कथा गीत हास्य गीत विज्ञान गीत जसे विभिन्न प्रकार के गीतो की रचना स य समय पर हाती रही और बालको की आवश्यकता की पूर्ति करती रही । आज क जटिल जीवन तथा समाज मे या त विविधता के कारण आठव दशक का गीत नये नये शि प मे गढकर प्रस्तुत किया गया। आटव दशक के बाल गीतो में कुछ तो ऐसे है जो विश्व के श्र ठ बाल गीतो के समक्ष रखे जा सकते हैं जिनकी चर्चा पिछले अध्यायो मे हो चुकी है। छिटपुट रू मे विभिन्न पत्र पत्रिकाओ मे लिखे जाने वाले बाल गीतो का सग्रह रूप मे प्रकाशन एक मह वपूण उपल धि है।

बाल साहि य की विधाओ मे उप यास जितना अधिक उपेक्षित रहा उतना अ य कोई विधा नही। विदेशी साहि य से अनुवाद रूप मे ही कुछ उप यास बालको को मानसिक तष्टि प्रदान करते रहे। स्वतत्रता के बाद मौलिक उप यास लिखने की पर परा भूपनारायण दीक्षित ने डाली जिसकी आज विभिन्न शाखाए प्रशाखाए स्फुटित हो चुकी हैं। सामाजिक धार्मिक ऐतिहासिक राष्ट्रीय वैज्ञानिक साहसिक जासूसी मनोवज्ञानिक आदि अनेक विषयो को लेकर मौलिक उप यास लिखे गए जो स्वतन्त्र विधा के रूप में उभर कर आए। आज हि दी मे बाल उप यासों की लोकप्रियता

बराबर बढती जा रहा है । ा चो के लिए अ छ और रोचक उप यास प्रकाशित हा रहे है जिनके द्वारा वे अपने परिवेश स जडने के अधिक अवसर प्राप्त करते हैं । हिमाशु श्रीवास्तव श्री प्रशात मनहर चौहान हरिक्ृ ण देवसरे आदि इसी प्रकार के उप यास लेखन मे प्रय नशील हैं । फिर भी विदेशी बाल साहि य की अपेक्षा हि ्दी या अ य भारतीय भाषाओ मे प्रकाशित बाल उप यास अधिक ऊचाई तक नही पहुच पाए हैं । लेखको के लिए यह एक चनौती है ।

बालको के लिए लिखित रूप मे कहानी का शुभारभ आधनिक काल मे दो उद्देश्यो को लेकर हुआ । ब चो को मनोरजन प्रदान करने के साथ साथ शिक्षा का समावेश भी उसमे इस प्रकार रहता है कि ब चे अनजाने ही उसे ग्र ण कर लेते हैं । शिक्षा उपदेश रूप मे नही दी जाकर कहा ी मे वर्णित घटनाओं या चरित्रनायक के सद्गुणो से अनायास ही दे दी जाने लगी । इसलिए हम कह सकते है कि स्वात योत्तर युग मे क्राितकारी परिवर्तन ने इसका कलेवर ही बदल दिया । बालको की अपनी शिकायतो शतानियो का चित्रण अब उनमे होने लगा जो बाल मन को अधिकाधिक प्रभावित करने मे सक्षम सिद्ध हुआ । सन् 1960 के बाद आधुनिक बोध की कथाएँ प्रचुर मात्रा मे प्रकाशित होने लगी । कहानी के पात्र बालक स्वय या उनके आस पास के परिचित यक्ति होने लगे । परी कथाए अब क पना लोक मे विचरण नही कराती वरन् यथार्थ के धरातल पर चलने को मजबूर करती हैं । नये नये प्रयोग भी हुए । परी कथाएँ मुहावरो की कथाए शिकार कथाएँ वज्ञानिक कथाए नये कलेवर मे आवेि ठत होकर प्रस्तुत हुइ । इस प्रका वी कथाए लिखने मे यथित हृदय मनहर चौहान हरिकृष्ण तलग मालती जोशी हरिक्ृ ण देवसरे आदि के नाम उ लेखबीय हैं ।

भारते दु हरिश्च द्र की लेखनी से बाल नाटक का जो सूत्रपात हुआ था वह प्रसाद के एतिहासिक नाटको तथा मिश्रबध कार्यालय के मरल नाटक माला को समृद्ध करता हुआ स्वतत्र भारत मे अनेक नाटककारो के प्रयास से आगे ही आगे बढ़ता जा रहा है । केशवच द्र वर्मा कुदसिया जदी भान मेहत वि ण प्रभाकर मस्तराम कपूर उर्मिल जैसे नाटककारो की सेवा प्रशसनीय है । इस युग में एकाकी रगमचीय नाटको का बाहु य तथा नये प्रयोग और उपलब्धिया इस बात की ओर इगित करती हैं कि इसका भवि य उज्जवल हो । फलस्वरूप बाल रगमच की स्थापना के साथ इसके उपयुक्त

एकाकिया की चना अब हाने लगी। लखनऊ से रगमचस ब धी पत्रिका का प्रकाशन क क बध कुशावर्ती ने साहसपूण कदम उठाया क्योकि यावसायिक दृ ट से इसमे हानि की सभावना ही अधिक थी।

बालक के यक्ति व एव सुदृढ़ चरित्र का निर्मा । जीवनी साहि य के मा यम म करने का काय द्विवे ी युग म आरभ हो चुका था। स्वतत्र भारत मे यह पौराणिक ऐतिहासिक चरित्रो की सपाट बयानी तक सीमित रह गया था जबकि सातव दशक के आरभ से इसमे परिवतन लाकर महापुरुषा वज्ञानिको कलाकारो क्रातिकारि यो के जीवन के समान बनने की प्र णा बालका का दी जाने लगी। इसके मह व को बताने के लिए भाषा तथा शली की रोचकता का यान रखा गया तथा योजनाबद्ध ढग से इनका प्रकाशन आरभ किया गया।

इस अवधि के स पूण बाल साहि य को देखने से लगता है कि इसकी भाषा तथा शली मे निर तर विकास होता गया। भारते दु यग के साहि य मे भाषा का जो अ यवस्थित रूप दिखाई देता है वह द्विवदी यग मे यवस्थित हो सका और निरतर इसकी प्रगति होती रही। भाषा मे निखार आता गया। सस्कृत के त सम श दो का प्रयाग होने लगा और उद अरबी तथा अग्रेजी के श दो का प्रयोग समा तप्राय हो गया।

शली तथा शि प का कोई ब धन आरम्भिक युग के बाल साहि य मे नही था। पर तु काला तर मे साहि यकार विभि न प्रकार की शैलियो के मा यम से अपनी बात बालको तक पहँचाने लगे। कथा मक शली डायरी शली आ मकथा मक शली इ टर यू शली तो प्रयुक्त होती ही थी सातव दशक से जीवनोप यास शली का प्रचलन भी होने लगा जो अ यधिक प्रभावशाली सिद्ध हुआ। स्वतत्रता पूव बाल साहि य मे शि प का कोई स्वरूप उभर कर सामने नही आया। अग्रजी पुस्तको के अनुवाद के कारण उनमे प्रयुक्त शि प का प्रभाव बराबर बना रहा। परि स्थितियो के बदलने के साथ समस्याए विविध रूपो मे उभर कर आइ। साहि य के द्वारा इन समस्याओ से पाठक को अवगत कराने तथा उनके समाधान के उपाय खोजने के लिए लेखको ने विभि न शि प का सहारा लिया। एक ही विषय पर लिखे गए कथा या उप यास या नाटक पर विविध लेखको ने अपने यक्ति व की छाप शि प के माध्यम से छोडी। पत्र पत्रिकाए पढने की बालको की अतीव भूख को शा त करने के लिए स्वातत्र्योत्तर बाल साहि य क क्षत्र मे अनेक पत्र पत्रिकाओ का

प्रकाशन नये ढग एव साज स ज्जा के साथ आर भ हुआ । न न पराग चुन्नू मुन्नू चम्पक आदि स्वस्थ पत्रिकाए अब बालको के लिए उपल ध हैं । इन दिनो चित्र कथाओ ने तो बाल साहित्य क क्षेत्र मे क्राति ही मचा दी । इन कथाओ को देखते ही ब चे सब भूल कर रहे पढने मे प्रवृत्त हो जाते है और जब तक पूरा पढ नही लेते उ हे चन नही पडती । इ द्रजाल कामिक्स अमरचित्र कथा अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लि कि बालको की रुचि पढने मे अधिकाधिक बढ प्रय नशील हैं और अनेकानेक कहानियाँ ब चो को दे रहे हैं । पाश्चात्य एडवचरस साहित्य से लेकर भारतीय पुराण तथा धर्म कथाए बालको को मिल रही है । अब बाल पाठको की रुचि अध्ययन की ओर बढी है और इस साहित्य ने भी अपने प्रति आकषण उनके मन मे उ पन्न किया है । पुस्तको के प्रति ब चो की यह रुचि उनकी प्रवृत्तियो द्वारा सचालित होती है और यही स्वाभाविक प्रवृत्ति नई सदी का आशा स्व न है । बाल साहित्यकारो का यह कत्त य हो जाता है कि इस । त्ति की रक्षा और उसकी वृद्धि की ओर अपना नि स्व थ सहयोग द । आ । बच्चे जिन पुस्तको को बार बार पढते हैं वही पुस्तक बाल साहि य की कसौटी पर खरी उतरती है । इस प्रकार की पुस्तको के पर्याप्त मात्रा मे बाल पाठको तक पहुँचाने के लिए लेखक प्रकाशक तथा विक्रता तीनो उत्तरदायी होते है ।

लेखकगण अब इस भ्रम से दूर हो गए है कि बालको के लिए बिना प्रयास कुछ भी लिखा जा सकता है । अब लेखक बच्चो के मानसिक धरातल पर पहुचकर योजनाबद्ध ढग से लिखता है प्रकाशक मिशनरी भावना से उ हे प्रकाशित करता है और ऐसा साहि य बालको मे लोकप्रिय है तथा सफलता की सीढियो पर चढता जा रहा है । यद्यपि आज भी अनक लेखक तथा प्रकाशक यावसायिक चि को मह व दते हुए पुस्तक प्रकाशित करते हैं । जासूसी बाल उप यास इसका अ छा उदाहरण है । इस प्रकार के साहि य बालको को गुमराह करने के अतिरिक्त कुछ नही करते । सरकार का अकुश इस प्रकार के प्रकाशन सस्था पर आवश्यक हो जाता है । विभि न सस्थाए भी बाल साहित्य की अभिवृद्धि मे प्रय नशील है । नेशनल बुक टस्ट चि ड्रन बुक ट्रस्ट सदा नवीन उपलब्धियाँ प्रस्तुत कर रही ह । डिया बुक हाउस शकुन प्रकाशन सुभाष प्रकाशन जैसी सस्थाए बाल साहि य के लिए समर्पित हैं ।

बाल साहि य की विभिन्न विधाओ पत्न पत्रिकाओ प्रकाशन सस्थाओ के अतिरि क्त बाल साहि य को प्रचारित करने के अ य अनेक सा न उप ध हो गए है। बाल पुस्तकालय आकाशवाणी रदशन तथा बाल फि मे इस क्षेत्र मे सक्रिय रूप से भाग ने र ी हैं। यद्यपि अभी इनमे पर्या न सुधार की आवश्यकता है पर तु अ य साधनो की अपेक्षा ये अधिक उपयोगी सिद्ध हो रही है। वाल पुस्तकालयो का जितना मह व है अभी उस ओर इतना ध्यान नही दिग गया है। बडी पुस्तक लयो मे बाल कक्ष खोल ने से इस उद्देश्य की पूर्ति नही ो सकती। चि ड्रन बुक स्ट अगत म कमी को र करने का प्र न कर रहा है।

बाल साहि य के क्षेत्र मे सातव दशक के बाद कुछ न प्रवृत्तिया स्वतत्न रूप से उभरकर सामने आई हैं। जीवन की यस्तता सम याओ का जाल औद्योगीकरण के कारण विषम दिनचर्या आदि ने अग्रजी उप यासो के प्रभाव स्वरूप बाल पाकेट बुक्स को ज म दिया। इस प्रकार की पुस्तक बालको को अ प समय मे पर्याप्त मनोरजन प्रदान करने मे सफल सिद्ध ो रही हैं। ज्ञान विज्ञान के बढते चरण नये नये आविष्कारो के प्रति बालको मे उभरने वाली जिज्ञासा की प्रवृत्ति के शमन के उद्देश्य ने वज्ञानिक बा न साहि य को प्रकाशित करने की प्ररणा दी। विज्ञान की जानकारा अब निब धा के माध्यम से न दी जाकर उप यास क ानी तथा कविता के द्वारा दी जाने लगी। पहेलियो और चटकुलो की पर परा तो बहुत पुरानी है पर तु अब इनका विषय क्षेत्र भी विकसित होता जा रहा है।

यद्यपि हम आज जहा पर है हम पाते हैं कि हमारा बाल साहि य अपनी विकास याता मे पूर्वापेक्षा बहुत प्रगति कर चुका है लेकिन ज कुछ भी हमारे पास है उसका समुचित उप ाग नही हो पा रहा है। ऐसी स्थिति मे यह आवश्यक है कि म इन कमियो को दूर कर और बाल साहित्य के लिए ऐसी ुकूल परिस्थितियाँ उ पन्न कर कि उसका सीधा लाभ हमारे देश के बा न समाज को मिले। इसी दृष्टि से मैं यह सब स भव कर पाने के लिए कुछ सु ाव प्रस्तुत कर रही हू जिनके क्रिया वयन से बाल साहि य देश के ब ा के बीच और अधिक सफल भूमिका निभा सके—

1 आ ाधिकाश बाल साहि यकारो की मानसिकता स्पष्ट नही हो पायी है। जब तक लेखक इस बात को समझ नही लेता कि उसे ब चो को किस प्रकार के समाज का नागरिक बनाना है बच्चो की

आवश्यकताएँ क्या है तथा उ हे किन किन समस्याओ से जूझना पडता है तब तक वह विशुद्ध बाल स हि य की रचना नही कर सकता । इस प्रकार के लेखक बालको के अपने विचार तथा अपनी भावनाओं के अनुकूल साहि य पढने को विवश कर देते है । इसके अतिरिक्त बडो के साहि य के किसी कथानक को सरल ढग से प्रस्तुत कर अपने उत्तरदायि व का नि ह कर लेते है । इस प्रकार का बाल सा ि य आज के युग मे दोषपूण हे । वास्तव मे ब चो के अनुभव बडो से भिन्न होते है उनकी दुनिया अलग होती है और मनोवृत्ति मे जमीन आसमान का अ तर होता है । बाल सा ि यकार का कत्त य है कि इस बात को ध्यान मे रख कर ही स हि य की रचना करे ।

2 हि दी के बाल साहि य को समग्र रूप मे विकसित करने लिए बाल पत्नो के अभाव की ओर भी यान देना होगा । प्रकाशक याव सायिकता का मोह छोडकर बाल पत्नो के प्रकाशन मे प्रय नशील हो तथा इस प्रकार के पत्नो को देश के कोने कोने मे पहुचाने की भी यवस्था हो ।

3 बाल पुस्तकालयो की आवश्यकता भी तेजी से अनुभव की जा ही है । पुस्तकालयो मे एक बाल कक्ष न खोलकर पृथ रूप से इसकी यवस्था हो । चल पुस्तकालयो द्वारा गाँव गाव के उन ब चा तक पुस्तक पहुचाई जाए, जो किसी भी प्रकार का साहि य पढने से वचित हैं । इन पुस्तको के द्वारा उनमे अध्ययन के प्रति आकर्षण तथा रुचि उ प न की जाय ।

4 नेत्नहीन ब चो के लिए स पूर्ण सा ि य का प्रस्तुतीकरण ब्रेल प ति मे किया जाय । इसके लिए सरकारी सहायता लेने की आवश्यकता है अ यथा इस दिशा मे ठोस काय होना कठिन है ।

5 भारत के विभिन्न भाषाओ के बाल साहि य के आदान प्रदान की यवस्था आवश्यक है । इससे न केवल एक दूसरे प्रा तो की सामाजिक सास्कृतिक और मानसिकता की झाँकी मिलती है वरन् भावा मक लगाव को भी ऐसे साहि य से प्रो साहन मिलता है ।

6 अ छे विदेशी साहि य का अनुवाद अ तर्रा ट्रीय सद्भावना को ज म दता है । अत ऐसे बाल साहि य का भी यथास भव अनुवाद होना चाहिए ।

7 लेखको प्रकाशको की पुरस्कृत करने की दोषपूर्ण सरकारी नीति को बदलना चाहिए । लेखको को अधिकाधिक प्रो सा्हित करने के काय करने चाि ए । उनके साहि य का मू याकन उचित कसौटी पर हो तभी बाल साहि्यकार ने उ साह के नित नवीन उद्भावनाओ को लेकर अपने दायि व का भरभूर निर्वा कर सकगे ।

8 बालको की पुस्तको का मू्य नियत्रित होना चाहिए चाहे वह उप यास हो कहानी हो या चित्रकथा हो । पुस्तको के मू य इतने बढते जा रहे है कि अभिभावक अपने ब्चो के लिए पर्या त साहि य खरीद सकने मे असमथ है । पुस्तकालयो की भी ऐमी यवस्था नही है कि ब्चे वही जाकर अपनी मानसिक भूख को शा त कर सक ।

9 सरकारी सहयोग के बिना ये सभी काय अधूरे रह जायगे । इसके विकास के प्र्येक क्षेत्र को सरकारी सहायता मिले जिससे निरतर प्रगति होती रहे ।

निष्कषत आज बाल साहि य का स्वरूप ऐसा हो जो आज के धरातल पर आज के बाल पात्रो को लेकर लिखा गया हो और उनके स्वस्थ तथा सुखी जीवन के निर्माण मे सहायक सिद्ध हो । उसे मनोरजक और ज्ञानवधक तो होना ही चाहिए क्योकि ये उनके गुण है । हि्नी बाल साहि्य स ब धी यह धारणा भारतीयता से जडी हुई है । अत अब अनेकानेक मौलिक कृतियो की रचना से यह विश्वास दढ़ होता जा रहा है कि निकट भवि य मे हमारी बाल साहित्य विश्व बाल साहि य के समकक्ष रखा जाने लगेगा ।